

द्रव्यगुण

गुण :

- परिभाषा –
- 1) समवायि तु निश्चेष्टं कारणं गुणः । – च. सू. 1
 - 2) अथ द्रव्याश्रितः ज्ञेया निर्गुणा निष्क्रिया गुणाः । कारिकावली
 - 3) द्रव्याश्रयी अगुणवान् संयोगविभागेषु अकारण्मनपेक्षा इति गुणलक्षणम् । – वै. द.
 - 4) विश्वलक्षणाः गुणाः । – र. वै. सू.
 - 5) गुणा गुणाश्रया नोक्ता । – च.सू.
 - 6) गुणानामेवमेकलक्षणावरोधो नास्ति । – भावप्रकाश

गुण वर्गीकरण – चक्रपाणीकृत

1) सामान्य गुण –

- अ) गुर्वादी गुण – शारीर गुण (गंगाधरानुसार) शारीर से विशेष संबंध रखने के कारण.– 20
- ब) परादी गुण – सिद्ध्युपायाश्चिकित्साया । – 10

2) विशेष गुण – शब्द स्पर्शादी महाभूतों के गुण – 05

3) आत्मगुण – आध्यात्मिक गुण – 06

आधिभौतिक गुण – $20+10+05 = 35$

योगीन्द्रनाथसेनकृत गुण -- आध्यात्मिक गुणों में 'मन के विषय' का समावेश करं गुण संख्या – 42

सुश्रुतोक्त अधिक माने गये गुण – व्यवायी, विकासी, सुर्गांध, दुर्गांध, आशुकारी, कर्कश

भावप्रैक्षकाशोक्त अधिक गुण – शुष्क – द्रव के विपरीत माना है

नागार्जुनोक्त कर्मण्य गुण (विशिष्ट सामर्थ्य संपन्न गुण) – 10

शीत-उष्ण, स्निग्ध-रुक्ष, विशद-पिच्छील, गुरु-लघु, मृदू-तीक्ष्ण

चरक एवं सुश्रुत में गुण युग्म भेद

चरक	TIERRA		सुश्रुत
मन्द	तीक्ष्ण	मृदू	तीक्ष्ण
स्थिर	सर	मन्द	सर
श्लक्षण	खर	श्लक्षण	कर्कश

व्यवायी – सर का प्रकर्ष (अष्टांगसंग्रहानुसार) हेमचन्द्र मत – द्रव का

विकासी – तीक्ष्ण का प्रकर्ष (अष्टांगसंग्रहानुसार) हेमचन्द्र मत से खर का.

गुण का कार्य – द्रव्यगुणयोः सजातीयारम्भकत्वं साधर्म्यम् । वै.द.

द्रव्य एवं गुण दोनों सजातीय कार्य के आरम्भक होते हैं ।

- कर्मभिस्तुः अनुमीयन्ते नानाद्रव्याश्रयाः गुणाः ।

द्रव्याश्रीत गुणों का अनुमान उनके कर्मों से होता है

गुर्वादी गुण परिभाषा

गुरु- बृहणे गुरुः - हे माद्री सादोपलेपकृद् गुरुस्तर्पण बृहणः - सुश्रुत गुरु वातहरं पुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकि च - भा. प्र.	लघु - लंघने लघु - हे माद्री लेखनो रोपनो तथा - सुश्रुत लघु पथ्यं प्रोक्तं कफधनं शीघ्रपाकी च - भा. प्र.
शीत - स्तम्भने हीमः - हे माद्री हादनः स्तम्भनः शीतो मूर्छातृटस्वेददाहजित - सु. शीतस्तु हादनः स्तम्भी मूर्छातृटस्वेददानुत् - भा. प्र.	उष्ण- स्वेदने उष्णः - हे माद्री उष्णस्तद्विपरीतः स्यात् पाचनश्च विशेषत - सुश्रुत उष्णो भवति शीतस्य विपरीतश्च पाचनः - भा. प्र.
स्निग्ध- क्लेदने स्निग्धः - हे माद्री स्नेहमार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरसाथा - सुश्रुत स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम् - भा. प्र.	रुक्ष- शोषणे रुक्षः । हे माद्री रुक्षस्तद्विपरीतः स्याद् विशेषात् स्तम्भनः खरः - सु. रुक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् भा. प्र.
मन्द - शमने मन्दः - हे माद्री मन्दो यात्राकरः स्मृतः - सुश्रुत न शोधयति यद दोषान् भा. प्र.	तीक्ष्ण - शोधने तीक्ष्णः - हे माद्री दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्नावणः - सुश्रुत तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायोलेखनं कफवातहुत् - भा. प्र.
स्थिर - धारणे स्थिरः - हे माद्री स्थिरो वातमलस्तम्भी - भा. प्र.	सर - प्रेरणे सरः - हे माद्री सरोऽनुलोमनो प्रोक्तः - सुश्रुत सरस्तेषां प्रवर्तकः - भा. प्र.
मृदू - श्लथने मृदूः - हे माद्री विशद- क्षालने विशदः - हे माद्री तिशदो विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषणरोपणः - सुश्रुत क्लेदच्छेदकरः ख्यातो विशदो व्रणरोपणः - भा. प्र.	कठिन - दृढीकरणे कठिनः - हे माद्री पिच्छिल - लेपने पिच्छिलः - हे माद्री पिच्छिलो जीवनो बल्यः संधानः श्लेष्मलो गुरुः - सु. पिच्छिलस्तन्तुलो बल्यः संधानः उलेष्मलो गुरुः - भा.
इलक्षणः - रोपणे इलक्षणः - हे माद्री इलक्षणः पिच्छिलवत् ज्ञेयः - सुश्रुत इलक्षणः स्नेहं विनाशपि स्यात् कठिनोऽपि हि चिकणः	खर - लेखने खरः - हे माद्री सुश्रुत ने खर को 'कर्कश' लिखा है
सूक्ष्म- विवरणे सूक्ष्मः - हे माद्री सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मेषु रन्नोतः स्वनुसरः स्मृतः देहस्य सूक्ष्मछिद्रेषु विशेष्यत् सूक्ष्ममुच्यते - भा. प्र	स्थूल- संवरणे स्थूल(आकार से बड़ा होने के कारण स्त्रोतो मे अवरोध(संवरण) करता है) - हे. स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्त्रोतसामवरोधकत् - भा. प्र
सान्द- प्रसादने सान्दः - हे माद्री सान्दः स्थूलः स्याद् बन्धकारकः - सुश्रुत	द्रव - विलोडने द्रवः - हे माद्री द्रवत्वं स्यांदनकर्मकारणम् - प्र. पा. भा. द्रवः प्रक्लैदनः - सु. द्रवः क्लेदकरो व्यापी - भा. प्र

सुश्रुतोक्त गुण -

1) व्यवायी - व्यवायी च अखिलं देह व्याप्य पाकाय कल्पते । - सुश्रुत

पूर्वं व्याप्याखिलं कायम ततः पाकं च गच्छति ।

व्यवायी तद् यथा भंगा फेनाणचाहिसमुद्भवम् ॥ - शारंगधर

शरीर मे प्रविष्ट होनेपर पाक होने के पूर्व ही शरीर मे शोषित होकर व्याप्त हो जाता है । उदा. अहिफेन एवं भंगा

2) विकसी - विकासी विकसन्नेव धातुं सन्धिबन्धान् विमोक्षयेत् ।

सन्धिबन्धांश्च शिथिलान् करोति हि विकासि तत् ।

विशिलिष्ठोजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्रवौ ॥

सर्व शरीर मे व्याप्त होकर ओज को क्षीण कर धातुओ मे एवं सन्धियो मे शैथिल्य उत्पन्न कर दे। क्रमुक एवं कोद्रव

- 3) सुगन्धि – सुखानुबन्धी सूक्ष्मश्च सुगन्धो रोचनो मृदूः ।
- 4) दुर्गन्धि – दर्जन्धो विपरीतोऽस्माद् हुल्लासारुचिकारकः ।
- 5) आशुकारी – आशुकारी तथा आशुत्वात् धावति अभसि तैलवत् ।

परादी गुण

- 1) परत्व – पतत्वं प्रधानम् । चक्रदत्त
परत्वं सन्निकृष्टत्वम् । – वै.द.
- 2) अपरत्वम् – अपरत्वम् अप्रधानम् । – च.
अपरत्वम् विप्रकृष्टत्वम्
- 3) युक्ति – युक्तिश्च योजना या तु युज्यते । – च.सू. 26
बुधिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान् ।
युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यथा ॥ च.
- 4) संख्या – संख्या स्याद् गणितम् । च.
गणितं गणनाव्यवहारहेतुरेकिद्वन्द्वादिसंख्या । – यो.
- 5) संयोग – संयोगः पुनः द्वयोः बहुनां वा द्रव्यानां संहतिभावः ।
दो या अधिक द्रव्यो का उनके संहतीभाव में मेलन होना संयोग है ।
योगः सह संयोग उच्यते । च.सू. 26
प्रकार – 3 1) एककर्मज – उदा. एकदोषज विकार
2) द्वंद्वकर्मज – उदा. द्वंद्वज विकार
3) सर्वकर्मज – सान्निपातज विकार
द्रव्यानां द्वंद्वसर्वेकर्मजोऽनित्य एव च । ये सर्व संयोग प्रकार अनित्य होते हैं
वैशेषिकोक्त प्रकार – 3 1) अन्यतरकर्मज 2) उभयकर्मज 3) सम्योगज संयोग – अवयव का अवयवी से संबंध
- 6) विभाग – विभागस्तु विभक्तिःस्याद्वियोगो भागशो ग्रहः । च.सू. 26
विभाजन, वियोग एवं संयुक्त द्रव्यसमूह से द्रव्यो को अलग करना ।
– प्राप्तिपूर्विका अप्राप्तिः विभागः । यो.
प्रकार – 3 1) एककर्मज 2) द्वंद्वकर्मज 3) सर्वकर्मज
1) विभक्ति 2) वियोग 3) भागशो ग्रहः
- 7) पृथक्त्व – पृथक्त्वम् असंयोगो वैलक्षण्यम् अनेकता इत्यर्थान्तरम् ।
प्रकार – 3 1) असंयोग – संयोग नहीं होता है
2) वैलक्षण्य – विशिष्ट या विशेष लक्षण होता है
3) अनेकता – एकत्व नहीं होता है
- 8) परिमाणम् – पुनः मानम् । मान प्रमाण
- 9) संस्कार – करणं गुणान्तराधानम् संस्करणमित्यर्थः च.द.
करणं हि स्वाभाविकाणं द्रव्यानां अभिसंस्कारः ।
संस्कारो ही गुणान्तराधानमुच्यते ।
- 10) अभ्यास – भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया । च.सू.

गुण प्राधान्य – वर्णन नागार्जुन द्वारा

- 1) रसाभिभव – गुण रसों को दबा कर अपना कार्य प्रदर्शित करता है।
पटोल व बहुतपंचमूल तिक्त होने परभी उष्ण गुण के कारण वातहर होते हैं
- 2) रसानुग्रह – गुण से अनुग्रहीत होने से रसों के कर्म में उत्कर्ष होता है।
घृत शीत स्निग्ध मृदू पिच्छील गुणों के कारण मधुर रस के साथ श्रेष्ठ है
- 3) विपापकारणत्व – द्रव्यों का विपाक गुणों पर निर्भर है
शीत गुरु स्निग्ध गुणों के कारण गुरु विपाक होता है
- 4) संख्याबाहुल्य – गुणों की संख्या रसों से अधिक है।
- 5) प्रयोगबाहुल्य – शीत उष्ण स्निग्धादी गुणों का उपयोग अभ्यंग परीषेक अवगाह आदि अनेक रूप से होता है
रस का उपयोग केवल मिख सेही होता है
- 6) कर्मबाहुल्य – रसादी के साथ गुण अनेक प्रकार के कर्म अरने में समर्थ होता है।
- 7) विषय बाहुल्य – गुणों के विषय द्रव्य अनेक होने से गुण प्रधान हैं।
- 8) उपदेश – संहिताओं में गुणों का प्राधान्य रूप से निर्देश किया जाता है यथा गुरु स्निग्ध गुण वातहर होते हैं
- 9) अपदेश – गुण से ही द्रव्य का परिचय दिया जाता है। यथा यह पुरुष तीक्ष्ण है
- 10) अनुमान – कारण से कार्य अनुमान होता है। शीत उष्णादी गुणों से पित्तज्वर वातज्वर कार्य अनुमान किया जाता है

निरुक्ति – रस्यत आस्वाद्यत इति रसः च द.
रसनार्थो रसः । – च.सू. 26

रस एवं अनुरस भेद – रस

व्यक्त

शुष्कावस्था में स्थायी

आदि में प्रतीत

अनुरस

अव्यक्त या इष्टत व्यक्त

शुष्कावस्था में अस्थायी

प्रधान रस के अन्त में प्रतीत

रस	महाभूताधिक्य	उत्पत्तीकारक ऋतु
मधुर	पृथ्वी + जल	हेमंत
अम्ल	पृथ्वी + अग्नि (चरक व वाग्भट) जल + अग्नि (सुश्रुत)	अम्ल
लवण	जल + अग्नि (चरक व वाग्भट) पृथ्वी + अग्नि (सुश्रुत) अग्नि + जल (नागार्जुन)	शरद
कटू	वायु + अग्नि	ग्रीष्म
तिक्त	वायु + आकाश	शिशिर
कषाय	वायु + पृथ्वी	वसंत

रस रूपांतर के कारण – 1) कालस्थिती 2) पात्रस्थिती 3) संयोग 4) पाक 5) आतप 6) भावना 7) देश 8) काल 9) परिणाम 10) उपसर्ग 11) विक्रिया .

रस वर्गीकरण – अग्नेय रस – कटू अम्ल लवण

सोम्य रस – मधुर तिक्त कषाय

रस	गुण		गुण	रस
मधुर	स्निग्ध शीत गुरु		स्निग्ध	मधुर अम्ल लवण
अम्ल	स्निग्ध उष्ण लघु		रुक्ष	कटू तिक्त कषाय
लवण	स्निग्ध उष्ण नात्यर्थ गुरु		शीत	मधुर तिक्त कषाय
कटू	रुक्ष उष्ण लघु		उष्ण	कटू अम्ल लवण
तिक्त	रुक्ष शीत लघु		गुरु	मधुर कषाय लवण
कषाय	रुक्ष शीत अलघु		लघु	तिक्त कटू अम्ल

गुण	उत्तम	मध्यम	अवर
रुक्ष	कषाय	कटू	तिक्त
स्निग्ध	मधुर	अम्ल	लवण
उष्ण	लवण	अम्ल	कटू
शीत	कषाय	मधुर	तिक्त
गुरु	मधुर	कषाय	लवण
लघुअ	तिक्त	कटू	अम्ल

औषध मेरसो का ऋग –

वातज रोग – लवण – अम्ल – मधुर

पित्तज रोग – तिक्त – मधुर – कषाय

कफज रोग – कटू – तिक्त – कषाय

आहार मेरसोपयोग ऋग –

प्रथम – मधुर

मध्ये – अम्ल लवण

अंत मे – कटू तिक्त कषाय

रसप्राधान्य

- 1) अधिकार – चिकित्सा मेरसो आधार पर वर्णन है
- 2) उपदेश – शास्त्र द्वारा रसो के द्वारा ही उपदेश है
- 3) अनुमान – रस के द्वारा द्रव्य के कार्य का अनुमान किया है
- 4) आगम – शास्त्रो मेरद्रव्यो का निर्देश रसवाचक शब्दो द्वारा किया है
- 5) उपसंहार – मधुरस्कंध अम्लस्कंध आदि उपसंहार रसो के आधार पर है
- 6) व्यापत्तिनिमित्तता – रस विकृत होने पर द्रव्य भी विकृत हो जाता है
- 7) अपदेश – रस द्रव्य की विशेषता का निर्दर्शक होता है यथा मधुर वाणी कटू सर्प आदि
- 8) अनेकविषयत्व – रस के विषयभूत द्रव्य अनेक होते हैं, यथा मधुर रस के इक्षु, शर्करा, गुड इ.
- 9) प्रवृत्तिनिमित्तता – आहारद्रव्यो मेरुचि उत्पन्न करने तथा प्रवृत्ति उत्पन्न करणे के कारण रस प्रधान है
- 10) आशुकारीत्व – रस का कर्म जिव्हा के साथ संयोग से ही तुरंत उत्पन्न होता है
- 11) गुण व्यपदेश – मधुर द्रव्य का उल्लेख केवल मधुर रस नहीं बल्कि गुरु स्निग्ध गुणयुक्त मधुर ऐसे होता है

कर्म

परिभाषा-

संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमात्रितम् ।
कर्तव्यस्य क्रिया कर्म, कर्म नान्यदपेक्षते ॥ च. सू. 1

- क्रियालक्षणं कर्म । र.वै.सू.
- यत् कुर्वन्ति तत् कर्म । च.सू. 26
- कर्तव्यस्य क्रिया कर्म । च.सू. 1
- प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते । च.सू. 1

प्रकार -

कर्म पञ्चविधं उक्तं वमनादि । च.सू. 26

कारीकावलीनुसार – 5 उत्क्षेपण अपक्षेपण आकुंचन प्रसारण गमन

शारंगधरोक्त कर्म परिभाषा

1) दीपन –

पचेन्नामं वह्निकृच्च दीपनं तद यथा मिशी ।

जो द्रव्य केवल दीपन करता है परंतु पाचन नहीं करता है उसे दीपन कहते हैं उदा मिश्रेया

2) पाचन –

पचत्यामं न वह्नि च कुर्यात्तथि पाचनम् ।

नागकेशरवट् विदयाद् चिनोदीपनपाचनः ।

जो द्रव्य केवल पाचन करता है; अग्निदीपन नहीं करता है, उदा. नागकेशर
चिन्नक यह द्रव्य दोनों याने दीपन एवं पाचन कर्म करता है ।

3) रेचन –

विपक्वं यदपक्वं वा मलादी द्रवताम नयेत् ।

रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ॥

विपक्व या अपक्व मल को द्रवता लानेवाल द्रव्य । उदा. त्रिवृत

पित्तरेचक –(cholagogue purgative) – यकृत एवं ग्रहणी पर रेचक क्रिया होकर पित्त की अधिक मात्रा पुरीष के साथ बाहर निकलती है उदा, पारद एलुआ, रेवंदचिनी, कुटकी

4) अनुलोमन –

कृत्वा पाकं मलानां यद भित्वा बंधं अधो नयेत् ।

तच्च अनुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी ॥

मल का पाक करने के बाद बंध भेदन कर मल अथ मार्ग मे ले जानेवाला द्रव्य उदा. हरीतकी

5) स्त्रंसन

पक्वं यद् अपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम् ।

नयत्यथः स्त्रंसनं तदयथा स्यात् कृतमालकः ॥

पक्व या अपक्व, कोष्ठ मे श्लिष्ट (चिपके) हुए मल को अथ भाग नयन किया जाता है उदा. आरग्वध

6) भेदन –

मलादिकं मबधं च बधं वा पिण्डितं मलः ।

भित्वाऽधः पातयति तदभेदनं कटुकी यथा ॥

अबधं , अबधं एवं पिण्डित मल का भेदन कर अध पातन करने वाल द्रव्य . उदा. कुटकी

7) ग्राही –

दीपनं पाचनं यद् स्यादुष्णत्वाद् द्रवशोषकम् ।

ग्राही तच्च यथा शुष्ठी जीरकं गजपिप्पली ॥

दीपन पाचन एवं उष्ण गुण से द्रवांश का शोषण करते है उन्हे ग्राही कहते है । यह प्रायः कटू रस कटू विषकी एवं उष्ण वीर्य के होते है । उदा. शुष्ठी जीरक गजपिप्पली

आढमल्ल नुसार यह दो प्रकार के होते है 1) उष्णग्राही (आमग्राही) अतिसार आमावस्था मे प्रयोग

2) शीतग्राही (पक्वग्राही) – अतिसार निरामावस्था मे प्रयोग .

नागार्जुन ने स्तंभन को सांग्राहीक लिखा है उसमे वायु एवं पृथ्वी की अधिकता मानी है ।

सुश्रुत ने भी उसे सांग्राहीक माना है पर उसमे वायु महाभूत प्रधान माना है ।

8) स्तंभन –

रौक्ष्यात् शैत्यात् कषायन्वात् लघुपाकात् च यद् भवेत् ।

वातकृत् स्तंभनं तत् स्यादयथा वत्सकटुण्टुकौ ॥

- जो द्रव्य रूक्ष कषाय एवं शीत होते है, इनके कारण द्रवांश का शोषण करते है
- जो द्रव्य लघुपाकी (कटूपाकी) होते है
- आंत्र मे वात की वृद्धी करते है
- उदा वत्सक (कूटज) व टुण्टुक

9) संशोधन –

स्थानाद्विर्नयेद् उर्ध्वं अधश्च मत्संचयम् ।

देहसंशोधनं तत् स्याद् देवदाली फलं यथा ॥

10) रसायन –

रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्ञराक्याधीविनाशनम् ।

यथा अमृता रूदन्ती गुगुलुश्च हरीतकी ॥

11) वाजीकरण –

यस्माद् द्रव्यात् भवेत् स्त्रीषु हर्षो वाजीकरणं च यत् ।

यथा नागबलादयाः स्युर्बाजम च कपिकच्छुजम् ॥

12) शुक्रल –

यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः साच्छुक्रलं तदुच्यते ।

यथाऽश्वगंधा मुसली शर्करा च शतावरी ॥

13) शुक्रस्तंभनादी –

प्रवर्तनी स्त्री शुक्रस्य रेचनम् बृहतीफलम् ।

जातीफलं स्तंभकं च शोषणी च हरीतकी ॥

14) वृष्ण प्रकार - 3 (चक्रपाणीकृत)

शुक्रस्त्रुतिकरं किंचित् किञ्चिच्छुक्रविवर्धनं ।
स्त्रुतिवृद्धिकरं किंचित् त्रिविधं वृष्णमुच्यते ॥ चक्रपाणी

डल्हणकृत प्रकार - तत् त्रिविधं जनकं प्रवर्तकं जनकप्रवर्तकं चेति ।

- 1) जनक - केवलं देहबलकरं जनकं गोधूमादिकं
- 2) प्रवर्तक - केवलमनोबलकरं संकल्पादी तु प्रवर्तकम् ।
- 3) जनकप्रवर्तक - घृतक्षीरादी देहमनोबलकरं स उभयकरमिति

15) प्रमाथी -

नीजवीर्येण यद् द्रव्यं स्त्रोतोभ्यः दोषसंचयम् ।

नीरस्यति प्रमाथी स्यात् तदयथा मरिचं वचा ॥

जो द्रव्य अपने वीर्य से स्त्रोतो के मल को प्रमथन करके बाहर निकाल दे उसे प्रमाथी कहते हैं उदा मरीच वचा.

16) अभिष्यंदी -

ऐच्छिल्याद् गौरवाद् द्रव्यं रूध्वा रसवहा सिराः।

धत्ते यद् गौरवं तत् स्यादभिष्यन्ति यथा दधि ॥

जो द्रव्य पिच्छिल एवं गुरु गुण से रसवह सिराओं का अवरोध करता है उसे अभिष्यंदी कहते हैं।



मिस्त्रक गण

गण	घटक द्रव्यं	गुणकर्म
बृहतपंचमूल	बिल्व अनिमंथ श्योनाक पाटला काश्मरी	तिक मधुरानुरस लघु दीपन कफवात्थन
लघुपंचमूल पंचगण(राजनिधंटु)	त्रिकंटक(गोक्षुर), बृहतीद्वय, पृथकपर्णी, विदारीगंधा	कषायतिकमधुर, वातपित्तघ्न, बृहण, ग्राही ज्वरहर, श्वासहर अश्मरीभेदन
कंठकपंचमूल	करमर्द, त्रिकंटक सैरेयक शतावरी गृध्रजखी	रक्तपित्तहर शोफत्रयविनाशन सर्वमेहहर
वल्लीपंचमूल	विदारी सारीवा रजनी(मंजिष्ठा) मुदूचि अजशृंगी	शुक्रदोषविनाशन
तृणपंहमूल	कुश काश नल दर्भ काण्डेक्षु	मूत्रदोषविकार रक्तपित्त पित्तशामक
मध्यमपंचमूल	बला पुनर्नवा एंड शूर्पपर्णीद्वय (मुदग वा माषपर्णी)	कफवात्थन नातिपित्तघ्न
जीवनीयपंचमूल	अभीरु (शतावरी), वीरा (काकोली) जीवंती, जीवक ऋषभक	चक्षुष्य वृष्ण पित्तानिलापह
पंचवल्कल /पंचक्षीरीवृक्ष	वट उदुम्बर अश्वत्थ पारीष प्लक्ष राजनिधंटु पारीष के स्थान पर वेतस	कषाय रसात्मक स्तंभन
पंचशूरण	अत्यम्लपर्णी काण्डीर मालाकन्द द्वीशूरण(वन्य ग्रास्य)	यकृदविकार अर्श
त्रिकंटक	बृहती कंटकारी धन्वयास	
त्रिवल्कल	पूतिक कृष्णगंधा तिल्वक	विरेचक
क्षीरत्रय (र.त.)	अर्क वट सुही	मारणादी मे प्रयुक्त
पंचपल्लव	आम्र जम्बु कपित्थ बीजपूरक बिल्व	गंधकमर्थ

चतुर्बीज	मेथिका चंद्रशूर कालाजाजी यवानिका	अजीर्ण शूल आध्मान पार्श्वशूल कटीव्यथा पवनामयम्
त्रिफला	हरीतकी बिभितकी आमलकी. प्रमाण - भाष्प- सम शारंघर- 1 हरीतकी(2 कर्ष) 2 बिभितकी(1कर्ष) 3 आमलकी (अर्ध कर्ष)	कफपित्तधी चक्षुष्य मेहकुष्ठहर सर दीपन रुच्य विषमज्वरनाशन
आदयपुष्प	चंदन हीबेर केशर	
स्वल्प त्रिफला	गंभारी खर्जुर फालसा	पित्तशमन
सुगंधी त्रिपला	जातीफल पूगफल लवंगफल	मुखदौर्गंध्य नाशन
मधुरत्रय	शर्करा मधु धृत तरंगीणी – शर्करा एवजी गुड	
त्रिशर्करा	गुड मधु हिम	
त्रिकटू/कटुत्रिक/व्योष/त्र्यूषण	शुंठी मरीच पिप्पली	दीपन श्वास क्रास त्वगामय गुल्म मेह कफ स्थौल्य मेद इलीपद पीनस नाशन
चतुरुष्णण	त्रिकटू+पिप्पलीमूल	
कटूचातुर्जाति	एला त्वक(दालचिनी) तेजपत्र मरीच	
पचकोल.	पिप्पली पिप्पलीमूल चबा चित्रक नागर. कोल-	तीक्ष्ण कटूरसविपाकी, कफवातधन
पंचोषण	पिप्पली पर्याय, कोल(आधा कर्ष) परिमाण मे.	पित्तकर गुल्मप्लीह आनाहोदरशूलधन
षडूषण	पंचकोल + मरीच	रुक्ष उष्ण विषापहम्
पंचतिक	गुडूचि निम्बमूलत्वक वासा कंटकारी पटोलपत्र	
त्रिजातक	त्वक एला तेजपत्र	
चातुर्जाति	त्रिजात+नागकेशर	गृचन तीक्ष्णोष्ज मुखगंधहृत लघु दीपन वर्ध्य विषधन दीपन वातकफधन पित्तकर
पंचसुगंधिक	कर्पुर कंकोल लवंग पूग जातीफल	
समन्त्रितय	हरीतकी शुंठी गुड समभाग	
त्रिकार्षिक	शुंठी अतिविषा मुस्ता प्रत्येकी 1 कर्ष	
चानुर्भद्र	त्रिकार्षिक + गुडूचि	
त्रिमद	विडंग मुस्ता चित्रक	
क्षारद्वय	सज्जीक्षार यवक्षार	
क्षारत्रय	क्षारद्वय +टंकण	
क्षारपंचक	यव मुष्कक सर्ज पलाश तील	
क्षारषट्क	धव अपामार्ग कुटज लांगली तिल मुष्कक	
क्षाराष्ट्रक	पलाश वज्री शिखरी चिंचा अर्क तिल +क्षारद्वय	
महापंचविष (रा.)	शृंगिक कालकूट मुस्तक वत्सनाभ सकुक	
उपविष (रा.)	अर्कक्षीर स्नुहीक्षीर लांगली करवीर गुंजा अहिफेन धन्तुर	
पण्चामृत (रा.)	गुडूचि गोक्षुर मुशली मुंडी शतावरी	
पण्चामृत(र.त.)	गोदुग्ध गोदधि गोधृत मधु शर्करा	रसकर्मप्रसाधक
पित्तपंचक (रसार्व)	मत्स्य गो अश्व नर बर्हि इनका पित्त	
पंचमृतिका	इषिटिकाचूर्ण भस्म वल्मिकमृतिका गैरिक लवण	
उपधातु	सुवर्ण रजत तुथ कास्य रिति सिन्दुर शिलाजतु	

द्रव्यसंग्रहण

चरक	संग्रहण	सुश्रुत	संग्रहण
वनस्पती अंग		वनस्पती अंग	
शाखा	वृष्टि वसंत		
पत्र (पलाश)	वर्षा वसंत	पत्र	वर्षा
मूल	ग्रीष्म या शिशीर	मूल	प्रावृट्
त्वक	शरद	त्वक	शरद
कन्द	शरद		
क्षीर	शरद	क्षीर	हेमंत
विसार	हेमंत	सार	वसन्त
पुष्प फल	यथऋतू	फल	ग्रीष्म

राजनिधंटुनुसार संग्रहण – कन्द – हेमंत मूल – शिशीर, पुष्प – वसंत पत्र- ग्रीष्म पंचांग – शरद

वीर्यानुसार द्रव्यसंग्रहण – सुश्रुत

सोम्य औषधी – सोम्य ऋतु (विसर्ग काल) एवं सोम्य भूमी से

आग्नेय औषधी – अग्नेय ऋतु (आटान काल) आग्नेय भूमी से ग्रहण

शारंग्धरानुसार संग्रहण

शरदि अखिलकार्यार्थं ग्राह्यं सरसमौषधम् । विरेकवमनार्थं च वसन्तान्ते समाहरेत ॥

आहारद्रव्य संग्रहण –

फलेषु परिपक्वं यदगुणवत्तदाहृतम् । बिल्वादन्यत्र विज्ञेयमामं तद्वि गुणोत्तरम् ॥ भाष्म
द्राक्षा हरीतकी बिल्व फल शुष्क ग्राह्य

शाक – शुष्क निषेध अपवाद – मूलक

धान्य – समातीतं (1 वर्ष पुराण)

जांगम द्रव्य संग्रहण

जांगम प्राणी रक्त रोम नख – प्रोढावस्था मे ग्रहण

क्षीरमूत्र पुरीष – उनका आहार जीर्ण होने पर ग्रहण

TIERRA

द्रव्यगुण - 1

द्रव्य परिभाषा -

- 1) यत्राश्रितः कर्मगुणः कारणं समवायि यद् तद् द्रव्यम् । च.सू. 1
- 2) क्रियागुणवत् समवायि कारणं द्रव्यम् । सु.सू. 40
- 3) द्रव्यं आश्रयलक्षणं पंचानाम् । नागार्जुन (र.वै.)
- 4) रसादीनां पण्चानां भूतानां यदाश्रयभूतं तद् द्रव्यम् । भा.

द्रव्य पांचभौतिकत्व संदर्भ में सिद्धांत -

- 1) चरकानुसार - अन्योन्यप्रवेश
- 2) वेदांत - पंचीकरण

द्रव्य प्राधान्य युक्ती - सुश्रुत = 9 नागार्जुन = अधिक 3

- 1) व्यवस्थितत्वात् - द्रव्य स्थिर रहता है परंतु रस गुणादी अस्थिर रहते हैं ।
- 2) नित्यत्वात् - द्रव्य नित्य होता है; रसादी अनित्य होते हैं । कालप्रभाव से रस विपन्न वा व्यापन्न रस होते हैं ।
- 3) स्वजाती अवस्थानत्व - परीणाम होनेपरभी द्रव्य अपनी पार्थीवादी विशिष्ट जाती में ही रहता है किंतु रसादी परिवर्तीत होनेपर अपनी जाती का भी त्याग कर देते हैं । उदा: तरुणावस्था में मधुर रस पार्थीवाय रहता है तथा कालान्त में अम्ल पार्थीवाग्नेय हो जाता है ।
- 4) पचोदिव्यग्रहण - पांचभौतिक होने के कारण सभी द्रव्यों का ग्रहण दीर्घशक्तुली न्याय से पांचों इन्द्रियों द्वारा होता है किन्तु रस गंध आदी गुणों का रसना ग्राण आदी इन्द्रियों से होता है ।
- 5) आश्रयत्व - द्रव्य के आश्रय से रस गुण वीर्य आदी रहते हैं; आश्रय देनेवाला आश्रयी से श्रेष्ठ है
- 6) आरम्भसामर्थ्य - चिकित्सा या व्यवहार में आहरण आदी कर्मों का प्रारंभ द्रव्य से ही होता है वह योग्यता रस गुण आदी में नहीं है ।
- 7) शास्त्रप्रामाण्य - शास्त्र में द्रव्य ही प्रधानरूप से निर्दिष्ट है ।
- 8) ऋग्मपेक्षितत्व - रसादी द्रव्य का अनुगमन करते हैं ; अतः उनका ऋग्म द्रव्य के अवस्थाऋग्म पर निर्भर है । द्रव्य तरुण होनेपर उनके रसादी भी तरुण होते हैं, द्रव्य संपत्त युक्त होनेपर रसादी भी संपत्युक्त होते हैं ।
- 9) एकदेशसाध्यत्व - द्रव्य के एकदेश (प्रयोज्यांग) से चिकित्सा की जाती है ; रसादी के एकदेश से चिकित्सा नहीं की जाती है ।

नागार्जुनोक्त अतिरीक्त द्रव्यप्राधान्य युक्तीया -

- 10) तरतमयोग अनुपलब्धी - गुण रस आदी में तर तमता होती है (यथा मधुर मधुरतर मधुरतम) रसो में इस प्रकार तर तमता नहीं होती है ।
 - 11) विकल्प सामर्थ्य - कल्क कषाय आदी कल्पनाए द्रव्य से होती है रस गुण आदी की नहीं ।
 - 12) प्रतिघातसामर्थ्य - द्रव्य मूर्तीमान होने के कारण किसी स्थान पर रखने पर वह स्थान व्याप्त करते हैं (आव्रण सामर्थ्य) रसादी स्थान व्याप्त नहीं करते हैं ।
- उपरोक्त युक्तीयों में प्रधान युक्ती - आश्रयत्व

द्रव्य नामकरण एवं पर्याय

राजनिधंटनुसार पर्याय के आधार - 7

- 1) रुढी - आटरूषक, गुडूची, टुण्डुक, इ.

- 2) प्रभाव – क्रिमिघ्न, हयमार,
- 3) देशोक्ती – मागधी, वैदेही, कलिंग, कैरात,
- 4) लांच्छन – राजीफल, चित्रपर्णी,
- 5) उपमा – शालपर्णी, मेषशंगी, अजकर्ण
- 6) वीर्य – उषण, कटुका, मधुक
- 7) इतराहय – शक्राह, काकाहा

1) स्वरूपबोधक – न्यग्रोध, पुनर्नवा, प्रसारिणी, जटांमांसी

2) अवयवबोधक

पत्र – – त्रिपर्णी, पृश्नीपर्णी, दीर्घवृत्त	पुष्प – शतपुष्पा, नागपुष्प, शतदल
फल – मेषशंगी, आर्वतीनी, पृथुशिंख	बीज – इन्द्रयव, कृष्णबीज
काण्ड – काण्डीर, कालस्कंध, चक्रांगी	मूल – शतमूली, दन्ती, शुक्लकंदा
क्षीर – पयस्या, स्वर्णक्षीरी,	ग्रंथी – षडग्रंथा, ग्रंथीपर्णी
कण्टक – गोक्षुर, तीक्ष्णाकंटक	सार – बहुसार
वल्कल – वल्कदृम	रोम – कपिरोमफला

3) गुणबोधक

शब्द – गुंजा	स्पर्श – दुःस्पर्शा, खरमंजरी
रूप – कान्ता, पीनसार	रस – मधुरसा, तिका, कटुका, अलवणा
गन्ध – गन्धप्रियंग, अश्वंगंधा	अन्यगुण – तीक्ष्णा

4) कर्मबोधक

कर्मबोधक – वातारी, रेचन, वामक, मेध्या, कृमीघ्न

5) उद्धवबोधक

देश – मागधी, कलिंग, चीनाक, धन्वयास	पुष्पकाल – वासन्त, प्रावृषेष्य, ग्रैष्मिकी,
योनी – कृमीजा, मृगनाभी	रोहण – काण्डरूहा, पर्णबीज

अधिष्ठान – जलज, वाष्प

6) उपयोगबोधक – यज्ञार्ह, रथटुम

7) आख्यानबोधक – अमृतसंभवा

8) प्रशस्तीबोधक – भद्रदारू, मंगल्या

द्रव्य वर्गीकरण –

TIERRA

वेदोक्त वर्गीकरण – 4 1) आथर्वणी 2) आंगिरसी 3) दैवी 4) मानुषी

अ) कार्यकारण भेद से –

- 1) कारण द्रव्य – 9 = खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः । च.सू. 1/48
- 2) कार्यद्रव्य – अनेक

ब) चेतन अचेतन भेद से –

- 1) चेतन – 1) बहिरन्तश्चेतन 2) अन्तचेतन
- 2) अचेतन

क) निष्पत्ती भेद (उत्पत्ती) से – 5

- 1) पार्थीव 2) आप्य 3) तैजस 4) वायवीय 5) आकाशीय

ड) योनीभेद से – 3

- 1) जांगम 2) औद्धिद 3) पार्थीव

1) जांगम – प्राणीज = कस्तुरी, गोरोचन दुध घृत आदी

जांगम प्रकार – 4

1) जरायुज – जरायु से उत्पन्न = मनुष्य पशु आदी

2) अंडज – अंडे से उत्पन्न = पक्षी, सर्प आदी

3) स्वेदज – स्वेद से उत्पन्न = कृमी कीट पिपिलिका आदी

4) उद्धिज – भूमी से उद्धेद कर = इंद्रगोप, मंडूक आदी

2) औद्धिद – 4

1) वनस्पति – पुष्प नहीं होते हैं = वट उदुम्बर प्लक्ष आदी

2) वानस्पत्य – पुष्प व फल उभय विद्यमान = आम्र जम्बू आदी

चरकोक्त वानस्पत्य = सुश्रुतोक्त वृक्ष = पुष्पफलवन्तो वृक्षाः । सु.सु.

3) वीरूध – प्रतानैर्वीरूधः स्मृतः ।

4) औषधी – औषध्यः फलपाकान्ता

3) पार्थीव (भोम) – भूमी से प्राप्त

1) प्राकृत

2) कृत्रिम

इ) प्रयोग भेद से –

1) औषध द्रव्य – वीर्यप्रधान होते हैं

2) आहार द्रव्य – रसप्रधान होते हैं

1) औषध द्रव्य प्रकार – 3 (चक्रपाणीनुसार)

1) मृदू वीर्य – अमलकी आदी – एक पल मात्रा

2) मध्य वीर्य – बिल्व आदी – अर्धा पल मात्रा

3) तीक्ष्ण वीर्य – शुण्ठी आदी – एक कर्ष मात्रा

ई) रस भेद से – 6 मधुर अम्ल लवण कटू तिक्त कषाय आदी स्कंध

च) विपाक भेद से – 3 मधुर अम्ल कटू विपाक व सुश्रुतानुसार गुरु व लघु विपाक

छ) वीर्य भेद से – 2 उष्ण वीर्य व शीत वीर्य

ज) दोषकर्मभेद से – 3 शमन कोपन स्वस्थहित

1) शमन – वातशमन पित्तशमन कफशमन

2) कोपन – वातकोपन पित्तकोपन कफकोपन

3) स्वस्थहित – रक्तशाली, अन्तरिक्ष जल, सैन्धव जीवन्तीशाक इ.

द्रव्यों का रचनात्मक वर्गीकरण –

अ) चरकोक्त आहार वर्ग – 12

1) शूक्रधान्य – शाली यव गोधूम आदी

2) शमीधान्य – मुदग, माष कुलत्थ आदी

3) मांस – 8 उपवर्ग – प्रसह, भूमीशय, आनूप आदी

4) शाक – वास्तुक उपोदिका तण्डुलीयक आदी पत्र कन्द फलाश्रय शाक

5) फल – मृद्धिका परूषक नारिकेल

6) हरित – आर्द्धक, मूली, निम्बुक आदी जिनका हरीत अवस्था में उपयोग किया जाता है

- 7) मदय – अरिष्ट आसव सुरा आदी
- 8) जल – लिव्य, भोम आदी
- 9) गोरस – गव्य माहिष आदी दुग्ध
- 10) इक्षु – इक्षुरस, गुड शर्कर आदी
- 11) कृतान्न – मण्ड, पेया सकु आदी
- 12) आहारयोगी – तैल, लवण हिंगु आदी

चरक ने गण वर्गीकरण – सूत्रस्थान 4 मे – कर्मानुसार वर्गीकरण

अग्रय प्रकरण मे 152 द्रव्यों का वर्णन

ब) सुश्रुतोक्त वर्ग

दो अध्यायो मे वर्णन – सू. 45 – द्रवद्रव्यविधि सू. 46 – अन्नपानविधि
 सूत्रस्थान 38 वे अध्याय मे 17 गणो का वर्णन, गण नामकरण – प्रथम द्रव्य का नाम दिया है
 गणोक्त द्रव्य संख्या अनिश्चित है। त्रिफला, त्रिकटू, पंचमूल दशमूल आदी मिश्रक गणो का
 सर्वप्रथम उल्लेख सुश्रुत मे ही मिलता है।

1) द्रव द्रव्य – 10

जलवर्ग क्षीरवर्ग दधिवर्ग तक्रवर्ग घृतवर्ग तैलवर्ग मधुवर्ग इक्षुवर्ग मदयवर्ग मूत्रवर्ग

2) अन्नद्रव्य – 13

शालीवर्ग कुधान्य वैदल मांसवर्ग फलवर्ग शाकवर्ग पुष्पवर्ग कन्दवर्ग लवणवर्ग
 क्षारवर्ग धातुवर्ग रलवर्ग कृतन्नवर्ग

क) अष्टांगसंग्रह –

1) द्रवद्रव्य – 6 वर्ग

2) अन्नद्रव्य – 6 वर्ग

सुश्रुत के अतिरिक्त त्रिजातक चातुर्जातिक पंचकोल, मध्यम पंचमूल जीवनीय पंचमूल इनका वर्णन है।

अग्रय प्रकरण मे 155 द्रव्यो का उल्लेख है

ड) अष्टांगहुदय –

1) द्रवद्रव्य – 5 वर्ग

2) अन्नद्रव्य – 7 वर्ग

शोधनादीगणसंग्रह अध्याय मे – 33 गणो का वर्णन जिनमे केवल जीवनीय गण चरक का है; बाकी
 सब गण सुश्रुत के हैं।

इ) धन्वन्तरी निघंटु –

7 वर्ग – गुडूच्यादी, शतपुष्पादी, चन्दनादी, करवीरादी, आम्रादी, सुवर्णादी, मिश्रकादी

ई) मदनपाल निघंटु –

13 वर्ग – अभयादी वर्ग, शुण्ठयादी वर्ग, कर्पूरादी वर्ग, सुवर्णादी वर्ग, वटादी वर्ग, फलादी वर्ग, शाक वर्ग

पानीयादी वर्ग, इक्षुकादी वर्ग, धान्यगुण वर्ग, धान्यकृतान्नादी वर्ग, मांसवर्ग, मिश्रक वर्ग

फ) राजनिघंटु – (अभिधानचूडामणि)

23 वर्ग – गुडूच्यादी, शतव्हादी, पर्षटादी, पिष्पल्यादी, मूलकादी, शाल्मल्यादी, पभद्रादी, करवीरादी, आम्रादी

चन्दनादी, सुवर्णादी, पानीयादी, क्षीरादी, शाल्यादी, मांसादी, मिश्रकादी

ग) कैयदेव निघंटू – पर्याय – पथ्यापथ्य विबोधक

9 वर्ग = औषधी वर्ग, धातुवर्ग, धान्यवर्ग, द्रववर्ग, पक्वान्नवर्ग, मांसवर्ग, विहार वर्ग, नानार्थवर्ग मिश्रक वर्ग
आहार के अतिरिक्त विहार के लिए – विहार वर्ग व पर्यायों के लिए नानार्थ वर्ग योजना
पथ्यापथ्यपरक ग्रंथ होने के कारण आहार विहार का विस्तार से उल्लेख किया है।

च) भावप्रकाश निघंटू –

22 वर्ग – हरीतक्यादी वर्ग, कर्पूरादी वर्ग, गुडूच्यादी वर्ग, पुष्टवर्ग, फलवर्ग, वटादी वर्ग, धातुवर्ग, धान्यवर्ग
शाकवर्ग, वारिवर्ग, दुग्धवर्ग, दधिवर्ग, तक्रवर्ग, नवनीतवर्ग, घृतवर्ग, मूत्रवर्ग, तैलवर्ग, मधुवर्ग
इक्षुवर्ग, सन्धानवर्ग, मांसवर्ग,

हरीतक्यादी वर्ग में जिनका फल या कन्द औषधों में प्रयुक्त होता है उनका वर्णन है।

कर्पूरादी वर्ग में गन्ध द्रव्यों का वर्णन है। गुडूच्यादी वर्ग में इनका वर्णन है जिनका पंचांग या मूल प्रयुक्त किया जाता है। वटादी वर्ग में बड़े वृक्ष जिनका वल्कल प्रयुक्त किया जाता है।

द्रव्य का आधुनिक रचनात्मक वर्गीकरण-

अ) उदभव भेद से – 4

- 1) स्थलज – स्थल में उत्पन्न। उदा. हरीतकी, बिभित्की
- 2) जलज – जलीय स्थान में उत्पन्न। उदा. कमल, जलकुंभी
- 3) वृक्षरूह – वृक्ष पर आरोहण कर जिविका। जीवन्ती, गुडूची
- 4) वृक्षादन – वृक्ष पर उपजिविका करते हैं। उद. बन्दाक

ब) आयुभेद से – 4

- 1) वृक्ष – इनकी उचाइ 15 से 100 फीट तक होती है। इसके 3 उपभेद होते हैं
 - 1) महावृक्ष – उचाइ 50 फीट से अधिक होती है। उदा. देवदारु
 - 2) वृक्ष – उचाइ 40 से 50 फीट होती है। उदा. आम्र जम्बु
 - 3) वृक्षक – उचाइ 15 से 20 फीट होती है। उदा. पपीता
- 2) गुल्म – एक मूल से अनेक काण्ड निकलते हैं। अर्क दन्ती आदी
- 3) क्षुप – इसकी उचाइ 2 – 3 से 5 – 6 फीट होती है। 2 – 3 से कम = क्षुपक
- 4) लता – काण्ड दुर्बल होने के कारण स्वयं स्थिर नहीं रह सकती। 4 प्रकार
 - 1) प्रसर – काण्ड या शाखा भूमी पर फैलते हैं उदा; कंटकारी
 - 2) वल्ली – वृक्ष आदी के आश्रय से रहते हैं। दो प्रकार
 - अ) दक्षिणावर्तिनी – गुडूची, विदारी
 - ब) वामावर्तिनी – उत्तमारणी, अमृतस्रवा
- 5) आरोहिणी – वृक्ष को बिना लपेटे सामान्य रूप से ऊपर चढ़ती है। प्रकार 4
 - अ) मूलारोहिणी – पान
 - ब) सूत्रारोहिणी – कुषांड. कारबेल्लक
 - क) बडिशारोहिणी – वेत
 - ड) पत्रारोहिणी – कलिहारी
- 6) प्रतानिनी – प्रतानो द्वारा वृक्ष शिखर पर फैलती है। उदा माधवी

- 7) कुलभेद से – विभाग (Division) - उपविभाग (Sub division)
श्रेणी (Class) - उपश्रेणी (Sub class)
गण (Order) –
कुल (Family) – प्रजाती (Genus) – जाती (Species)

आधुनिक रचनात्मक वर्गीकरण –

- 1) निद्राजनन – मदय, अहिफेन, विजया, सूची, सर्पगंधा, अलाबु, वाताद, अकरकरा
- 2) आक्षेपजनन – कुपिलु
- 3) आक्षणशमन – उल्सलीब, अम्बर, कस्तुरी, जुन्डबेदस्तर, भूर्ज
- 4) रोमसंजनन – लंका, हस्तीदंत, रसांजन
- 5) रोमशातन – हरताल
- 6) हुदयावसादक – वत्सनाभ, हुत्पत्री, कुपिलु, अहिफेन,
- 7) हुदयोत्तेजक – तम्बाकु, सूची, सोम, पारसीक यवानी
- 8) रक्तभारवर्धक – कुपिलु, हुत्पत्री, कर्पुर, मदय
- 9) रक्तभारशामक – सर्पगंधा, शंखपुष्पी, भृंगराज
- 10) गर्भरोधक – पिप्ली, बिंडंग, टंकण, कम्पिल्लक, गुंजा
- 11) शुक्रस्तंभक – जातीफल, अहिफेन, आकारकारभ
- 12) कृमीघ्न –
 - 1) गण्डूपदकृमीघ्न – चौहार, पलाशबीज, विंगंग, पारीभद्र, इन्द्रयव
 - 2) सफीतकृमी – कम्पिल्लक, पूग, दाढ़िमत्तक
 - 3) तन्तुकृमी – किराततिक, नीम
 - 4) अंकुशकृमी – यवानीसत्त्व, भल्लातक तैल
 - 5) श्लीपदकृमी – शाखोटक
 - 6) स्नायुक कृमी – निर्गुडी, शिगृ

विपाक –

निरूक्ती – विशिष्ट: जरणनिष्ठाकाले रसविशेषस्य पाकः प्रादुर्भावः विपाकः ।

अवस्थापाक	विपाक
आवस्थिक परिणाम	चरम परिणाम
क्रफपितयोः वृद्धीः	मलरूपतया दोष उत्पाद
प्रत्यक्षगम्य	अनुमानगम्य
मलभूत दोष उत्पत्ती	धातुरूप दोष उत्पत्ती

द्रव्यपाचन में अग्नि व्यापार ऋम = जाठराग्नि – भूताग्नि – धात्वाग्नि

विपाक परिभाषा –

- 1) वाग्भट – जाठरेणाग्निना योगाद् यद् उदेति रसान्तरम् ।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः ॥ अ.हु.सू 9/20
- 2) चक्रपाणी – विपाकस्तु रसमलविवेकसमकालो भिन्नकालः एवावस्थापाकैः समम् इति न विरोधः ।
रसमल विभाजन के समकालीन विपाक होता है ।



- 3) गंगाधर – आदय धातुरस मे गुणस्वरूप होता है।
- 4) नागार्जुन – परिणामलक्षणो विपाकः।
- 5) शिवदाससेन – अवस्थापाकापेक्षया विशिष्टः पाकः विपाकः।

विपाक मतमतांतर –

अ) षडविधविपाकवाद –

- 1) यथारसविपाकवाद – रस के अनुसार विपाक होता है; मधुर रस का मधुर विपाक, अम्ल रस का अम्ल विपाक, लवण रस का लवण विपाक।
- 2) अनियतविपाकवाद – विपाक काल मे प्रबल रस के अनुसार विपाक होता है।
- b) पंचविधविपाकवाद – पंचभूतात्मके देहे आहारः पांचभौतिकः। विपक्वः पंचधा सम्यक् स्वान् गुणान् अभिवर्धयेत्। (सु.सू. 46) इस सुश्रुत के वचन नुसार पंचमहाभूतानुसार पंच विपाक होते हैं।

क) त्रिविधविपाकवाद –

- | | |
|---------------------|---|
| 1) चरक | 1) मधुर विपाक – मधुर व लवण रस का |
| 2) अष्टांगसंग्रह | 2) अम्ल विपाक – अम्ल रस का |
| 3) अष्टांगहुदय | 3) कटू विपाक – कटू तिक्त कषाय रस का |
| 2) पाराशार मतानुसार | 1) मधुर विपाक – मधुर लवण तिक्त कषाय रस का |
| | 2) अम्ल विपाक – अम्ल रस का |
| | 3) कटू विपाक – कटू रस का |

ड) द्विविध विपाकवाद – (गुणविपाकवाद / शूतविपाकवाद)

- | | |
|--------------|---|
| 1) सुश्रुत | 1) गुरु विपाक – पृथकी + आप महाभूतात्मक द्रव्यो का |
| 2) नागार्जुन | 2) लघु विपाक – तेज वायु आकाश महाभूतात्मक द्रव्यो का |
| | 1) गुरु विपाक – शीत स्निग्ध गुरु पिच्छिल गुणो का |
| | 2) लघु विपाक – लघु रुक्ष विशद तीक्ष्ण गुणो का |

त्रिविध व द्विविध विपाकवाद समन्वय –

- 1) गुरु विपाक = मधुर विपाक
- 2) लघु विपाक = लघु विपाक

त्रिविध व द्विविध विपाकवाद का आधार –

- 1) द्विविध विपाकवाद – पंचमहाभूत
- 2) त्रिविध विपाकवाद – त्रिदोष

विपाक कर्म – विपाकः कर्मनिष्ठया।

शुक्रहा बध्दविण्मूत्रो विपाको वातलः कटुः। मधुरः सृष्टविण्मूत्रो विपाकः कफशुक्रलः॥
पित्तकृत सृष्टविन्मूत्रः पाकोऽम्लः शुक्रनाशनः। च.सू. 26/61

विपाक	दोषप्रभाव	धातुप्रभाव	मलप्रभाव
मधुर	वातपित्तध्न, कफकर	शुक्रवर्धक	सृष्टविण्मूत्र
अम्ल	पित्तवर्धक	शुक्रनाशन	सृष्टविण्मूत्र
कटू	कफध्न, वातपित्तवर्धक	शुक्रनाशक	बध्दविण्मूत्र

सुश्रुतोक्त विपाक गुणकर्म –

लघु विपाक	गुरु विपाक
इलेष्मध्न	वातपित्तध्न
बृद्धविष्णुन्तया मारुतकोपेन च	सृष्टविष्णुन्तया कफोत्क्लेशेन च

विपाक तारतम्य (तरतमता) – (गंगाधरानुसार)

- 1) मधुर विपाक मे – मधुर रस का मधुर विपाक – प्रवर
अम्ल रस का मधुर विपाक – मध्यम
लवण रस का मधुर विपाक – अवर
- 2) कटू विपाक मे – कषाय रस का कटू विपाक – प्रवर
कटू रस का कटू विपाक – मध्यम
तिक रस का कटू विपाक – अवर

रस व विपाक भेद

	रस	विपाक
लक्षणभेद	रसनेन्द्रिय ग्राह्य गुण	परिणामलक्षण
कालभेद	रस प्रतिती निपात से होती है	पचन के बाद प्रतिती
कर्मभेद	विशेषतः स्थानिक कर्म	विशेषतः सार्वदेहिक कर्म
कर्माधिष्ठानभेद	शरीर व मन दोनों पर	केवल शरीर पर
अनुमान	प्रत्यक्षगम्य	अनुमानगम्य

विपाक प्राधान्य –

- 1) तन्निमित्तत्वात् प्रशमनवर्धनयोः – विपाक के अधीन दोष प्रशमन व वर्धन होता है
- 2) धातुपदेहात् – शरीर मे धातुनिर्माण विपाक के द्वारा होता है
- 3) सभी आहार व औषध द्रव्य अपने गुण दोष के लिए विपाक की अपेक्षा करते हैं।

वीर्य –

निरूक्ती – ‘वीर विक्रान्तौ कर्म समर्थो भवति इति वीर्यम्।

लक्षण – येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम् । च.सू. 26, सु.सू. 41

वीर्य संबंधी मतमतांतर –

1) गुणवीर्यवाद –

- 1) शक्तीमात्रवीर्यवाद – द्रव्यगत रस विपाक आदी का कर्म जिस शक्ती के द्वारा होता है उस शक्ती ‘वीर्य; कहते हैं।
चरक द्वारा मान्य
- 2) पारिभाषिक वीर्यवाद – द्रव्य मे विद्यमान उत्कृष्ट शक्तिसंपन्न गुण को वीर्य मानते हैं
सुश्रुत व वारभट द्वारा मान्य

2) कर्मवीर्यवाद –

कर्मलक्षण शक्ती को ही वीर्य कहते हैं (कर्मलक्षणं वीर्यं)
नागार्जुन द्वारा मान्य

3) द्रव्यवीर्यवाद –

द्रव्यगत पंचमहाभूतों के सारातिशय रूप अंश को वीर्य संज्ञा प्रदान की है।

शिवदास सेन द्वारा मान्य

आधुनिक विज्ञान नुसार द्रव्य का उत्कृष्टांश (Active principle) वीर्य मानते हैं।

वीर्य संख्या –

- 1) द्विविध वीर्यवादी – 1) शीत वीर्य 2) उष्ण वीर्य

आधार – पांचभौतिक सूक्ष्मी का अग्नि व सोम प्राबल्य

- 2) अष्टवीर्यवादी – बीस गुणों में उत्कृष्ट 8 शक्तीसंपन्न गुणों के वीर्य संज्ञा प्राप्त होती है।

गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध रूक्ष मृदू तीक्ष्ण

सुश्रुत नुसार गुरु व लघु विपाक मानने की वजह से गुरु व लघु के बदले

विशद व पिच्छिल को अष्टविध वीर्य में समाविष्ट किया है।

अष्टविध वीर्यवाद समर्थनार्थ युक्तीया –

1) समग्रगुणसारता – विंशती गुणों में अष्ट गुण सारवान है।

2) शक्त्युत्कर्ष – अन्य गुणों की अपेक्षा इनमें शक्ती का उत्कर्ष होता है।

3) व्यवहारमुख्यता – व्यवहार में गुर्वादी गुणों में इन गुणों का व्यवहार में प्रधानता देखी जाती है।

4). बहुलता – द्रव्यों में अन्य गुणों की अपेक्षाये गुण बहुलता से देखने को मिलते हैं।

5) उपयोगिता – गुर्वादी गुणों में ये अष्ट गुण अधिक उपयोगी हैं।

6) प्रबलता – अन्य गुणों की अपेक्षा ये गुण बलवान हैं।

आचार्य निमी नुसार वीर्य संख्या – 15

- | | | |
|---------------|---------------|---------------|
| 1) अधोभागहर | 2) उधर्वभागहर | 3) उभयतोभागहर |
| 4) सांग्राहिक | 5) संशमन | 6) दीपन |
| 7) जीवनीय | 8) प्राणधन | 9) मादन |
| 10) शितीकरण | 11) शोषकर | 12) शोथधन |
| 13) पाचन | 14) दारण | 15) गोपण |

वीर्य कर्म –

<u>शीत वीर्य</u>	<u>उष्ण वीर्य</u>
प्रल्हादन, विष्वन्दन, स्थिरीकरण, प्रसादन, क्लेदन, जीवन, स्तंभन, कफवातकर, गुरु, बल्य,	दहन, पाचन, मूर्च्छन, स्वेदन, वमन, विरेचन विलयन, वातकफशमन, भ्रम, तृष्णा, ग्लानी लघु, अवृष्टि

वीर्य उपलब्धी –

<u>क्रिया</u>	<u>प्रमाण</u>	<u>उदाहरण</u>
1) निपात	प्रत्यक्ष	मरीच (तीक्ष्ण)
2) अधिवास	अनुमान	आनूपमांस (उष्ण)
3) निपात + अधिवास	प्रत्यक्ष + अनुमान	मरीच (उष्ण)

सुश्रुतानुसार वीर्य ज्ञान –

मृदू शीत उष्ण	स्पर्शग्राहय
पिच्छिल विशद	चक्षु व स्पर्श ग्राह्य
स्निग्ध व रुक्ष	चक्षुग्राहय
तीक्ष्ण	मुखे दुःखोत्पादनात्

वीर्य विपाक व रस संबंधी सामान्य नियम

शीतं वीर्येण यद् द्रव्यं मधुरं रसपाकयोः । तयोरम्लं यदुष्णं च यद् द्रव्यं कटुकं तयोः ॥

तेषां रसोपदेशेन निर्देश्यो गुणसंग्रहः ।

जो द्रव्य मधुर रस व मधुर विपाकी होता है उनका वीर्य शीत होता है । अम्लरस व कटुरस द्रव्य का अम्लरस व कटुरस द्रव्य का वीर्य उष्ण होता है ।

इस नियम मे अपवाद –

द्रव्य	रस	वीर्य
बृहत पंचमूल	कषाय तिक्त	उष्ण
आनूप मांस	मधुर	उष्ण
सैंधव	लवण	शीत
आमलकी	अम्ल	शीत
अर्क अगस्तु गुडूची	तिक्त	उष्ण
धातकी	कषाय	शीत
हरीतकी	कषाय	उष्ण

वीर्य प्राधान्य –

- 1) वीर्यप्राधान्यात् द्रव्याणाम् – चिकित्सा मे वीर्य प्रधान द्रव्यों का ही प्रयोग होता है ।
- 2) कर्मनिष्पत्ति – वीर्य के द्वारा ही औषधों का कर्म होता है
- 3) रसाभिभव – रस आदी का अभिभव (पराभव) कर कर्म होता है
- 4) आगमात् – आगमानुसार वीर्य रसादी से प्रधान बताया है

प्रभाव –

निरुक्ती – प्रभवति सामर्थ्यविशिष्टं भवति द्रव्यं अनेन इति प्रभावः ।

परिभाषा –

- 1) रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्षते ।
विशेषः कर्मणां चैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः ॥ च.सू. 26/
- 2) रसादीसाम्ये यत् कर्म विशिष्टम् तत् प्रभावजम् । अ.स.
रसादी समान होने पर जो विशेष कर्म होता है वह प्रभावजन्य होता है ।
- 3) सर्वतिशायी द्रव्यस्वभावः प्रभावः । अ.सं.

प्रभाव उदाहरण –

दन्तीरसादयैः तुल्यापि चित्रकस्य विरेचनी । मधुकस्य च मृद्धिका घृतं क्षीरस्य दीपनम् ॥ अ.ह.

- 1) दन्ती व चित्रक – कटू कटू उष्ण – नुसार ग्राही कर्म अपेक्षित – = चित्रक = ग्राही
दन्ती – विरेचक = प्रभावजन्य कर्म

- 2) मधुक व मृदिका – मधुर मधुर शीत – नुसार रेचन कर्म अपेक्षित नहीं – मधुक – न रेचन
 क्षीर – रेचक = प्रभावजन्य
- 3) घृत व क्षीर – मधुर मधुर शीत – नुसार दीपन कर्म अपेक्षित नहीं – क्षीर – न दीपन
 घृत – अग्निदीपक = प्रभावजन्य

सुश्रुतानुसार प्रभाव वर्णन –

अमीमांस्यानि अचिन्त्यानि प्रसिध्दानि स्वभावतः । आगमेनोपयोज्यानि भेषजानि विचक्षणे: ॥
 प्रत्यक्षलक्षणफलाः प्रसिध्दानि स्वभावतः । नौषधीभीर्तुभिर्विद्वान् परीक्षेत् कदाचन ॥
 सहस्रेणापि हेतुनां न अम्बष्टादी विरेचयेत् । तस्मात् तिष्ठेत तु मतिमान आगमे न तु हेतुषु ॥ सु.सू.
 सुश्रुत ने प्रभाव का प्रत्यक्ष वर्णन न कर ‘अमीमांस्य व अनवधारणीय’ इन शब्दों में उल्लेख किया है ।
 नागार्जुन – अचिन्त्य व अनवधारणीय इन शब्दों में वर्णन

प्रभावजन्य कर्म –

- 1) औषधीय कर्म – दन्ती आदी का रेचक कर्म
 - 2) अगदीय कर्म – शिरीष आदी का विषध्न कर्म
 - 3) रक्षोधन कर्म – गुगुल, जटांमासी, आदी द्रव्यों का भूतनिवारण कर्म
 - 4) मानस कर्म – वशीकरण आदी
 - 5) भौतिक कर्म – शत्यापकर्षण आदी
- मणीनां धारणीय कर्म

समानप्रत्ययारब्ध – जिन द्रव्य का भौतिक संघटन व रस वीर्य विपाक आदी समान होते हैं

विचीनप्रत्ययारब्ध – जिन द्रव्यों का भौतिक संघटन व रस व वीर्य आदी भिन्न होते हैं

द्रव्य	प्रकार	गुण	कर्म
1) गोधूम	समानप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	वातहर
यव	विचिनप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	वातकर
2) दुग्ध	समानप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	शीतवीर्य
मत्स्य	विचिनप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	उष्णवीर्य
3) शूकर	समानप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	मधुर विपाक
सिंह	विचिनप्रत्ययारब्ध	मधुर गुरु	कटू विपाक
4) घृत	विचिनप्रत्ययारब्ध	शीतवीर्य	दीपन
5) वसा	विचिनप्रत्ययारब्ध	उष्णवीर्य	अग्निसादन
6) मुदग	विचिनप्रत्ययारब्ध	कटू विपाक	पित्तशामक
7) माष	विचिनप्रत्ययारब्ध	मधुर विपाक	पित्तवर्धक
8) फाणित	विचिनप्रत्ययारब्ध	गुरु स्निग्ध उष्ण	वातकर
9) दधि	विचिनप्रत्ययारब्ध	गुरु	दीपन
पारावत	समानप्रत्ययारब्ध	गुरु	न दीपन
10) कपिथ	विचिनप्रत्ययारब्ध	अम्ल रस	ग्राही
दाढिम	विचिनप्रत्ययारब्ध	अम्ल रस	ग्राही
धात्री	समानप्रत्ययारब्ध	अम्ल रस	सर
11) धातकीपुष	समानप्रत्ययारब्ध	कषाय रस	शीत वीर्य ग्राही
हरीतकी	विचिनप्रत्ययारब्ध	कषाय रस	उष्ण वीर्य अनुलोमन

प्रभाव प्राधान्य –

- 1) अचिन्त्यता – प्रभाव अचिन्त्य होने से श्रेष्ठ
- 2) दैवप्रतिधात – राक्षस पिशाच आदी का नाश करने के कारण प्रधान
- 3) विषप्रतिधात – विषादी का नाश करने के कारण प्रधान
- 4) कर्मवैशिष्ट्य – रस गुण आदी समान होने पर भी विशेष कर्म देखा जाता है इसलिए प्रधान
- 5) अद्भुत कर्म – वशीकरण मणिधारण आदी से अद्भुत कर्म देखा जाने से प्रधान
- 6) आगम – शास्त्रों में प्रभाव सबसे प्रधान माना गया है।

द्रव्यगत पदार्थों का पारस्पारिक संबंध –

नियम 1 – तेषां रसोपदेशेन निर्दिश्यो गुणसंग्रहः ।

रस समान विपाक व विपाक समान वीर्य व कर्म होता है। रस आदी के उपदेश से गुणों का निर्देश किया जाता है।

नियम 2 – रसं विपाकस्तौ वीर्यं प्रभावस्तान्यपोहति । बलसाम्ये रसादीनामिति नैसर्गिकं बलम् ॥ च.सू. 26
द्रव्यगत रसादी का समान बल होने पर सामान्यतः रस को विपाक, विपाक को वीर्य, तथा इन सबको प्रभाव दबा कर अपना कर्म करता है।

नियम 3 –

किंचिद् रसेन कुरुते कर्म वीर्येण चापरम् । द्रव्यं गुणेन पाकेन प्रभावेण च किंचन ॥ च.सू. 26/71
कुछ द्रव्य अपना कार्य से कुछ वीर्य से कुछ विपाक से व कुछ प्रभाव से करते हैं।

नियम 4 बलविरोध होने पर भी रसादी पदार्थ अपना अपना कर्म बिलकुल नहीं छोड़ते।

उदा. गुडूची – तिक रस से = कफपित्तहर, उष्णवीर्य से – वातहर, मधुरविपाक से – वृष्टि
प्रभाव से – वातरक्तशामक कार्य करती है।

अनुपान –

अनु सह पश्चात वा पीयते इति अनुपानम् ।

- 1) स्निधोषां मासूते पथ्यं
- 2) रूक्षोषां कफे
- 3) पित्ते – मधुर शीतलम्

सर्वश्रेष्ठ अनुपान – माहेन्द्र जल

रोग	अनुपान	रोग	अनुपान
शूल	हिंगु + घृत	वमन	लाजा
जीर्णज्वर	पिप्पली + मधु	अतिसार	कूटज
वातव्याधी	रसोन + घृत	रक्तपित्त	वासा
श्वास	त्रिकटू + मधु	अर्श	चित्रकमूल
शीत	ताम्बुल + मरीच	कृमी	विडंग
प्रमेह	त्रिफला + शर्करा	अजीर्ण	उष्णोदक
सन्त्रिपात	आर्द्रक + मधु	क्षय	क्षीर, मांसरस
ज्वर	मुस्ता + पर्पटक	पांडु	पुनर्नवा
ग्रहणी	तत्र	कास	वासा

- 1) हिमालय पर्वत की औषधी श्रेष्ठ मानी गयी है ।
- 2) उत्तर दिशा मे सम्भूत औषधीया श्रेष्ठ मानी गयी है ।
- 3) औषधी अधिपती – चन्द्रमा
- 4) द्रव्य संग्रहण – पुष्ट अश्विनी मृगशिरा नक्षत्र मे
- 5) प्रभावजन्य कर्म विचित्रप्रत्यारब्ध से होता है
- 6) भावप्रकाशानुसार कषाय द्रव्यो मे श्रेष्ठ – मधु
- 7) कण्डीर – प्लेग की बूटी , सर्पगंधा – पागलपन की जड़ी
- 8) आरग्वध मूलत्वक प्रयोग – ब्लेक वॉटर फ़िल्वर मे किया जाता है
- 9) गन्धबिरोजा सत्व – श्वेत प्रदर मे उपयोगी
- 10) कर्कटार्बुद नाशन द्रव्य – तिलपर्णी, वनपलाण्डु, दारूसिता

अहिफेन	भंगा
फल – डोडा	शाखा (पत्रयुक्त) – भांग
फलत्वक – पोश्त	स्त्रीजाती की पुष्पमंजिरी – गांजा
बीज – खशखशा (मधुर वष्ट)	निर्यास – चरस
कच्चे फक को चीरा देकर – निर्यास = अफिम	

विशिष्ट कार्यकारी द्रव्य	प्रतिविष द्रव्य
1) आमाशय – तिक्क , दीपन	1) वत्सनाभ प्रतिनिधि – ट्कण
2) सुषुम्ना – कुपिलु	2) डिजिटलिस प्रतिविष – वत्सनाभ
3) हुदय – अर्जुन, हुत्पत्री, तांबुल, गर्जर	3) अहिफेन प्रतिविष – कण्टकपर्णी
4) नाडीसम्प्त्थान पर – तगर	4) गुंजा प्रतिविष – तंडुलियक
5) पेशी – कषायाम्ल	5) कुपिलु प्रतिविष – अहिफेन धनुर कर्पुर तमाल

द्रव्य व प्रधान कर्म

द्रव्य	प्रधान कर्म (शा)	द्रव्य	प्रधान कर्म
मिशी	दीपन	शुंठी जीरक गजपिप्ली	ग्राही
नागकेशर	पाचन	कुटज	स्तंभन
चित्रक	दीपन पाचन	अमृता रूदन्ती गुगुल हरीतके	रसायन
देवदाली	उभयतोभागहर (शोधन)	नागबला कपिकच्छु	वाजीकरण
मरीच वचा	प्रमाथी	अश्वगंधा मुशली शतावरी	शुक्रल
उष्ण नीर वचा यव मधु	लेखन	दुग्ध माष भल्लातक फल	
त्रिवृत	सुखविरेचक	मज्जा, आमलकी	शुक्रप्रवर्तक जनक
आरग्वध (चतुरंगुल)	स्त्रंसन / मृदूरेचक	शुक्रप्रवर्तक	डन्नी
कुटकी	भेदन	शुरेचक	बृहतीफल
हरीतकी	अनुलोमन	शुक्रस्तंभक	जातीफल
भंगा अहिफेन	व्यवायी	शुक्रशोषण	हरीतकी
ऋमुक कोद्रव	विकासी	सैंधव क्षोद्र निंब व एरंडतैल	सूक्ष्म
अमृता	शमन	आर्द्राश्च	कूटज
क्षार मरीच शिलाजतु	छेदन	शुष्कार्श	भल्लातक

1) त्रिफला	हरीतकी बिभितकी आमलकी
2) मधुर त्रिफला	खर्जुर द्राक्षा गंभारी
3) सुगंधी (सुरभी) त्रिफला	जातीफल पूगफल लवंगफल
4) स्वल्प त्रिफला	खर्जुर परूषक गंभारी (काश्मरी)

द्रव्य व निर्यास -

द्रव्य	निर्यास	द्रव्य	निर्यास
कुन्दरू	शल्लकी	धान्यक	कुस्ताम्बुरू
शालमली	मोचरस	तुम्बरू	तेजोव्हा फल
वंश	वंशलोचन	सरल	श्रीवेष्टक/गंधबिरोजा
शाल वृक्ष	राल / सर्जरस	यवाशर्करा	तुरंजबीन

निघंटू-

प्रिय निघंटू कर्ता – प्रियव्रत शर्मा

सबसे प्राचीन निघंटू – अष्टांग निघंटू

अंतिम निघंटू – शालीग्राम निघंटू

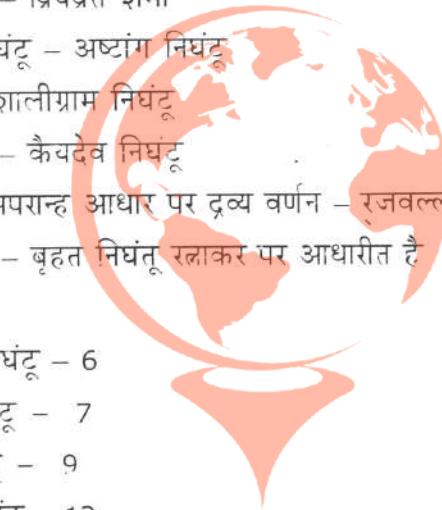
विहार वर्ग वर्णन – कैयदेव निघंटू

दिन के पूर्वान्ह अपरान्ह आधार पर द्रव्य वर्णन – राजवल्लभ निघंटू

शालीग्राम निघंटू – बहुत निघंटू रलाकर पर आधारित है

निघंटू व वर्ग संख्या –

- 1) राजवल्लभ निघंटू – 6
- 2) धन्वन्तरी निघंटू – 7
- 3) कैयदेव निघंटू – 9
- 4) मदनपाल निघंटू – 13
- 5) द्रव्यगुण संग्रह – 15
- 6) भावप्रकाश – 22 + अभाव वर्ग
- 7) राज निघंटू – 23



TIERRA

Dravyagunavignyan

Drug name	Latin name	Family	Chemical composition
1) मण्डूकपर्णी	Centela asiatica	Umbelliferae	Hydrocotyline, Glycoside – Asiaticoside Thankuniside
2) शंखपुष्पी	Convolvulus pluricaulis	Convolvulaceae	Shankhapushpin
3) ज्योतीष्मती	Celastrus panniculatus	Celastraceae	Black oil oleum nigrum Criosate
4) कुम्भाण्ड	Benincasa hispida	Cucurbitaceae	Cucurbitine
5) अहिफेन	Papaver somniferum	Papaveraceae	Primary alkaloids – Morphine, codeine, Thebaine, narcotine Papaverine, cryptopine Protopine, laudanine Laudanosine, meconidine Rhoeadine, codamine Nascopine, lanthopine Xanthaline Secondary alkaloids – Apomorphine, thebamine Oxydiamorphine, Porphyroxine, cataranine Desoxycodine, Rhoeadenine Others – opionin , meconin, meconoidin Acids- lactic and meconic
भंगा	Cannabis sativa	Cannabinaceae	Cannabinol, Tetrahydrocannabinol Cannabidiolic acid
वचा	Acorus calamus	Araceae	Asaryl aldehyde A-Asarone, B-Asarone Eugenol, caffeine Glucoside- Acorin
जटामांसी	Nordostachys jatamansi	Valerianaceae	Jatamansik, jatamasin
चोरक	Angelica glauca	Umbelliferae	
सर्पगंधा	Rauwolfia serpentina	Apocynaceae	Reserpine, deserpine Ajmalin, isoajmalin, Raulfinin
रासना	Pluchea lanceolata	Compositae	Pluchin, quersitin Ijormentin
कदम्ब	Anthocephalus indicus	Rubiaceae	Cinchotannic acid like
पद्मक	Prunus cerasoides	Rosaceae	Sakuranetin, jenquanin

TIERRA

			Prunetin
एरंड	Ricinus communis	Euphorbiaceae	Ricin, Ricinine
सूची	Atropa belladonna	Solanaceae	Atropine, Hyocimine
पारसीक यवानी	Hyocyamus niger	Solanaceae	Hyoscyamine, Hyoscine. Atropine, scopolamine
गुगुल	Commiphora mukul	Burseraceae	
गंथप्रसारिणी	Paederia foetida	Rubiaceae	Methyl mercaptan
तगर	Valeriana wallichii	Valerianaceae	Valerenic acid
निर्गुड़ी	Vitex nigundo	Verbenaceae	
पलांडू	Allium cepa	Liliaceae	Protein, carbohydrate. Calcium, iron, vit-A, B, C Allyl-Propyl disulphide
रसोन	Allium sativum	Liliaceae	Allyl-propyl sulphide Diallyl disulphide
देवदारू	Cedrus deodara	Pinaceae	Sesquiterpene
कुपिलु	Strychnos nuxvomica	Loganiaceae	Strychnine brucin vomicin Glucoside- loganin
भूर्जपत्र	Betula utilis	Betulaceae	Betulin, lupeol, cleanolic acid, acetyl oleanolic acid Leucocyanidin Leucanthocyanidin
ममीरा	Coptis teeta	Ranunculaceae	Berberine
चक्षुष्या	Cassia absus	Leguminosae	Chaksine, isochaksine
कतक	Strychnos potatorum	Loganiaceae	Brucin
सुदर्शन	Crinum latifolium	Amaryllidaceae	Lycorine
परिभद्र	Erythrina variegata	Leguminosae	Erisodin, erisonin, hypereherin
मेषश्रृंगी	Gymnema sylvestre	Asclepiadaceae	Gymnemic acid, Quercitol Calcium oxlate
वत्सनाभ	Aconitum ferox	Ranunculaceae	Aconitine, Pseudo-aconitine
शिगृ	Moringa oleifera	Moringaceae	Moringine, pterygospermine
उशीर	Vetiveria zizanioides	Graminae	
भृंगराज	Eclipta alba	Compositae	Ecliptine, wedelolactone
निलिनी	Indigofera tinctoria	Leguminosae	Glucoside-Indigotin, indican
इलेष्मातक	Cordia dichotoma	Boraginaceae	
कुंकुम	Crocus sativus	Iridaceae	Glucoside- crocin. Picrocrosin
करंज	Pongamia pinnata	Leguminosae	Karanjin, pongamol. Kanugin Demethoxy-kanugin. quercitin
निम्ब	Azadirachta indica	Meliaceae	Nimbin, nimbidin, margosin Nimboterol
सर्वप	Brassica campestris	Cruciferae	Sinalbin, sinapin, lecithin Myrocin, sulphocynide
खदिर	Acacia catechu	Leguminosae	Catechin, catechu tannic acid
हरिद्रा	Curcuma longa	Zingiberaceae	Curcumin, vit-A, protein
भल्लातक	Semicarpus anacardium	Anacardiaceae	Bhilawanol, semicarpol

आरग्वध	Cassia fistula	Leguminosae	Anthraquinone, calcium Oxlate, glutin, pectin
तुवरक	Hydnocarpus laurifolia	Flacourtiaceae	Hydnocarpic acid, palmitic Acid, chalmugric acid.
बाकुची	Psoralia corylifolia	Leguminosae	Psoralen, isopsoralin. Psoralidin, corylifolin
जाती	Jasminum officinale	Oleaceae	Salicylic acid.
मदयन्तिका	Lawsonia inermis	Lythraceae	Lawsone
काकोदुम्बर	Ficus hispida	Urticaceae	
सहचर	Barleria prionitis	Acanthaceae	
चक्रमर्द	Cassia tora	Leguminosae	Rhein, aloe-emodin, Chrysophanol
अर्जुन	Terminalia arjuna	Combretaceae	B-sitosterol, elegic acid Fridelin, arjunetin ,calcium
कर्पुर	Cinnamomum camphora	Lauraceae	
हृत्पत्री	Digitalis purpurea	Scrophulariaceae	Glucoside – digitoxin, gitoxin Gitalin
ताम्बुल	Piper betel	Piperaceae	Phenol, terpene, eugenol
करवीर	Nerium indicum	Apocynaceae	Glucoside – neriodorin, Neriodorein,karabin, olendrin scopolin, scopoletin.
पीत करवीर	Thevetia nerifolia	Apocynaceae	Glycoside – pruviroside, ruviroside, neriifolin, cerberin
बृहत अग्निमंथ	Premna mucronata	Verbenaceae	
लघु अग्निमंथ	Clerodendrum phlomidis	Verbenaceae	
पाटला	Sterculia suaveolens	Bignoniaceae	
गंभारी	Gmelina arborea	Verbenaceae	Benzoic acid, tartaric acid, Buteric acid
कांचनार	Bauhinia variegata	Leguminosae	Tannin
बिभितक	Terminalia belerica	Combretaceae	Gallic acid, elegic acid, chebulagic acid, manitol, B-sitosterol, galactose
वासा	Adhatoda vasica	Acanthaceae	Vasicine, adhatodic acid,
तालीसपत्र	Abies webbiana	Pinaceae	
लवंग	Syzygium aromaticum	Myrtaceae	Clove-bud oil, eugenol, eugenol acitate, caryophyllene, vitamin A
त्वक	Cinnamomum zeylanicum	Lauraceae	Eugenol , cinnamaldehyde
यष्टीमधु	Glycyrrhiza glabra	Leguminosae	Liquiritin, isoliquiritin. Glycyrrhizin,
बोल	Commiphora myrrha	Burseraceae	Myrrhol, myrrhin.
पिप्पली	Piper longum	Piperaceae	Piperine, piplartin, sesamin.

कंटकारी	<i>Solanum surattense</i>	Solanaceae	Diosgenin , solasonin.
बृहती	<i>Solanum indicum</i>	Solanaceae	Solanin, solanidin, Glycoalkaloid – solasonone
कर्कटशृंगी	<i>Pistacia integerima</i>	Anacardiaceae	Tannin
कासमर्द	<i>Cassia occidentalis</i>	Leguminosae	Emodin, crisarobin
शटी	<i>Hedychium spicatum</i>	Zingiberaceae	Starch
पुष्करमूल	<i>Inula racemosa</i>	Compositae	Inulin, alantolactone
भारंगी	<i>Clerodendrum serratum</i>	Verbenaceae	Glucoside – phenolic
सोम	<i>Ephedra geradiana</i>	Gnetaceae	Ephedrine
कुलिंजन	<i>Alpinia galangal</i>	Zingiberaceae	Kaempferide, galangin, alpinin. Methyl cinnamate
सरल	<i>Pinus roxburghii</i>	Pinaceae	Rosin oil, pinoline, pinene
यवासा	<i>Alhagi camelorum</i>	Leguminosae	Manna
धन्च्यास	<i>Fagonia cretica</i>	Zygophyllaceae	
पर्पटक	<i>Fumaria vaillantii</i>	Fumariaceae	Pentatriacontane
धान्यक	<i>Coriandrum sativum</i>	Umbelliferae	Coriandrol
लताकस्तुरी	<i>Hibiscus abelmoschus</i>	Malvaceae	Ambrettolide ,protein, starch
बकुल	<i>Mimusops elengi</i>	Sapotaceae	Tannin, saponin
शुंठि	<i>Zingiber officinale</i>	Zingiberaceae	Zingiberol, shogaol,
चव्व	<i>Piper retrofractum</i>	Piperaceae	Piperine, piplartin,
वृक्षाम्ल	<i>Garcinia indica</i>	Guttiferae	Kokum butter
अम्लवेतस	<i>Garcinia pedunculata</i>	Guttiferae	Malic acid
दाढ़िम	<i>Punica granatum</i>	Punicaceae	Pelletierine, iso-pelletierine
चांगेरी	<i>Oxalis corniculata</i>	Oxiladaceae	Potassium, oxalic acid
हिंगु	<i>Ferula narthex</i>	Umbelliferae	Asaresinotannol, ferulic acid
अतिविषा	<i>Aconitum heterophyllum</i>	Ranunculaceae	Atisine, heteratisine, hetisin.
चित्रक	<i>Piumbago zeylanica</i>	Plumbaginaceae	Plumbagin,
मरिच	<i>Piper nigrum</i>	Piperaceae	Piperine, piperidine, chavicin
जीरक	<i>Cuminum cyminum</i>	Umbelliferae	Cumaldehyde, carbohydrate
मुस्तक	<i>Cyperus rotundus</i>	Cyperaceae	
एरंडकर्कटी	<i>Carica papaya</i>	Caricaceae	Papain, glycoside – caricine, Myrosin. Carpasemine, Carposide,
मदनफल	<i>Randia spinosa</i>	Rubiaceae	Saponin, tannin, triterpin.
मिश्रेया	<i>Foenieulum vulgare</i>	Umbelliferae	Anathole
शतपुष्पा	<i>Anethum sowa</i>	Umbelliferae	
नाडी हिंगु	<i>Gardenia gummifera</i>	Rubiaceae	Gardenin
अतसी	<i>Linum usitatissimum</i>	Linaceae	Glucoside- linamarine
अश्वगोल	<i>Plantago ovata</i>	Plantaginaceae	Xylose, arabinose, rhanose Galecturonic acid, galactose.
स्वर्णपत्री	<i>Cassia angustifolia</i>	Leguminosae	Isorhamnetin, kaempferol

			Rhein, emodin Glucoside- senoside A and B
त्रिवृत	Operculina terpethum	Convolvulaceae	-glucoside - Terpethin,
स्वर्णक्षिरी	Argemone Mexicana	Papaveraceae	Berberine, protopine.
दंती	Baliospermum montanum	Euphorbiaceae	Starch
द्रवन्ती	Croton tiglium	Euphorbaceae	
स्नुही	Euphorbia nerifolia	euphorbiceae	Euphorbon
अर्क	Calotropis procera	Asclepiadaceae	Uscherin calatoxin, calatropin
इन्द्रवाराणी	Cirullus colocynthis	Cucurbitaceae	Colocynthin, a-elaterin.
कंकुष्ठ	Garcinia Morella	Guttifere	Morellin
कटुका	Picrorhiza kurroa	Scrophulariaceae	d-manitol, bainilic acid, glucoside- glucoside, picrorhizin.
कुमारी	Aloe vera	Liliaceae	Glucoside – aloin.
पीलु	Salvadora persica	Salvadoraceae	Salvadorine, tri-methyl amine Tannin, saponin
देवदाती	Luffa echinata	Cucurbitaceae	Echinetin, saponin
बिल्व	Aegle marmelos	Rutaceae	Marmelosin, aegelin,
जातीफल	Muristica fragrans	Myristicaceae	Myristicin, myristic acid
पर्णयवानी	Coeus amboinicus	Labiatae	Carvacrol
कूटज	Holarrhena antidy sentrica	Apocynaceae	Conessin, .
अरलु	Ailanthus excelsa	Simaroubaceae	B- sitesterol, vitexin
झोनाक	Oroxylum indicum	Bignoniaceae	Oxylin-A, baicalein, chrys in
धातकी	Woodfordia fruticosa	Lytheraceae	Lawsone
बब्लुल	Acacia arabica	Leguminosae	Gum Arabic, galactoaraban.
आवर्तकी	Cassia auriculata	Leguminosae	Tannin
आवर्तनी	Helicteres isora	Sterculiaceae	Saponin, flobotanin
मायाफल	Quercus infectoria	Fagaceae	Gallotanic acid. Elegic acid.
शाल्लकी	Boswellia serrata	Burseraceae	Boswellia oil, rosin
शाल्मली	Salmalia malabarica	Bombacaceae	Tanic acid, galic acid.
यवानी	Trachyspermum ammi	Umbelliferae	Ajown oil, thymol, carvacrol. Thymene.
अजमोदा	Carum roxburghianum	Umbelliferae	
चन्द्रशूर	Lepidium sativum	Cruciferae	Cress oil, benzyl cynide, Benzyl isothiosaynate. Glucotropaeolin. Sinapin,
धत्तुर	Datura metel	Solanaceae	Scopolmine, hysciamine, norhyosciamine, atropine, Meteolodine.
विडंग	Embelia ribes	Myrsinaceae	Embelin, christembine, tannin
पलाश	Butea monosperma	Leguminosae	Kinotanic acid, palasonin.

चौहार	<i>Artemisia maritima</i>	Compositae	Santonin,
इंगुदी	<i>Balanites aegyptiaca</i>	Simaroubaceae	Saponin
तुलसी	<i>Ocimum sanctum</i>	Labiatae	Ascorbic acid, carotin
बर्बरी	<i>Ocimum basilicum</i>	Labiatae	Basil-camphor
कीटमारी	<i>Aristolochia bracteata</i>	Aristolochiaceae	Aristolochic acid, potassium Nitrate, potassium chloride
कम्पिल्लक	<i>Mallotus philippensis</i>	euphorbaceae	Rottlerin, isorottlerin. Hydrocynic acid
महानिम्ब	<i>Melia azedarach</i>	Meliaceae	Parosin, azidirin (margosin)
करीर	<i>Capparis decidua</i>	capparidaceae	Glucoside- glucokarprin
सूरण	<i>Amorphophallus campanulatus</i>	Araceae	Calcium oxlate, protein, fat Carbohydrate
दारुहरिदा	<i>Berberis aristata</i>	Berberidaceae	Berberine
काकमाची	<i>Solanum nigrum</i>	Solanaceae	Glycoalkaloid- solamargin, solasonine, solanigrine.
अपामार्ग	<i>Achyranthes aspera</i>	Amaranthaceae	Potash
कालमेघ	<i>Andrographis paniculata</i>	acanthaceae	Kalmeghin, andrographolid
पारिजात	<i>Nyctanthes-arbor-tristis</i>	Oleaceae	Glucoside- Nyctanthine,
रोहितक	<i>Tecoma undulata</i>	bignoniaceae	Tecomin:
शरपुंखा	<i>Tephrosia purpurea</i>	Leguminosae	Nitrogen, potassium, rutin, rotenoid
श्वेत मुसली	<i>Asperagus adscendens</i>	Liliaceae	Asperigin
कृष्ण मुसली	<i>Curculigo orchioides</i>	Amarylliadaceae	Starch , tannin
शतावरी	<i>Asperagus racemosus</i>	Liliaceae	Saponin
मखाना	<i>Euryale ferox</i>	Nymphaeae	
कोकिलाक्ष	<i>Asteracantha longifolia</i>	Acanthaceae	Diastase, lipase, protease
कपिकच्छु	<i>Mucuna prurita</i>	Leguminosae	Mucunain, L-dopa
कुष्ठ	<i>Saussurea lappa</i>	Compositae	Saussurine, tannin, inulin,
कटफल	<i>Myrica esculenta</i>	Myricaceae	Myrcetin,
अकारकारभ	<i>Anacyclus pyrethrum</i>	Compositae	Pyrethrin
द्रूवा	<i>Cyndon dactylon</i>	Graminae	Protein, calcium phosphorus
जपा	<i>Hibiscus rosa sinensis</i>	Malvaceae	Calcium , phosphorus
झश्वरी	<i>Aristolochia indica</i>	Aristolochiaceae	Aristolochin, iso aristolochic Acid, allantoin
कालाजाजी	<i>Nigella sativa</i>	Ranunculaceae	Melanthin, Arabic acid, Nigellin, cymine,
लांगली	<i>Gloriosa superba</i>	Liliaceae	Colchicine, gloriosine
हरमल	<i>Pangum harmala</i>	Zygophyllaceae	Harmalol, harmaline, harmine Vasicine,
वंश	<i>Bambusa arundinaceae</i>	Graminae	Silica, aluminium carbohydrate
लोध्र	<i>Sympolocos racemosa</i>	Symplocaeae	Loturine, colloturine, Loturidine

अशोक	Saraca asoca	Leguminosae	Haematoxylin
पत्रांग	Caesalpinia sappan	Leguminosae	Brazilin, brazilien
पाठ	Cissampelos pareira	Menispermaceae	Pelosine, berberine, saponin
पुनर्नवा	Boerhavia diffusa	Nyctaginaceae	Potassium nitrate, punarnvin
गोक्षुर	Tribulus terrestris	Zygophyllaceae	Harman, harmin
भुम्याम्लकी	Phyllanthus urinaria	Euphorbiaceae	
कंकोल	Piper cubeba	Piperaceae	Cubebol, cubebin,
पाषाणभेद	Bergenia ligulata	Saxifragaceae	Tanic acid, galic acid,
वरूण	Crataeva nurvala	Capparidaceae	Saponin, tannin
गोरक्षगांजा	Aerva lanata	Amaranthaceae	
जम्बू	Syzygium cumini	Myrtaceae	Cyaniding, diglycosides.
वट	Ficus bengalenesis	Moraceae	Tannin
उदुम्बर	Ficus glomerata	Moraceae	Tannin, albuminoid.
अश्वत्थ	Ficus religiosa	Moraceae	Tannin
प्लक्ष	Ficus lacor	Moraceae	
शाल	Shorea robusta	Dipterocarpeae	
विकंकत	Flacourtie ramontchi	Flacourtiaceae	Protein carbohydrate
कपितन	Thespesia populnea	Malvaceae	Tarinin
बीजक	Pterocarpus marsupium	Leguminosae	Kinotannic acid, pyrocatechin . epicatechin
सप्तचक्का	Salacia chinensis	Hippocrateceae	Dulcitol, mangiferin, leucopelargonidin.
बिम्बी	Coccinia indica	Cucurbitaceae	Starch
सहदेवी	Vernonia cinerea	Compositae	
किराततिक्त	Swertia chirayita	Gentianaceae	Gentianine. Glucoside-mangiferin
त्रायमाण	Gentiana kurroo	Gentianaceae	Gentropicrin, gentianic acid
पटोल	Trichosanthes dioica	cucurbitaceae	Protein, carbohydrate
मूर्वा	Marsdenia tenacissima	Asclepiadaceae	
काष्ठदारू	Polyalthia longifolia	Annonaceae	
सप्तपर्ण	Alstonia scholaris	Apocynaceae	Ditamine, echitamine, echtanine, echicaoutechin, echitin, echiretin.
नाहि	Enicostemma littorale	Gentianacea	Swertiamarine
कंटकी करंज	Caesalpinia crista	Leguminosae	Glycoside- Bonducin
द्रोणपुष्टी	Lucas cephalotes	Labiatae	
तुलसी	Ocimum sanctum	Labiatae	Phenol
कुनयन	Cinchona officinalis	Rubiaceae	Quinine, quinindine, cinchonine, quinic acid
श्वेत चंदन	Santalum album	santalaceae	Santalol
रक्त चंदन	Pterocarpus santalinus	Leguminosae	Sanatalin, pterocarpin, pterostilbene, homopterocarpin

एला	<i>Elettaria cardamomum</i>	Zingiberaceae	Cineol, terpineol, terpinene, limonene, sabinene.
अगरू	<i>Aquilaria agallocha</i>	Thymelaceae	Sesquiterpene alcohol
बृहद् एला	<i>Amomum subulatum</i>	Zingiberaceae	Cineole
बला	<i>Sida cordifolia</i>	Malvaceae	Ephedrine phytosterol
अतिबला	<i>Abutilion indicum</i>	Malvaceae	Asparagine
महाबला	<i>Sida rhombifolia</i>	Malvaceae	
राजबला	<i>Sida veronicaefolia</i>	Malvaceae	
नागबला	<i>Grevia hirsute</i>	Tiliceae	
विदारी	<i>Pueraria tuberosa</i>	Leguminosae	Protein, carbohydrate
तवक्षीर	<i>Curcuma angustifolia</i>	Zingiberaceae	
जीवन्ती	<i>Leptadenia reticulata</i>	Asclepiadaceae	
मुदगपर्णी	<i>Phaselous trilobus</i>	Leguminosae	
माषपर्णी	<i>Teramnus labialis</i>	Leguminosae	
लज्जालु	<i>Mimosa pudica</i>	Leguminosae	Mimosine,
पूग	<i>Areca catechu</i>	Palmae	Catechin, galic acid, arecoline, arecaidine,
हरितकी	<i>Terminalia chebua</i>	Combratecae	Chebulagic acid, chebulinic acid, corilagin
आमलकी	<i>Emblica officinalis</i>	Euphorbiaceae	Gallic acid, tannic acid, vit-c
गुडुचि	<i>Tinospora cordifolia</i>	Menispermaceae	Berberine, geloin ,starch
अश्वगंथा	<i>Withania somnifera</i>	Solanaceae	Cusechygrene, anahygrine, Tropine, anaferine.
वृद्धदारूक	<i>Argeria speciosa</i>	Convolvulaceae	
गुंजा	<i>Abrus precatorius</i>	Leguminosae	Haemagglutinin, abrin, Glucoside- abralin, Root- glycyrrhizin
शिरीष	<i>Albizia lebbeck</i>	Leguminosae	Tannin, saponin
छिलहिट	<i>Cocculus hirsutus</i>	Menispermaceae	Mucilage
अंकोल	<i>Alangium salviifolium</i>	Alangiaceae	Alangine
प्रियंगु	<i>Callicarpa macrophylla</i>	Verbenaceae	Hydrocynic acid
नागकेशर	<i>Mesua ferrea</i>	Guttiferae	Mesuol, mesuone
सुरपुन्नाग	<i>Mammea longifolia</i>	Guttiferae	
पुन्नाग	<i>Colopfillum inophyllum</i>	Guttiferae	Domba oil, tannin
पर्णबीज	<i>Brophyllum pinnatum</i>	Crassulaceae	Citric and isocytic acid
शाक	<i>Tectona grandis</i>	Verbenaceae	
सारिवा	<i>Hemidesmus indicus</i>	Asclepiadaceae	p-methoxy salicylic aldehyde β- sitesterol, B- amyrins, lupeoli, tetracyclic triterpene alcohol
मंजिष्ठा	<i>Rubia cordifolia</i>	Rubiaceae	Purpurin, manjisthin.
चोपचिनी	<i>Smilax china</i>	Liliceae	Cinchomin, smilacin. Rutin
मुँडी	<i>Sphaeranthus indicus</i>	Compositae	Sphaeranthine eugenol,

शिंशपा	Dalbergia sisso	Leguminosae	
वनत्रुपुषी	Podophyllum hexandru	Berberidae	Podophyllotoxin, podophyllin
शालपर्णी	Desmodium gangeticum	Leguminosae	
पृष्ठनिपर्णी	Uraria picta	Leguminosae	
मेथिका	Trigonella foenum-graecum	Leguminosae	Calciu , protein
अस्थिशृंखला	Cissus quadrangularis	Vitaceae	Vit-c, potassium , Mg, calcium
सदृपुष्टा	Lochnera rosea	Apocynaceae	Ajmaline,vindolin, serpentine, resperine, lochnerin, lochnericine, virosine,



TIERRA

काकमाचीगुण- तिक्तसंधाL.N. Solanum nigrum F- Solanaceaeपर्याय- द्वाढामाची, काकाठवा, बागसी EN.- Black Night sh.स्वरूप- शुपउत्पत्तीस्थान- समस्त भारतरासायनिक संघटन- प्रोटीन, वसा, कार्बोहायड्रेट, कॅल्शिअम, लॉट,रामबोफ्लोहिन, निकोटिनिक ऑसिड, Vit-C, कॅरोटिन

Solanum margin, Solasonin.

रसपंचकगुण- लघु स्निग्धरस- तिक्तविपाक- कटु, वीर्य- अनुष्ठा,दोषधनता- गिदेषज्ज्वरोगाधाता- स्वरक्षुकदा, रसायनी, लोभिता, शोथकुछारीजरमेहजितविमाधर्दि इडोशविलासिनी, प्रवान गर्भ- यकृतावरप्रयोज्यांग- पंचांग, फलविषाक्त प्रसाद- फल अधिक माझेत- घर्दि, अतिसार, तृष्णा, उदरशुद्धतारगतिस्फारण, शिरशुक, भम, प्रलाप, आधेप, संब्लासनिवारण- धनुष विष पिकिला समान.भूनिम्ब (काळमेघ)L.N.- Andrographis paniculata F- Acanthaceaeपर्याय- भूनिम्ब, कालमेघस्वरूप- शुपउत्पत्तीस्थान- समस्त भारतरासायनिक संघटन- kalmeghin, andrographolid.रसपंचक- गुण- लघु रुक्षरस- तिक्तविपाक- कटुवीर्य- उष्णरोगाधाता- कृमिज्ज्वला, पित्तसारक, यहूदरोग, कुमी, कुष्ठ, जीणज्वर
विषमञ्जरप्रयोज्यांग- पंचांगसंग्रहविधि- वर्षाञ्जन्म ओते, शीत मध्य आरंभेकिराततिक्ताचे प्रतिनिधी मृपून घेतले जाते.फल घवासार असल्याने घवतिक्ता मृष्ट्यले जाते.

लांगड़ीगारा- उपविष्टL.N.- Gloriosa superbaF- Liliaceaeपर्याय- कलिहारी, अग्निशिरवा, गर्भनुत, तलिजी,
शक्रपुष्पी, विशल्या, अनन्ता, वल्लिवक्काइंधजी- Malabar Glory Lilyस्वरूप- आरोहिणी लता.उत्पत्तिस्थान- भारतात सर्वज्ञरा. संघरण- colchicine, Gloriosine, superbine,
Salicylic acid.रसायनक-

गुण- लघु, तीक्ष्ण

रस- कट्ट, विषम

विपाक- कट्ट

वीर्य- उष्ण

प्रभाव- गर्भपातन

दोगलता-

कुष्ठ, गोफ, अर्श, कृमीक्ष

गर्भनुत, पित्तरेचक,

गर्भाशय, सोनोचक, अपरा पातवार्य

प्रयोज्यांग-

कट्ट

ज्वोधरा-

गोमूलात मिजवणे

सौषवमिश्रित तड्डू ल मिजवणे.

कल्प-

कामिसादि तैक

लांगड़ी रसायन

रोटिक

L.N. - *Tecomaria undulata* F. - *Bignoniaceae*

पर्याय - दाडिमपुष्प, दाडिमच्छद, प्लीठन, रोटी.

स्वरूप - गुलम | घोटा वृक्ष उत्तरीस्थान - राजस्थान, गुजरात

रसायनक - गुण - लघु, रक्षा

रा. संधरन - *Tecomaria*

रस - कट्ट तिक्त कषाय

विपाक - कट्ट

वीर्य - शीत

रोगधनता - दीपन, अनुलोमन, रक्तप्रसादन, कृमीघ

प्लीठसंरोचक, लेभासयघ, यकृतल्हीग्निघट्टी, कामला

प्रयोज्यांग - काढ़लक

योग - गोहितमारिष, रोटिकादि चूर्ण, बोहितक घृत.



L.N. - *Tephrosia purpurea* F. - *Leguminosae*

पर्याय - प्लीठशब्द, नीडवृक्षाकृती

इ - purple tephrosia / wild indigo

स्वरूप - बहुवर्धीयु शुष्टि उत्तरीस्थान - समस्त भारत

मुकार - इकेत व नील

रा. संधरन - Nitrogen, potassium, oxytinin, Rutin, Rotenoid, Tephrosin, Deguelin.

रसायनक - गुण - लघु, रक्षा, तीक्ष्णा

रस - तिक्त, कषाय

विपाक - कट्ट

वीर्य - उष्ण

प्रभाव - प्लीठन

रोगधनता - गुलम, प्लीठोग, कास, श्वास, ज्वर, कृमीघ

मूषक निष, घातन विष

प्रयोज्यांग - मूल, पंचोग क्षार

दारुष्टरिदा

गाठ - अशौष्ठि, कण्डन, लेरबनीय (ग.)
टरिद्रादि, मुस्तादि, लाक्षादि (सु.)

L.N. - Berberis aristata

F. - Berberidaceae

प्रभाग - दार्भी, कट्टकडेशी, पचंपचा, पर्जन्या, पर्जनी, पीता, कारेथक
कालीथक, पीतद्वृ, टरिद्रु, पीतदार, पीतक

इ. - Indian Berberry

स्वरूप - कंटकित घुल्म

जाती - १३, B. lycium, B. asiatica (मूख)

उत्पत्तीस्थान - हिमालय

सांघरण - Berberine, Berbamine, Palmatine,
oxyanthine, columbamine, Hydrastine.

रसपंचक - शुण - लक्ष रस

रस - तिक्त, क्षार

विपाक - कट्ट

वीर्य - उष्ण

रोगाभिन्नता - न्यूनमेत्तुत, कणिनभमुखोद्भुत रुक्ता, कण्डन, दीपन पाचन
जवर, विषमउक्तस्तुर, गोयहर

Berberine - आविक मानेत विषम

सामान्य मानेत ठुक्कोसेजक

प्रयोगमांग - मूळ फॉड, फल योग - दार्भादि क्वाय

अपमिथ्यण - कलम्बक काष (Coscinium fenestratum)

रसांजन निर्माण - दारुष्टरिदा मूळ व रवान्त्रे स्फूल फॉड + १६ पट जल + ५/८ शेष
+ समधारि भजाइप्पुरा/गोडुग्ग पाक - घन.

शोधन - गरम पाप्पात → ठाकुन → गोडुग्गासहपाक → बांकवेणे.

शुणधर्म - रसांजने ताड्डप्पीले रसगम्भीर ताड्ड्यन्तम्।

रसांजने कट्ट ब्लेष्मविषमेभविकारनुत् ॥

ठण्णे रसांजने तिक्तं घेदने व्रणदोषहन्त् ।

भूमध्यामुळकी

गण - श्वासटर, कासठर (-र)

L.N. - *Phyllanthus urinaria* F- Euphorbiaceae

प्रभाग - भूमध्यामुळी, तामलकी, बडुपन्ना, बडुफला, शिवा, बडुवीर्धी, अजटा

स्वरूप - ल्युप. उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत.

रासायनिक संघटन - *Phyllanthin.*

रसपंचक - गुण - लघु, रस

रस - तिक्त, कषाय, मधुर

विपाक - मधुर

वीर्य - शीत

शोगङ्गता - तृष्णा, कास, कफ, सत, प्रसेट, विषमञ्चर, शोथ, पांडु, कामल
महृतफलीगुवृद्धी, मुबरोगार्तिशमनी, दाहनाशिनी

प्रयोगांशः - पंचांग



गण - मूनविरेचनीय (-र) दीर्घतर्वादि (-रु.)

L.N. - *Bergenia ligulata* *Saxifraga ligulata*

F - *Saxifragaceae.*

प्रभाग - अश्मज्ञ, गिरिमिठू, मिन्नगोजिनी

स्वरूप - बुवर्षायु ल्युप. उत्पत्तीस्थान - हिमालय, काश्मीर

रासायनिक संघटन - गैलिक ऑसिड, डिनिफ़ ऑसिड, स्टार्की, *CaL oxalate*

प्रकार - राजनिधंडकृत-५ पापाणमेदक, वटपनी, शिलावल्का, चतुष्पनी

रसपंचक - गुण - लघु स्त्रिघ तीक्ष्ण

रस - कषाय तिक्त

प्रभाव - अश्मरीमेदन

विपाक - कट्टा

दोषघटना - मिवोषध

वीर्य - शीत

शोगङ्गता - बर्तीशोधन, अर्श, गुल्म, हृत्कर्मण, अश्मरी, ग्रोनीशोग
प्रसेट, स्लीहिरोग, ब्रण

सात्मीकरण - अटिफैन विषात देतात.

प्रयोगांशः - मूल

आकारकरभL.N. - *Anacyclus pyrethrum*F. - Compositaeप्रभाय - अकल्क, कल्कस्वरूप - क्षुपउत्पत्तीस्थान - मूलतः भृगव, भारतात् cultivatedरासायनिक संघटन - Pyrethrin.रसपंचक - गुणः रक्ष, तीक्ष्ण

रस - कटु

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

रोगधनता - उत्तेजक, शोभक्त, वेदनास्थापन, पक्षाधात, अपस्मार जाहीदौर्बल्यजनित शोषणस्थलन, घजमंगप्रयोज्योग - मूलगांजा - ३/२ - ५ gmगांजा - शुक्रांशोधनL.N. - *Asteracantha longifolia*F. - Acanthaceaeप्रभाय - काकेशु, इक्षुर, इक्षुरक, इक्षुरक, इक्षुर, काण्डेशु, इक्षुरंधा, इक्षुवालिकास्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान - समस्त भारतरासायनिक संघटन - Longissin, Lipase, protease.रसपंचक - गुण - गुरु, स्निग्ध

रस - मधुर

विपाक - मधुर

वीर्य - शीत

दोषधनता - वातपित्तध

रोगधनता - वृष्टि, वृत्तिं वल्व, शोषण, अस्मरीण

वातरक्तहर (म. क.) पिताशमसी (स. न.)

प्रयोज्योग - मूल, बीज, क्षार (पंचांग)

पुष्करमुळे

गाठ - ब्रवास्टर, हिक्कानिश्चृण (च.)

L.N. - *Inula racemosa*

F. - Compositae

इं. - Orris root.

पर्माघ - पद्मपन, काष्मीर, कुष्मेद, पौष्ट्र, पुष्कर

स्वरूप - क्षुप

उत्पत्तीस्थान - उत्तरपश्चिम टिमालय

रा. संघरण - Inulin, Alantolactone, Iridin, starch
tannin, calcium oxalate.

रसायनिक - गुण - लघु, तीक्ष्णा

जैव - निकल केंद्र

विपाक - कड़ी

वीर्य - उष्ण

होधरता - वातकफळ

योगधनता - हिक्का, इवास, कास, पार्श्ववृद्धि
वातकफळवर, शोथ, अरुचि

प्रयोज्यांग - मूळ

TIERRA

पुष्करमुळे हिक्का इवास सास पार्श्ववृद्धि लहराणाम् ।

प.स. २५

कुष्ठ

गण - शुक्रशोधन, लेरवनीम, आस्मापनोपय (च.) एलादि (तु.)

L.N. - *Saussurea lappa*

F. - Compositae

पर्याय - वाष्प, उत्पल, काशमीर, रोगात्कथ, परिमात्र

इं - *costus root.*

अवरूप - नकुवधीमु अुप

उत्पत्तीस्थान - काश्मीर, हिमाचल प्रदेश

संरहण - ऊवटोबर

रा. संधान - *Saussurine, tannin, inulin, potassium nitrate*
costus lactone, costusic acid.

रसायनक - गुण - लघु, रक्त, तीक्ष्ण

रक्त - निवत, कड़, मधुर

विपाक - कड़

वीर्य - उष्ण

रोगधन्ता - विसर्प, कुष्ठ, कास, रेन्फा, ज्वर, वीपद, नाचन
उत्तेजक, आर्तिकरणीय

घाटन कुष्ठ - मंगो मनामपि न चेनिपतन्ति ततः कणाः।
मृगशृंगोपम् कुष्ठम्।

तोड़ल्यानेतर कण रक्तानि प्राप्तिभास नकोत्.

प्रयोज्यांग कुष्ठ

अवग्रह - कुष्ठ वातराम्बोपयोगिनाम् । च.सू.३५

अतिविषा

गोण - अर्शोधन, लेरवनीम (च.) पिप्पल्यादि, वचादि, मुस्तादि (सु.)

L.N. - *Aconitum heterophyllum*

F. - *Ranunculaceae*

प्रयोग - बुक्कलकंदा, भंशुरा, घुणवल्लमा, काश्मीरा, शिशुमेघज्या
विषा, विश्वा, शृंगी, प्रतिविषा, अरणा, उपविषा

इ. - Indian Atees.

स्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान - पश्चिमोत्तर दिल्ली

प्रकार - अतिविषाक्षम - प्रतिविषा - *Aconitum palmatum*

रासायनिक - *Atisine*, *Heteroatisine*, *Hetisine*,
Starch, aconitic acid,

रसायनिक - गुण - लघु, रुक्ष

रस - तिक्त, कड़

विषाक - कड़

विषीरी - उष्ण

रोगाद्धता - दीपन, पाचन, आमद, अतिसार
विष, काश, कूमी, विषमञ्जर
बालानों रोगनाशिजी (घ.नि.)

अवयव - अतिविषा दीपनीय पाचनीय सोयाहिं सर्वदोषहरणाम्।

योग - अतिविषादि - चूर्ण, बालचातुभिं - चूर्ण

शोधन - डोमध रस

प्रयोज्योग - मूळ (कंद)

मुस्तक

गण - तृष्णिघन, तृष्णानिघण्ठा, लेरवनीय, कण्डुघन (ए) स्तब्धशोधन (ए)
मुस्तादि, वचादि (सु)

L.N. - *Cyperus rotundus*.

F. - *Cyperaceae*

इ. - Nut grass

स्वरूप - बहुवर्षीय क्षुप

प्रभायर - वारिद, कुरु, किन्द, क्रोडकसेन्ट, गुन्डा

- प्रकार - 1) मुस्तक (भद्रमुस्तक)
2) नाशरमुस्तक
3) नलमुस्तक (कैवल्मुस्तक) } ध.नि.
रा.नि.
उत्त

- 1) मुस्ता
2) नाशरमुस्ता (भद्रमुस्ता) - छोड } मा.प्र.
3) कैवल्मुस्ता (नलमुस्ता) } उत्त

रा.संपदन - Chufa oil, protein, starch.

उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत (आर्क्टिक प्रदेश)

जानूपदेशो यज्ञात मुस्तके तत् प्रशस्तते। भाग्र.

रसपूर्वक - मुस्तक - कट्टा, रुक्का

रसा - विच्चि, कट्टा, कधार

विपाक - कट्टा

वीर्मि - शीत

दोषञ्जला - कफपित्तज्ञ

रोगञ्जला - दीपन, पाचन, पित्तञ्चरातिसारथ

प्रयोज्योग - कंद

अवृद्ध - मुस्तक सांग्राहिक दीपनीय पाचनीयानाम्।

मदनफल

वर्ण - वमन, फलिनी, (च) उर्ध्वमागृह, आरग्वधादि, मुफ्कादि (सु)

L.N. - *Randia spinosa / dumetorum*

F. - Rubiaceae

प्रभाव - मदन, छर्वन, पिण्ड, नट, पिण्डितक, करठाट, मरनक, शाठ, शाल्मक, विषपुष्पक

इं. - Emetic nut.

स्वरूप - लघुन वृक्ष उत्पत्तीस्थान - मारतात सर्वत्र

रा. संघटन - Saponin, tannin, Randia oil, valerenic acid

रसायंचक - गुण - लघु, रुक्ष

रस - क्षामे संधुर, तिक्त, कटु

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

प्रसाव - वामरु

रोगधन्ता - वानिकूर, विड्विटर, प्रतिरक्षय, कुष, आनाट, शोष
गुलम, जडा

मदनफल के मानसिकापनातु दस्तनोपयोगिताएँ । - प. सू. २५

वमनद्रव्याणां मदनफलाद्वि द्वेष्टतमानि भावक्षतेऽनपाभिलात् ।

प. क. २

प्रयोज्यांग - फल

बीज - मदनफलपिण्डी

वमनार्थ मात्रा - अन्तर्गतवमुद्दि

कल्प - 933

जाडीटिंगु (डिक्रामाली)L.N. - *Gardenia gummifera*F. - Rubiaceae

इं - Gummy Gardenia

पर्याय - पलाशारब्या, जन्तुका, रामठी, वंशपत्री, पिंडात्ना, सुवीरी, टिंगुनाडिका
स्वरूप - वृक्ष

उत्पत्तीस्थान - दक्षिण भारत, विशेषतः पर्वतीय प्रदेशरा.संघटन - राक, उडनशील तेल, gardenin.रसायनक - गुण - लघु, रक्त, तीक्ष्ण

रस - कट्ट, तिक्त

विपाक - कट्ट

वीर्य - उष्ण

रोगधनता - दीपन, पाचन, बातानुलोमन, देतशुलधन

कृमीज - गोडाद कृमी (Round worm)

विषाविनियोगन वानाहासप्रतारित्यो। शानि.

कफवात्पलस्तनमनोग्रहमायामायन। निर.

प्रमोत्त्योग - निरसि (Carotol gum ज्ञानाने बाताया मिटते)मात्रा - शैत - ११२ gm.भृगुराजL.N. - *Eclipta alba* F - compositae.पर्याय - मार्कन, केशरञ्जन, केशराज, मृद्ग, अंगारकस्वरूप - क्षुप

आती - 1) श्वेत 2) पीत 3) नील पीत (केशराज) - *Wedelia chinensis*
 (केशराज)

रा.संघटन - Ecliptine, medelactone, Nicotineरसायनक -

गुण - लघु, रुक्ष

रस - कट्ट, तिक्त

विपाक - कट्ट

वीर्य - उष्ण

दोषधनता - बातकफङ्ग

रोगधनता - केशवर्धक, केशरञ्जन, मृद्गतोत्तेजक, शोयजन, कुष्ठज, प्रदुष, रसायन

रसायन (भापु, स्वरस, रसायनप्रति पान) रसायनार्थ - नील प्रकार

ध्यानी + तीक्त + भृगुराज - (कृष्णराज विमुखेया निर्बाधी - शैत.)

प्रमोत्त्योग - पंचांग, वीज कल्प - षड्जित तेल, सूतगोरुरुरस

वृक्षमूर्तिगाठा - उष्वभिगतुर्L.N. - *Cassia tora*F. Leguminosae (*Caesalpinioidae*)पर्याप्ति - प्रसुब्लाट, दंडुल, मेषतोचन, पदमाट, एडगज, चक्री, पुल्लाटइं - Ring worm plant.स्वरूप - क्षुपउत्पत्तिस्थान - समस्त भारत.रा. संघटन - Rhein, aloë-emodin, chrysophanol, cathartinरसपंचक - गुण - लघु, रक्षा

कड़ी रस - कड़ी

विपाक - कड़ी

नीरि - उष्ण

दोषधता - वातनफृष्टा

रोगधता - दंडु कुष कण्ठ गुल्मी शेष मुमि, इनामप्रभोज्योग - बीज, पमकल्प - दंडुली वर्णीत्वेष्मातकगाठा - विषमL.N. - *Cordia dichotoma*F. Boraginaceaeपर्याप्ति - बाकुवार, उद्धाळक, शेलू, शीत, पिण्डिन मूतवृक्षान्स्वरूप - वृक्षप्रभाव - लघु इषेष्मातक - *Cordia rothii*उत्पत्तिस्थान - संपूर्ण भारतरसपंचक - गुण - स्निग्ध, शुरु, पिण्डिन

त्वक् - कषाय तिक्त

रस - मधुर

विपाक - मधुर

त्वक् - कड़ी

नीरि - शीत

प्रभाव - विषम

रोगधता - विषम, विस्पोष, ज्वर, कुषनुत पाचन, शुलभ, रेशम, वृक्ष रक्तपिण्डिप्रभोज्योग - फल, लकड़ी

भल्लातक

गण - कुछन, दीपनीय, मूत्रसंग्रहणीय (-र) व्यग्रोघादि, मुस्तादि (सुः)

L.H. - *Semecarpus anacardium*

F. - *Anacardiaceae*

इ. - Marking nut.

पर्याय - अर, छर, मणिक, शोफकृत, अणिमुख, भल्ली, वीरवृक्ष

स्वरूप - वृक्ष

उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत, उष्ण प्रदेश

रा संघटन - *Bhilawanol*, *semecarpol*.

इसापञ्चक - गुण - लधु, स्त्रिघ, तीक्ष्ण

दूर - कड़, तिक्त, कृष्ण मधुर

विषार - मधुर

वीर्य - उष्ण

रोगप्रसा - मेघ, दीपत, स्नानत, नाड़ीकर (मज्जा)

कुछ, अर्ब, शुष्णी, शुल्म, शोष, आनाह, चर, हृसी

मज्जा - मधुर, वृच्छ, हृष्ण, वापापित्तज

हृत - स्वातु, मित्रध, केरध, अणिकृत

अंकुराकृमी (Hoodworn) मधुर टिक्कर

शुक्षाशीत चेष - (चुड़न)

परक - कफगो न स रोगोऽसि न विबन्धोऽस्ति कर्त्तव्य।

ये न भल्लातके ठन्नाद शीघ्र मेघानिवधनम्॥

सुकृत - मध्या कुछानि सर्वाणि उतः रक्तिरक्तिर्ज्ञाते।

तथैवासामि यर्वाणि वृक्षमालबृहे उतः ॥ सुकृत

प्रयोज्योग - फल तैलप्राप्ति - पाताळप्रयोग विधिने

मात्रा - कल्प - 3-6 gm तैल - 10-20 योंक शीरपात्र - 9-12 तोड़े

विषाक्त लक्षण - शुद्धमेह राह व कंडु, लक्कदाह व कंडु, स्वेद, तृष्णा

निरानन्दा - नारिकेल व तिल प्रयोग

नाईतः धृत राक व Lead lotion,

शोधन - इच्छिका चूणिति

प्रशस्त भल्लातक - पाप्तात कुडारे

कक्टशूगा

गण- कासहर, टिक्कानिग्रहण, (-प.) कारोलादि (सुः)

L.N.- *Pistacia integerima*

F- Anacardiaceae

पर्याप्ति- कुतीरनिषाणित, अजशूगी, वड्हा, चट्ठा, कर्किराख्या, शूगी

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तिस्थान - पश्चिमोत्तर भारत

रा. संघटन- tannin, Hydrocarbon, Gum mastic

रसायनक्रम- शुग - लघु, रस

रस - कषाय तिक्त

विषाक्त - कट्ट

वीर्य - उष्ण

रोगधनता- इवास, कास, वृद्धा, टिक्का, वमन, उर्ध्ववात

प्रमोज्योग- पंज वा पञ्चवृक्षावरील (Aphis) नामक फिकाहारा निर्मित शुगाकार स्फना (टेल्प - दृमिश्वा)

मोग- शूगमादि-शूगी बालचातुर्प्रहि-शूगी

बिसितक

: गण- जकरहर, विरेचनोपग (ए-प.) तिफ्ला मुसादि (सुः)

L.N.- *Terminalia belerica*

F- Combretaceae

पर्याप्ति- कर्षफल, अस, कलिङ्ग, भूतनास, कलिङ्गालभ

उं- *Belleric Myrobalan*

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तिस्थान - मात्तात सर्वप्र

रा. संघटन- दनिन, नी-बियोस्ट्रेरॉल, बैलिक अणिड, मैनियॉल, गॉलॅक्योज

फुस्योज, रेमनोज, सैपोनिन

रसायनक्रम- शुग - लघु, रस

रस - कषाय

विषाक्त - मधुर

वीर्य - उष्ण

रोगधनता- चासध, केश्वर, दृमिनेस्वर्भवनाशन, चयुष्य

चरक- रसासृगमांसमेऽजान् दोषान् दृन्ति विमीताम् । ए-स-२७

विमितक मज्जा- वृद्ध छर्दि कफनातहर, मदहृत

अर्धपिक्क फल - रेचक पक्क फल - ग्राही

प्रमोज्योग- फल

वत्सनाभL.N. - *Aconitum ferox*F. - *Ranunculaceae*इ. - *Monk's hood*पर्फेप्शन - विष, अमृत हिंदी - मीरा विषसंदर्भ - क्षुपउत्पन्नीस्थान - हिमालयवैज्ञानिक - सिन्दुवारसट्टक्यांगो वत्सनाभाकृतिस्तथा।

यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स प्राप्तिः॥ भाष्म.

यः कन्दो गोस्तनाकारो न दीर्घः पञ्चमोऽग्नात् ।

न स्मृलो गोस्तदीर्घः - वत्सनाभं तु पाषुरम् ॥ द.र.स.

रा.संधरन - एकोनाइटिन, स्मुडोएकोनाइटिन, पिङ्गो एकोनिन
बेजोइन एकोनिन, हेमोनेपेलिन.रसपंचक - गुण - लघु, रुद्ध तीक्ष्ण, तापशी, विकासी
रस - मधुर
विपाक - मधुर
वीर्य - उष्णकर्म - ठुक्रोतेजार, शोषण, कुक्षध, जरद्ध, कण्ठरात् सन्तुपातनमधोज्यांग - गूडि
माभा - ७/८ स्त्री**TIERRA**मोग - मृत्युजयरस, टिंगुलेश्वररस, ऊनेदेवररस, ज्वरमुरारि, सौम्याभ्यवर्दीविषलघ्नी - मुरवं झन्नमार्ग विमिमाग्न, धृदि, स्वेदाधिकर, तारमाविस्थारणAntidote - उक्का, आमाशय धावन, कस्तूरी | ज्वार-चारणप्रतिनिधि - ज्वारशोधन - गोमूत्रात् डेवून नंतर गोदुधात् स्वेदनसेवनामाल - शीत व वसेत महात

मेघवृंगीL.N. - *Gymnema sylvestre*F. - *Asclepiadaceae*पर्याय - मधुनाशिनी, विषाणी, मेघवल्ली, अजगृंगिकास्वरूप - लता उत्तरीस्थान - दक्षिण उत्तर व पश्चिम भारतरा. संघर्षन - *Gymnemic acid, Quercitol, calcium oxalate Saponin, Anthraquinone compound.*रसायनक्र. - गुण - लद्धु, रुक्ष

रस - कृष्ण, विकृत

विपाक - कड़

वीर्य - उष्ण

रोगान्तरा - प्रमेहद्वा, कुमीन, विषध, इवासकासधप्रयोज्योग - पन, मुकL.N. - *Argyrea Speciosa*F. - *Convolvulaceae*पर्याय - धावफल, समुद्रशाम, छागंडी, वृथवनिधिस्वरूप - लता उत्तरीस्थान - सर्वभरसायनक्र. - गुण - लद्धु, स्निग्धरस - कड़, विकृत, कृष्णविपाक - मधुरवीर्य - उष्णयुणिधर्म - बाट्टमतःपन - जग्गोबद्ध, पाचन, वारण, शोधन
वृथ शुक्रवर्धक मेघा अग्नि स्वरसांतिकृतअ. सं. - अग्निगंगांडा सुबद्रप्रताना फलेषु पीता कुसुमेषु रक्ता।

पत्रैः सुग्राहैः मृदु रोमवस्त्रैः ताम्बुलकलौः घनमूलांकैः॥

भैरव - शतावरी रसासह सेवन - मेघावी, सूर्तिमिम
वलिपलित वर्जित

अगुर

गण- कीतप्रशमन, श्वासहर, शिरोविरेचन, तिक्तस्कन्ध (च.)
एलादि, सालसारादि, इलेष्यसंशमन (सु.)

L.N.- *Aquilaria agallocha.*

F- *Thymelaceae*

प्रभाव- प्रवर, लोह, राजाटि, मोगज, वंशिक, कृमिज, कृमिजन्ध, अनार्थिक

इ- - Eagle wood. स्वरूप - वृक्ष

उत्पत्तीस्थान- पूर्व हिमालय, आसाम, मणिपुर

जाती- राजनिधेन्ट - ४ प्रकार - कृष्णागुरु, काष्ठागुरु (पीत), वाहागुरु, मांगलबागुरु,
मांगलागुरु, - ध्वेष

कृष्ण बुणाघिके तनु लोहवद वारि मज्जति। (पाषाणत्रुडणारा)

रासायनिक- *Sesquiterpene alcohol.*

रसायनक्रिया- मुण - लघु, लभ, लीक

रस - कट्ट तिक्त

विपाक - केट

कार्य - उणा

कार्य- कण्ठप्रशमन

सुखुत - अगुर, तैल - दुष्कृत्यशोधन, कृमिकाकुष्ठनिलाम्ब

दाम्पट - रसायन, धूपनामि उपयोग

TIERRA
शामुना दस्तिमेह संविशेषहर
रासायनिकी शीतापनशनप्रयोगकारी।

मैर- काकतुंडाकृति: स्त्रियो गुरुरेत्येवोत्तमोऽगुरः।

असारपाणुरे रुद्रो लघु चाधमादिशेत्॥

नादेभे नाप्युपादेभे तितिरिपिङ्कागुरः।

द्वालमलीराष्ट्रसंपाशो नैव ग्राहयः कदाचन।

प्रयोग- फंडसार, तैल

सप्तपत्री

वर्णन - तिक्तस्कन्ध, कषायस्कन्ध, कुषध, उदर्द्वप्रशमन, शिरोविरेचन (-र) आरघ्वधादि, लाङादि, अद्योग्राग्नार (-सु)

L.N. - *Alstonia scholaris*

F - Apocynaceae

प्रभाव - विराग्नितक, विप्रस्थाद, शारद

स्वरूप - वृक्ष उत्पत्तीस्थान - भारतात सर्वत्र

रा. संधरण - Dittamine, Echitamine, Echitamine, Echicagoutchien
Echicenn, Echitin.

रसपंचक - गुण - लघु स्त्रिघ

रस - विक्त कृषाग्र

विपाक - कड

वीर्य - उष्णा

प्रयोग्यांग - त्वक

रोगलता - कुष्ठ थ्यू, गुल्म हृभी बंध, श्वास

वैशिष्ट्य - डलहा - सप्तपत्री शाळमलिमटुशप्पो गजमदगः क्षम्यः
शारदि विक्सनशीलः उच्छ्रेत्यः ।

सत्तवां गुच्छप्पो बुद्धत्वक शाळमलिंघदः ।

TIERRA

वीजक

L.N. - *Pterocarpus marsupium*

F - Leguminosae

प्रभाव - पीतसार, पीतशालक, बन्धुपुष्प, प्रियक, सर्जन, असन

इ - Indian kino tree, Malabar kino tree.

स्वरूप - वृक्ष उत्पत्तीस्थान - मध्यर दक्षिण भारत पर्वतीम् द्वे भ

रा. संधरण - Kino tannic acid, pyro-catechin, pectin, epicatechin, liquiritigenin.

रसपंचक - गुण - लघु रुग्म

रस - कृषाग्र विक्त

विपाक - कड वीर्य - शीत

शुलधर्म - गोप्तर, संधानीम्, प्रमेत, रेख, रसायन, त्वक्. प्रमेहात - गोड्यारव्यायामान

प्रयोग्यांग - कोडसार, निप्रसि

विकल्पगुण - तिक्त संकर्षL.N. - Flacourtie ramontchiF - Flacourtiaceaeइ - Governor's plumपर्याय - रुबवृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कटी, व्याघ्रपादस्वरूप - गुलम | धोयावृक्षउत्पत्तीस्थान - हिमालय - ४००० फूल उंचीवर, दमिश मारत.रा. संघर्षन - Protein, carbohydrate.रसपंचक - गुण - लघु, रुक्षरस - तिक्त फल - मधुर ममल रुक्षायविपाक - कटुवर्षीय - शीतगुणकर्म - कमळा, प्रसेह, रक्तदोषहर, दीपन, पाचन, प्लीयावृद्धीहरप्रयोज्योग -चन्द्रपत्रगुण - चतुर्वर्ण (भाजा)L.N. - Lepidium sativumF - Cruciferaeपर्याय - चेंडिया, चम्हनी, पशुगंठनकारी, लिंगिली, कासी, मडा
वासपुष्पा, सुनासराइ - Garden cressस्वरूप - झुप उत्पत्तीस्थान - समस्त मारतरा. संघर्षन - Cress oil, बैनिक सामग्री, बैनिक आमोआओसायनेट,
Glucotropaeolin, सिनापिन, सिनापिन और सिडरसपंचक - गुण - लघु रुक्ष तीक्ष्णरस - कटु तिक्तविपाक - कटुवर्जन - सिंग्ध पिण्डिलवर्षीय - उष्णगुणकर्म - प्रसूतीप्रथात वल्व, स्तन्यवर्धक, शुद्धीकरण, कष्टात्वहर
आघात, उदरशुल, प्रमाणिका, वातस्त्रवत
बलपुरीवर्धकप्रयोज्योग - वीजप्रोग - चतुर्वर्ण चूर्ण

गुज्जा

गण- मूलविष (सु.) उपविष (भा.प्र.)

L.N.- *Abrus precatorius*

F- Leguminosae

प्रभाग- श्वेतगुज्जा - उच्चरा, कृष्णला

रक्तगुज्जा - काकचिंचि, काकणांती, रमिका, काकादनी, काकपीलु काकवल्लरी

इं- Indian liquorice root.

स्वरूप- लता उत्तरीश्यान - मारतात सर्वनि

रासायन- Abrin, Haemagglutinin, Abrusic acid, urease
Glycerhizine (प्रभात)

जाती- 2 श्वेत रक्त

रसायनात्मक- गुण - लघु रुद्र तीक्ष्ण

रस - तिक्त रुधारे मूल - मधुर सिंघ

विषाण - कट

वर्षा - उच्छ

गुणधर्म- कुष्ठ, नृणामेता, वैदनास्थापन

मुखपात्र - प्रभवात्र गंडुध

कोरटी, नेभामभार, वृक्ष बल, कण्डुकणाप्टम् कृमीय

देहतुप्तित, चमुच्च फूल - मुखरोधर

गर्भधातनाच्च कृत

TERRA

विषाक्त प्रभाव- वीजन्त्री ग्राहि, मानेत वाप्तु वरेच्च (विसूचिकासृष्टि)

मुखसीन - टानीकर नाटी, subcutaneous - विषाक्त

निवारण- तंडुलीयक स्वस्त धन

बोधन- कांजी | गोदुग्ध

नागकेशर

वाणि - एलादि, प्रियंगवादि, अज्जनादि (मु.) चतुर्वर्ति (भा.)

L.N. - Mesua ferrea

F - Guttiferae

प्रभासि - नागपुष्प, चामोघ, नाग, केशर, नागमिन्डल, नागनाहवध

स्वरूप - वृष्टि उत्पत्तीस्थान - पूर्वोत्तर द्विमालय, नेपाल, द. भारत

उ - Cobra's saffron / mesua

रा संधटन - mesuol, mesuone

रसपचक - गुण - लघु, रुद्रा

रस - कषाय तिक्त

विपाक - कड़

वीर्य - उष्ण

रोगधनता - आमपाचन, घर्षित, ठक्कासनाशन, कुछ प्रभाव

विसर्पनाशन, बहिर्वातमध्यन

प्रभोज्योग - पुकेसर

केशरनवतीत शक्तिरम्भास्थान + अशीस्यप्रभावित रक्तसनि। दर. नि. १५

: चोपचिनी

L.N. - Smilax china

F - Liliaceae

उ - Chind root.

प्रभासि - दिपाल्तर वाचा

स्वरूप - आरोहिणी लता

जाती - भारतीय प्रतिनिधि Smilax glabra

रा संधटन - tannin, cinchonin, smilacine, saponin, यजात - Rutin

रसपचक - गुण - लघु रुद्रा

रस - तिक्त

विपाक - कड़

दोषधनता - चिदोषन

वीर्य - उष्ण

रोगधनता - शोमहर, रक्तशोधक, वेदनास्थापन, वातरक्त, आमवात संधिगत वात, युक्तविकार, पूर्वमेहज संधिशोध

प्रभोज्योग - कंद

वातवाधीनप्रस्तार उन्माद तनुवेळामृ

व्यपोहति विशेषण फिरगामप्रवाणिनी ॥ भा.पु.

सारिवा

गण - स्तन्यरोधन, पुरीषसंश्लेषणीय, चवरटर, दाहप्रशमन, मधुरस्तन्य (य.)
सारिवादि, विदारिगंधादि, बल्लीपंचमूळ (सु.)

L.N. - *Hemidesmus indicus*

F. - *Asclepiadaceae*

प्रभाग - उत्पलसारिवा, गोपवल्ली, गोपा, गोपकन्धा, कुशोदरी, स्फोटा,
लता आरफोता, चब्दनी

E.H. - Indian sarsaparilla स्वरूप - लता

जाती - श्वेत व कृष्ण

कृष्ण (जम्बुपन्ना सारिवा) - *Cryptolepis buchanana* or
Ichnocarpus frutescens

उत्पत्तीस्थान - संपूर्ण भारत

रा. संघर्षन - P-methoxy salicylic aldehyde
β-sitosterol, β-amyrins, lupeol
tetracyclic triterpenoid alcohol

रसपंचक - गुण - गुण किंवद्दन
रस - मधुर लिपा
विपाक - मधुर
वीर्य - शीत दोषघटना - अदोषघट

गुणकर्म - अधिमांसप, सख्ति, रक्तसंकाश विपु
चवरातिसारनाशन, कण्डुकुष्ठचवरटर, मेहदुग्धिनाशन, रक्तशोधक, वर्षी

सारिवा दातिमीपना श्वेतरेरवोक्तिच्छदा।

इड्यग्नी शिविफला तद्दिनी कृष्णवल्लरी॥ (शि.)

प्रभोज्यांग - मूल

कला: सारिवादि वयी, सारिवादमासव

मंजिष्ठा

गण- वर्षी, विषज्जा, ज्वरहर (च.) प्रिंगमादि, पित्तसंशमन (सु.)

L.N.- *Rubia cordifolia*

F- Rubiaceae

इ- Indian madder

प्रभाग- विकमा, शोजनवल्ली, जिङ्गी, समझा, कालमेषिका, मण्डकपर्णी
भृष्टिरी, भृष्टी, रसायनी, अरुणा, काला, रक्तज्ञी, रक्तप्रसिका
भृष्टितरी, गाढ़ीरी, मञ्जूषा, बुररजिनी

स्वरूप- आरोहिणी लता उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत - पर्वतीय देशों

रा. संधरन- Purpurin, manjisthin, pseudoperpurin, xanthine

रसायनक- गुण - गुरु, रुद्र

रस - तिक्त रुक्षात् मधुर

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

रोगाङता- रक्तशोषण, रक्त, स्वरुत, विषज्जा गोष्ठय,

रक्तातिसार, कुच, विसर्प, ब्रण, निळुत भृष्टिरुद्धरण वृण

मंजिष्ठा चन्दनक्षमे मंजिष्ठामेतिन मापमेत।

प्रयोगोंग- मूल

मुण्डी

गण- रसायन (-ी)

L.N.- *sphaeranthus indicus*

F- compositae

मुण्डी- भियु, आवणी, तपोधना, अकमात्वा, वृवणमेषिका

महामुण्डी- महाआवणिका, मूकदम्भिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यमा, अतितपस्विनी

स्वरूप- शुष्प प्रकार - मुण्डी, महामुण्डी

उत्पत्तीस्थान- समस्त भारत - आनूप देशों

रा. संधरन- Sphaeranthin, pigenol.

रसायनक- गुठा - लघु, रुद्र

रस - तिक्त कटु

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

दोषघटा - प्रियोपद

रोगाङता- शोषण, केदनास्मापन, सूखीति, अधीव्रेदन, अपस्मार, मेघ, रुचि, अपची
कुच, श्लीपद, मूत्रशोयन प्रयोगोंग - पचांग

बालपर्णीL.N. - *Desmodium gangeticum*

F - Leguminosae

गाज़ - अंगमदिप्रामन, बलू रेतोपग शोभतर
मधुरसंधा (च)

विदारिगंधादि लघुपंचमुक्त (सु)

पर्भीभ - विदारिगंधा, मंयुमती, स्विरा, सोम्बा
भिपर्णी, पीवीरी, गुटा, दीर्घाणी, रीर्घपत्रास्वरप - ध्रुपउत्पत्तिस्थान - सेप्टूम्बर मारतरसायनकृति - गुण - गुरु, स्त्रिघ्न

रस - मधुर तिक्त

विपाक - मधुर:

वीर्य - उष्ण

दोषधता - भिदोषध

रोगक्षमता - वृद्ध, कठम, शोभतर

रक्तातिमारप्त रसायन

विषमज्ज्वर, प्रेरण, अर्शी

पूर्णिपर्णीL.N. - *Uraria picta*

F - Leguminosae

अंगमदिप्रामन संघानीय शोभतर मधुरसंधा (च)
विदारिगंधादि, टरिङ्गादि लघुपंचमुक्त (सु)पूर्णिपर्णी, कलशी धाननी गुण देवगालविळा
चिभपर्णी, अंधिपर्णी, भट्टिपर्णी, देषुखविळा
सिंटपूच्छीस्वरप - ध्रुप

सेप्टूम्बर मारत

गुण - लघु, स्त्रिघ्न

रस - मधुर तिक्त

विपाक - मधुर

वीर्य - उष्ण

दोषधता - भिदोषध

वृद्ध, कठम, श्वास

रक्तातिसार

अश्रुम

विदारिगंधा वृद्ध सर्वोष्ठारणाम्।

पूर्णिपर्णी सांग्राहिक वातहर दीप्तीय
वृद्धाणाम्।

पूर्णिपर्णी मूल + मोसरस - मग्नरोहण

प्रयोज्योग - पंचांग, मूल

मूल

योग - दशमुलारीष्ट

दरामुलारीष्ट

मण्डकपर्णी

वस्त्रसापन

विकृतसंषेष प्रज्ञास्थापन

Centella asiatica

Umbelliferae

इं-

पर्याय - माणुची, त्वाष्ट्री
दिव्या, मांडौषधीस्वरूप - धूपउत्पत्तीस्थान - मारतात सर्वत्रएसे - Hydrocotyle

Asciaticoside, Vallerine

ब्राह्मी (रोन्दी)

बल्य, प्रज्ञास्थापन

Bacopa monnieri

Scrophulariaceae

Indian Pennywort.

शेरवपुष्पी

Convolvulus pluricaulis

Convolvulaceae

-

कपोतवडा, सोमवल्ली
सारस्वतीशेरवाहा, मांगल्यकुसुमा
शेरपुष्पी

क्षुप

क्षुप

भारतात सर्वत्र

भारतात सर्वत्र

Brainbin, herpestin
herseponin

Shankhapushpin.

संपर्चक

गुण - लघु

रस - विकृत रुधान

विपाक - मधुर

वीर्य - शीत

प्रभाव - मेघ

उप - क्लेन्डु

रस - तिक्त

विपाक - चट्ट

वीर्य - उष्ण

प्रभाव - जंग्ल

गुण - स्लिंग्डर पिण्डिल

रस - तिक्त

विपाक - मधुर

वीर्य - शीत

प्रभाव - मेघ

शोगङ्गता -

कुछल, वृण्डा

स्त्रृतीवर्धक

उन्माद अपस्थार

विकृतवाया,
शोभदन, जंग्ल

मेघ, कुछल

दीपन, पाचन, मेघ

उन्माद, अपस्थार

वृष्णि, कुछल

ग्रहमूलादियोग्यी, वशीकरण (सिद्धि)

प्रयोज्यांश - पंचोग

पंचोग

पंचोग

ग्रोग - घरगोक्त
मेघ रसायन

घरगोक्त मेघ रसायन

मेघा विशेषण शेरवपुष्पी

ज्योतिष्मतीवर्णा - शिरोविरचनL.N. - *Celastrus paniculatus*F - Celastraceae

पारावतपदी, कामाइडी, कंगुनिका, बेगा
पीततैला, पूरीतैला, कटवीका, कटभी
ज्योतिष्का, कड्डु, पिष्टा, लता कटुन्धनी

स्वरूप - आरोहिणी लताउत्पन्नस्थान - समस्त भारतरास - Black oil oleum nigrum, celastrin
paniculatin, किञ्जोजेटजाति :रसपंचक -

मुण - लिङ्ग

रस - कटु तिस्त

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

प्रभाव - मेघ

रोगधन्ता - मेघ, बुद्धिवर्धक

बीज - नस्य तैल - क्लैवात अम्बेग

पञ्चाश - कषातर्गत कृष्ण तैल - वेरीरीत

प्रतिनिधि - लवेश तैल

प्रयोज्योग - बीज तैलमात्रा -वन्धा

विरेचन, लेखनीय, अरोग्य, वृक्षीय,
आस्थाप्रयोग, शीतप्रशमन, संज्ञास्थापन
तिस्तसंक्षय, शिरोविरचन (पर.)
पिष्टल्यादि, वचादि, मुस्तादि, उच्छ्वासगतर (सु)

*Acorus calamus*Araceae

उग्रगंधा, बछुंगा, गोलोमी, इतपविका
कुडपनी, मंगल्या, जटिलोग्ना, लोमशा

शुष्पसमस्त भारतAsarum heterophyllum, A-asarone, B-asarone,
Aconine, Eugenol, Caffeine.

वचा (बोडवचा), पारमीन्दवचा (बालवचा)
महामरीवचा (उलंजन), द्वीपोतरवचा (चोपचिनी)

मुख - ऊद्धुनीमाटा

रस - कटु तिस्त

विपाक - कटु

वीर्य - उष्ण

प्रभाव - मेघ

मेघ, संज्ञास्थापन, आयोपशमनवेदनस्थापन, वामरु, वर्षी, रक्तेन्द्रननवास, प्रतिरक्षाय, मेदोरोग, अग्निमांड्य, अर्शकूमी, वाक्तावतीवर्धकमूल, एवं औषधिक कोड125-500 mg वर्मनार्थ - 1-2 gmसारस्वत-चूणी

अंकोल

L.N. - *Alangium salviifolium*

F - *Alangiaceae*

पर्याप्ति - अंकोट, दीर्घकील, ताम्रफल, गुलालेह, निरोचक

स्वरूप - बुड़ी

उत्पत्तीसमान - दक्षिण भारत उण्ठ प्रदेशात

रा.संघर्षन - *Alangine, potassium chloride*

रसपंचक - गुण - लघु तीक्ष्ण सिद्ध सर

रस - तिक्त कडु कधाप्र

विषाक - कडु

कमी - उण्ठ

प्रभाव - विचित्र

रोगधर्ता - कक्कुराखुविधि द्वानि इन्द्रजन्तुविषापृष्ठ ।

बौद्धात्मिकविधि द्वानि कष्टकृत्सर शोषण । धात्रि

मूषिकात्तिविषापृष्ठ (भा.पु.) सायारुपिताशन (मंडि)

फल - शोत स्त्राव बृहत् गुण बल्ले रेचन

बास्तुं चांकोलतेलेन कुमिल्लूत्तरपट्टात् । रु

प्रयोज्योग - दूरकल्प

प्रिमुग

गांट - मूनविरननीय, पुरोधसंश्लेष्म, (व) प्रिमेवादि, इन्जनादि (सु.)

L.N. - *Callicarpa macrophylla*

F - Verbenaceae

स्वरूप - चुल्म उत्पत्तीसमान - हिमालय

जाती - १) प्रिमुग २) गन्धप्रिमेयु

पर्याप्ति - फलिनी, कान्ता, गन्धफली, इमामा, अंगनाप्रिया, लता, महिलात्तबभा

गुण्डा, विषक्षेनाङ्गता, प्रिमा

रा.सं. - *Hydrocynic acid*

रसपंचक - गुण - गुरु रुक्ष

रस - तिक्त कधाप्र मधुर

विषाक - कडु

कमी - रगीत

प्रयोज्योग - पुष्प

रोगधर्ता - रक्तात्तिसार, रक्तेऽदाह गोर्गांधनशन, चुल्म वृक्षा विष प्रमेह

Page 61

अटिफेनवर्ग- उष्णविषL.N.- Papaver somniferumF- Papaveraceae इ. opiumप्रभायि- रवसफलमीर, आफुक, पोस्ता, तिलमेद, रवसतिन, रवारवस
आइबर्हर, भा.पु - उल्लोरवस्वरूप- वर्धायु शुष्पुउत्पत्तीस्थान- समशीतोष्ण कटिबंध, चुरोप, एशिया, भारतात् - UP गोगाळ बिटारफल- डोडा फलत्वक- योरत बीज- पोशतदाना | रवशरवशफलनिर्भयि- अफीमप्रकार- पुष्पभेदाने - ४ इकेत पीत हुण्ठा चिम

कर्मभेदाने - ४ जारण मारण धारण सारण

रासायानिक- Morphine, pseudomorphine, codeine, thebaïne, Narcotine
Narceine, papaverine, cryptopine, protopine, laudainine,
laudanousine, meconidine, Rhoedaine, Nasopine, Lactic acid.
Morphine - वेदनास्थापन | Narcotine - विषमन्वरद्ध कर्मसचिद्रसपंचक- गुण - लघु रुद्ध सूख व्यवहारी विकारी

रस - तिस्त रुद्धारू

विषाक्त - कृष्ण

वीर्य - उष्मा

प्रभाव - मादक

TIERRAगुणात्मक- शुल्पशमन, शुक्तस्तम्भन, स्वेदजनन, वेदनास्थापन, मतकृद्. मोटकर
बीज (रवसरवस)- मधुर वृथत्वलक्ष्य कांतोवीर्यवलप्रदशोधन- आहुक स्वरस २० भावनायोग- अटिफेनासव, निङ्गोदम वयो, कर्पूर रसप्रयोगांग- फलनिर्भयि

F - Cannabionaceae

पर्याय - नादुनारी, मादनी, विजवा, जवा, गजा

इ- - Indian Hemp

स्वरूप - वषयु ध्रुप

उत्पत्तिस्थान - इराण, इराक मिस्र, मारतात बंगलोर ते आसाम

पन्नपुष्पफलयुक्त कोमल शारदा - भांग

स्त्री जाती पुपाची राक्युक्त मंजिरी - गोंजा

पन्न व शारबोवरील रानीमु निर्मिति - घरस

रासायनिक संघटन - Cannabinol, tetrahydrocannabinol, cannabinolic acid.

रसायनक्रम - गुण - काढू, लीळा

रस - निष्ठा

विषाद - कडा

वीर्य - उछा

प्रसाद - मादक

युगकर्म -

शारी, दीपन, पाचन, कामदा, निष्ठाकर

वेदतात्र, सौभग्यजनन, गमशियसंरोचक

आङ्गोपनिरोधी, काञ्चीकर, आविसारण

TIERRA

प्रयोग -

भांग, गोंजा, घरस

योग -

जातीफलादि चूर्ण, मदनाळान्द मोदर

पटोल

गण- तृष्णनिगृहण (च) पटोलादि, आरभधादि (सु)

L.N.- *Trichosanthes dioica* F- Cucurbitaceae इ. Pointed gourd

पर्याय- कुलक, कर्मसच्छद, राजीफल, बीजगर्भ, तिक्त, पाषुक, राजेघ, अमृतफल, पाषुफल
प्रतीक, कुछां, कासमज्जन स्वरूप - लगा

प्रभार - 2 1) ग्राम्य (मधुर) 2) चन्द (तिक्त)

उत्पत्तिस्थान- बिहार, उत्तरप्रदेश, बंगाल

रा. संघटन- प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट

रसपंचक- गुण - लघु, रुक्ष

रस - तिक्त

विपाक - कहु

दोषधता - मिदोपच

वीर्य - उष्टर

रोगधूता- पाचन, लक्ष, वृद्धि, कुमीठ, यह इकिकार, कामला, चरभ, कर्ष, भनातल

पटोल मूल - सुखविरेचक

जाल - व्यक्तिभार

पत्ता - पितळ

फल - श्रिदोषध

पत्ता :

कृष्णायोग

वर्ग- वल्लीफल

L.N.- *Benincasa hispida*

F- Cucurbitaceae

इ. White gourd melon

पर्याय- पुष्पफल, वृद्धकल, वल्लीफल, कर्मसि, पीतपुच्छ

स्वरूप- वर्षायु आरोहिणी लता. उत्पत्तिस्थान- भारतात सर्वत्र

रा. संघटन- Cucurbitine, protein, mucus.

रसपंचक- गुण - लघु स्त्रिया

रस - मधुर

विपाक - मधुर

समाव-मेघ

वीर्य - शीत

गुणधर्म- बाल कुमार - पित्तापह शीत

मध्यम - रुक्फर

वृद्ध - नातिरिपि, स्नातु, सप्तर, रीपन, लघु

नस्तिशुद्धीकर - येतोरोग सर्वदोषजित

बीज- Tape worm (स्फित हुमी) वर नार्थाराय, मूत्रननन, अश्वरोजनन, नल्क

फलस्वरस - पारदविष्णवारानार्थ

रक्तपित्तहर. वल्लीफलां चेके

प्रयोग- फल, बीज, नीजतैक

कंपूर

L.N. - *Cinnamomum camphora* F. Lauraceae

पर्याय - धनसार, चन्द्र, हिमात्क, सिताम्ब, हिमवालुक, हिमनामा

स्वरूप - वृक्ष

प्रकार - देशभेदाने - ४३ ।) मीनसेनी | बरास २) चीनी ३) मारतीय

निर्माणभेदाने - २ ।) पक्व. हृषिम २) अपक्व. नैसर्गिक - छेष्ठ

राज निघंड - १४ भेद

रा. संघटन - डडनशील तेल - स्टिथ्रोफ्टेनस.

रसपंचक - गुण - लघु, तीक्ष्ण

रस - तिक्त कड़ मधुर

विपाक - कड़

वीर्य - शीत

रोगध्रुता - वातहर, कफहर, दीपति, रासात्तर, च्वरघ, स्वेदननम, स्तन्वनाशन
अल्प मानेत - कामोत्तेजक, अधिक मानेत - कामोत्तेजन शास्त्रक
शोधहर, वेत्ताहर, मिस्तिष्ठनद्योत्तजक, दीग्निधनाशक

प्रयोज्योग - निश्चय मध्या - १२५-३७६ mg

विषलडाया - उबरशुल, ठुक्कास, घर्वि, ब्रह्म, हृषिनारम, मायेप, सज्जास

उपचार - वेपन, विरेचन, कुपोष, चस्तुरी, चुल्कवेस्तर, घेवर इ. हृष्णप्रयोग

खदिर

वर्ण - कुछझ, कण्ठभक्तन्ध, (इ.) सालसारादि (सु)

L.N. - *Acacia catechu*. F. Leguminosae इ. Cutch tree.

पर्याय - रक्तसार, धनकामन, कट्टनी, बालपन, गांडी, बायमी, बुशल्प

स्वरूप - वृक्ष उत्पत्तिरूपान - सर्वज्ञात

रा. संघटन - Catechin, catechutannic acid,

प्रकार - ३ ।) खदिर २) कदर (खेतखदिर - *A. sinica*) ३) इरिमेद - *A. farnesiana*.

रसपंचक - गुण - लघु, सम

रस - तिक्त कृषाम्

विपाक - कड़

प्रसाद - कुछझ

वीर्य - शीत

रोगध्रुता - मेदोम, प्रमेट्ज, शिख, शोध, कुछ, त्रष, रक्तपित, श्वीगाहृथी

प्रयोज्योग - कोडला, खदिरसार (कत्मा)

खदिर: कुछझानाम् । चरस् ।

बानैमीठिनै खदिरसाम्भम् (सु.नि)

कुटज

गठा- अशेषि, कण्डप, स्तनशोधन, आस्थापनोपग, वमन (च.)
आरवधादि, पिपलधादि, हरिद्रादि, लाक्षादि, उच्चभागधर (सु.)

L.N.- *Holarrhena antidysentrica*

F- *Apocynaceae* इ- kurchi

पर्याय- गिरिमलिका, वत्सक, वृष्टि, किंग, इन्द्रवृष्टि, शक्तशारवी, मलिकापुष्प
मवफल, पाण्डुरद्धम.

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत.

जाती- चरक - २ १) फुकुटज २) रसीकुटज
भा. प्र. २ १) श्वेत २) कुष्ठा - *Wrightia tomentosa*.
बीज अनाकार असलाने 'इंहेव' मृणतात.

रा. संघटन- कोनेसाइन, कुपित, कुर्विनीन, टोलेहैनाइन

संग्रहण- शरद प्रवृत्त

रसायनका- गुण - लघु उष्ण

रस - निक्त रुक्ष

विपाक - कट्ट

वीर्य - शीत

इंहेव - ग्रिदोषध

रोगधना- अर्श, अविसार, कुष्ठ, कुमी, विराफ,

कुटजत्वक श्लेष्मपित्तरक्तसोयादिकोपरशोषणानाम्। चर. सु. २५

प्रयोगांग- कोडलक, बीज

L.N.- *Hydnocarpus laurifolia* F- *Elaeocarpaceae*

पर्याय- कटुसपित्त, कुष्ठवैरी

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान - पर्वतीय प्रेरेश

रा. संघटन- *Chamissoaaid*, *Hydnocarpic aid*, *Palmitic aid*.

रसायनका- गुण - लिंगद्वय, तीक्ष्ण

रस - कट्ट निक्त

विपाक - कट्ट

वीर्य - उष्ण

बीज संग्रहण- वषीभुत्तु प्रारंभ

गुणकर्म- कुष्ठ, कष्ट, गोदमाळा, नाडिवण, तिमिरात (प्रेनन)

गुण्डूगण - एलादि (सु.)L.N. - Commiphora mukul F - Burseraceaeइ - Gum guggul, Indian bedelliumपर्याय - देवधूप, कोशिक, महिषाश, पलंकष, कुम, उलुखल, जटायुउत्पत्तीस्थान - अरब, अफ्रिका, मारतात सिंध राजस्थान, मेसूर

मर, भूमिषु जाग्रन्ते प्रायशः पुरपादपः। कै.नि.

स्वरूप - शुष्कजाती - ५ १) महिषाश २) महानील ३) कुमुद ४) पदम् ५) हिरण्य (कनार)

महिषाश व कनक मनुष्योदयी व इतर पशुविकित्वेत

भावधारिक प्रकार - २ १) कणा - मारवाड

२) मैसा - सिंध, रुच्छ

संग्रहाल - शिशिर व ऐसंतरसपंचक - शुण - लघु रूप, नीला, क्रिहा, सूज्जम सर, सुशेधि (पुराण)

सिंग्हा पिण्डिल (जावेन)

रस - तिष्ठत, कड़ी

विपात - कड़ी

वीर्य - उल्ला

प्रभाव - शिदोषहर

शुणाधीर्मि -

शोभहर, वेदनास्त्रापन, बणशोधन, लड्योवण, काफ्हहर, मेदोहर

संधिगत वात, आमकात, डोडमाला, अपची, चातवादी, वातरस्त

रसायन कुछ, पुमेट भ्रन्तमंधानहृ

लविन शुणुक -

सिंधू कंवनसनाश, पक्वनामुक्लोपम सुशेधि, पिण्डिल, बृहण, वृष्ण

पूरण शुणुक -

शुण, द्वितप्रभृतिवण्ण, दुष्पद, वीर्यवर्जित, अतिलैरवन

प्रयोज्ञोग - निश्चित

मात्रा - २-५ ग्रा रसायनार्थि २ पल (४०ग्रा)

एक्षुण - १०० पल (Mkg) अन्तर्गत

शोधन - शोकुण्ड (विफल क्वाथ)सेवनकाल पञ्च - अम्लं तीज्ञामजीष्ठ व्यवाये व्यसमातपम्।

मदयं रोषे व्यजेत्समाहृ गुणार्थी पुरसेकरः॥ भग-पु -

आहित प्रभाव - यकृत कुकुससागी ठानीहर, अतिगोगाने, तिमिर वैष्णव, काश्मी, मूर्च्छी

शुणुकः मेदोऽनिलहराणाम्। च-सु २५

श्रोभाजन

गण- स्वेदोपग, कृमिज, शिरोविरचनोपग, कटुस्कन्ध, टरितक वर्ग (-प.)
वरणादि, शिरोविरचन (सु-)

L.N.- *Moringa oleifera* इ. Horse radish tree
F- Moringaceae Drum stick plant.

पर्मीय- शिशु, तीळगन्धा, अधीव, मोचक

प्रकार- १) इवेत (कटुशिशु) २) घक्त (मदुशिशु)
शिशुबीज - इवेतमरिच

रा. संघटन- *Moringine, Pterygospermin, spirochin.*

रसपंचक- गुण- लघुरुप तीळग

रस- कटु तिक्त

विपाक- कटु

वीर्य- उष्ण

गुणधर्म- दीपिन पात्तन शुल्प, कृमिज, शिरोविरचन, रोथठर, विड्विठर
शिशुबीज- वयुष, विषप, अवृष्टि, शिरोनिंतुत.

मेदोरोग्हर, अपनि गुण गडनालो वा

प्रयोगोंग- मूलत्वक बीज

सापिंगाई

L.N.- *Rawolfia serpentina*

F- Apocynaceae

पर्मीय- धवलविद्यर, चंडीमार, नाकुली, नागसुगन्धा, शन्धनाकुली, नकुलेहा
मुजड़नी, सापड़ी, विषनविना

स्वरूप- शुप

उत्पत्तिस्थान- मारतात सर्वम

रा. संघटन- रिसिपिन, सर्पेश्चिन, झज्मेलिन, भाष्मसोप्रज्ञेलिन

रसपंचक- गुण- रुप

उन्माद अपस्मारात वापर

रस- तिक्त

पागलपन कोडाडी

विपाक- कटु

वीर्य- उष्ण

प्रभाव- विहाजनन

गुणधर्म- निङ्गाननन, रक्तमारसामर, उन्माद अपस्मार, गर्भरिष्ट उत्तेजक

प्रयोगोंग- मूल संभृष्टकाल- शरद

शुगरीL.N. - Zingiber officinaleF. - Zingiberaceaeगण - तृष्णिम, अरोद्धि, हीपनीय, शुलप्रशमन, तृष्णानिघटण (च.)

पिप्पल्यादि, विकट (स्तु) पंचनोल, बड़घण (भा.)

पर्याय - नागर, मठौषध, विश्वमेषज, शुक्लवेर, उषण, कटुमट्र,स्वरूप - नकुवर्षीय शुपउत्तीर्णान - केरङ, बंगल, कर्नाटक, मध्यप्रदेशप्रकार - १) जैमैकन २) भारतीय ३) अफ्रिकी ४) चिनीरासायनिक संधर्यन - प्रोटीन, रावेणियाइट, कैल्चिअम, फॉस्फरस, लोट स्थार्चि
Zingibetine, Zingiberol, shogaol, oil of ginger.रसायनक्र -

गुण - लघु स्लिष्ट

आडकी - गुरु रुप सिंह

रस - कट्ट

विपाक - कट्ट मधुर

आडकी - कट्ट

वीर्य - उषण

शुद्धी - शुद्धी आडकी भेदन

गुणकर्म -

मामपाचक, आमवातात, दीपिळ कफवातविनियन्धनुल

वृद्धि, स्वर्ग

भोजनाग्रे सदा पञ्च लवणाद्विमध्याद्।

अनिसंदीपन रुचे जित्याक्षविशेषनम् ॥ भ्राष्ट.

विवत्यभेदिनी भा तु सा कथे ग्राहिणीभवेत्।

राक्तिर्विनियन्धभेदे स्पाद्यतो न मलपातनो ॥

आडकी रस + पुराण गुड → श्रीतपितम, ऐष्ट विनिमांदमनाशन

प्रयोग निषेध - कुछ, पाण्ड, मूँगुच्छ, रक्तपित्र, वण, ज्वर, दाह, रारद, व श्रीमिमांदमनाशन
(भ्राष्ट)योग - आडक रखड, सौमाड्यशुद्धीपाक, समशरियचूर्ण, राजादी चवात्र

काम्पलक

गण - विरेचन (ए) अधोभागहर, श्यामादि (सु)

L.N. - *Mallotus philippinensis*. F - Euphorbiaceae इ. kamala tree.

पर्याय - कर्कश, रक्तांग, रेचन, रोचन, चन्द्र

स्वरूप - वृक्ष उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत

रा. संघटन - Rottlerin, Isorottlerin, homorottlerin, citric and oxalic acid.

परीक्षा - छाँड़ जलात अविलेभ, उछा जलात अंशत विलेभ. पार इथर Alcohol मध्ये विलेभ

ज्वलनशील, बागदावर जलाई बोयुलीने धीतवर्णी रेसा. , लघु, गंधटीन

रसपंचक - गुण - लघु रुग्न तीक्ष्ण

रस - कड़

विषाक्त - कड़

वीर्य - उष्ण

गुणधर्म - तांशोधन, रोपण कुक्षन, इमिन (स्फीत इमी), रक्तशोधन, गर्मनियोधन
रेचन

प्रयोगांग - फल रस योग - हिमियातनी वटी, भारभूत रुफिला वटी
इधिकाचूर्चसिंकाश: वल्किना योत्परेचन:

सोयाक्षेत्र वृक्षांश फलरेणु: कम्पलक:॥ यो.

अपमित्या - डुसुम्ब पुष्प, विषयोन्मुक्ति, नम्र

विडवा

गण - कृमिभ कुक्षन, तृप्तिभ, शिरोविरेचन (ए) सुरसादि, पिम्लादि (सु) भिमद (भा.प्र.)

L.N. - *Embelia ribes* F - Myrsinaceae

पर्याय - कृमिभ, पिम्लतुळ, जातुनाशन, वेचन, जमादा

स्वरूप - गुलम उत्पत्तीस्थान - पर्वतीय प्रदेश

रा. संघटन - Embelin, Christembeline

रसपंचक - गुण - लघु रुग्न तीक्ष्ण

रस - कड़ तिक्त

विषाक्त - कड़

वीर्य - उष्ण

प्रयोग - इमीझ

गुणकर्म - दीपन, पाचन, वृमीझ, (स्फीत इमी T₄₅ w₃₀) रुल भाघ्मान विवर्धनुत

वृमित, देतयुल, गर्मनियोधन

योग - विडंगारिष, विडंग तेंडुक रसायन

पिप्पला

वर्णन- कासहर, हिमानिशृण, शिरोविरचन, बमन, तृतीय, दीपनीय, शुद्धप्रशमन (प्र.)
पिप्पलादि, उष्वभाग्य, शिरोविरचन (सु.)

L.N.- Piper longum

F- Piperaceae इं- Long pepper

प्रभाय- मागधी, वेदेही, कृष्णा, कणा, चपला, तीक्ष्णतफुला, ऊषणा, उपकुल्या
शोष्टी, नोला

स्वरूप- लगा उत्पन्नीस्थान- भारतात उष्ण प्रदेशात

प्रकार- राजनिधेही-४ पिप्पली गजपिप्पली, सिंटली, वनपिप्पली
गजपिप्पली- चविका फल

रासांधटन- Piperine, piperazine, sesamin, pipelastrol.

रसपंचक- गुण- लड्डु सिद्ध तीक्ष्ण

रस- कट्टा

विषाक्त- मधुर

बीरी- अनुष्णशोत

झाईपिप्पली- गुरु सिद्ध

मधुर शोत कम्पन

झाई- पित्तम् शुष्क- पित्तम्

गुणकर्म- दीपेन, फाचन, रसायन, गुरम्, अर्च, प्रसेतृ, वृक्षास, सास, उचर, शुल्क

पिप्पली मधुरमुक्ता - मदककाविनाशिनी

गुठ पिप्पली - जीर्णजरे इनिमांद्रे

→ गोमूत्रेण तेजस्वी कृष्णाचूर्ण पिनेन्नरः।

वीर्धकालोविता दृष्टिं शृङ्खलीं वृक्षात्प्राप्तं जाग्रत्॥ ज्ञाप्र.

- कन्धेन कलेन च पिप्पलीनो सिद्धे धृते मात्रिकसप्रयुक्तम्।
क्षीरानुपानं विनिरूप्यवसो शुल्क प्रवृद्धे परिणामसंज्ञान्॥ वंगसेन

यरक- पिप्पली दीपकाल प्रयोग.

सिद्ध (सत्त्वदि) - कम्पनोप

उष्ण - पित्तप्रसेप

मत्त्वस्त्रोष्ट्रज्ञावात् - नान्त वत्प्रशमन

वद्धमान
प्रमोज
अपवाद

पिप्पलीमूळं दीपनीयपञ्चनीय झानाह प्ररामनानाम्।

तगर

गण – शीतप्रशमन, तिक्कस्कन्ध (च.) एलादी (सु.)

Latin name – Valeriana wallichii.

Family – Valerianaceae.

पर्याय – तगर, नत, वक्र, कुटील, नहूष, कालानुसार्य,

English name – Indian valerian

स्वरूप – क्षुप. प्रकार – 2 तगर व पिण्डतगर

उत्पत्तीस्थान – काश्मीर, भूतान इ.

रासायनिक संघटन – Valrianic acid

रसपंचक – गुण – लघु स्निग्ध, रस- तिक्क कटू कषाय विपाक- कटू वीर्य – उष्ण

गुणकर्म – भूतमद अपस्मारनाशन, विषधन, शिरोरोग व रक्तरोगनाशन, वेदनास्थापन, व्रणरोपक

प्रयोज्यांग – मूल

रसोन

Latin name – Allium sativum

Family- Liliaceae

पर्याय – उग्रगंध, यवनेष्ट, महौषध, अरिष्ट, म्लेंछकन्द,

English name – Garlic

स्वरूप – बहुवर्षायु क्षुप उत्पत्तीस्थान – समस्त भारत

उत्पत्ती- अमृतबिंदु से

रासायनिक संघटन- Allyl-propyl sulphide -6% , Diallyl disulphide – 6% ,polysulphide.

रसपंचक – गुण – स्निग्ध, तीक्ष्ण, पिच्छिल, गुरु, सर

रस- अम्लवर्जीत पंचरस . मूल – कटू, पत्र- तिक्क, नाल- कषाय, नालाग्र- लवण, बीज- मधुर

विपाक- कटू वीर्य – उष्ण

गुणधर्म – बृंहण, वृष्य, पाचन, भग्नरांधानकृद, कण्ठय, वर्ण्य, बलकर, मेधाहितकर, नेत्र्य, रसायन,

हुद्रोगृ ज्वर कुक्षिशूल विवंध आधमान गुल्म अरूचि कास दुर्नाम कुष्ठ नाशन.

कर्णशूल मे रसोंनसिध तैल हितकर, आर्तवप्रवर्तक

लशुनसेवन समये पथ्य- मदयं मांसं तथा अम्लं हितं लशुनसेविनाम् ।

लशुनसेवनसमये अहित – व्यायाम आतपं रोषम् अतिनीरं पयो गुडम् ।

रसोशनमशनन् पुरुष त्यजेत् एतान निरन्तरम् ॥

काश्यप संहिता – लशुन कल्पाध्याय विस्तार से वर्णन, राजनिघंटु मे महाकन्द रसोन को गृणन कहा है

चरक – कृमीकुष्ठकिलासघो वातघो गुल्मनाशनः। स्निग्धश्च वृष्यश्च लशुनः कटुको गुरुः ॥ च सू 27

TIERRA

भूर्जपत्र

Latin name – Betula utilis

Family – Betulaceae

पर्याय – भूर्ज, चर्मी, बहुलवल्कल, बहुपुट, लेख्यपत्रक, वल्कद्रुमो, बिन्दुपत्र रक्षापत्र, विचिन्नक, भूतधन.

English name- Jacquemon tree

स्वरूप – वृक्ष उत्पत्तीस्थान – हिमालय, भूतान सिक्किम

रासायनिक संघटन – Betulin, lupeol, oleanolic acid, acetyl oleanolic acid,

Leucocyanidin, Leucoanthocyanidin.

रसपंचक – गुण – लघु, रस- कषाय, विपाक – कटू, वीर्य- उष्ण प्रभाव – त्रिदोषधन

गुणकर्म – भूतरक्षाकर, दुष्कृतिल्यनाशन, भूतग्रहनाशन, कर्णरुजानाशन, पित्तरक्तजित, राक्षसघन, मेदोविषहर.

प्रयोज्यांग- त्वक को ही भूर्जपत्र कहा जाता है ।

कुपीलु

Latin name- *Strychnos nuxvoica*

Family – Loganiaceae

पर्याय – विषतिंदुक, काकतिंदुक, काकपिलुक, काकेंदु, मर्कटटींदुक,

स्वरूप – वृक्ष उत्पत्तीस्थान – उष्णप्रदेश, उत्तरप्रदेश बिहार ओरीसा.

रासायनिक संघटन- स्ट्रीकनीन, ब्रोसीन, वोमीसीन, लोगानीन (ग्लुकोसाइड) स्ट्रीकनीन – बीज मे अधिक

द्रुसीन त्वक मे अधिक मात्रा मे पाया जाता है।

रसपंचक- गुण- लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण. रस- तिक्क, कटू विपाक- कटू वीर्य – उष्ण

गुणकर्म- कुछनाशन, वातव्याधी, कफ अर्श व्रणापह दीपन पाचन उत्तेजक बल्य सुषुम्ना केंद्र उत्तेजक.

हस्तमैथुन से उत्पान्न नपुंसकता, शायामून्त्रता, हुदौर्बल्य मे उपयोगी.

विषलक्षण – अत्मात्रा मे सेवन से धनुर्वात समान लक्षण उत्पत्ति. आक्षेपजनन. श्वासावरोध से मृत्यु.

चिकित्सा- वमन, अफीम बेलाडोगा, कर्पुर तंबाकु आदी प्रतिविषोका उपयोग.

शोधन- गोमूत्र मे 7 दिन तक उबालकर पश्चात गोधुग्ध मे स्वेदन व गोधृत मे भर्जन

योग- अग्नितुंडी वटी, विषमुष्टी, नवजीवन रस, लक्ष्मीविलास रस, क्रिमीमुद्रर रस,

मात्रा- 60-250 मिग्रा.

कुंकुम

गण – शोणितस्थापन (च), एलादि (सु.)

Family – Iridaceae

English name – Saffron

Latin name – *Crocus sativus*

पर्याय- घुसृण, काश्मीर, बाल्हिक, रक्त, पीतक, वरम्, संकोचं, पिशुनं, धीरं, शोणिताभिधम्

स्वरूप- क्षुप. उत्पत्तीस्थान – जम्मु काश्मीर.

रासायनिक संघटन- glucoside Crocin Picrocrocin.

प्रकार- 3 1) काश्मीरज- काश्मीर देशोत्पन्न. सूक्ष्म आरक्त पद्मगंधी उत्तम

2) बाल्हीकज- बाल्हीक देशोत्पन्न, पांडुर, केतकीगंधयुक्त, मध्यम

3) पारसीक- पारसीक देशोत्पन्न, इष्ट् पांडुवर्ण, मधुगंधी, अधम

अपमिश्रण – पुष्प कुक्षिदृत, अन्तर्दल मिश्रण, कुसुम्भ पुष्प.

रसपंचक – गुण- स्निग्ध रस- कटू तिक्क विपाक – कटू वीर्य- उष्ण

गुणधर्म- शिरोरुजा नाशन, व्रण जनुजित, वमिहर, वर्ण्य, व्यंगमाशन, विषध्न, त्रिदोषध्न, आर्तवजनक

प्रयोज्यांग- केशर (कुक्षिभाग) stigma

कल्प- कुंकुमादी धृत, कुंकुमादी तैल.

करंज

गण- कण्डूध्न, विरेचन, कटुस्कंध, तिक्कस्कंध (च), आरग्वधादि, वरूणादी, अर्कादी, श्यामादी, शिरोविरेचन (सु)

Latin name – *Pongamia pinnata* **Family- Leguminosae** **English name –** Indian beech.

पर्याय – नक्तमाल, गुच्छपुष्पक, धृतपूर, स्निग्धपत्र, प्रकीर्या, पुष्पमंजीरी, चिरबोल्वक, पूतिक, पूतिकरंज, सोमवल्क

स्वरूप- वक्ष उत्पत्तीस्थान – दक्षिण भारत, पूर्व मध्य हिमालय.

प्रकार- संहिताग्रंथ – करंजद्वय 1) पूतीक (चिरबिल्व) 2) नक्तमाल (करंज). कण्टकीकरंज (अलग वर्णन)

रासायनिक संघटन – In seed - pongamia oil (27-39%) –karanjin, pongamol.

In root – kanugin, Demethoxy-kanugin.

In flower- Pongamin, Quercitin.

रसपंचक- गुण – लघु, स्निग्ध, रस- तिक्क, कटू, कषाय. विपाक- कटू वीर्य – उष्ण

गुणधर्म- कुछ प्रमेह अर्श शोफ विष व्रण कृमी नाशन, योनिदोषह्रुत. भूतध्न. प्रयोज्यांग- बीज, पत्र, त्वक

3) Sherron's triangle – line joining the umbilicus symphysis pubis and ant. Sup iliac Spine.

b) Lines –

- 1) Arcuate line – lower limit of rectus abdominus
- 2) Beus line – Nails
- 3) Burtonine's line – lead poisoning
- 4) Hampton's line – benign peptic ulcer on barium meal study
- 5) Mee's line – white line on nails in arsenic poisoning
- 6) Hilton's line – at anal canal

c) Signs of pregnancy –

- 1) Chadwik's sign/ Jecqumer's sign – dusky hue of the vestibule and anterior Vaginal wall = 8th week
- 2) Hagar's sign – 6 – 10 weeks
- 3) Montgomery follicles in breasts – 2nd month
- 4) Quickining – feling of life = 16th - 18 th week
- 5) Braxton Hicks sign – 16th week
- 6) Gravindex test – 4 – 7 days after missed period
- 7) Goodel's sign – cervix become soft (6th week)
- 8) Plmer's sign – Regular and rythemic uterine contractions (4 – 8 weeks)

Daily requirements in pregnancy –

- | | |
|----------------------|-----------------------|
| 1) calcium – 1000mg | 2) Folic acid – 300mg |
| 3) Iron -- 30– 40 mg | 4) Vit C – 50 mg |

Ophthalmology

- 1) Gonioscope – to measure angle of anterior chamber
- 2) Perimeter – to measure the field of vision
- 3) Ophthalmoscope – to visualize retina
- 4) Retinoscope – to detect refractive error of eye
- 5) Tonometer – to measure IOP
- 6) Isshihara chart – for colour vision
- 7) Snellen's chart – for visual acuity

Type of antigen	Examples
Live bacteria, Attenuated	BCG
Live virus, Attenuated	OPV, MMR
Killed bacteria	Pertusis, Sal. Typhi
Killed virus	IPV, Rabies, HAV
Toxoides	DT, TT
Viral sub Units	HBs Ag
Capsular polysaccharide	Pneumo, Meningo

Water drinking test, Dark room test, priscol test - for glaucoma

Psoslogy – is the study of drug doses

Renin (Hormone secreted by kidney) – controls blood pressure

Masked liver dullness is present in – perforation

MMR – measles, mumps and rubella

बाकुची

Latin name- Psoralia corylifolia. **Family-** Leguminosae **English name-** Psoralia Seed

पर्याय- अवल्युज, कण्णफला, पूतीफली, कुष्ठधनी, सोमराजी, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कालमेषी.

स्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत राजस्थान पंजाब .

रासायनिक संघटन - Psoralen, isopsoralen, Psorelidin, isopsoralidin, corylifolin.

रसपंचक - गुण - लघु रुक्ष रस- कटु तिक्त विपाक- कटु वीर्य - उष्ण

गुणधर्म- श्वेतकुष्ठ में बाह्यतः बीजचूर्ण लेप या तैल प्रयोग. त्वकदोष विषकण्डू कुष्ठनाशन, केश्य

शित्र में हरताल सह बाह्य प्रयोग किया जाता है ।

शोधन - बाकुची बीज गोमूत्र या आर्द्धक स्वरस में एक सप्ताह रखने से शुद्ध हो जाते हैं

प्रयोज्यांग - बीज बीजतैल

रुद्राक्ष

Latin name- Elaeocarpus ganitrus

Family- Elaeocarpaceae

English name- Utratum Bead tree

पर्याय- भूतनाशन, स्वरूप - वृक्ष

उत्पत्तीस्थान- बिहार बंगाल मध्यप्रदेश आसाम

रसपंचक - गुण- गुरु स्निग्ध रस- मधुर विपाक- मधुर वीर्य - शीत

गुणधर्म- शिरोर्तीशमन, भूतग्रहविनाशनम्, मनोविकारनाशन, अपस्मार उमाद नाशन रक्तभार (hypertension) के लिए उत्तम औषधी

प्रयोज्यांग – फलास्थी



गण- कण्ठय, जीवनीय, सन्धानीय, वर्ण, कण्डूधन, मूत्रविरजनीय, शोणितस्थापन, छर्दिनिग्रहण, स्नेहोपग, वमनोपग आस्थापनोपग (च), काकोल्यादी, अन्जनादी, सारीवादी (सु)

Latin name- Glycyrrhiza glabra **Family-** Leguminosae Papilionaceae.

English name- Liquorice.

पर्याय- मधुक, क्लीतक, तोयमधूलिका, मधुयष्टी.

स्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान- मिस्त्री अरब तुर्कस्थान इरान अफगाणिस्थान युरोप चीन

प्रकार - 2 1)जलज (मधूलिका) व 2)स्थलज.

युनानी नुसार 3 मिस्त्री अरबी तुर्की - उत्तरोत्तर माधुर्य कम

रासायनिक संघटन- Glycyrrhizin, liquiritin, isoliquiritin (glycoid), estrogen (steroid)

रसपंचक- गुण- गुरु स्निग्ध

रस- मधुर

विपाक- मधुर

वीर्य - शीत

गुणधर्म- चक्षुष्य, बलवर्णकृत, शुक्रल केश्य, व्रणशोथ, छर्दी, विषनाशक, अम्लपित्त श्वास कास नाशन

आमाशयिक व्रण (peptic ulcer) में लाभदायी.

अपमिस्त्रण- Glycyrrhiza uralensis , Manchurian liquorice गुंजा मूल

अग्न्य- मधुकं चक्षुष्य वष्य केश्य कंठय वर्ण विरजनीय रोपणीयानाम् । च.सू 25

हिंग

गण- संज्ञास्थापन, दीपनीय, कटुस्कंध (च) पिप्पल्यादी, उषकादी (सु)

Latin name- Ferula narthex **Family-** Umbelliferae **English name-** Asafoetida

पर्याय- सहस्रवेधी, जतुक, बाल्हीक, रामठ

स्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान- काश्मीर, फारस, अफगानीस्तान, संगहविधि- वसंत तु मे

शोधन - गोधृत मे

रासायनिक संघटन- Aasaresinotannol, Disulphide, pherulic acid.

रसपंचक- गुण- लघु स्निग्ध रस- कटु विपाक- कटु वीर्य- उष्ण

गुणधर्म- दीपन, पाचन, रुच्य, शूल गुल्म आनाह कृमी नाशन. स्त्रीपुष्पजनन. मूर्छा अपस्मारनाशन

उदरोग मे भर्जीत हिंगु एवं फुफुसरोग मे कच्ची हिंगु देनी चहिए।

अहित प्रभाव- यकृत मस्तिष्क रोग व पित्तप्रकृति के लिए चिकित्सा - शीत चिकित्सा.

योग- हिंगवाष्टक चूर्ण, रजःप्रवर्तनी वटी

अग्र- हिंगुनिर्यासं छेदनीयदीपनीया अनुलोमिक वातश्लेष्महरणाम्

चित्रक

गण- दीपनीय, तृप्तीज्ञ, शूलप्रशमन, भेदनीय, अर्शोद्धन, लेखनीय, कटुस्कंध (च) पिप्पल्यादी, मुस्तादी,

आमलक्यादी, मुष्ककादी, वर्णादी, आरग्वधादी (सु) पंचकोल, षडूषण (भा)

Latin name- Plumbago Zeylanica **Family-** Plumbaginaceae **English name-** Leadwort

पर्याय- अग्नि, अनलनामा, व्याल, उषण, पाठी.

स्वरूप - क्षुप प्रकार- 1) श्वेत 2) रक्त उत्पत्तीस्थान- बंगाल, उत्तरपूर्देश, दक्षिण भारत

रासायनिक संघटन- Plumbagin

गुणधर्म- दीपन पाचन ग्रहणी शोथ वातोदर कृमी कुष्ठ नाशन

अहृदयानुसार रसायन प्रयोग - पीत असित (कृष्ण) सित तीन प्रकार उत्तरोत्तर गुणवान

1) छायाशुक्र चित्रकमूल चूर्ण मधुसर्पी या पय या जल के साथ लेहन -

जीवति निरूज, मेधावी बलवान कान्तो वपुष्मान दीप्तापावक

2) तैल के साथ चित्रकमूल चूर्ण लेहन- वातरोगनाशन 3) गोमूत्रसह पान- कुष्ठ श्वित्र नाशन

4) तक्रसह पान अर्श नाशन .

अग्र- चित्रकमूल दीपनीय पाचनीय गुदशोथ अर्शशूलहरणाम् । च.सू.

प्रयोज्यांग - मूलत्वक

योग - चित्रकादी गुटिका, चित्रक हरीतकी अवलेह, चित्रक घृत,

स्वर्णपत्री

Latin name - Cassia angustifolia **Family-** Leguminosae **English-** Indian senna

पर्याय- कल्याणी, हेमपत्री, स्वर्णपत्रीका मार्कडिका, भूमिवल्ली, मृदूरेचनी

स्वरूप- गुल्म उत्पत्तीस्थान- अफ्रिका, अरब, भारत मे दक्षिण भारत.

रासायनिक संघटन-isorhamnetin, kaempferol, Rhein, emodin, Sennoside A and B – purgative

Action. Mnitol, sodium potassium tartarate, salysalic acid, crysophenic acid. Ca. oxalate.

Adulteration- leaves of other Variety Cassia obovata.

रसपंचक- गुण- लघु, रुक्ष, तीक्ष्ण. रस- कटू तिक्त मधुर कषाय विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- विटसंग, वन्हिमांद्य, यकेददालुदर, प्लीहोदर, बध्दगुदोदर, कामला पांडुरोग इन रोगो मे रेचनार्थ

उद्धर्धकायशोधिनी, विषटुर्गधकासघी

प्रयोगविधि- हुल्लास, उदरशूल, तृष्णा, आदी उपद्रव उत्पन्न होते हैं। निवारणार्थं शुष्ठी संधव आदी सह देते हैं

प्रयोज्यांग- पत्र व फल

कल्प- षटसकार चूर्ण, यज्ञादी चूर्ण.

त्रिवृत

गण- भेदनीय (च), अधोभागहर, श्यामादी (सु)

Latin name- Operculina turpethum **Family-** Convolvulaceae **English-** Indian jalap/turpeth.

पर्याय- श्वेत त्रिवृत- त्रिभण्डी, त्रिपुटा, सरला, सुवहा, रेचनी, सर्वानुभूति. कृष्ण त्रिवृत- अर्धचन्द्रा, पालिन्दी, सुषेणिका, मसूरविदला, कालमेषिका

स्वरूप- बहुवर्षायु वल्ली. उत्पत्तीस्थान- संपूर्ण भारत

प्रकार- चरक 2 1) अरूण - उत्तम व सुखविरेचक 2) श्याम- तीव्रविरेचक भाप्र- श्वेत व श्याम

अरूण - सुकुमार, शिशु, मृदूकोष्ठ मे हितकर. श्याम - आशुकारी होने से मोहकृत. बहुदोष व कुरकोष्ठ मे भाप्र नुसार श्यामा हीनगुणयुक्त, तीव्ररेचनी, मूर्छा दाह भ्रम मद कारीणी

रासायनिक संघटन- टर्पेथीन नामक ग्लुकोसाइड जिसके कारण रेच किया होती है

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष तीक्ष्ण रस- तिक्त कटु विपाक- कटु विपाक- उष्ण

गुणकर्म- पित्तज्वर, शोथोदर प्लीह पांडु व्रण विनाशीनी. इन व्याधीयों मे रेचनार्थ

दोषधन्ता- कफपित्तप्रशमन. रूक्ष गुण से वातप्रकोपक

अग्न्य - त्रिवृत सुखविरेचनानाम् । च.सू

विरेचने त्रिवृत्पूलं श्रेष्ठप्राहुर्मनीषिणः । च.क.

प्रयोज्यांग - मूलत्वक कल्प- कल्याणक गुड, व्योषादी गुटिका (च.क.)

अर्क

गण- षटशोधनवृक्ष, भेदनीय, वमनोपग, स्वेदोपग (च), अधोभागहर, अर्कादी (सु)

Latin name - Calotropis procera **Family -** Asclepiadaceae **English- Madar**

पर्याय- रक्तार्क तूलफल, क्षीरपर्ण, अर्कपर्ण, विकिरण, आस्फोट श्वेतार्क- गणरूप, वसुक, मन्दार, सदापुष्प, प्रतापस

स्वरूप- क्षुप उत्पत्तीस्थान - समस्त भारत

प्रकार- 1) श्वेत अर्क- राजार्क / अलर्क/ मन्दार -Calotropis gigantia 2) रक्तार्क- अर्क

रासायनिक संघटन- क्षीर मे ट्रिस्त्रिन नामक पाचक तत्व होता है। उस्चेरीन (Uscherin), calotropin and calotoxin have action on heart. राजार्क मे भी यही तत्व होते हैं, इसके अतिरीक्त काण्ड व मूलत्वक मे Amyrin, Giganteol, calatropial यह तत्व होते हैं।

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष, तीक्ष्ण रस- कटु तिक्त विपाक- कटु वीर्य - उष्ण

गुणकर्म- कुष्ठ कण्डू विष व्रण प्लीह गुल्म अर्श कास श्वास कृमी नाशन. चक्रदत्तनुसार सप्तच्छदा व अर्क क्षीर का कृमीदत्त के लिए पूरण करते हैं। अर्कपुष्प- वृष्ट, लघु दीपनपाचन, कासश्वासहर, कुष्ठकृमीनाशन.

चरक- क्षीरमर्कस्य विशेषं वमने सविरेचने । च सू 1. चरकोक्त कुष्ठहर प्रदेह मे अर्कक्षीर उपयोग (च.सू 3)

अलर्क कुसुम वृष्ट लघु दीपन पाचन , अर्क तैल कर्ण रोगो मे हितकर , जीर्णज्वर व विषमज्वर मे मूलत्वक.

प्रयोज्यांग- मूलत्वक, पत्र, क्षीर

प्रवाल पंचामृत भावना द्रव्य - अर्कक्षीर

कुटकी

गण- भेदनीय, लेखनीय, स्तन्यशोधन, तिक्कसंध (च.) पटोलादी, पिघल्यादी, मुस्तादी (सु)

Latin name – Picrorhiza kurroa **Family**- Scrophulariaceae **English**- picrorhiza

पर्याय- तिक्का.रोहिणी, कटुरोहिणी, काण्डरूहा, मत्स्यशकला, चक्रांगी, कृष्णभेदा, शतपर्वा, कटुभरा, शकुलादनी.

स्वरूप- बहुवषुयु क्षुप उत्पत्तीस्थान- हिमालय, काश्मीर, सिक्किम.

रासायनिक संघटन glucosides named kutkin, picrorhizin The sterols name manitol, barilic acid

रसपंचक- गुण- लघु रुक्ष, रस- तिक्क विपाक- कटू वीर्य- शीत

गुणकर्म- भेदन, दीपन, हुदय, प्रमेह कास श्वास दाह कुष्ठ नाशन. विषमज्वरनाशन. कफपित्तज्वरापहा.

स्तन्यशोधन. लेखन, पित्तरेचक,

प्रयोज्यांग- मूल (भोमिक कांड)

मात्रा- 1/2 ते 1 ग्राम-कटुपेष्टिक. 3-6 ग्राम रेचनार्थ

योग- आरोग्यवर्धिनी वटी. तिक्कादी क्वाथ, तिक्कादय लौह.

प्रतिनिधि द्रव्य- न्नायमाण – Gentiana kurro.

पील

गण- विरेचन, विरेचनोपग, शिरोविरेचन, ज्वरहर, कटुसंध (च) शिरोविरेचन (सु)

Latin name- Salvadora persica. **Family**- Salvadoraceae **English name**- Tooth brush tree

पर्याय- गुडफल, स्त्रंसी (सारक), शीतफल

स्वरूप- छोटा वृक्ष उत्पत्तीस्थान- पंजाब, गुजरात, राजस्थान, दक्षिण भारत आदी शुष्क प्रदेश

रासायनिक संघटन- The alkaloids Salvadorine, Trich-methylamine and saponin

रसपंचक- गुण- लघु स्निग्ध तीक्ष्ण रस- तिक्क मधुर विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- पक्व फल अनुलोमक, मूत्रल अस्मरीनाशन व बीज रेचक, त्वक आर्तवजनन. सर्पविष मे बीजप्रयोग शाखा दंतधावनार्थ उपयोगी है। त्रिदोषघन.

प्रयोज्यांग- फल, बीज, पत्र मूलत्वक

मायाफल

Latin name- Quercus infectoria **Family**- Fagaceae **English name**- Gall-oak

पर्याय- मायाफल (फलाभास, मायारचित फल). मायुक

स्वरूप- छोटा वृक्ष उत्पत्तीस्थान- यूनान, एशिया, सिरीया, इराण

मायाफल- वृक्ष की शाखाओ मे Adleria gallae tinctoriae Oliv. नामक कीट अंडे देते है उसके चारो ओर स्वरस एकत्री होकर ग्रंथाया बन जाती है; यह फलवत प्रतीत होने से इसे मायाफल / मॉजिक नट कहते है

रासायनिकसंघटन- Gllotanic acid, galic acid, elegic acid,

रसपंचक- गुण- लघु रुक्ष रस- कषाय विपाक- कटू वीर्य- शीत

गुणकर्म- ग्राही बल्य ज्वरापह, मुखरोगहर, श्वेतप्रदर, अर्झ योनिकंद अतिसार ग्रहणी नाशन. दंतमुखरोगो मे गंडूष

प्रयोज्यांग- कीटगृह

योग- वज्रदंतमंजन, मायाफलादी मलहर

धनुर

Latin name- Datura metel **Family-** Solanaceae **English-** Thorn apple

पर्याय- उन्मत्त, कनक, मातुल, शिवप्रिय, देवता, कितव, तूरी, महामोही, शिवप्रिय, कनकाळ्य, मदन,

स्वरूप - क्षुप उत्पत्तीस्थान- भारत मे सर्वत्र

प्रकार- राजनिधंटु मे राजधनुर (Datura stramonium) का उल्लेख है। एकुण 5 भेद- श्वेत, नील, कष्णे, रक्त, पीत

रासायनिक संघटन- The alkaloids like Scopolamine, Hysciamine, Atropine, Norhyoscamine,

Metolodine.

रसपंचक- गुण- लघु, रुक्ष, व्यवायी, विकासी, रस- तिक्त, कटु विपाक- कटु वीर्य- उष्ण, प्रभाव- मादक

गुणकर्म- वेदनास्थापक, मादक, नेत्रविस्फारक, शूलप्रशमन, शय्यामूत्रता, वृक्ककशूल, श्वास इ मे लाभदायी।

पत्र रस यूका लिक्षा नाशक। Alkaloids are cholinergic blocking.

प्रयोज्यांग- पत्र, पुष्प, बीज शोधन- गोदुग्ध

विषाक्त लक्षण- मुखशोष, हुद्रव, भ्रम, प्रलाप, त्वक आरक्ता, सम्प्यास चिकित्सा- प्रतिविष प्रयोग

योग- उन्मादगजांकुश रस, सूतशेखर, कनकासव

इंगुदी

गण- सिरोविरेचन (च)

Latin name- Balanites ageyptiaca **Family-** Simaroubaceae

पर्याय- तापसद्रुम, अंगारवृक्ष, मदगन्धा, तिक्तक।

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान- गुजरात, राजस्थन आदी शुष्क प्रदेश मे उपत्ती

रासायनिक संघटन- सेपोनीन।

रसपंचक- गुण- लघु स्निध रस- तिक्त कटू विपाक- कटू वीर्य- उष्ण प्रभाव- कृमीघ्न

गुणकर्म- व्रण, विष, कृमी, श्वित्र शूलनाशन। रसायनी तैल जन्तुधन व्रणरोपक, भूतग्रहबाधानाशन।

प्रयोज्यांग- बीज, बीजतिल, त्वक, फल

कपिकच्छू

गण- बल्य, मधुरस्कंध (च) विदारीगंधादी, वातसंशमन (सु)

Latin name- Mucuna pruriens **Family-** Leguminosae **English name-** Cowhage/cowitch

पर्याय- आत्मगुप्ता, मर्कटी, कण्डूरा, शूकशिम्बी, वृष्णा, अजडा, व्यंगा, दुःस्पर्शा, प्रातृष्ठायणी, लांगली,

स्वरूप- बहुवर्षायु लता उत्पत्तीस्थान- समस्त भारत मे उष्ण प्रदेश मे

रासायनिक संघटन- The alkaloids like nicotin, pruriyenin, pruriyenidin. Dopa, gliutathyayon,

lecithin, galic acid. Protein, calcium, iron, manganese, phosphorus.

रसपंचक- गुण- गुरु स्निध रस- मधुर तिक्त विपाक मधुर वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- म्युकुनिन तत्व- कण्डूकारक ; सिरोटोनिन- पिडाकारक . फलरोम- कृमीघ्न (राउंड वर्म) गंडूपदकृमी .

बीज वृष्ण, बृंहण, बल्य वाजीकर वातहर है। मूलक्वाथ योनीसंकीर्णता मे धारण करते है

एल-डोपा तत्व पार्किसन्स मे उपयोगी है

प्रयोज्यांग- बीज, मूल, रोम

योग- वानरी गुटिका, माषबलादी पाचन

मखान्न

Latin name- *Euryale ferox* **Family-** Nymphaeaceae **English name-** Fox nut

पर्याय- मखान्न (यज्ञ में प्रयुक्त अन्न) पद्मबीजाभ, पानीयफल (जल में होनेवाला), अङ्कलोडय,

स्वरूप- कांडहीन कंटकीत जलज क्षुप. बीज मखान्न नाम से बाजार में मिलते हैं

उत्पत्तीस्थान- उत्तर बिहार, बंगाल

रसपंचक- गुण- गुरु, स्निधि

रस- मधुर

विपाक- मधुर

वीर्य- शीत

गुणकर्म- शुक्रजनन, शुक्रस्तंभन, प्रजास्थापन, गर्भस्थापक, बल्य, बृहण, प्रसवोत्तर दौन्नर्वल्य में लाभदायक

प्रयोज्यांग- फल योग- पौष्ट्रिक चूर्ण

लोध्र

गण- शोणितस्थापन, सन्धानीय, पुरीषसंग्रहीय, कषायस्कंध (च), लोधादी, न्यग्रोधादी (सु)

Latin name- *Symplocos racemosa* **Family-** Symoloceae

पर्याय- लोध्र- तिल्व, तिरीट, शावर, गालव, पटटिका लोध्र-क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, लाक्षाप्रसादन

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान- उत्तर व पूर्व भारत

रासायनिक संघटन- Alkaloids- Loturine, colloturine, Loturidine.

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- कषाय विपाक- कटू वीर्य- शीत

गुणकर्म- रक्तस्तंभन शोथहर, व्रणरोपक, रक्पित अतिसार नाशन चक्षुष्य बाह्यतः वर्ण्य

प्रयोज्यांग- कांडत्वक

अशोक

गण- कषायस्कंध, वेदनास्थापन (च), लोधादी (सु)

Latin name- *Saraca asoca* **Family-** Legumonosae

पर्याय- हेमपुष्प, ताम्रपल्लव, वंजुल, कंकेली, पिंडपुष्प, गंधपुष्प, नट.

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान- मध्य व पूर्व हिमालय

रासायनिक संघटन- Haematoxylin, tannin, katacol, ketosterol, saponon. Calcium and iron.

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- कषाय तिक्त विपाक- कटू वीर्य- शीत

गुणकर्म- ग्राही, वर्ण्य, रक्तप्रदर, अतिसार, प्रवाहिका, श्वेतप्रदर, कृमी, शोथ विषनाशन. कष्टार्तव, गर्भाशय शैथिल्य.

प्रयोज्यांग- कांडत्वक, बीज, पुष्प.

TIERRA
पत्रांग

Latin name- *Caesalpinia sappan* **Family-** Legumonosae **English name-** Sappan

स्वरूप- वृक्ष उत्पत्तीस्थान- दक्षिण भारत, बंगाल. श्रीलंका.

पर्याय- पतंग, पटट्रंजक, रक्तसार, सुरंग, रंजन, प्रतुर, कुचंदन,

रासायनिक संघटन- Brazillin नामक रंजक द्रव्य, टैनीन

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- कषाय तिक्त मधुर विपाक- कटू वीर्य- शीत

गुणकर्म- बाह्यतः व्रणरोपक, रक्तस्तंभक, गर्भाशय संकोचक आश्यंतरत; वातपित्तज्वरघन, विस्फोटौन्मादभूतहुत.

अतिसार रक्तप्रदर श्वेतप्रदर नाशन. हरिचन्द्रवद् वेद्यं विशेषात दाहनाशनम्। भाप्र.

प्रयोज्यांग- सार (कांडसार)

योग- पत्रांगासव

धन्वन्तरी व राजनिधंटु ने इसका वर्णन 'कुचंदन' नाम से किया है।

पुनर्नवा

गण- वयस्थापन, कासहर, स्वेदोपग, अनुवासनोपग (च.), विदारीगंधादी (सु.)

Latin name - *Boerhavia diffusa* **Family**- Nyctaginaceae **English**- Spreading hogweed
 पर्याय- श्वेत- श्वेतमूला, शोथधनी, दीर्घपत्रिका. रक्त- रक्तपुष्टा, शिलाटिका, शोथधनी, क्षुद्रवर्षभु, वर्षकेतु, कठिल्लक
 स्वरूप- बहुवर्षायु प्रसरणशील क्षुप उत्पत्तीस्थान- समस्त भारत

प्रकार- भवप्रकाश- 1) श्वेत 2) रक्त राजनिधंटु मे नील जाती का उल्लेख

रासायनिक संघटन- The alkaloid 'punarnavin'. Potassium nitrate, sulphate, chlorides.

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- मधुर तिक्त कषाय विपाक- मधुर वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- शोथधन, पांडु, हुद्रोग, कास, उरक्षत . स्वेदोपग. ब्रह्म उदरनुत.

वाग्भट- पुनर्नवा रसायन का उल्लेख.

प्रयोज्यांग- मूल, बीज, पंचांग.

विकंकत

गण- तिक्तस्कंध

Latin name- *Flacourtie ramontchi* **Family**- Flacourtiaceae **English** – Governer's Plum

पर्याय- स्त्रुववृक्ष, गोपकण्टा. ग्रंथिल, स्वादुकंटक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद.

स्वरूप- छोटा कंटकीत वृक्ष. उत्पत्तीस्थान- हिमालय व दक्षिण भारत.

रासायनिक संघटन- प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट.

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- तिक्त ; फल- मधुर अम्ल , विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- शोफधन, कामला , रक्तपित्तनाशन, यकृतबल्य. यकृतप्लीहावृद्धी मे फल देते है। त्वक-मूत्रल.

प्रयोज्यांग- त्वचा, फल

मूर्वा

गण- तृप्तिघ, स्तन्यशोधन, तिक्तस्कंध (च), पटोलादी, पित्तसंशमन (सु)

Latin name- *Marsdenia Tenacissima* **Family**- Asclepiadaceae

पर्याय- तिकवल्ली, जरतोर, चिन्हारू (चोरस्नायु).

स्वरूप- दृढ़सूत्रमय क्षरीणी एवं रोमश वल्ली. उत्पत्तीस्थान- हिमालय 5000 फीट के उपर, दक्षिण भारत.

रसपंचक- गुण- गुरु, रूक्ष रस- तिक्त कषाय विपाक- कटू वीर्य – उष्ण

गुणकर्म- हुद्रोग, प्रमेह, कुष्ठ, विषमज्वरनाशन.

प्रयोज्यांग- मूल

वक्तव्य- मूलत्वक निकालकर बाजार मे 'सफेद निशोथ' के नाम से बेचा जाता है।

नाही

Latin name- *Enicostemma littorale* **Family**- Gentianaceae

पर्याय- मामज्जक, नागजिव्हा, तीक्ष्णपत्रा

स्वरूप- क्षुप उत्पत्तीस्थान- समस्त भारत

रासायनिक संघटन- Ofelic acid, Swertiamarine

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष, रस- तिक्त विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- मधुमेह, कुष्ठ, विषमज्वर, दीपन, पाचन, यकृद दौर्बल्य. मेदोरोगधन. विषधन.

प्रयोज्यांग- पंचांग

किराततिक के प्रतिनिधी रूप मे व्यवहृत होता है।

कंटकी करंज (लताकरंज)

Latin name- *Caesalpinia crista* **Family-** Leguminosae **English-** Fever nut

पर्याय- करंजी, लताकरंज, पूतिकरंज, कंटकीकरंज, विटपकरंज, कुबेराक्ष, पकीर्य.

स्वरूप- प्रसरणशील कंटकीत गुल्म उत्पत्तीस्थान- समस्त भारत

रासायनिक संघटन- glucoside named 'Bonducin'. protein, starch.

स्सपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- तिक कपाय विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- ज्वरधन विशेषतः विषमज्वरधन. कृमी, कुष्ठनाशन, शोथनाशन, प्रमेहधन. यकृत उत्तेजक.

गर्भनिरोधक रूप में उपयोगी, गर्भाशय संकोचक, सूतिकाज्वरधन,

प्रयोज्यांग- बीज, बीजमज्जा. कल्प- विषमज्वरधनी वटी

जीवन्ती

गण- जीवनीय, मधुरस्कंध (च), काकोल्यादी (सु)

पर्याय- जीवनी, जीवा, जीवनीया, मधुस्त्रवा, मांगल्यनामधेया, शाकश्रेष्ठा, पयस्विनी.

Latin name- *Iedradnia reticulata* **Family-** Asclepiadaceae

स्वरूप- वल्ली उत्पत्तीस्थान- पश्चिम व दक्षिण भारत

प्रकार- 1) जीवन्ती 2) स्वर्णजीवन्ती

स्सपंचक- गुण- लघु स्निग्ध रस- मधुर विपाक- मधुर वीर्य- शीत

गुणकर्म- रसायनी, त्रिदोषधन, बलकरी, चक्षुष्य, ग्राही, रक्पितधन, वृद्धि. त्रिदोषधन.

जीवन्ती शाकानाम् श्रेष्ठा ।

प्रयोज्यांग- मूल



गण- बल्य, बृहणीय, मधुरस्कंध (च)

Latin name- *Withania somnifera* **Family-** Solanaceae

पर्याय- वराहकर्णी, बलदा वाजीगंधा, कंदिनी, हयव्हया, वरदा, कुष्ठगंधिनी,

स्वरूप- क्षुप उत्पत्तीस्थान- महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान. उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश.

रासायनिक संघटन- Alkaloids like cuseohygrine, anahygrine, tropine, anaferin,

Other glucosides, withanol, starch, amino acid

स्सपंचक- गुण- लघु स्निग्ध रस- तिक कटू मधुर विपाक- मधुर वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- स्थित्र शोथ क्षयापहा, बल्य. रसायनी, शुक्रल, वाजीकर, अवसादजनक, स्वापजनक.

चक्रदत्त में रसायन योगों का वर्णन है।

प्रयोज्यांग- मूल (कंद)

सप्तचक्रा

Latin name- *Salacia chinensis* **Family-** Hippocrateaceae

पर्याय- स्वर्णमूल, सप्तरंगी (मूल काटने पर सात चक्र दिखते हैं)

स्वरूप- छोटा वृक्ष उत्पत्तीस्थान- समुद्रतटवर्ती जगह में

रासायनिक संघटन- Dulcitol, dicoton, mangiferin, leucopelargonidin. Flobetanin.

स्सपंचक- गुण- लघु रूक्ष तीक्ष्ण रस- कषाय तिक विपाक- कटू वीर्य- उष्ण

गुणकर्म- प्रमेहधन, यकृदविकार, अर्श, कष्टार्तव व आर्तवरोध में हितकर

प्रयोज्यांग- मूल

हरीतकी

गण- प्रजास्थापन, ज्वरधन, कुष्ठधन, कासधन, अर्णोधन (च), त्रिफला, आमलक्यादी, परूषकादी (सु)

Latin name- Terminalia chebula **Family-** Combretaceae **E-** Chebulic myrobalan
पर्याय- अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, विजया, जीवन्ती.

स्वरूप- वृक्ष **उत्पत्तीस्थान-** भारत मे सर्वत्र

रासायनिक संघटन- Tanin, chebulagic acid, chebulinic acid, corilagin. Amino acid.

Phoshatic acid, quinic acid.

प्रकार - भावप्रकाशोक्ति - 7

जाति	स्वरूप	प्रयोग	उत्पत्तीस्थान
विजया	अलाबुवृक्ता	सर्वरोगहर	विन्ध्य
रोहिणी	वृक्ता	ब्रण	प्रतिष्ठानक
पूतना	सूक्ष्म, अस्थीमय	प्रलेप	सिन्ध
अमृता	मांसल	शोधनार्थ	चम्पा
अभया	पंचरेखायुक्त	नेत्ररोग	चम्पा
जीवन्ती	स्वर्णवर्णयुक्त	सर्वरोगहर	सौराष्ट्र
चेतकी	त्रिरेखायुक्त	रेचनार्थ/चूणार्थ	हिमाचल

उत्तम हरीतकी परीक्षा _ 1) नद 2) निन्दित 3) वृक्ता 4) गुर्वी

5) अम्भसि निमज्जेत 6) द्वीकर्षमानयुक्त

रसपंचक- गुण- लघु रूक्ष रस- लवणवर्जीत पंचरस (कषायपथान) विपाक – मधुर

वीर्य- उष्ण प्रभाव- त्रिदोषहर

अंगनुसार रस-

मज्जा- स्वादु

स्नायवीय भाग- अम्ल

वृन्त- तिक्त

त्वचा- कटु

अस्थी- कषाय

दोषधनता- 1) वातधन- अम्लत्वात

2) पित्तधन- स्वादु तिक्त कषायत्वात

3) कफधन- कटू तिक्त कषायत्वात

अनुपान- लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा । धृतेन वातजान् रोगान् सर्वरोगान् गुणान्विता ॥

स्वरूपानुसार कार्य- चर्विता – वर्धयति अग्नि

पेषिता- मलशोधनी

स्विन्ना- संग्राहिणी

भृष्टा- त्रिदोषनुत

गुणकर्म- व्रण्य, मेध्य, दीपन, चक्षुष्य, रसायन, शोथधन, कुष्ठधन, बृहण, अनुलोमन, उदर, कृमी विबन्ध, विषमज्वर,

विसर्प, ग्रहणी, कामला, शूल, आनाह, यकृतरोग, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात,

ऋतुहरीतकी- सिन्धुत्थ शर्करा शुठी कणा मधु गुड़ैः क्रमात् ।

वर्षादिषु अभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा ॥ भाप्र

प्रयोज्यांग- फल

विशेष गुणकर्म- हरीतकी पथ्यानाम् । चसू 25

उन्मिलिनी बुध्दीबलेन्द्रियाणां निर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम् ।

विस्त्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानां हरीतकी स्यात् सह भोजनेन ॥

अन्नपानकृतान् दोषान् वातपितकफोद्धवान् ।
 हरीतकी हरत्याशु भुक्स्योपरि योजिता । भाप्र.
 -आयुष्यां पौष्ट्रिकीं धन्यां वयसः स्थापनी परम् ।
 सर्वदोषप्रशमनी बुध्दीन्द्रियबलप्रदाम् ॥ च.चि.
 -स्त्रोतोविबन्धान् विविधान् प्रलेपं हुदयोरसोः।
 स्मृतीबुध्दीप्रमोहं च जयेच्छीघ्रं हरीतकी ॥ च.चि
 -वातानुलोमनी हुदया सेन्द्रियाणां प्रसादनी ।
 संतर्पणकृतान् रोगान् प्रायो हन्ति हरीतकी ॥ ध.नि.

प्रयोग निषेध- अतिखिन्न, अतिक्षीण, रुक्ष, अतिकृश, लंघनकर्शित, विमुक्तरक्त, पित्ताधिक्ययुक्त, गर्भवती, तृष्णा, न हनुस्तंभ, गलग्रह, स्त्रीमदय विकर्शीत, नवज्वर,

गुडूचि

गण- वयस्थापन, दाहप्रशमन, तृष्णानिग्रहन, स्तन्यशोधन, तृप्तीघ्न (च), गुडूच्यादी, पटोलादी, आरग्वधादी, काकोल्यादी, वल्लीपंचमूल (सु) उत्पत्ति - अमृत से

Latin name- *Tinospora cordifolia* **Family-** Menispermaceae

पर्याय- मधुपर्णी, अमृता, अमृतवल्लरी, छिन्ना, छिन्नोद्धवा, छिन्नरूहा, वत्सादनी, तंत्रिका, कुण्डलिनी, चक्रलक्षणिका, जीवन्ती, चन्द्रहासा, मण्डली, देवनिर्मिता.

स्वरूप- लता उत्पत्तीस्थान- भारत में सर्वत्र

प्रकार- पद्मगुडूचि / कंदगुडूचि - *Tinospora sinensis*

chemical composition- alkaloid - berberine, glucoside - giloin, starch

रसपंचक- गुण- गुरु स्निग्ध रस- तिक कषाय विपाक- मधुर वीर्य- उष्ण

दोषधनता- घृतेन वातं सगुडा विबन्धं पित्तं सितादया मधुना कफं च ।

वातास्त्रमुग्रं रूबुतैलमिञ्चा शुण्ठयामवातं शामयेद् गुडूचि ॥ ध. नि.

दातस्त्र- घृतसह पित्तध्न- सितासह

कफध्न- मधुसह

वातरक्त में एरंडतैलसह आमवात में शंथीसह

गुणकर्म- कुष्ठ, प्रमेह, वातरक्त बल्य दीपन, विषमज्वरनाशन

प्रयोज्यांग- कांड

अग्रय- अमृता सांग्राहिक वातहर दीपनीय इलेष्मशोणित विबंधप्रशमनानाम् । च.सू.25

- गुडूचि वातास्त्ररोगे । वाग्भट

गुडूचि सत्त्व भारतीय क्विनीन कहा जाता है ।



रसशास्त्र

रसशास्त्र प्रथम उपरेष्टा – भगवान आशुतोष शिव

रसशास्त्र मे सिद्ध उल्लेख – 84

अष्ट सिद्धि – 1) अणिमा 2) महिमा 3) गरिमा 4) लघिमा 5) प्राणि 6) प्राकाभ्य 7) अमीशत्व 8) वशित्व
कौलशास्त्रानुसार कुल – पार्वती अकुल – शिव

- 1) प्रथम नागार्जुन – दार्शनिक नागार्जुन मायूरी विद्या का ज्ञाता
- 2) द्वितीय नागार्जुन – नालंदा विश्वविद्यालय का कुलपती
- 3) तृतीय नागार्जुन – सुश्रुत संहिता का प्रतिसंस्कर्ता
- 4) भद्रन नागार्जुन – रसशास्त्र के संबंध मे वर्णन

रसशास्त्र का विकास –

अयस्कृती उल्लेख चरक संहिता रसायनपाद मे
सुश्रुत संहिता मे विस्तार से उल्लेख
पारद के बाह्य प्रयोग का उल्लेख – सुश्रुत संहिता मे (सु.चि. 25/39)
स्थालीपाक व भानुपाक वर्णन अष्टग्रह द्वारा मे
अंधमूषा सर्वप्रथम वर्णन वामपट मे
पार्वती रज – दंडक पार्वती शुक्र – अङ्गक शिव शुक्र – पारद

रसशाला निर्माण –

आवश्यक घटक – गुरु शिष्य कालिनी / अक्लिनी , भून्य / सैवक	पश्चिम मे – क्षालनादी कर्म
पूर्व मे – रसमैरव स्थापना डपकरण	दक्षिण मे – पाषाण कर्म, मर्दन कर्म
उत्तर मे – शानुवेद्ध कर्म	उत्तरात्म मे – सिद्धस्तु (रस घृत भस्म अवलेह)
नेत्रत्व मे – शस्त्रकर्म	वायव्य मे – शोषण कर्म (सुखाना)
आग्नेय मे – अग्नकर्म	
रसशाला मध्य भाग मे – रसलिंग स्थापना	

परिभाषा –

- 1) पंचलवण – 1) सैंधव लवण 2) सामुद्र लवण 3) विडलवण 4) सौवर्चल लवण 5) रोमक लवण
उपरोक्त प्रकारो मे सैंधव नवण शेष

क्षारद्वय	सज्जीक्षार	यवक्षार	सौभाग्य (टंकण)		
क्षारत्रय	सज्जीक्षार	यवक्षार	सौभाग्य (टंकण)		
क्षारपंचक	सज्जीक्षार	यवक्षार	पलाशक्षार	तिलनालक्षार	मुष्कक्षार
क्षाराष्ट्रक	सज्जीक्षार	यवक्षार	पलाशक्षार	तिलनालक्षार	
	सुधाक्षार	शिखरीक्षार	चिंचाक्षार	अर्कक्षार	

अम्लवर्ग – अम्लवेतस जमिरीनिम्बु मातुलुगाम्ल नारंग चांगेरी अम्लिका चणकाम्ल

अम्लपंचक – अम्लवेतस जमिरीनिम्बु मातुलुगाम्ल नारंग निम्बुक

पंचमृत	गोक्षीर	गोदधि	गोधृत	मधु	शक्करा
पंचगव्य	गोक्षीर	गोदधि	गोधृत	गोमत्र	गोमय

द्रावक गण – गुजा मधु गुड सर्पि सौभाग्य गुगुलु – सममाग – धातु द्रावणार्थ

मित्रपंचक – गुजा मधु – घृत सौभाग्य (टंकण) गुगुल – लोह द्रावणार्थ

मधुनय / त्रिमधुर / मधुस्त्रय – घृत गुड माष्टिक

क्षीङ्गत्रय – अर्कक्षीर वटक्षीर स्नुहीक्षीर

विलोह – सुवर्ण रजत ताप्र

पंचलौह – विलोह + नाग वंग

त्रिगंधक – गंधक हरताल मनशिला

अंजनत्रितये – कालांजन पुष्पांजन रसांजन

कजली –

अर्ध समान द्विगुणमितादया गन्धकचूर्णात् पारदकस्य ।

मर्दनजन्या मसृणकाया कजलरूपा कजलिका सा ॥ र.त.

पारद के सम अर्ध द्विगुण त्रिगुण इ. भाग में गंधक = मर्दन = कजली

रसपंक –

पारद + स्वर्णादी धातु या केवल गंधक = मर्दन

ततपश्चात् किसी औषधी स्वरूप के माध्य मर्दन = पंकस्वरूप प्राप्ति

स्पष्टिक्षी –

पारद + गंधक – द्वारादी द्रव पदार्थ सह मर्दन = प्रिष्ठ स्वरूप प्राप्ति

नवनीत पिण्डी –

पारद अर्काशतल्य (12 गोला) + गंधक निष्कार्धतल्य (1सोला) अर्क प्रकाश में मर्दन

नवनीत जैसा बनाए यह प्राप्ति

भावना –

चूर्णादी में द्रव पदार्थ (स्वरस कल्प बनाथा इ.) खरल में मर्दन कर शुष्क करना ।

तत् मास – चूर्ण आप्नुत होने तत्

ढालन –

संदावितस्य द्रव्यस्य द्रव निष्केपणन्तु यत् । ढालनं तत्सुद्धिष्टं रसकर्मविशारदैः ॥ र.त. 2/26

स्वर्णादी धातु धमन कर द्रवीत करा – अन्य द्रव (स्वरस व्यथा) में ढाल देना ।

आवृप्ति	निर्वापि
इते द्रव्यान्तरक्षेषो लोहाद्ये क्रियते हि यः । स आवापः प्रतिवाप तदेव आच्छादनं भतन् ॥ र.स द्रव्यान्तरविनिष्केषो द्रुते वज्रादिके तु यः । क्रियते स प्रतिवाप आवापश्च निगदयते ॥ र.त. धातु या उपधातु को द्रवीत कर उपर किसी चूर्ण को छोडना ।	तपस्याप्सु विनिष्केषो निर्वापः स्नपनन्च तत् । र.स.स. धात्वादेवन्हेतपस्य जलादां विनिषेचनम् । स निर्वापः स्मृतयश्चापि निषेकः स्नपनं च तत् ॥ र.त किसी धातु या उपधातु को अस्तित्वं कर किसी द्रवादी (स्वरस बनाथ) आदी में बुझाना ।

शोधन –

उहिष्टैः औषधैः सार्पि क्रियते पैषणादिकम् । मल विष्णितये यत् शोधनं तदिहोच्यते ॥ र.त. 2/52

मृतलोह परीक्षा –

1) तर्जन्यंगुण्ठसंधृष्टं विशेषेखान्तरं तु यत् । निविष्टं च वहिर्नेति मृतलोहं तदुच्यते ॥ र.त. 2/54

तर्जनी अंगुष्ठ में संघट करनेपर अंगुली की सूक्ष्म रेखाओं में चला जाय व निकालने पर भी नहीं निकले उसे मृतलोह (मारीत) कहते हैं।

- 2) मृतलोह को मृश में रखकर रौप्य के पत्र या तार धून व मधु मिलाकर तीव्राग्नी में धमन करे। धमनपश्चात रौप्य मान में कोड़ परिवर्तन न आये।

पंचमत्तिका – इष्टिका गरिक लोण (औद्धिद लवण) भस्म वल्मिक मृत्तिका

धातुसत्त्व लक्षण –

द्रावक गण या मित्रपंचक के साथ वज्र आदि धातुओं को कोष्ठी में धमन करने के बाद जो सार निर्गत होता है उसे धातुसत्त्व कहते हैं।

शुद्धावर्त –

यदा हुतशो तीपार्चिः शुक्लोन्थानसमन्वितः । शुद्धावर्तस्तदाज्ञेयः स कालः सत्वनिर्गमे ॥ र.र.स.
जब अग्नि प्रज्वलित होकर श्वेत वर्ण के प्रकाश के साथ चमकने लगती है तब उसे 'शुद्धावर्त' कहते हैं। इस ताप पर धातु पिघलकर सत्त्व निर्गम होने लगता है।

द्रुति –

औषधमानयोगेन लोहधात्वादिक तथा । सन्निष्ठते द्रवाकारं द्रुतिः सा परिकिर्तिता ॥ र.र.स. 8/81
विशिष्ट औषधीयों का संयोग व तीव्र धमन इनके योग से लोहादी धातु द्रवीभूत होकर नूवानस्था में ही रहे उसे द्रुति कहते हैं।

द्रुति लक्षण -- 5

- 1) मिलेपत्व (पत्र में न रागता)
- 2) द्रुतन्त्र (द्रवरूप में रुक्ता)
- 3) तेजस्त्व (चमकदार होना)
- 4) लघुत्व (मूल धातु से हल्का होना)
- 5) अमर्योगश्च सूतेन (पारद से सूथक होना)

भस्म परीक्षा –

- 1) वारितर – धातुबस्म जल में डालने पर जल पर तैरना
- 2) रेखापूर्ण – तर्जनी व अंगुष्ठ में रेखाओं पर रेखाओं में प्रवेश कर जाय – सूक्ष्मता का प्रतीक
- 3) अपुनर्भव – मित्रपंचक सह भस्म धमन करने पर भस्म से मूल धातु पृथक न हो।
- 4) उत्तम (उत्तम) – भस्म जल में डालकर उसपर धात्वकण छोड़नेपर वह तैरता है।
- 5) निरुत्य – गैंध यह भस्म संयुक्त करनेपर भस्म का झोड़ अंश रोप्य से नहीं मिले।
- 6) अवामि – भस्म का अंश जिल्हा पर रखने पर हुल्लास बमन न हो

ताम्र व सुवर्णमाक्षिक भस्म के लिए यह परीक्षा की जाती है।

- 7) अम्ल परीक्षा – भस्म पर निम्बु आदि अम्ल द्रव्य डालनेपर तुत्य सम वर्ण हो जाय तो यह अपक्व समझी जाती है। ताम्र सुवर्णमाक्षिक व तुत्य भस्म के लिए
- 8) निर्धूम – अपक्व भस्म अग्नि पर डालने पर धूम निकलती है व पक्व भस्म में नहीं निकलती
- 9) निःस्वादु – भस्म में किसी भी प्रकार का स्वाद नहीं होना चाहिए।
- 10) निश्चन्द्र – भस्म में चन्दिका (चमक) नहीं होनी चाहिए। अभक्त स्वर्ण रजत माक्षिक आदि सेवित चन्दसंयुक्त मेहं मन्दानलं चरेत् । र.र.स.
- 11) लघुता – अग्निसंयोग से भस्म लघु होनी चाहिए।

अमृतीकरण –

लोहादीना मृतानां वै शिष्टदोषानुपत्तये । क्रियते यस्तु संस्कारः अमृतीकरणं मतम् ॥ त.त. 2/58
लोहादी धातुओं की भस्म करने पर उसमें शेष दोष निरहगण के लिए जो संस्कार किया जाता है

धेत वर्ग	शुक्त वर्ग	कृष्णवर्ग
तगर कुटज कुंद गुंजा जीवन्ती श्वेतकमलपुष्प	सूधा कूर्म (कच्छपपृष्ठ) शृंकी वराटिका शंबुक कुकुटांडित्वक	कदली कारवेल्लक त्रिफला पंक नीलिका नल कार्सीस बालाम्र

पीतवर्ग	रत्नवर्ग
कुसुमभपुष्प पलाशपुष्प हरिद्रा दारुहरिद्रा पतंग मदयनिका	मनिषा केशर लाक्षा दाढ़िम सूर्चंदन अक्षीव रक्तकर्मीग वन्धुकपुष्प

विद्वर्ग –

कपोत चाष (नीलकंठ) गृथ मयुर कुकुट इनके विट

उपयोग – स्वर्णादी ग्रसनार्थ व पाण्ड में तीव्र वृभृक्षा उत्पन्न करने के लिए

पारद जारणार्थ विड –

सर्व द्वार सर्व अन्त सर्व मूत्र सम्बलवण तथा गैंडक हस्ताल मनशिला कार्सीस अवर स्कटिका
कंकुष्ठ कम्पिल्लक आदी द्रव्य समप्रग्राण में लैंकर खरल में अम्ल रस की भावना व जारणार्थ
पारद में देकर मर्दन करे ।

वद्ध –

रसरसवसमुच्चय – 32

सत्तरगणिती – 20

यंत्र	उपयोग
दोलावन्त्र	स्वेदनार्थ – ते स्वेदयेत् दोलावन्त्रमिति न्मवम् ।
उमरु यंत्र	पारद भस्मार्थ, उर्ध्वपातनार्थ, हिंगुलोन्थ पाण्ड प्राप्ती, रसवन्धन प्राप्ती
पालिका यंत्र	पारद में गंधक जारणार्थ, कजलों से पथरी बनाने के लिए, कपट पस्मार्थ
स्थालीयंत्र	धातुओं को मृदू करने के लिए, मल व विषाश दूर करने के लिए
स्वेदनी यंत्र	स्वेदनार्थ, गंधक शोधनार्थ, मल शैथिल्यार्थ
बालुका यंत्र	कुपिङ्कव स्पायन में पारद में गंधक जारणार्थ
पट्टयंत्र	धातु मारणार्थ
निरुद्याधरयंत्र	यंत्रं विद्याधरं ज्ञेयं स्थालीद्वितयसम्पुदात् । पारद में गंधक व लोह जारणार्थ हिंगुल से पारद निष्कासनार्थ
उर्ध्वपातन यंत्र	उर्ध्व हिंगुल से पारद प्राप्ती, पारद उर्ध्वपातनार्थ
अधःपातन यंत्र	पारद के अधःपातन सम्स्कारार्थ – इससे पारद के यौगिक दोष निर्हरण होता है
तिर्यक पातन यंत्र	पारद के पातन सम्स्कारार्थ – इससे पारद के यौगिक दोष निर्हरण होता है
भूधर यंत्र	पारद में गंधक जारणार्थ – इसमें मूषा का उपयोग होता है ।
पाताल यंत्र	गंधक तैल भल्लातक तैल प्राप्ती हेतु
तुलायंत्र	पारद में गंधक हस्ताल मनशिला आदी का जारण
उलुखल यंत्र	काष्ठोषक्षी चूणार्थ
कच्छप यंत्र	पारद में गंधक जारणार्थ ऐवम सत्त्व जारणार्थ, बिड जारणार्थ

दीपिका यंत्र	पारद अधःपातनार्थ
लवण यंत्र	कुपिपत्र रसायन निर्माणार्थ
नलिका यंत्र	पारद में गंधक जाग्नार्थ
गर्भ यंत्र	पारद की गंधक व दुध से पिछी बनाकर उसका भस्म निर्माणार्थ सौननाथी ताम्र भस्म निर्माणार्थ
अर्क यंत्र	उडनशील तैल निर्माणार्थ
हंसपाक यंत्र	बिड के पाक के लिए
बलभी यंत्र	पारद के उत्थापन संस्कार में स्वेदनार्थ
सौमनाल यंत्र	पारद में अध्रक जारणार्थ
पिठर यंत्र	नाग वंग बशद शोधनार्थ

हिंगुलोत्थ पारद निर्माणार्थ यंत्र – इमरु यंत्र, विद्याधर यंत्र, कन्दुक यंत्र

खल्व यंत्र – मर्दन, पारद शोधन जारण गूर्जना संस्कार के लिए

प्रकार - द्रव के अनुसार - 3 1) पाषाण खल्व 2) दाढ़ खल्व 3) लोह खल्व

आकार नुसार - 3 1) अर्धचंद्राकृति 2) वर्तुल 3) तप्त खल्व

मूषा -

मूषानि दोषान् मूषेयान् सा गृषेति सिमदयते । दत्या पिघलाकर उम्मके दांश निर्दरण

पर्याय – क्रौंचिका कुमुदिका करहाटिका पाचनी वन्तिमित्रा

उपादान कारण – मृतिका व लोहचर्ण

मूषा	:	उपयोग
महामूषा		लोह द्रवणार्थी न अध्रक सत्त्व निहरणार्थ
बज्जमूषा		सत्त्वयाननार्थ
गोस्तमीमूषा		सत्त्वद्रवणार्थ
बृन्ताक मूषा		खर्पर सत्त्वपाननार्थ
मन्त्रमूषा		पर्फटी स्वेदनार्थ
बज्जदावणी मूषा		गार + भूनाग से निर्मीत – तोत्राभ्निसह (वज भी पिघलता है)
योगमूषा		इससे सिद्ध पारद अतिगुणवत्त होता है । इसके निर्माण में बीड लेप होता है
गार मूषा		धातु ढालनार्थी दो बाम तक आम सहत्व
विडमूषा		इसका उपयोग देहलोहकर योग निर्माणार्थ किया जाता है ।

मूषा सन्धिवन्धनार्थ द्रव्य – लोह (मण्डूर) + मृतिका चूर्ण

मूषावन्धन पर्याय – बन्धन, सन्धिवन्धन, अन्धण, रन्धण, संशिलष्ट, सन्धिलेपन

मुद्रा – जारण पश्चात कुपी का मुख बंद करना

मदन मुद्रा	हठमुद्रा
ओढुम्बर वट दुध 1 पल + लाक्षा 1 पल + चुम्बक लोह 7 पल = अतसी तैल में मर्दन	चुम्बक लोह चूर्ण क्रोड रक्त में सूरोदय से सूर्यास्त तक मर्दन

कोष्ठी –

सत्त्वानां पातनार्थाय पतितानां विशुद्धये । कोष्ठिका विविधाकारस्तथा तासां लक्षणमुच्यते ॥ आर्नदकंद सत्त्व के पातनार्थ व पतीत सत्त्वों के शोधन में जो उपयुक्त हो उसे कोष्ठी कहते हैं ।

कोष्ठी	प्रमाण	उपयोग
अंगर कोष्ठी	राजहस्त सम (30 अंगुल उच्चा 15 लंबा)	कठिन दृव्य सत्वपातनार्थ
पातालकोष्ठी	ज्ञानीन में 1 वित्सनी (12 अंगुल गढ़दा)	मटु दृव्य सत्वपातनार्थ
गारकोष्ठी	समतल भूमि में 12 अंगुल निम्न	मिश्र लोह शोधनार्थ
मृषा कोष्ठी		मटु दृव्य शोधनार्थ
चुलिका	घर्याच = अंगरकोष्ठीका, हसन्ती, हसन्ती, अंगरशकटी	मटु दृव्य प्रसाधिका वंगादीना ढालनार्थ प्रयुज्यते

वङ्गनाल – कोयले में फूककर अग्नी तीव्र करने के लिए उपयोग

दो नलीया – 1) 1 अरनी लंबी 2) 5 अंगुल लंबी

पट –

सादिदृव्यपाकानां प्रमाणजापनं पृथम् । नेष्ठो न्यूनाधिक, वाकः सुपाकं हितमौषधम् ॥ र.स. 10/47

प्रकार –

स्त्रीतों के आधारपर – 1) चन्द्रपुट 2) सूखपुट/संद्रपुट/भानुपुट – प्रबाल के लिए 3) अग्निपुट

दृधन के आधारपर – 1) गोबर पुट (लावक पुट) 2) भाण्ड पुट (कुम्मपुट) 3) बालुकापुट

पुट मुख्य अग्निस्त्रोत – उपल

साइज़ 10 सप्तरक्षस्यूच्यानसारः

पट कल – पुटात् दोषविनाशः स्वादं पञ्चरेत्रं गुणोदयः ।

3) लोहादेः अपुर्वमात्रो गुणाधिकता

4) अनसुमज्जनं

5) वैद्यापूर्णजा

6) लघुत्व

7) अनिव्याप्ति

8) दीपनम्

पट नाम	उपल संख्या	प्रमाण	उपयोग
महापुट	1500; 100 नीचे 500 ऊपर	हि नितन	अम्बक व लोह भस्म निर्माणार्थ
शजपुट	1000; 700 नीचे 300 ऊपर	गुजरात्यन्प्राप्ति	लोह ताप्त अम्बक मालिक निमिल शख जूकी गोदती मृगश्श्रूप
बाशह पुट	500; 350 नीचे 150 ऊपर	1 अरनी	शंख शुक्री वराटिका गोदती शंग
कुञ्जपुट	100 ; 70 नीचे 30 ऊपर	2 वित्सनी	सुवर्ण रजत नाम वंग मुका
कपोत पुट	8 वन्योपल	8 अंगुल लंबात्	पारद भस्म, पारद जारणा
गोबर पुट	गोमय चूर्ण या तप		पारद भस्म निर्माणार्थ
भाण्ड (कुम्म)	युतिका पात्र में दाँड़याता		पारद में गंधक जारणार्थ
पुट	तृष्णा रखकर उसमें मूका		
बालुका पुट		4 अंगुल लंबा चौड़ा गहरा गढ़द, उसमें बालुका ढालना	पारद में गंधक जारणार्थ
भूधर पुट	6 उपल	भूमि के अंदर 2 अंगुल	पारद भस्म व पारद जारणा
लावक पुट	1 वा 4 कर्ष तृष्णा/गोबर		मटु दृव्य पाकार्थी

महारस – 8

अम्भवैकान्त मालिक विमल आदित्य नास्यकम् । चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वा अष्टौ संगहेद्रसान् ॥ र.स. 2/1

1) <u>अभ्रक</u>	अंग्रेजी नाम - Mica		
पर्वाय -	अनन्तपत्र	अम्बर	घन
	अन्तरिक्ष	आकाश	बहुपत्र
	अभ्र अभ्रक	ख गगन	वज्र व्योम

प्रकार -

आधुनिक नुसार - 2

- 1) अल्कली माइका - श्वेताभ्रक
- 2) फैयेमेरेशिअम माइका - कृष्णाभ्रक

रसशास्त्रानुसार - 4

- 1) पिनाक (श्वेत पीत रक्त कृष्ण)
- 2) नाग (श्वेत पीत रक्त कृष्ण)
- 3) मण्डुक (श्वेत पीत रक्त कृष्ण)
- 4) वज्र (श्वेत पीत रक्त कृष्ण)

अभ्रक परीक्षा -

- 1) पिनाक - पावकोपतप्त विमुण्चति उलोच्चवम् (अग्नितप्त करनेपर पत्र अलग होते हैं)
- 2) नाग - नागवत्कुर्वद अग्नि पावकसंस्थितम् (अग्नितप्त छलते पर नागवत् फूलता)
- 3) मण्डुक - उत्प्लुत्योत्पत्य मण्डुकं धानं पतनि (अग्नितप्त एव मंडुक सम उत्प्लव व पतन)
- 4) वज्राभ्रक - वन्हिसंतप्तं तिर्मुत्तशेषवैकम् (अग्नितप्त करने पर निर्विकार / अपरिवर्तन)

गोडा अभ्रक लक्षण -

1. स्निग्धं प्रथुदलं वर्णसंवयं क्रान्तोऽधिकम् । सुखनिर्मोस्यपत्रं च तदम् श्रेष्ठमीरितम्॥ रर.म.
2. निलाणजनोपमं स्निग्धं भाग्यूष्म यतोऽवलम्ब । निर्मोस्यपत्रं मृदूलं त्वर्ष्ण श्रेष्ठमितोचते ॥ रत्न.
- 1) शोधन - तप्त कर जांजी/ गोमूत्र / त्रिफला त्वाय / गोदुध में मप्त बार निष्टिप्त करे ।
- 2) धान्याभ्रक विधि - अभ्रक चूर्ण शान्तिसम्मुता कर वस्त्रबद्ध करे = कांजी में 3 - 4 दिन छोड़ दें ततपश्चात मर्दन कर अलग करे ।
- 3) अभ्रक मारण - धान्याभ्रक + कासमर्द स्वरस भावना - मनपुट में पाक - दश बार पाक धान्याभ्रक + गुड + परंडपत्र स्वरस-भावना - वटापत्र बंधन कर पाक
- 4) अमृतीकरण - अभ्रक भस्म + त्रिफला त्वाय + गोधृत - एकत्र कर पाक भस्म को बर्ण (रक्त वर्ण) प्राप्तवर्थ मनिष्या त्वाय की भावना अभ्रक मारक गण में 60 औषधी उल्लेख

अभ्रक भस्म निर्माण में पुट संख्या - (आयुर्वेद प्रकाशकारनुसार)

- 1) 10 - 100 पुट = रोगनिवारणार्थ
- 2) 100 - 1000 पुट = रसायनार्थ

अपक्व अभ्रक भस्म सेवन हानी - प्रमेह, मन्दाग्नि

अभ्रक भस्म विकार शान्ति उपाय - उमा फल (अतसी बीज) जल पान

मात्रा - 1 वल्ल (2 रत्ती)

- 5) अभ्रक सत्वपातन - धान्याभ्रक + टंकण - मुसली त्वाय भावना - दुहास्त्रि में धमन

सत्व - मानेशिअम व लोह

अभ्यक्त पर एकुण संस्कार - 5

संस्कार: पंचधा प्रांतो धनस्य परमेश्वरी । आ.क

2) वैकान्त -

English name - Tourmaline

पर्याय - कुवज्ज चूर्णवज्रक जीर्णवज्रक विक्रान्त क्षुद्रकुलीश

निरूपी - विक्रन्तयति लोहानि तेन वैकान्तः स्मृतः । ररस.

ग्राह्य लक्षण -

अष्टास्त्रचाष्टफलक: षट्कोणो मसूणो गुरुः । शुद्धमिश्रितवर्णश्च युक्तो वैकान्त उच्यते ॥

ग्रसायनिक मूत्र - $K_2O Al_2O_3 6 SiO_2$ or $KAlSi_3As$

वैशिष्ट्य - हीरक के अभाव में वैकान्त उपयोग में लाया जाता है ।

ज्ञोधन - कुलत्थ व्याथ / यवक्षार / सैधवयुक्त कांजी / निम्बुस्वरस - इ. मैं स्वेदन

मारण - शोधीत वैकान्त + गंधक - निम्बु स्वरस भावना - गंजपुट में पाक

मात्रा - 1/24 रसी - 1/11 रसी

गुणधर्म - वैकान्तो लग्नमदृशो देहलोहकरो मतः । विषधो रसायनश्च ज्वरकुष्ठयप्रणुत ॥ ररस.

वैकान्त रसायन - मूत्र भस्म / रससिद्धु + नीलवैकान्तभस्म + अभ्यक्त सत्वभग्मा

एकत्र कर खरल में मर्दन - सधु त्रघृत सह 21 दिन सेवन

3) माध्यिक -

English name - Copper pyrite or Iron pyrite

पर्याय - ताप्य तापीन लाल

सुवर्णमाध्यिक हेममाध्यिक गैप्यमाध्यिक धातुमाध्यिक मधुधातु

प्रकार - 1) सुवर्णमाध्यिक - Cheico pyrite or Copper pyrite (Cu_2S , Fe_2S_2)

2) धज्जतमाध्यिक - Iron Pyrite (Fe_2S_3)

3) चाप्यमाध्यिक - Iron pyrite (Fe_2S_3)

ग्राह्य मुत्तर्णमाध्यिक रखरुप -

स्वर्णमै सुवर्णमाध्यिक निष्कोणं गुरुत्वाद्युत्तम् । कातिमां विकरेत् करे धृष्टं न मशयः ॥ आ.प्र तपतीतिरसमूत्तं पण्चवर्णसुवर्णवत् । ररस.

विषमाकृती, धूत्वर्णं पर स्वर्णं जैसी चमक निष्कोण गुरु, हात से घिसने पर हात को कृष्ण वर्ण करदेनेवाला स्त्रिय अल्प नीलवर्णवाला ।

ज्ञोधन - मूत्तर्णमाध्यिक चूर्ण को मातुलुंग स्वरस व प्रैंडतैल युक्त दोलायंत्र में स्वेदन अथवा कदलीकेट धृता दोलायंत्र में स्वेदन

मारण - सुवर्णमाध्यिक + गंधक - निम्बु स्वरस भावना = बारह पुट में पाक

मात्रा - 1 रसी

अनुपान - वरा व्योष वेल्ल आज्य माध्यिक

गुणधर्म - माध्यिकधातुः सकलामयनः प्राणो रसेन्द्रस्य परं हि वधः । सर्व रसायनात्य कुष्ठ प्रमेहघन, जीर्णज्वर अपस्मार

माध्यिक दोष ज्ञानवर्ण अनुपान - कुलत्थ व्याथ, दाढ़िम त्वक व्याथ

माध्यिक सत्वपात्र - माध्यिक + नारा - क्षारत्वय + अम्ल रसो में मर्दन - धमन - सत्व प्राप्ती

4) विमल -

English name – Iron pyrite Fe_2S_3

रसायनव ग्रंथ मे सर्वप्रथम उल्लेख

प्रकार – 3 1) हैम विमल

2) गैय विमल

3) कास्य विमल

ग्राह लक्षण – वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निग्धश्च फलकान्तिः ।

भौतिक दृष्ट्या – अर्यन बायसल्फाइड

शोधन – आटद्रूषजले स्विन्नो विमलो विमलो भवेत् । जम्बीस्तरसे स्विन्नो मेषशृगीरसेऽध्यवा ॥

माण – विमल चूर्ण + गंधक – लकुच स्वरस भावना – गजपूट पाक – 10 पाक – भस्म

गुणधर्म – रसायन वृष्टि पाण्डु ग्रहणी उदरनाशन

विमल भस्म विकार शान्ति उपाय – मेषशृगी चूर्ण + शर्करा

5) शिलाजतु -

English name – Black Bitumen or Mineral pitch

Latin name – Asphaltum panjabinum

पर्याय – अतिथि

गिरिजन्तु

शिलाक्षा

अद्विजन्तु

जतु

शैल

अइमसार

शिलोजन्तु

शैलेय

गिरीज

शिलाधातु

शैलोद्वत्व

प्रकार – अ) संहितोक प्रकार

1) चरक – सुवर्ण रुत ताम लोह

2) सुश्रुत – सुवर्ण रजन ताम लोह नानम वंगज

3) वाग्भट – सुवर्ण रुत ताम लोह नानम वंगज

ब) रसशास्त्राय ग्रथानुसार

गोमूत्रगंधी शिलाजतु
Black Bitumen
कर्पूरगंधी शिलाजतु
Potassium nitrate

ससत्व

निःसत्व

कर्पूरगंधी शिलाजतु का रसरजसमुच्च्वानुसार लक्षण –

“पाण्डुरं सिकताकारं कर्पूरादयं शिलाजतु”

C.C.R.I.M.H. नुसार शिलाजतु – *Uphorbia Roilena* नामक वनस्पती का स्त्राव

चरकानुसार शिलाजतु स्वरूप –

जंत्वाभं मृदूमृतनाच्छं यन्मलं तत् शिलाजतु । अस्तु गुगुलुकाभासः; तिक्तको लवणान्तिः ॥

कटुर्विषाके शीतश्च सर्वश्रेष्ठः च आयसः । गोमूत्रगंधयः सर्वे सर्वकर्मसु योगिकाः ॥ च.चि

शोधन – 1) क्षाराम्लगोजलैः धौतं शुद्धति एव शिलाजतु ।

यवक्षार कांजी गोमूत्र से प्रक्षालन

2) गोदुग्ध त्रिफला कवाथ भूंगराज स्वरस इनकी एक एक भावना देने से

शिलाजतु पाषाण से शिलाजतु प्राप्ति विधि – 2

1) सूर्यतापी

2) अग्नितापी

मारण – शिलाजतु + हस्ताल + मनःशिला + गंधक – निम्बु स्वस्स = कपोत पुट में पाक

गुणधर्म – जगव्याधीप्रशमन, देहदार्ढकरं परम, मेधास्मृतीकरं, ज्वरपापडुशोफशमनं, मेदचेदकरं

गुल्मप्लीहविनाशनं, जठरहृत्यूलधनं

मात्रा – चरकानुसार

प्रबर मात्रा – 4 तोला (1 पल)

मध्यम मात्रा – 2 तोला (1/2 पल)

अवर मात्रा – 1 तोला (1 कर्ष)

रसायनार्थ शिलाजतु प्रयोग विधि (चरक)

प्रबर प्रयोग – 7 सप्ताह

मध्यम प्रयोग – 3 सप्ताह

अवर प्रयोग – 1 सप्ताह

अनुपान (शिलाजतु आलोडनार्थ द्रव) – पय तक्र मासिसरस, मूटगवूष, जल, गोमूत्र, विविध कषाय

शिलाजतु विकार शान्ति उपाय – मरीच चार्ष + घृत

शिलाजतु सेवन समये अपद्धत्य – व्यायाम आनंद विद्याही एवं मोजत कपोत ज्ञाकमाची कृतत्वं

योग – आरोग्यवर्धनी वटी, चन्द्रप्रभा वटी, तात्यादी वटी, ब्रह्मला मोटक

6) तुत्य –

English name – Copper sulphate or Blue vitriol

प्रयोग –

अग्नितापी

मध्यस्तक

CuSO4.7H2O

शिखीरीपि

ताप्रसार्म

मध्यमूत्र

शिखिनुस्थक

तुत्य

तित्वक

सस्तक

शिखी प्रकार – सस्तक तुलीभ होने के कारण तुत्य को दी सस्तक प्रयुक्त किया जाता है

सस्तक हि स्वभावज्ञ तुत्यकं कृत्रिमं मतम् । रजनि.

स्वरूप – मधुर कण्ठसदृश

कृत्रिम तुत्य निर्माण – ताप्र + गंधकास्त

तुत्य उपयोग – विषज होने से वासार्थ उपयोग

अशृष्ट तुत्य दोष – वानि (वमन) भानी (ध्रम) उपाय – शावीरी निम्बु पान / लाजघंड सेवन

शोधन – सस्तके शुद्धिद्वायोति रक्तवर्णण भावितम् । स्वेहवर्णण सांसर्क्तं सलवारसमदूषितम् ॥ रहस्या.

रक्तवर्ण द्रव्यो की भावना व स्वेहवर्ण द्रव्यो से सिंचन / गोमूत्र अजामूत्र माहिषूत्र में स्वेदन
मारण – तुत्य + गंधक + टंकण – लकुच स्वरस भावना – कुकुट पुट में पाक

भस्म गुण – छिरंग उपदंश चाशन, लेखन भेदन ससायन चक्षुष्य कृमीघ्न प्रमेह मेदोहर श्वित्रघ्न

सत्तपातन – तुत्य 1 भाग + टंकण 1/4 भाग – मूषा में सख्कर करंज तैल डालै – दृद्यामि द्वारा धमन
ताप्र धातु की सत्त्व रूप में प्राप्ती

मात्रा – 1/8 – 1/4 रसी

कल्प – जात्यादी धूत जात्यादी तैल, त्रैनोव्यवितामणि रस, महाज्वरकुश रस, महामृत्युंजय रस

भूनाय सत्त्वपातन – भूनाय मृत्तिका – जल से निर्माकरण – भूंगसुन स्वरस से 3 दिन मर्दन –

पुनः: निम्बु स्वरस व निर्गुणी स्वरस सह मर्दन – तत्पश्चात् दावक गण सह मर्दन
कर गुटिका निर्माण – मूषा में रखकर तीव्रानी में धमन – स्वांगशीत होने पर + 12
भाग ताम्र मिलाकर पुनः धमन – सत्त्व प्राप्ति ।

मयूरपिच्छ सत्त्व – मयूरपिच्छ + समभाग गोधृत मिलाकर – दग्ध करे – तत्पश्चात् गुड गुगुल टंकण
सणिजका मधु गुंजा पिपल लाक्षा गोधृत मिलाकर अन्धमूषा में धमन – ताम्र रूप सत्त्व

7) चपल – Bismuth सन्धिध द्रव्य

8) रसक –

English name – Zinc carbonate	ZnCO ₃
पर्याय – खर्पर	नेत्ररोगारि
ताम्रजाजक	यशदाकारण

वर्णन – आदमल्ल ने सर्वप्रथम वर्णन किया है ।

प्रकार – अ) रसरकसमृच्यानुसार – 2

1) दर्दुर – Calomine

2) कारबेलक – Smith sonite ZnCO₃

दर्दुर – सत्त्वपात्रार्थ कारबेलक – औषधार्थ उपयोगी

ब) ग्राहार्पनानुसार – 3

1) मूनिक्राम – Calomine – उत्तम

2) गुडाम – Zincite मध्यम

3) फायजाम – Zinc Blande अधम

ग्राहय लक्षण – दर्दुर में दल होते हैं व कारबेलक का निर्दल होता है ।

उपयोग – चश्मा धातु प्राप्तवर्थ

शोधन – खर्पर तंज कर बीजपुरक / नरमत्र / अश्वमत्र / तक / कांजी – किसी एक में निमज्जन

मारण – खर्पर + पाठ – खरल में मर्दन – धनकुमारी स्वरस की भावना – वालुकावंत्र में पाक – भस्म

भस्म गुण – लेखन भेदन चक्षुष्य प्रमेह विष कुष्ठ नाशक

खर्पर भस्म विकार शान्ती उपाय – गोमूत्र पान

सत्त्वपात्र – खर्पर + लाक्षा गुड राल टंकण + गोहृत + गोधृत = वंतक मूषा में धमन

सत्त्वरूप में यशद धातु प्राप्ति ।

कल्प – कस्तुरीमैख रत्न, लक्ष्मीविलास ग्स, प्रदसन्तक रस,

उपरस – 8

1) गंधक – English name – Sulphur 'S'

पर्याय – कीटघ	अतिगन्ध	गन्धक	सुगन्ध	गौरीपुष्प	नवनीत
कुष्ठारि / पामारी	पूनिगन्ध	गन्धपाषाण	सौगन्धिक	दैत्येन्द्र	बलि
शुल्वारि	कूरगन्ध	रसगन्ध		लेलितक	बलिवसा

प्रकार – रक्तवर्ण चीतवर्ण शाकलवर्ण कृष्णवर्ण

उत्तम मध्यम शश्म दुर्लभ

शुक्लचण्डुनिभ शुक्रपिच्छ श्यटिका –

धातुवादार्थ रस-रसायनार्थ लेपनार्थ जरामृत्युहर

अन्य भेद - 2

1) आमलसार

आम्बुजरप्रयोगार्थ

2) पिण्ड

चाक्र प्रयोगार्थ

ग्राह्य स्वरूप - शूक्रपिच्छ समच्छायो नवनीतसमप्रभः । मसृणः कटिनः स्निग्धः श्रेष्ठो गंधक उच्चते ॥

भौतिक स्वरूप - 1) द्रवणांक (boiling point) - 115°C से

2) क्रथनांक (melting point) - 444°C

3) आपेक्षिक घनत्व - 2.06 जल में अविलेय

अशूद्ध गंधक दोष - कुछ ताप प्रम पित्तरोग वीर्य मुख बल हानी

शोधन - आमलासार गंधक - गोधृत में भर्जन - नतपश्चात दुग्धयुक्त पात्र में डाले

दुमरी विधि में दुध के स्थान पर भूगरज स्वरस में डाले - इसप्रकार 7 बार करे ।

मारण - का विधान निर्देशीत नहीं ।

गंधक तैलपातन विधि - एक हस्त लंबा व दीर्घ वस्त्र अकंक्षीर व सनुहीक्षीर से लेपीत करे - 7 बार

गंधक + नवनीत पिष्ट कर उपरोक्त वस्त्र पर लेपन करे ।

उपरोक्त वस्त्र की बर्ती बनाकर उसे अधूमरख कर ज्वलन करे

ज्वलनसमये अधोपात्र में नैल द्वारा प्राप्ती - गंधक तैल

गंधक दूनि =

गंधक + चिकटु - मर्दन व तरज पर डालकर बर्ती निर्माण

उपरोक्त बर्ती तीलतैल में कुछ समय तक निर्माण रखे

तैलविधि समाप्त ज्वलन का अधोपात्र में द्रवरूप में प्राप्ते - गंधक दृती

गंधक तैल व दृति उपयोग - चर्मरोग कमीज कपड़ा

गंधक गंध नाशन - गंधक + पद्म + पचन कर घनीभूत + सूबांवर्ती (मुखर्चला) स्वरस में पाक तत्पश्चात निफला व्याथ में डालकर इनिं होमे दे ।

गंधक गृणधर्म - दीपन पाचन कुष्ठाद्धन कमीज कपड़ा विषज्ञ वीर्यप्रद

गंधकात् परतो नास्ति रसेषुपरसेषु वा । - रसार्थव

मात्रा - 1 रस्ती से लैकर 3 रस्ती तक

गंधक विकार शान्ति उपाय - गोधृतयुक्त गोदीरपान

गंधक रसायन - ओ) शूद्ध गंधक को गोदृश की तीन भावना - तत्पश्चात

ब) 1) चातुर्जात (त्वक एला पत्र कैशर)

2) मृद्दृची स्वरस

3) त्रिफला

4) शृंठी

5) भूगरज 6) आद्रक स्वरस

घृतेक दव्य की

धृथक पथक 8 भावना

शुष्क होनेपर तुल्य भाग सिता मिलाकर रख दे – गंधक रसायन

गुणधर्म – धातुक्षयं मेहगणानिमादयं शूलं तथा कोष्ठगतांश्च रोगान् । कुष्यान्यथाष्टादशरोगसन्धानिवास्त्वव
मात्रा – 1 कर्ष

2) गैरीक –

English name – Ochre Formula – Fe_2O_3

पर्याय –	गिरीज	गिरीमत्तिका	गैरेय
रक्तधातु	लोहधातु		

खनिज नाम – Red oxide of Iron

प्रकार –

रसरनसमुच्चायानुसार – 2 1) सुबर्ण गैरीक 2) पाषाणगैरीक

आयुर्वेद प्रकाश – 3 1) सामान्य गैरीक 2) सुबर्ण गैरीक 3) पाषाणगैरीक

ग्राहय स्वरूप – अत्यन्तशोणितं स्निधं मसूरां स्वर्णगैरिकम् । र.र.स.

ज्ञोधन – गोदुध की तीन भावना / गोधून मेर्जन

गुणधर्म – स्वादु स्निधं नेत्र्य हिधमा वमी विषधन रक्तधन कण्डूहर उदर्दनुत

3) कासीस –

English name – Ferrous Sulphate $\text{FeSO}_4 \cdot 7\text{H}_2\text{O}$

पर्याय – अयोगन्याशमसम्भूत खण खेचर

धातुकारसीस घांशुक पांशुकासीस पुष्पकारसीस

प्रकार – 1) रसार्पणवानुमार – 3 शुक्ल कण्ठ पीत

2) आनंदकंडनुमार – 4 रिति कण्ठ पीत रक्त

ज्ञोधन – धांगराज स्वरस की भावना

मारण – कासीस को कांजी की सात भावना – कुकुटपट – पुनः निम्बु स्वरस की भावना – गंजपट

भस्म पर्गीक्षा – अस्त्र द कणायं रस स्थीत अवामक

भस्म गुण – विषधन श्विन्धन केश्य केशरंजक व्रणनाशक कण्डुल रक्तवर्धक रजःप्रवर्तक

मात्रा – 1/2 – 2 रसी

कासीस दव – गुदभ्रंश , विसर्प मे व्रणप्रक्षालन

सल्पातन – कासीसम् + यवक्षार + सज्जीक्षार + दंकण – निम्बु स्वरस भावना – मूषा मे धमन

4) स्फटिका –

TIERRA

English name – Potass alum $\text{K}_2\text{SO}_4 \text{Al}_2(\text{SO}_4)_3 \cdot 24\text{H}_2\text{O}$

पर्याय –	कांक्षी	रहदार	स्फटिका	तुबरी
	सौंगढ़ी	दृढ़रङ्गा	स्फटिका	शुभ्रा

प्रकार – 1) रसरनसमुच्चायानुसार – 2 1) फट्की 2) फुल्लिका

2) रसार्पणवानुसार – 2 1) श्वेत (खण्ड) 2) कृष्ण (चूर्ण)

ज्ञोधन – अन्न मे तप्त कर फुल जाय तो चूर्ण बनाकर प्रयोग

गुणधर्म – कंठय केश्य व्रणाद्धी विषधन श्विन्धन नेत्रहिता रक्तस्तंभक

5) हरताल –

English name – Orpiment, Yellow Arsenic

AS_2S_3 (आर्सेनिक ट्रायसल्फाइड)

<u>पर्याय</u> - आल	ताल	नटभूषण	वंशपत्र	चित्रगन्धज	शैलूषभूषण
कर्चूर	तालक	नटमण्डनक	वंगारि	मल्लगन्धज	
खर्जूर	हरिताल	पीतनक	विडालक	गोमहुत	
<u>क्रिम हरताल निर्माण</u> - 4 भाग आर्सेनिक + 4 भाग गंधक					
<u>प्रकार</u> - 2	पत्र हरताल (पटल)		पिण्ड हरताल		
	उत्तम		अधम		

ग्राहय स्वरूप -(पत्रताल) स्वर्णवर्ण गुरु स्त्रियां तनुपत्रणच भासुरम् । तत्पत्रतालकं प्रोत्तं वहुपत्रं रसायनम्
अग्राह स्वरूप (पिण्डताल) निष्ठ्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु स्त्रीपुष्पहरणं तचुः गुणाल्प्यं पिण्डतालम्
शोधन - कुण्डाण्ड स्वरस / तिलक्षारयुक्त जल/ चूर्णोदक/ निम्बु स्वरस/ कांती / धूतकुमारी स्वरसयुक्त
 दोलायन्त्र मे स्वेदन

मारण - (ब्रह्ममूल) पलाशमूल त्वक् व्याथा - घर्नीभूतत्व - उसकी हरताल चूर्ण को भावना - पाक
 एकुण 12 बार करने से हरताल भस्म प्राप्ती ।

उपरोक्त विधी से पलाश के बदले पुनर्नवा पंचांग भावना देकर भस्म प्राप्ती

भस्म परीक्षा - निर्धूम भस्म पक्व समझा जाता है (अग्नि पर ढालने पर धूम - अपक्व भस्म)

गुणधर्म - स्त्रिय, उष्ण कफदृशी गुरुदृशी विषजात व कृमीताशक त्वच्य रसायन कुष्ठधन स्त्रीपुष्पनाशन
 क्रिंगं उपदंश विषयं भास्म वप्त नाईवेत भावना

हरताल विकार शान्ति उपाय - जीरक+ शर्करा, कुण्डाण्ड स्वरस + मधु

हरताल ऐवेंविक खेलन निषेध; एकांतिक खेलन से आतंकरुक्त नाश

माता - 1/8 - 1/4 रसी

सलायान्त्र - हरताल - कुलत्थ व्याश भावना - उकाल जल गर्वना - माटिष धूत व मधु भावना - मद्दू
 मध्य तीव्रामनी पर पाक - हरताल सब्ज = आर्सेनिक प्रत्येकी

योग - कास्तुरीभूत रस, तालकेश्वर रस, तालसिंह, नित्यानंद रस, रसमाणिक्य, सत्तियपत्तमेरव रस
 समीपक्ष्यग रस वातवज्ञांकुश रस

6) मनःशिला -

English name - Realgar AS₂ S₂ (आर्सेनिक डायसल्फाइड)

पर्याय - कल्याणिका नागमाता मतोगुम्बा रोगशिला रसायनक्र

कुण्डी नागनिकिका मनोजा शिला रससोवेका

कलटी नेपालिका मनोहा गोला

प्रकार - रसरनसमुच्चयानुसार - 3 1) ज्ञामार्गी 2) कण्वीरका 3) खण्डाख्या

प्रादृश्यस्वरूप - श्वामार्गी - श्वामा रक्त सर्गोरा रा भाराद्या श्वामिका मता । रस

कण्वीरका - तेजस्विनी च निर्गोरा ताप्राभा कण्वीरका ।

खण्डाख्या - चूर्णीभूता अतिरिक्तांगी सभास खण्डपूर्विका ।

श्रेष्ठ प्रकार -

अशुद्ध मनःशिला सेवन से हानी - अशमरी मूककृच्छ्र मन्दामनी अवष्टभ मूवगेधकरी

शोधन - अगस्त्य पत्र स्वरस 7 भावना अथवा शूणवेर स्वरस 7 भावना

मारण - विधान नहीं

गुणधर्म - कटू तिक उष्ण रसायन लेखन विष श्वास रक्तविकार नाशन भूतोष्टवनाशिनी कण्डूधन

मनःगिला सत्वपातन – अर्सेनिक

मात्रा – तत्वांशतो रत्किकाया कलांशप्रभिता – 1/24 – 1/16 रत्ती

विकार शान्ति उपाय – गोदुग्ध + मधु तीन दिन तक सेवन

7) अंजन –

English name – Collyrium

प्रकार – रसरनसमुच्चयानुसार – 5

- 1) सौवीराणजन – स्टिबनाइट Sb_2S_3
- 2) स्त्रोतोंजन – ऑण्टिमनी Sb_2S_3
- 3) नीलाणजन – लेड सल्फाइट Pbs
- 4) पुष्पांजन – डिंक ऑक्साइट ZnO
- 5) रसांजन – एहसाट ऑफ इंडियन बेर्बेरिस

पर्याय –

1) सौवीराणजन – कृष्णांजन सुवीरक सौवीर

2) स्त्रोतोंजन – कपोतांजन यामुनेय स्त्रोतोज

3) नीलांजन – लोहमार्दवकारक वारिसाम्भव शक्रभूमीज सुवर्णधन

4) पुष्पांजन – कुसुमाणजन कौस्तुभ गुणकेतु रीतिन रीतिगुणक

5) रसांजन – अग्निसार दार्ढीक्वाथसम्भव रसाग्रज कतक बालभेषज्य रसोद्वर सरागम ताक्षर्य
सौवीराणजन स्त्रोतोंजन नोलांजन – खनिज पुष्पांजन वे रसांजन – कप्रिम
रसांजन तिषाक भतमतांत्र –

1) डी ए कुलमन्गीनुसार – Yellow oxide of mercury

2) यात्वजीनुसार – दर्ढीक्वाथ धन

रसांजन निर्माण – दार्ढीक्वाथमजाशीरपादपक्व यदा धनम। तदा रसांजन ख्यात नेत्रयोः परम् हितम् ॥

दास्तहरिदा वकाथ निर्माण 1/4 अजा दूध मिलाकर धन करे – आतप म शुष्क कर

शोधन – अन्जनानि विशुद्धयन्ति भूंगराजदलद्रवैः ।

सर्व प्रकार के अंजनों का शोधन भूंगराज स्वरस मे किया जाता है ।

1) सौवीराणजन व स्त्रोतोंजन – त्रिफला क्वात अथवा भूंगराज स्वरस युक्त दोलायंत्र मे स्वेदन

2) नीलांजन – जमीरी निष्ठु स्वरस की भावना

3) रसांजन – सूर्यावतादी योग की 3 भावना देने से

मारण – निर्देशीत नहीं योग – रसांजन का – पत्रांगासव पुष्पानुग चूर्ण

8) कंकुष्ठ

English name – Gambose tree extract

Latin name – Garcinia Morella

<u>पर्याय</u> – कंकुष्ठ	कोलबालुक	बरांग	रेचक
काककंकुष्ठ	स्वर्णक्षिरीनिर्यास	विरंग	शोधन
तालकुष्ठ	तीक्ष्णदुग्धिका	रंगदायक	हेमवरी

कंकुष्ठ सन्धिाध द्रव्य है

इलहानुसार – कांचनक्षिरी निर्यास

रसरन्तसमुच्चयानुसार – वानस्पतीज द्रव्य

उत्तर मत – सदय जन्मीत हाथी विट, सदय जन्मीत अश्व नाभीनाल, मृदागङ्ग

19 वीं शती तक रेवन्दिनी सत्त्व को कंकुष्ठ माना जाना था। रेवन्दिनी मूल व्यायथ धन सत्त्व
सद्य वैद्यो नुसार – गम्बोज ट्री / गासिनिया मोरेला

हिमवत् पादशिखरे कंकुष्ठं उपजायते । रसस्.

प्रकार – 2 1) नलिक 2) रेणुक

ग्राहास्वरूप – नलिका – पीतप्रभ गुरु स्निधि – श्रेष्ठ

अग्राहास्वरूप – रेनुक – इयामर्पीत लघु – निकृष्ट

जोधन – शुंठी व्याध की 3 भावना

मारण – वानस्पतीज द्रव्य होने से मारण नहीं निर्देशीत

उपयोग – रेचक, पारद को रंगने के काम आता था।

मात्रा – 1 यव से 1 रसी तक

साधारण रस – 8

1) कम्पिल्लक –

English name – Kamila

Latin name – Mallotus philippinus

पर्वायु – कर्कश

रक्तचांपक

रेत

बल्द

स्फुर्ति

गोचर

पर्वोज्यांग – फलसज्ज



यानु स्वरूप – डुष्टिकाग्नूर्णसंकाशः च्छान्तकाहयो इनिरेचनः। सौराष्ट्रदेशे चोतपाशः स इ कम्पिल्लक, स्मृत

उपयोग – रेचनार्थ कमीमे प्रयोग, कुष्ठ से वाह प्रयोग

जोधन – जल मे प्रश्नालन

मात्रा – वानस्पतीज द्रव्य होने से मारण निर्देश नहीं।

मात्रा – 1 माशा

योग – कमीधातनी गृटिका

2) जांखिया (सोमल) –

English name – Arsenious oxide

A_5O_3

पर्वायु – आखुपाषाण

दाखुमूष

मर्त्तलक

शंखमूष

सोमल

तिकट

रसवन्धकर

गौरीपाषाण

दाखुमोच

मृषक

शंखलिष

सावस

व्यक्तिहृ

फेनाश्प

इत्त्वूर्णका

इनिहाम – सुश्रुत संहिता मे ‘फेनाश्प’ नाम से स्थावरं विषं प्रवर्णन

प्रकार –

अ) ससरनसमुच्चय – 3

सफटिकाभ

जांखाभ

हरिद्रभ

श्वेतवर्ण

पांडुवर्ण

पीतवर्ण

उत्तम

मध्यम

अधम

ब) आयुर्वेद प्रकाश – 2

श्वेत (जांखाभ)

पीत (द्विदिमाभ)

कृत्रिम

खनिज

विष

विष

क) रसतरंगिणी - 2

थेत	रक्त
कृत्रिम	खनिज
विष	विष

भौतिक गुणधर्म - आपेक्षिक घनत्व - 3.73

द्रवणांक - 200 क्वथनांक - 615

शोधन - कारबोल्लक स्वरस / गोदुम्य पूरीत दोलायंत्र में स्वेदनमारण - सोमल - लाजवन्ती कल्क मेर खकर शराब सम्पुट मे पाक - भस्मगुणधर्म - श्वास कास प्लीहावृद्धी इलीपद कुष्ठ फिरंग सन्धिगत वात कुष्ठ क्लैव्यनाशन कान्तीप्रदमात्रा - 1/120 - 1/30 रत्तीयोग - समीरपन्नग रस, सूचिकाभरण रस, मल्लवटी सन्निपातभैरव रस, बडवानल रस

3) नवतादर -

English name - Ammonium chloride NH₄CL

पर्याय	डिप्टिकालवण	किट्टसार	नृसार
	चुल्लिकालवण	नसार	नवसार

उपलब्धी - खनिज व पाणीज दोनों मे पाप्तप्रकार - उपलब्ध नहींबानस्यातीज प्राप्ति - बरीर पीतु काष्ठेषु पच्चमानेषु चोरतः।शोधन - विगुण जल मे द्राक्षण कर वस्त्रपूत के - अग्नि पर गृष्म कर प्राप्तीगुणधर्म - दीपन पाचन लघु तीक्ष्ण गुल्म प्लीहनाशन

पारद जारण्य सर्वोत्तम विड, लोह ग्रामार्थ उपयोग

मात्रा - 2-8 रत्तीयोग - क्षारपर्पटी, शंखद्रावक रस

4) वराटिका -

English name - Cowries chemical - Calcium carbonate C_aCO₃

पर्याय	चर	कपट	वराट	वालकिङ्गक
	चराचर्स	असार्दंका	वराटिका	

प्राप्ती - समुद्री पाणी पृष्ठ भागप्रकार - 3

सार्धनिष्कभरा (डेढ निष्क) निष्कभरा (एक निष्क) पादेनिष्क (पाउण निष्क)

6 माशा 4 माशा 3 माशा

उत्तम मध्यम अधम

श्रेष्ठ वराटिका लक्षण - पीताभा ग्रन्थिका पृष्ठे दीर्घवृक्षा वराटिका। ररस.उपयोग - बालग्रह शान्त्यर्थ धारणशोधन - कंजी मे स्वेदन तत्पथ्यात प्रक्षालनमारण - शुद्ध वराटिका - शराबसम्पुट मे गजपुट मे पाक - तत्पथ्यात घृतकुमारी स्वरस भावना

पुन; गजपुट मे पाक

गुणधर्म – दीपत पाचन वृष्टि नेत्र्य प्रदर्शी परिणामशूल नेत्र्य कर्णस्त्रावनाशक

पारद जारणार्थ विड मे प्रयुक्त

योग – घटणीक्रपाट रस, प्रदरान्तकर्त्तव्य, लवंगादी वटी, लोकनाथ रस, हेमगंधीपोटटली रस

5) अग्निगर –

English – Amber

पर्याय – अग्निगर्भ, अग्निज, अग्निज्वाला, अग्निनिर्यास, बन्हि जार, वडवानिमल

जगयु वर्णवैद्वत, सिन्धुप्लव सिन्धुफला

सर्वप्रथम वर्णन रस्यार्थव ग्रंथ मे प्राप्त

उपस्थिती – समुद्र मे प्राप्त छेल मस्त्य का सडा हुआ आंत्र का भाग

स्वरूप – इयामवर्ण सुगंधीन द्रव्य

ज्ञोधन मारण का उल्लेख नहीं

गुणधर्म – अम्ल कटु उष्ण वातकफल प्रित्तवार साक्षिपातज शूल वातर्सीगछ धनुर्वातिघ (Tetanus)

योग – चिंतामणि रस, जवाहरमोहर वटी, धात्री रसायन, वडवानिमल रस

6) हिंगुल –

English name – Cinnebar HgS

पर्याय – ठरट गमगंधी शुक्रवार लोहस्त

स्तौर्य फसीन रम्याद चूर्णपाद

उपस्थिती – स्वाभाविक एवं कृत्रिम दोनों स्थिती मे उपत्तिः

प्रकार – 3 हेसपाद शुक्रुण्ड चमार शाप्र. तुसार

जपाक्षुरेमस्तुतया सर्पात्मक विरिन्नभरत

उत्तम गच्छाम अधम

यज्ञोधर भद्रद व गुरुमासद नुसार 2 मेंद – चमार व शुक्रुण्ड एक ही मानहो हैं।

गाहा स्वरूप – हेसपाद इत्थम – जपाक्षुरेम सकाश या प्रवाल सम,

भौमिका स्वरूप = 1 भाग घारट + 1 भाग गंधक

अशुद्ध हिंगुल सेवन दोष – अन्धता, भ्रम, क्षय, प्रमेह

हिंगुल शोधन – निष्ठु स्वरस / आर्क रसरस / अम्ल याँ / लकुम स्वरस / कांजी – 7 भावना

सत्त्वपातन – पारद प्राप्ती

योग – आनंद भैरव रस, कल्पकर्तुदा रस, ज्वरमुत्तीरी रस, गालू जय रस, हिंगुलेश्वर रस.

7) पुददारशंग –

English name – Litharge PbO

पर्याय – बोदारशंग, मुर्दशंख मुर्दशंखक

रसशास्त्र मे अल्प वर्णन के बाह्य प्रयोग के लिए उपयोग

प्रकार – 2 पीतवर्ण पापडुवर्ण आयुर्वेद प्रकाश नुसार

सदल निर्दल

खनिज छ्रित्रिम

बोदारशंखके प्रोक्ते द्विविध पीतपापडुरम् । सादले निर्दले तस्य जनिर्गुर्जस्मण्डले ॥

अर्ददार्थाग्नि पार्श्वे सीससत्त्वं स्मृतं परम् ॥ आप्र.

शोधन – शोधन मारण उल्लेख नहीं

उपयोग – रसवन्धन के लिए श्रेष्ठ, फिरंग उपदंशज व्रण के शरंजनाथ उपयोगी व्रणशोधक पाम कण्डूचन

सर्व साधागण रस शोधन – निम्बु स्वरस व आर्द्धक स्वरस पृथक पृथक तीन भावना

8) गिरीसिंद्र –

रसशास्त्र में सर्वाधिक संधिग्य द्रव्य

डी. ए. कुलकर्णी नुसार – मोण्ट्राइट नामक रूपनिज है।

रसभस्म एवं भस्मों की क्रार्यतिथी –

न रोगाणां न दोषाणां न दृष्ट्याणां परीक्षणम् । न देशस्य न कालस्य कार्य रसचिकित्सिते ॥ चन्द्रजलनिधी

धातु –

वैट – 6 धातु वर्णन चरक व सुश्रुत – अष्टलोह वर्णन

रसार्णव – 6 धातु वर्णन शारंग्धर – 7

बुर्गीकरण –

अ) रसहुदयतंत्र नुसार –

1) सारलोह – सुवर्ण व रजत

2) सत्वलोह – ताम्र पितल तीखण व कोत्तनौह अभक्सत्व

3) पृष्ठलोह – नाग वंग

ब) रसरलसमुच्चयानुसार –

1) शुश्दलोह – सुवर्ण रजत ताम्र कान्तलोह

2) पृष्ठलोह – नाग वंग

3) मिश्रलोह – पितल कांस्य वर्त

धातु भरण प्रकार –

लोहानां मारण श्रेष्ठं सर्वेणां रसभस्मना । मूर्लीमिर्मिद्यम् पाहुः कनिष्ठं गन्धकादिभिः ॥

अपिलोहेन लोहरग्न मारणं दुर्गुणप्रदम् ॥ रस.

1) उत्तम – पारद से धातुओं का मारण

2) मध्यम – वानस्पतीज (मूर्लीभिः) द्रव्यो से धातुओं का मारण

3) कनिष्ठ – गन्धकादी द्रव्यों से धातुओं का मारण

4) निकष्ट (दुर्गुणप्रद) – अपिलोह से धातु मारण



धातु भस्मार्थ अग्नि प्रमाण –

स्वर्णरूप्यवधे ज्ञेयं पुटं कुकुटादिकम् । ताम्रे काषादिजो वहिलोहे गजपृटानि च ॥ आयु. प्र.

1) सुवर्ण व रजत – कुकुट पुट

2) ताम्र – काषादी के अग्नि से पुट

3) लोह – गजपृट

1) सुवर्ण –

English name – Gold Latin name – Aurum Au

पर्याय – अग्निवीर्य कल्याण मनोहर हिरण्य जाम्बूनद रुक्मि

तपनीय कांचन मांगल्य हेम कनक

आस्वर कलधौति कल्याण हाटक लोहवर

चरकानुसार सुवर्ण सेवन की विषनाशन में श्रेष्ठता

हैम सर्वविपाणि आशु गगंधि विनियच्छति । न सज्जने हैमपाहे विषं पद्मदले अम्बुवत् ॥ च.चि 23/239

कृत्रिम सुवर्ण बनाने की विद्या - अचार्य नागर्जुन

प्रकार - 5 (रसग्लसमुच्चयानुसार)

प्राकृत सहज खनिज रसविधि अनिसाम्भवज

प्रशमन सुवर्ण लक्षण - दाहे रक्त सिंते छेदे निकषे कुंकुमप्रभम् । गुरु स्निग्धं मृदू स्वच्छं निर्दलं रक्तपीतकम्

अनितप्त - आरक्त काटने पर - चमकनेवाला घिसने पर - कुंकुमप्रभ

गुरु स्निग्धं मृदू स्वच्छं निर्दलं रक्तपीतवर्णं

हैमपोदशवर्णाद्य शस्यते देहलोहयोः । 16 वर्ण का सुवर्ण - देहलोहकर

भौतिक गुणधर्म - आपेक्षिक धनत्व - 19.32

द्रवणांक (boiling point) - 1063 °c वृत्थनांक (melting point) - 2530 °c

Aquaregia (अम्लराज) मे घुलनशील

शोधन - तैले तके गवां मूत्रे त्वारनाले कुलत्थजे । क्रमान्विषेचयेत् नप्तं द्रवे द्रावे तु सप्तधा ॥

स्वर्णांटीलोहपत्राणां शुद्धिरेषा प्रजाप्त्यते । र.र.स.

सुवर्णं कंठकवेधी पत्र - नैल तक गोमत्रं काँडी ड. मे तप्त ऊर निषेच - सात बार

ग्राहण - मूलधन + पारद - जिक्का उत्तम यह गंधक - तवपात्राने इंगुल सन्धूक्त मनःशिला मह मर्दन =

कोत पृष्ठ इस दक्ष 15 पट दने से सुवर्ण भर्त्ता प्राप्ति

आज्ञा - 1 वज्र - 8 गुना । रसग्लसमुच्चयानुसार - 2 रत्ती

गुणधर्म - गंधक रस व पाक द्वय, विषज्ञ हृतय वृद्धीमध्याननीकर धणज क्षाप्त्वं त्रिलोपण

तवक कलाना - सुवर्णं चतुर्वर्षी भासु का बनायी जाती है । उत्तमा द्रग उल्लेख

2) रस -

English name - Silver Latin name - Argentum Ag

भूवाच - चन्द्रलोह रसव्य दुर्वर्णक तार

शुद्धि रूप्यक रसीधि महाशुभ

प्रकार - 3 राहज खनिज कृत्रिम

ग्राह स्वरूप - धनं स्वर्णं गुरु स्निग्धं दाहे छेदे घिसे मृदु । वर्णाद्य चन्द्रवत् स्वच्छं दाहे छेदे समप्रभम्
शोखाभं मस्तूपं स्फोटरहीतं रजतं उभम् ॥ आरक्त

धन स्वरूप गूळ स्निग्ध दहन करने पर या काटने पर श्वेत मृदू चन्द्रवत् स्वच्छ शोखाभं
स्फोटरहीत

अग्राह स्वरूप - कटिन कृत्रिम रूप्य रक्त एवं पीत वर्ण दलयुक्त काटने व दहन करनेपर नष्ट होनेवाला

भौतिक गुण - आपेक्षिक धनत्व - 10.5 द्रवणांक - 960 वृत्थनांक - 1955

शोधन - सुवर्ण शोधन समान - तैले तके गवां मूत्रे त्वारनाले कुलत्थजे

पारद - पारद + गंधक - कुमारी स्वरस भावना - लघुपुट से पाक

गुणधर्म - कषाय अम्ल मधुर विषाक्ती शीत वीर्य सर लेखन स्निग्ध मेध्य रसायन वयस्थापक

मात्रा - 1/4 रत्ती - 1 रत्ती

रजत तवक सेवन - आयुर्वेद प्रकाश निषेध

रसतरंगिणीनुसार सेवन योग्य

3) ताम्र -

English name – Copper	Latin name – Cuprum	Cu
पर्याय – सूर्यलोह	लोहितायस	चम्बक
सूर्वांग	रक्तक	नेपालीय
रविप्रिय		शुल्व

इतिहास – चरक मे गरविष चिकित्सा मे ताम्र सेवन पश्चात वमन का निर्देश

प्रकार = 2 नेपालक – श्रेष्ठ म्लेंच्छ – कनिष्ठ

ग्राहा लक्षण – सुस्निधं मृदूलं शोणं घनाघातक्षमं गुरुः। निर्विकारं गुणश्रेष्ठं ताम्रं नेपालमुच्यते ॥

अग्राहा नाम – सितकृष्णारूणच्छायम् अतिवामि कठोरकम् । क्षालितं पुनः कृष्णं एतन् म्लेंच्छताम्रकम्

भौतिक गुण – आपेक्षिक घनत्व – 9.94 द्रवणांक – 1084 क्वथनांक – 2310

प्राचीन आचार्यों नुसार ताम्र भयंकर विष माना है। उसमे 8 दोष माने हैं। ताम्र अष्ट दोष

प्रयोग मूर्खाद्व विदाहश्च स्वेदक्लेदवान्तयः। अरुचिः चित्तसत्तावः एते दोष विषेयमा ॥ आयु. प्र.

शोधन – तप्त कर तैल तक्र गोमृत्र आदी मे निषेचन अथवा ताम्र पत्र पर संधृव व निम्बुस्वरस का लेप

अग्नितप्त कर निर्गुणी स्वरस मे निर्वापण – ऐसा 8 बार करने से शुद्धी

मारण – कजली + निम्बुस्वरस की कजली को भवना के कर ताम्र पत्र पर लेप – गजपुट मे पाक

अप्रतीकरण – ताम्र + अध्रक – प्राचामृत भवना – गजपुट मे पाक

गुणधर्म – तिळ कषाय मधुर विपक्ति उष्ण वीर्य यक्तालोह गोग उदर शूलघ्न अशोष्य नेत्र्य लेखन

सदोष ताम्र सेवन विकारी शांति उपाय – मूनिव्रिही + सिता अथवा धान्यक वीज क्वाथ + सिता

ताम्र भस्म परीक्षा – अवाचि, अस्त सद्व संयुक्त दारने परा नील वर्ण न प्राप्त न हो

पीतल मे रखने पर नील वर्ण न प्राप्त न हो।

मात्रा – 1/3 रसी – 1 रत्ती

योग – आगोप्यवर्धिनी वटी लक्ष्मीविलापस रस त्रिविक्रम रस तित्यानन्द रस वडताम्रल रस हुदयार्पण रस

4) लौह –

English – Iron Latin name – Ferrum Fe

पर्याय – अयस आयस कलायस, तीक्ष्णक शस्त्रक

प्रकार – 1) मुण्ड लौह – 3 1) मृद्व 2) कुण्ठ 3) कडा

2) तीक्ष्ण लौह – 6 1) खर 2) सर 3) छुसाल 4) तारावट्ट 5) वाजिर 6) कललोह

3) कान्त लौह – 5 1) भासक 2) चुम्बक 3) कर्षक 4) द्रावक 5) रोमकान्त

कान्तलोह पात्र लक्षण – 1) कान्तलोह पात्र मे तैल लिप्त कर पानी डालने पर तैल प्रसर नहीं होता

2) हिंगु का उक पात्र मे लेप करने पर हिंगु अपनी गंध त्याग देता है

3) निम्ब कल्क का पात्र मे लेप करने पर निम्ब अपनी त्रिक्ता त्याग देता है

4) दुध उक पात्र मे उबालनेपर शिखराक्ती होता है।

भौतिक गुण – आपेक्षिक घनत्व – 7.86 द्रवणांक – 1533 क्वथनांक – 3000

लौह दोष – सप्त आयस दोष

1) गुरुता 2) दूष्टा 3) उत्क्लेद 4) कर्मल (ग्लानी) 5) दाहकारीता 6) अश्वदोष 7) दुर्गंधता

शोधन – तीक्ष्ण व कान्त लौह का भस्म विर्देश मुण्ड लौह का भस्म बनाने का निषेध

लौह तप्त कर त्रिफला क्वाथ मे बुझावे। इस प्रकार 7 बार करने से शोधन

त्रिफला के अलावा गोमूत्र में भी निर्बापण करने से शोधन

माण – त्रिफला का गोमूत्र में क्वाथ कर उसमे लौह निर्बापण – ततपश्चात् त्रिफला क्वाथ की भावना गजपुट मे पाक

लौह मारक गण – 22 औषधी उल्लेख

त्रिफला से मारीत लौह भस्म सर्वरोगनाशक

लौह भस्म निर्माणार्थ पुट संख्या –

- 1) रोगनाशनर्थ – 10 – 100 पुट
- 2) स्सायनार्थ – 100 – 1000 पुट
- 3) वाजीकरणार्थ – 10 – 500 पुट

लौह त्रिविधि पाक –

- 1) भानुपाक – सूर्य की उष्णता से किया जाता है
- 2) स्थालीपाक – त्रिफला पूरीत स्थाली मे खगणि द्वारा पाक
- 3) पुटपाक – लौह मारक गण औषधेयो से भावना देकर गजपुट से पाक क्रम – भानुपाक – स्थालीपाक – पुटपाक

उत्तम लौह भस्म – पक्व जम्बुफल समान तंत्र रेखापूर्ण शावामि वारीता इ.

अनुपान – त्रिफला संधूसमयके सर्वरोगों योजयेत् ।

मात्रा – 1 – 2 रस्ती

लौहभस्म उत्तम गुणाधिक्रम –

किटटात् द्रव्याणुणः मुण्डे मुण्डात् नोक्षणं शतोन्मितम् ; वीर्यात् लक्षणाणां कान्ते भक्षणात्करुते गुणान् तत्त्वात् सदा कान्तम् सदा सेव्यं जगमन्त्वहरे नवाम् ॥ उत्तम

5) वंग –

English – Tin Latin name – Stannum Sn

पर्याय	कटिल	त्रिपु	रड्डु	पृतीमन्ध
	कुरुष्य	त्रिपुष	रड्डक	शुक्रलौह

प्रकार – 2 1) खुरक – उत्तम 2) मिश्रक – अधम

ग्राहक स्वरूप – धबल मदुन्न न्निधि द्रुतद्राव सागौरवम् । निःशब्दं खुरकं स्वान्निश्रकं इयामशुभ्रकम् ॥
द्रुतद्राव – शीघ्र पिघलनेवाला, लौह से ठोकने पर मिश्रक

अग्राद्य स्वरूप – द्रावे अतिकठिनं रुक्षं तु अन्यथातुमित्रीतम् । धुसरं वाहिनं चैव मिश्रकं धारं उच्यते ॥ रर

भौतिक गुण – आपेक्षिक धनत्व – 7.29 द्रवणांक – 232 क्वथनांक – 270.2

शोधन – चूर्णोदक मे सात बार निर्बापण

जारण – द्रवीत वंग + चतुर्थांश अपामार्ग पञ्चांग / अजमोदा / अक्षत्य चूर्ण – मर्दन – तीव्रामी मे पाक

मारण – वंग + धूतकुमारी स्वरस भावना – मर्दन – चक्रिका – कुकुट पुट मे पाक

मात्रा – 1–2 रस्ती

गुणधर्म – वल्य बृहण बृष्य प्रमेहघ्न प्रदर्शनाशन, कलैव्यनाशन शुक्रस्तम्भक

सर्वेषामेव लोहाणां बलवन वंग उच्यते ।

अशुद्ध वंग सेवन विकार शात्री उपाय – मेषश्रंगी चूर्ण सितासंह सेवन

6) नाग -

English name – Lead	Latin name – Plumbum	Pb
पर्याय – कुरंग	नाग सीसा कृष्णायसि	भोगेष्ट
कुवंग	भुजंग सीसक सिन्दूराकारक	
प्रकार – 2	कुमार समल	
ग्राह स्वरूप – द्रतदावं महाभारं छेदे कृष्णसमुज्ज्वलम् । पूरीगन्धं वहिः कृष्णं शुद्धं सीसमतोऽन्यथा ॥		
भौतिक गुण – आपेक्षिक घनत्व – 11.37	ट्रिवण्णांक – 327	वृथनांक – 1525
अशुद्ध नाग सेवन – प्रमेह क्षय क्रामला कृष्ण किलास उत्पत्ती		
शोधन – द्रवीत नाग + हरिद्रा रेणुका निर्गुण्डी मूल एकत्र करे – निर्गुण्डी स्वरस से निर्वापण		
मारण – द्रवीत नाग + अश्वत्थ त्वक / चिंचा त्वक चूर्ण प्रक्षेप – मनःशिला मिलाकर – निम्बु स्वरस भावना – कुकुट पुट		
मात्रा – 1/4 – 1 रत्ती		
गुणधर्म – प्रमेहघन, रजत रंजन कर्ता, ब्रण अर्श गुल्म ग्रहणी अतिसार नाशन		
अशुद्ध नाग सेवन शान्ति उपाय – सुवर्ण भस्म + हरीतकी चूर्ण		

7) यशद -

English name – Zinc	Latin name – Zincum	Zn
पर्याय – खर्पर	ताम्रांक	नेत्ररोगारी
खर्परज	गोदान	
इतिहास – शारीरधर दीक्षाकार ओषधमत्त्व द्वारा यशदं वर्णायम वर्णन अल्पमात्रा मे समर्विष व उपस्थिती होती है ।		
ग्राह लक्षण – छेदे समुज्ज्वलं ग्निर्णय यसके निर्मलं लक्ष्य । द्रतदावं महाभारं यशदं ग्राहमच्यने ॥		
अग्राह्य स्वरूप – कठिनं कठिनदावं रुक्षं रुक्षप्रभं लवु । मलिनं यशदं ततु तद अग्राह्यं प्रकिर्तितम् ॥		
भौतिक गुण – आपेक्षिक घनत्व – 6.9	ट्रिवण्णांक – 416	वृथनांक – 910
शोधन – चूर्णोदक मे सात दार निर्वापण		
मारण – द्रवीत यशद को पारद सह गर्दन – निम्बु स्वरस सह मर्दन + गधक चूर्ण – कम्जली निर्माण शारब सम्पुट मे बाराद पुट मे पाक		
मात्रा – 1 – 2 रत्ती		
गुणधर्म – कफपित्तरोगहर, प्रमेहघन, नेत्ररोगहर यांडु श्वास कास वणनाशक चम्भूच्य		
यशद विकार शमनोपाय – बला हरीतकी सिता सह सेवन		
त्रिवंग भस्म – नाग वंग यशद तीनो पूरीलोह मिलाकर बनाया जाता है		

8) पीतल

English name – Brass				
पर्याय – आर	पिंगल	कपिलौह	रिती	सितकनक
आरकूट	पीतक	क्षुद्रसुवर्ण	सितिका	
मिस्त्रलौह है – ताम्र + यशद मिलकर बनाया जाता है ।				ताम्र 2 भाग + यशद 1 भाग
प्रकार – 2	रीतिका	काकतुंडी		
रीतिका – सल्लप्त कांजी मे मिलाने पर लाल वर्ण का होनेवाला				

- क्राकतूडी – तप्त कर कांजी में निषेचन करने पर कृष्ण वर्ण दोनोंवाला
- गुह्य स्वरूप – गुह्य मृदू पीताभा सारांगी ताडनक्षमा (ताडन कर पीटनेपर फैलनेवाला) सुस्तिग्नि मसाणांगी
- अग्राह्य स्वरूप – पाण्डुराघ स्लक्ष खर वर्वर (पीतकृष्णवर्णी) घटनक्षम (पीटनेपर न फैलनेवाला) पूर्णगन्धा
- शोधन – पितल तप्त कर हरिद्राचूर्णवुक्त निर्धुण्डी स्वरस में निषेचन
- मारण – मनशिला + गंधक – निम्बु स्वरस भावना – पीतल पत्र पर लेप – शुष्क कर गजपुट में पाक
- मात्रा – 1/2 – 1 रत्ती
- गुणधर्म – क्रमी कृष्ण रक्षितघ्न यक्राप्लीहा उदर रोगनाशन

9) कास्य –

English name – White Copper Latin name - Bronze

पुराय	कंसक	धोषक	सौंगष्ट्रज	वर्तिलोह	ताप्रतपुल
	कंसीय	धोष	सौंगष्ट्रीक	दीप्तलोहक	दीप्त

निर्माण – 8 भाग ताम्र + 2 भाग वंग

प्रकार – 2 आयुर्वेद प्रकाश नृसार

पुष्प	तैलिक
अनिश्चेत	पीतभरक
द्रेष्य	कनिष्ठ

प्राक्त लक्षण – तीक्ष्ण शब्दम् मृदू मिथ्यमीषत् श्यामलच्छुप्रकस्। निर्वर्त्त द्वाहरकं च खेदा वत्सरं प्रशस्त्वते

अग्राह्य लक्षण – तस्यीते द्वहने तसे वरे-स्लक्ष्म घनस्तहम्। मन्दनाद गतज्योनि साप्तधा कान्यमुस्तुचेत् ॥

शोधन – तात कर गोमूत्र में 7 बार निषेचन अथवा गोगूत्र या अस्तदात् में पत्व करे

मात्रा – अर्कक्षीर गन्धक में मर्दन कर उसका कास्य पत्र पत्र लेप करे – गजपुट – शीत होनेपर चूण करे

पुनः अर्कक्षीर भावना देकर मजाबूद्द

गुणधर्म – लघु तिक्त उष्ण लेखन क्रमी कृष्ण नैत्रोपनाशक

मात्रा – 1/2 – 1 रत्ती

10) वर्तलोह –

English name – Bronz

पुराय	पंचरस	भर्त	वर्तलोह
	पंचलौह	वर्त	वर्तल

निर्माण – ताप्त लोह नाग कास्य पितल – समभाग इसे पंचलौह भी कहते हैं।

शोधन – द्वीपीत कर अश्वमूत्र में 7 बार निषेचन करने से।

मारण – गंधक + हरताल मर्दन कर उसे अर्कक्षीर भावना दे – उसका लेप वर्तलोह पर कर गजपुट दे

गुणधर्म – कफपित्तघ्न रुचीकर नैत्र क्रमीष्म मलशोधक

मात्रा – 1 रत्ती

रसशास्त्र

पारद – English name – Mercury

Latin name - Hydragirum

उत्पत्ति – शिव के बीर्य में

क्षेत्रभेद से पारद प्रकार – 5

रसो रसेन्द्र सूतश्च पारदो मोश्रकस्तथा ।

इनि पण्चविधौ जातः क्षेत्रभेदैन सम्भुजः ॥ र.र.स.

निरूपि –

- 1) जगरूगमृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः ।
- 2) रसत्वाद्द्रवण्यो अत्वादूसः पारदः ।
- 3) मम देहरसो वस्तात् रसस्तेनायमुच्यते ।
- 4) रसनादभकादीनो धातूनो कीर्तिनो रसः ।

मिश्रक पारद स्वरूप – मयुरपत्रिकाभास्म

पारद खनिज –

1) हिंगुल – (Cinnebar -HgS)

पारद का मुख्य खनिज है। पारद मात्र 70-85 % होता है।

इस वर्ण का एवं चिन्हित होता है। जपाकुसुमसंकाश विताया है।

रसशास्त्र की दृष्टि से हंसादा है।

2) हिंगुल मैटेड – (metacinnabar - HgS)

चमार हिंगुल की कृष्ण जाती का खनिज है।

3) कोरेल्लाइन – (correline ore)

4) रंगील ओर

5) गिरिसिन्दुर – Red oxide of mercury

6) निट्रिव केलोमेल – (Hg_2Cl_2) – रसकामधैनुसार 'हीरकदुतिसंकांश' स्वरूप है।

पारद प्राची स्थान – ज्वालामुखी पर्वतीय स्थान

पारद संपर्कजन्य रोग – मुख नाड़ी वृण, पापडुना, ज्वर, मन्दगिरि

चिकित्सा – शुद्ध गंधक पद्योग घृत के साथ

पारद दोष



नैसर्गिक दोष

- 1) विष
- 2) वन्धि
- 3) मल

यौगिक दोष

- 1) नाग
- 2) वंग

औपाधिक दोष



औपाधिक दोष - 1) भूमिज	2) गिरीज	3) वारिज	4+5) नागजौ	6+7) वंगजौ
पर्पटी	पाटीनी	भेदी	द्रावी-मैलकारी	अन्धकारी-ध्वांशी
त्वक पर्पटीवत	त्वक पाठन	मलमेदन	धातुद्रवता मलवर्धन	अन्धता स्वरपारुद्धय

नैरसर्गिक दोष परिणाम

दोष नाम	रसार्थि	रसस/रसरत्नाकर/रहुतंत्र	ग्रसप्रकाशसुधाकर/रसमेद्यचूडा
विष	विष	मरण	मरण
वन्हि	कुष्ठ	संताप	मद
मल	उदर	भूच्छा	मूच्छा

योगिक दोष परिणाम – योगिकौ नागवंद्गौ तौ जाह्नाध्मान कुष्ठदौ ।

नाग – चडता वंग – अध्मान

औपाधिक दोष परिणाम – भूमिज – कुष्ठ, गिरीज- जाह्न, वारिज – वातसंघात, नागज वंगज – दोषाद्य

पारद शोधन – सामान्य शोधन – व्याधीहरणार्थ विशेष शोधन – रसायनार्थ

पारद शोधनार्थ मात्रा – पलानां ज्ञतके प्राहव नदयस्यमधापि वा ।

पलानां दशके बायि यज्वके वा पलोमितवा ॥

पलान्दूनो ज लंग्राहयः संस्कारयर्थं स्तो दद्यः ॥ ग्रन्तः

रसतर्सिणीनुभार – 100 से 1 पल तक याहुव ॥ पल से कम अपार्य

रसार्थिनुभार – 2000 पल से 1 पल तक

सामान्य शोधन विधी –

विधी - 1	विधी- 2	विधी-3	विधी - 4
पारद- 500	पारद – 500	पारद – 500	पारद-500
चूनकली-500	धृतकुमारी स्वरस-500	ताम्बुल स्परस- 500	चूनकली- 500
निस्तुष्ट रसोन- 500	चित्रक क्वाथ-500	आद्रक स्वरस – 500	गृहधूम-55
सैंधव -250	स्कर्पाया मिष्ठी इन-500	यवश्याप - 500	हरिदा- 500
निम्बु स्वरस	घृतकी क्वाथ- 500	टेकण व सम्भीष्या- 500	इषिटिका चूर्ण – 500
उष्णोदक	त्रिफला क्वाथ - 500	कलाजी- यथावश्यक	काण्डी- यथावश्यक

विशेष शोधन –

1) नागदोष	गृहधूम , इषिटिका चूर्ण, हरिदा चूर्ण
2) वंगदोष	इम्द्रवारुणी, अंकोल चूर्ण, हरिदा
3) वन्हिदोष	चित्रक व धृतकुमारी स्वरस
4) मलदोष	आरबध फलमज्जा व धृतकुमारी स्वरस
5) चापल्य दोष	कृष्णथतुर + धृतकुमारी स्वरस
6) विषदोष	त्रिफला व घृतकुमारी स्वरस
7) गिरीदोष	त्रिकटु चूर्ण व धृतकुमारी स्वरस
8) असहयग्नि दोष	त्रिकटु चूर्ण व धृतकुमारी स्वरस

शूद्ध पारद स्वरूप –

- अनःमुनिलो बहिरुज्जलो यो मध्यान्तमूर्यपनिमप्रकाशः । रम्मणजरी
- हीरकद्युतिसंकाशः प्रमाणाद् हीरकात् व्वचित् ।
क्वचित् पर्पटीकाभासम् गलद्वज्यनेभं क्वचित् ॥ रसकामधेनु

1) अंतःनील व बाहर से उज्ज्वल

2) मध्यान्त के सूर्य की तरह

3) हीरक गर्भ समान

4) पर्पटीकाभास

5) पतले गेष्य समान

पारद संस्कार

शोधन एवं संस्कार भेद – शोधनं दोषदण्णं संस्कारणच बलतेजसोभिवर्धनम् ।

पारद संस्कार संख्या – 18

- 1) स्वेदन 2) मर्दन 3) मूर्च्छन 4) उत्थापन 5) पातन (उर्ध्व अथ निर्यक) 6) गेधन (बोधन) 7) नियामण 8) दीपन
9) गगणभक्षण 10) चारण 11) गर्भदृति 12) बाह्यदृति 13) जारण 14) रणजन 15) सारण 16) संक्रामण 17) वेध
18) भक्षण आयुर्वेद वकाश नुसार 19) वा वर्षकाश अनुकामन

मनवान् शंकर नुसार पारद संस्कार भेद – 2

1) सोम्य – (मन्दवेगी) गमरापिदायोक्त

2) वीथ्या – (वीद्रवेगी) क्रापालिक रापप्रदायोक्त

अनु.	संस्कार	घटक एवं विधि	संस्कार कल
1	स्वेदन	पातन शुष्टी गजिक चिक्रि विष्पनी जांची	मलवैष्टिलवकारकम्
2	मर्दन	गृहधूम इखिटेका रोजका कापनी	वृष्टिलविनाशनम्, गंगग्रहणार्थ, रसोपयोगी
3	मूर्च्छन	धृतकुमारी स्वरस, व्रिक्षा वताद्य चिक्रि क्वाय	मृद्धपिष्ठलवकारकं नूच्छनम् नागवर्णं भवेत् सूतं विहाय घनचापलम्। नागवर्णं का होता है एवं चपलता त्याग करता है
4	उत्थापन	5. क्रिया- स्वेदन, प्रक्षालन, मर्दन, आतप, पातन,	मूर्च्छाव्यापर्तीनाशन
5	पातन	उर्ध्व अथ एवं निर्यक पातन	नागवंगज दोष नाशन
6	गेधन/बोधन	लवणाम्बुजे में दोलायन विधी से स्वेदन सृष्ट्यम्बुज (समुद्रजल) में स्वेदन	मन्दवीर्यवान् लव्यायायो भवति आपायितो वीर्यवान् षण्डःत्वर्वनितः रसः षण्डःभावावो विमुण्चनि । वीर्यप्राप्नोत्यनुजम् ,
7	नियामण	नियामक गण औषधी वा लशुन मार्कव वन्ध्याकर्कोटकी डू. में दोलायन में स्वेदन	निर्मलजेजवान्, चपलत्वनिवृत्तये, स्थिरतो व्रजेत, वीर्यवान् जायते, वन्हिमित्रत्वकारकः, रसोवन्हिसहो भवेत्, चुल्लिकानिसहस्तथा,
8	दीपन	टकण मरीच लवण सैंथव डू. से स्वेदन	सहस्रविद्युलताभः डव प्रज्वलितो भवेत् दीपनम् ग्रासार्थी भवेत्, दीपनं वीर्यतेजवृद्धीः,

पारद की गतीया -5

- 1) जलगती - स्वेदनादी क्रियाओं के बाद प्रक्षालन करते समय जल के साथ पारद का निकल जाता
- 2) हंसगती - मर्दनादी संस्कार के समय पारद पारद जल के ऊपर तैरते हुए निकल जाता है अथवा सूर्यकिरण में सूखने को खा जाता है तो उष्मा के साथ उड़ जाता है ।
- 3) मलगती - स्वेदन मर्दनादी संस्कार समये कल्कादी द्रव्यों के साथ मर्दन करते समय कृष्णवर्ण मलस्वरूप निकल जाता है उसे मलगती कहते हैं
- 4) धूमगती - मूर्च्छन या उत्थापन संस्कार समये अत्यधिक अग्नि वंधन शिरील होने से पारद धूमसह उड़ जाता है
- 5) जीवगती - पारद की अदृश्य गती कहते हैं ।

जारणा -

- 1) जारणा हि नाम गालनपातनव्यतिरेकेन प्रस्तुधनहेमादि स्सरय पूर्वावस्था प्रतिपत्तिवर्तम । पारद में गन्धक अभ्रक सत्त्व सूर्वर्ण रत्नादी द्रव्यों को जीर्ण कर लिया जाय और पारद का भार भी नहीं बढ़े और नहीं पारद अपने स्वरूप को त्यागे , इसके लिए गालन पानन आदी क्रिया के सिवाय पारद के अन्दर इन औपचार्यों का जरण हो जाय उसे जारणा कहते हैं।
- 2) द्रुतग्रासक्षय एवं जारणा । पारद में गिर्वली द्वारा द्रुत धातुओं का जीर्ण होने के बाद क्षय होता ही जारणा है जारणा प्रकार - 1) भूचरी जारणा 2) सूखरी जारणा (सूर्यार्णवानुस्तार)
- 1) भूचरी जारणा - 1) बालजारणा 2) चुवा जारणा 3) बृद्ध जारणा अभ्रकपत्रजारण - 1) समुख जारण 2) निर्मुखजारण 3) वासनामुखजारण
- बालजारणा - अभ्रकजारणा अभ्रकपत्रजारण - 1) समुखजारणा 2) निर्मुखजारण 3) वासनामुखजारण

समाधीर्ण पारद - बालजारणा

चतुर्मुखाभ्यजारीत पारद - युवा जारणा

षडगुणाभ्यजारीत पारद - वृद्धजारणा

जारणा ऋम

सर्वप्रथम पारद मैं गंधक जारणा - सर्व सत्त्व (अभ्रक वैशाली सत्त्वकादी) - मातिकसत्त्व - सूर्वर्ण - रत्नादी

मूर्च्छना -

अवश्यव्याधीघातकत्वपूर्वक मूर्च्छना ।

मूर्च्छित्वा हरति रूजम् । रसहृदयतन्त्र

पारद में अनेक प्रकार की क्रियाओं द्वारा एक या अनेक द्रव्यों के साथ संयोग करके रोगनाशक शक्ति उत्पन्न करना मूर्च्छना कहा जाता है ।

अथवा पारद विभिन्न क्रियाओं द्वारा मूर्च्छित होकर सभी रोगों को नष्ट करता है

मूर्च्छित पारद विधि एवं लक्षण

कञ्जनाभो यदा सूतो विहाय घनचापलम् ।

मूर्च्छितस्तु तदा ज्ञेयो नानावर्णोऽपि च वक्चित् ॥ आप्र.

पारद + गंधक

↓
मर्दन (मूर्च्छितत्त्व)

↓
कज्जली निर्माण

अन्य द्रव्यों के साथ पाक करने पर विविध वर्ण प्राप्ती

उदा. कज्जली - कृष्ण वर्ण, रससिंदूर - रक्तवर्ण, मुग्ध रस व रसपुण्य - श्वेत वर्ण

मूर्च्छित पारद फल - देहसिध्दी एवं गेगनाशक्ता उत्पत्ती

मूर्च्छना भेद - 4

संगन्ध मूर्च्छना	निर्गंध मूर्च्छना	अग्निमूर्च्छना	अनग्निमूर्च्छना
कज्जली	-	-	कज्जली
रससिंदूर	-	रससिंदूर	-
-	संकर्पूर	संकर्पूर	-
-	मुग्धरस	-	मुग्धरस
मकरध्वज		मकरध्वज	
मल्लसिंदूर		मल्लसिंदूर	
तालसिंदूर		तालसिंदूर	
शिलसिंदूर		शिलसिंदूर	
समीरसन्धग		समीरसन्धग	
रसपर्षटी		रसपर्षटी	
आगेवतधीनी			

संगन्ध मूर्च्छना भेद - 5

- 1) गन्धपिष्ठी - कज्जली
- 2) गन्धबध्द - रसपर्षटी
- 3) गन्धजीर्ण - रससिंदूर
- 4) रसगन्ध - कज्जली
- 5) धातुपिष्ठी - मकरध्वज, स्वर्णसिंदूर, रजतसिंदूर, ताम्रसिंदूर, नागसिंदूर, स्वर्णवंश
कनकपिष्ठी, रजतपिष्ठी, ताम्रपिष्ठी, अभ्रकसत्त्वपिष्ठी, कान्तलोहपिष्ठी

TIERRA

मूर्च्छन	मूर्च्छना	जारणा
पारद अष्ट संस्कार में से एक	पारद को सेवन योग्य बनान	धातुवाद के लिए उपयोगी
नष्टपिष्ठत्वकारक मूर्च्छनम्	मूर्च्छित्वा हरनि रुजम्	द्रत्प्रासक्षय एव जारणा
पारद के नागवंगादी दोष हरण	सोगशोत्वर्थ उपयोगी	पारद में गुणोदय, सोगनाशन मही

कुण्पक्व रसायन	खरलीय रसायन	पर्षटी रसायन	पोटली रसायन
मससिंदूर	कञ्जली	स्सपर्पटी	हिरण्यगर्भ पोटली
मकरध्वज	वसन्तमालती	लौहपर्पटी	हेमगर्भ पोटली
सिद्धमकरध्वज	वसन्तकुसुमाकर	ताम्रपर्पटी	ताम्रगर्भ पोटली
तालसिंदूर	रसराजरस	सुवर्णपर्पटी	अभ्रकगर्भपोटली
शिलासिंदूर	योगेन्द्र रस	विजय पर्पटी	रजतगर्भ पोटली
मल्लसिंदूर	कण्ठचतुर्मुख रस	अभ्रपर्पटी	वैश्वानर पोटली
समीरपन्नग रस	मृत्युंजय रस	बोलपर्पटी	लोकेश्वर पोटली
रमकपूर	रनगिरी रस	पण्चामत पर्पटी	शंखगर्भ पोटली
स्सपृष्ठ	आरोग्यवर्धिनी रस	सर्वेश्वर पर्पटी	मूगाड़क पोटली रस

पर्षटी कल्पना

सर्वप्रथम वर्णन – चक्रपाणी द्वारा चक्रदत्त ग्रंथ में । काल 11 वी शर्णी

प्रमुख घटक – पारद + गंधक = कञ्जली . उपयोग – मुख्यतः प्रहणी विकार में

पर्षटी निर्माण में गंधक शोधन द्वारा भी न कर भृगराज स्वरम्य की सात भावनाएँ दी जाती हैं ।

पर्षटी पाक भेद – ३ मृदू मध्य खर

गृहुमध्य खरश्वेति पाकोऽन्न त्रिविद्या स्यतः ॥

आदौ प्रयोजयेद् बैदमः खरन्तु त्रिविद्या त्वंतेत् ॥

मदूपाके न भूगः स्यत् सारलक्ष नव्यने ।

इयोः सचन्दिकं कार्णी खरे चूण्यत्तर लोहितम् ॥ स्यतः ॥

1) मृदू पाक – भग्न नहीं होती है । विना चमक की होती है । उपयोग व्याप्त है

2) मध्य पाक – कृष्णबर्णी, चमकदार होती है, तोड़ने पर शब्द के साथ ढूढ़ती है । सर्वोत्तम पाक है

3) खर पाक – लोहीत वर्ष के चूर्ण समाव होती है । त्वच्य है

पर्षटी सेवन काल में पथ्य	पर्षटी सेवन काल में अपथ्य
काकभाची एटोल पूर्णीफल आईक वास्तुक कंपलीरसूत (फुल) वार्ताङ्ग पूर्ण शाली गोदुम्य लावा तिन्हार मासरम शोथ होने पर लवण निषेध, तुष्णा के लिए नारीकेलोदक अतिसार होने पर दुष्य निषेध	अच्छा इच्छा, लिङ्गार स्नान, शीतबातसेवन, शीतजलसेवन, कोप, विना, उष्ण द्रव्यसेवन, निम्बादी तिकदव्य सेवन, गूड़ एवं अद्युगर्भार सेवन, सीमह एकांत मे समाप्ति विदाही भोजन

पर्षटी कल्पा

पर्षटी	घटकद्रव्य	मात्रा	गुणधर्म
स्सपर्पटी	उखबुक एवं आईक में शोधीत पारद एवं सप्तधा	2 गुंजा, ऋमवृद्ध	ग्रहणी अतिसार क्षय
मंग्रहणी	भृगराज स्वरस भावीत गंधक – समभाग	से 10गुंजा तक	जलोदर शोथ अर्झ
लौहपर्पटी	हिंगुलोत्थ पारद – 1 भाग	1- 2 गुंजा,	संग्रहणी, पांडु,
संग्रहणी	शुद्ध गंधक – 1, कान्तलौह भर्म – 1 भाग	वर्धमान मात्रा	सूतिकारोग, अतिसार

			आमशूल ड.
ताम्रपर्पटी कास (योगरनाकर)	हिंगुलोत्थ पारद - 3 भाग शुद्ध गंधक - 3 भाग मृत ताम्र (मारीत) - 3 भाग लोहपात्र में पवन बत्सनाभ - 1 भाग (योगरनाकर) रस.र.स.- 'कुष्ठान्तपर्पटी' नाम . उपरोक्त घटक + शुद्ध गंधक पुनः 7 भाग मिलाकर मर्दन	1-2 गुंजा	श्वास कास ज्वर पांडु यक्तप्लीहावृद्धि, अतिसार संग्रहणी अनुपान पिप्पली+मधु(यो) बाकुची चूर्ण (र.र.स.)
स्वर्णपर्पटी संग्रहणी (भै.र.)	हिंगुलोत्थ पारद - 4 भाग शुद्ध गंधक - 4 भाग स्वर्ण भस्म - 1 भाग	रक्तिकादीक्रमेनैव योजयेद् अनुग्राहतः	ग्रहणी राजयक्षमा अष्टविध शूल, वृथा , सर्वरुजापत्रा
पंचामृत पर्पटी संग्रहणी (भै.र.)	गंधक - 8 भाग हिंगुलोत्थ पारद - 4 भाग कान्तलौह भस्म - 2 भाग वजाभ्रक भस्म - 1 भाग ताम्र भस्म - 1/2 भाग	2 गुंजा से आरंभ वर्धमान मात्रा 8 गुंजा तक . 3 सप्ताह तक	संग्रहणी चीरकालीन अतिसार अखची अग्निमान्द्य दुष्ट अर्श रक्तपित क्षय बलीपलीतहर नेत्ररोगहर
विजयपर्पटी संग्रहणी (भै.र.)	शुद्ध गंधक - 4 भाग हिंगुलोत्थ पारद - 2 भाग रौप्य भस्म - 1 भाग स्वर्ण भस्म - 1/2 भाग वैक्रान्त भस्म - 1/4 भाग मुकापिष्ठी या भस्म - 1/4 भाग	2 रस्ती वर्धमान(कल्पयन्त्रा) में सेवन. प्रतिदिन 1 रस्ती वर्धमान कर 10 रस्ती तक पुनः क्रमानुसार 1 रस्ती	स्वायन, वृथा, अनिसार वक्षमा ऊष, पाण्डु कामला जलोदय विषमन्त्वर साञ्चिपानज्वर आमदोष अष्टदशा कुष्ठ
गगनपर्पटी संग्रहणी (सि.यो.स.)	हिंगुलोत्थ पारद - 1 भाग कृष्णवज्राभ्रक भस्म - 1 भाग भूंगमज शोधीत गंधक - भाग	1-3 रस्ती	पाण्डु ग्रहणी अतिसार श्वास कास भन्दानी
बोलपर्पटी रक्तपित(यो.)	हिंगुलोत्थ पारद - 1 भाग शुद्ध गंधक - 1 भाग बोल चूर्ण - 2 भाग	बहलयुग्म 3-6 रस्ती अनुपान- शर्करा मधु	रक्तपित रक्तातिसार रक्तपदर रक्तार्श उरःक्षत इ.
थेत पर्पटी/ क्षारपर्पटी मुत्रकूच्छु	कलमीसेग- 1 किलो स्फटिका- 125 ग्राम नवसागर- 65 ग्राम	5-10 रस्ती पपटी वर्ण थेत एवं गुलाबी	मूत्रल मूत्रकूच्छु, अश्वमी मूत्राधात अंधमान नाशन

इतर कल्प

कल्प नाम	घटक द्रव्य	मात्रा	गुणधर्म
मुख्य रस (grey powder)	हिंगुलोत्थ पारद - 1 भाग शोध्द खटिका चूर्ण- 2 भाग	युवा- 1/2 -2 1/2 रस्ती, 1वर्ष तक बालक- 1/8-1/4 रस्ती	दन्तोद्धवजन्त्य बालातिसार, वपन, फिरंग, उदसोग,

रससिंहंदुर-रसायन (रसयो) Sulphide mercury of	पारद - 1 भाग - कज्जली को बटांकुर गंधक - 1 भाग स्वरस की भावना	1-2 रसी तलस्थ रसायन	वाजीकरण, ज्वर प्रमेह शूल भरांदर कुछ इ.
मक्रध्वज - रसायन- वाजीकरण (रसेन्द्रसारसं) Sulphide of Mercury ब्रण- आम प्रबाल पत्र सम आरक्त बर्णी	शुद्ध कण्टकवेधी सुवर्णपत्र- 1 भाग हिंगुलोत्थ/अष्टसंस्कारीत/घडगुणबलीजारीत पारद -8 भाग शुद्ध आमलसार गंधक- 16 भाग कज्जले को रक्तकार्पासपुष्प व कुमारीस्वरस भावना. तलस्थ एवं गलस्थ रसायन	1/2 - 2 रसी स्सतरंगिणीनुसार क्रम से मद्वाग्नि मध्यमाग्नि व प्रखराग्नि देने का निर्देश	रसायन वाजीकरण कामिनी दर्पशामक वलीपलितशामक बल्य वृथ बृहण जग्मूल्यनशक, अनुपान मेद से सर्वरोगनाशक
सिध्दमक्रध्वज - रसायनाधिकार Sulphide of mercury	शुद्ध कण्टकवेधी सुवर्णपत्र- 4 भाग हिंगुलोत्थ/अष्टसंस्कारीत/घडगुणबलीजारीत पारद -8 भाग शुद्ध आमलसार गंधक- 16 भाग(र.त.) मै.र. (उपरोक्त प्रमाण-1:2:4) भेष्यज-ज्ञावलीनुसार श्वेत अंकोटफल भावना +रक्तकार्पासपुष्प+कमारी स्वरस		प्रबल आन्तशोषान्तक समस्तगदभणजन प्रमदकामिनीणजन प्रबलकासकालानल क्षयनाशन, सान्तिपात-वरहर, कटीशल हृदयलनाशन
रसपुष्प calomel/ Subchloride of mercury	हिंगुलोत्थ पारद- 1 भाग शुद्ध आसीन- 1 भाग मैन्यवलसण - 1 भाग गलस्थ रसायन	वर्ण -श्वेत 1/2-2 1/2 विरेचन-2.5 र.	मूत्रल, द्रगदोषहृत, विरेचक, फिरंग कृमी ज्ञावलनशन, विसूचिक
रसक्षेत्र pre chloride Of mercury	हिंगुलोत्थ पारद- 1 भाग द्रक्षण- 1 भाग मधु- 1 भाग लाक्षाचूर्ण- 1 भाग उर्णी- 1 भाग	1/4 -2 रसी	फिरंग, उपरोक्त, हिक्क, द्रग करी, विष वाशन
स्वर्णवंग	शुद्ध वंग- 1 भाग हिंगुलोत्थ पारद- 1 भाग शुद्ध गंधक - 1 भाग सहायक द्रव्य- नवमाणम चूर्ण - 1 भाग 1)मैन्यव-25ग्रा कलमी सोय- 1/8 भाग 2) निम्न स्वरस	1-2 रसी न गलस्थ न तलस्थ रसायन मध्यस्थ रसायन	वाजेकरण रसायन मैथ्य बल्य मेहहर नैऋत्य वन्हिवर्धन शुक्रकर उपदंश पूयमेह
समीसपन्नग	शुद्ध पारद - 1 भाग शुद्ध गंधक - 1 भाग शुद्ध शंखिया(सोमल) - 1भाग शुद्ध हरताल-1भाग तुलसीपत्रस्वरस भावन	1/2-2 रसी गलस्थ व तलस्थ रसायन	वातव्याधी सान्तिपाता ज्वर आमवात श्वास कास

पारद बन्धन -

येन येन हि चापचल्यं दुर्ग्रहत्वं च नशयति ।

रसगजस्य सम्प्रोक्तो बन्धनार्थो हि वार्तिकैः ॥ रससः

जिन जिन विधीयों से पारद की चंचलता चपलता दुर्ग्रहत्व नष्ट हो जाय उसे पारद बंधन कहते हैं ।

रसरब्रसमुच्चयानुसार वंध -25

बन्ध नाम	वन्धन व्याख्या	सेवन लाभालाभ
1) हठबन्ध	सम्यक शुद्धी रहीत पारद का बंधन	भयंकर रोगोत्पादक
2) आरोटबन्ध	सम्यक शुद्धी करने पर पारद बंधन	क्षेत्रीकरणार्थ प्रयोग, रोगनाशक है
3) आभासबन्ध	मूलादी(वनस्पती) से भावीत पारद दंचलता त्यागकर बंधन में बद्ध हो जाता है	विकारकर है
4) क्रियाहीन बन्ध	शुद्ध पारद को अशुद्ध धातुओं से बन्धन करना	अपथ्य से गोगोत्पादक है
5) पिण्डीबन्ध	तीव्र आनप मे ढूढ़ मर्दन कर पिण्डी जैसा बनाया पारद	दीपन पाचन है
6) क्षारबन्ध	शंख शुती आदी भस्मों से बंधा हुआ पारद	दीपन पाचन शूलघ्न
7) खोटबन्ध	बांधने से गोलाकार पर धमन करने से उड़ने वाला पारद	सर्वरोगहर है
8) पोटबन्ध	कजाली को पिघलाकर कदलीपत्र पर पर्पटाकृती बनाया हुआ पारद	सर्वरोगहर है
9) कल्कबन्ध	स्वेदनादी छाग कल्क(एंक) जैसा बनाया हुआ पारद	सर्वरोगहर है
10) कञ्जलीबन्ध	सामान्यतया समझाग गंधक से मर्दीत पारद	सर्वरोगहर है
11) सजीव बंध	जारण कर अभ्रकादी के साथ भस्मीभूत कर बंध	न करोति जरव्याधेनिनाशन
12) निर्जीव बंध	अभ्रक एवं गन्धक जारण पश्चात पारद भस्म निर्माण	स्वरोगहर
13) निर्बीजबन्ध	पारद मे 1/4 सूतर्ण जारण कर पुनः गंधक के साथ पिण्डी निर्माण व पुनः भस्म निर्माण	सकलामयघ्न
14) सर्वीजबन्ध	पारद मे अभ्रक स्वर्ण आदी जारण कर पुनः गंधक के साथ मर्दन कर भस्म निर्माण	विपलप्रभाव
15) ब्रुखला बन्ध	ब्रुख आदी रत्नों के स्फूर्त भस्म किया हुआ पारद	देहवेध त्र स्तोत्रवेध कर होता है
16) द्रुतिबन्ध	ब्रह्मद्रुति मंस्कार कर पारद भस्म निर्माण	असाध्य गोग नाशन
17) बालकबन्ध	सामाधजारीत पारद का भस्म	स्माधन भाविगदापहक्ष
18) कुमास्वबन्ध	हिंगुणाभजारीत पारद का भस्म	स्माधन पापयोगसंधातनाशन
19) तम्भणबंध	चन्तुपुणाभजारीत पारद भस्म	स्माधन सकलामयघ्न वीर्यवलकर
20) पृष्ठ बंध	धडगुणाभजारीत पारद भस्म	स्त्रायन देहलोहवेधकर
21) मूर्तिबंध	अभ्रक जारण विना दिव्योषधीयों से अग्निसहकृत पारद	स्माधन
22) जलबन्ध	शिलानीय आदी प्रमुख जलों से बद्ध पारद	जगरोगमत्यूच्छ
23) अग्निबंध	अन्य योगसह अग्नि पर बद्ध किया हुआ पारद-गुटिका	इस गुटिकाधारन से खेचरगतीप्राप्ति
24) सुसंस्कृत बंध	विष्णुक्रान्तादी दिव्य औषधीयों से बालुकस्यव या कुकूट पुट मे धक्क पुनः धातुयोग से भस्म निर्माण	स्माधन
25) महाबन्ध	सुवर्ण रजतादी से धमन कर अक्षीण नीबीड गुरु	स्माधन
	गुटिकाकार दीर्घोज्जवल पारद	
26) जलूकाबन्ध	विभिन्न वनस्पतीयों से मर्दन कर जलूकावत निर्मीत पारद	मैथुन कर्म से स्त्रीयों को द्रावणार्थ

रसरलसमुच्यानुसार जलूकाबन्ध प्रकार -3

- 1) जलूकाकार- अष्टांगुल प्रमाण - 16 वर्ष वय तक - बालाओं के लिए
- 2) जलयाकाकार- दशांगुल - 32 वर्ष वय तक - युवतीयों के लिए
- 3) गुटिकाकार - द्वादशांगुल - 50 वर्ष वय तक - प्रगल्भाओं के लिए

पारद सेवनकाल मे पथ्य -

मुद्र, दुधान्त, शाल्यन्त, पुनर्वा शाक, मेघनाद व वास्तुक शाक, सैंधव, नागर मुस्ता, पद्ममूल, धूत, धान्यक, गोधूम, हंसोदक, , पटोल, अलावु, गव्यक्षीर दधिघृत, नारीकेलाम्बु, ताम्बुलचर्वण,

अपथ्य-

अतिमदयपान, अत्यशन, अतिनिद्रा अतिजागरण, अति अध्व, अतिक्रोध, लघन, रक्तीसंग, अतिचिता, पापकर्म अजीर्ण, अतिमैथुन, इ. कुलन्थ अतसी तैल माष, मसूरक, कपोत काणिकान्न, तक्रभक्त, बदर चीरबिल्व,

रुवर्चल नारंग, कांचनार शोभाणन, कटू तीक्ष्ण अम्ल लवण

कृष्णांण्ड कर्कटी चैव कालिंगं कारवेल्लकं ।

कुसुमकम् कर्कोटकं कदली काकमाचिकम् ॥

कक्काशष्टकमेतद्धि वर्जयेदृसभक्षक ॥ रसार्णव

द्वेवीकरण - दिव्य औषधी या रसभस्म सेवन पूर्व पंचकर्म द्वाग शरीर शुद्धी.

रसभस्म सेवन विधि -

योग्निसहन्त्रं प्राप्तः संजतो हे पतारकर्ता च ।

वधूं रसश्च भुलो विधिना सिद्धिप्रदो भवति ॥ आयु. ५

तथ पारद भर्म अग्निस्थायी हो, सुवर्णं पूर्वं रजः बनाने मे राक्षम हू अओर वध्द भी हो चुका हो उसी रसभस्म जो सेवन करने से सभी प्रकार की स्थितिया पाप्त होती है

नाम्बुल पत्र मे रसभस्म उच्चकर सेवन करने से तिडवन्थ नही होता

अश्वद्य पारद सेवन जन्य लक्षण रसाजीर्ण लक्षण - मठी शोक भ्रम छाँ ज्वर हिक्का, वेपथु क्राप शूल निदा : आल्य लिंगरनभ अग्निसार कारण कर्ण नासा भेद आह ड.

चिकित्सा - कांजी सह कारवेल्लक रस सर्जिकाप गोवृत सैंधव सेवन अथवा कदलीकर्क रस ग्रजकोषानकी काण्डा नाय जा मूत्र कारवेल्लक इस सौंवर्धल सेवन अद्वा गंधक गंधु के साथ सेवन

अविधीपूर्तक पारद सेवनजन्य विकार - ऐ. सलावलीनुसार

नासाभंग पानस, द्रनपात, नेत्र आस्य रोग, विसर्प, कोठ कण्डू मस्तक पीड़ा, त्वक्वैतर्प्य, पक्षाभात, गंधीवात,

अस्थीजाहा दाह, भगंदर कुष्ठ उपदंश दंतवेष्टे सरकत्व, लालास्त्राव,

TIERRA

उपराज

आनन्दकन्द - 9

आयुर्वेदप्रकाश - 15

बहुदयेगतरागणी - 4 रसतरागणी - 6

भारतीय चिकित्सा केन्द्रिय परिषद - 13

1) सूर्यकान्त - English name - sun stone ग.सू - $\text{Na}_2\text{OAl}_2\text{O}_3\text{SiO}_2 + \text{CaO}_3\text{Al}_2\text{O}_3\text{SiO}_2$

पर्याय - अग्निर्भ ज्वलनाशम दीपोपल तपनमणि तपन अर्कोपल रविकान्त सूर्यकान्त

उपस्थिती - खानो से प्राप्त 'ओलिगो क्लेज' नामक पत्थर से प्राप्त

ग्राहय स्वरूप - विमल निस्तुष्ट स्निथ मसृण निर्वण, सूर्यकिण स्पर्श से अग्नि प्रज्वलित हो जाय

मारण विधि - सूर्यकान्त चूर्ण+गंधक+मनःशिला समभाग जल स्व भावना - गजपृष्ठ मे पाक

भस्म गुण - वातकफ्फन, रसायन मैथ्य मात्रा - 1/2- 1 रसी

2) चन्द्रकान्त - English name- Moon stone Kal Si₃O₅

पर्याय - चन्द्रकान्त चन्द्रमणि चन्द्रोपल शशिमणि शीताशमा संस्त्रवोपल

ग्राह्य स्वरूप - स्निग्ध शीत पीतवर्ण चन्द्रकिरण के स्पर्श से जल स्ववीत करनेवाला
 मारण - चन्द्रकान्त चूर्ण + शिलाजनु + हिंगुल = कुमारी स्वरस भावना = चक्रिका बनाकर गजपूट में पाक
 भस्म गुण - रक्षित पित रोगनाशक दाहनाशक ग्रहालक्ष्मीनाशन शिवप्रिय मात्रा - 1/2-1 रत्ती

3) राजावर्त - English name- Lapis Lazuli or Altra Marine $\text{Na}_4(\text{S}_3\text{Al})\text{Al}_2(\text{SiO}_4)_3$

पर्याय - अवर्त आवर्तमणि नीलाशमा नृपावर्त नृपोपल

प्रकार - 2 1) चूर्णरूप 2) पिण्डरूप (गौल)

ग्राह्य स्वरूप - आरक्त नीलवर्ण, स्निग्ध, शारदनिरभ्रनंभ, शिखीकंठसमप्रकाशी, शनिग्रह का उपरल है
 शोधन - निम्बुस्वरस + गोमूत्र + यवक्षार एकत्र कर टोलायन्न में स्वेदन

मारण - रजवर्त चूर्ण + गंधक = निम्बुस्वरस भावना = चक्रिका निर्माण = कुकुट पुट में पाक

भस्म गुण - रसायन बृष्य दीपन पाचन शीत स्निग्ध पांडु प्रमेह मदात्यय छर्दि मात्रा - 1/2-1 रत्ती

4) स्फटिक - English name- Rock Crystal SiO_2

पर्याय - अमलमणि धौतशिला निर्मलोपल शिवप्रिय शिवरल सितोपल स्फटिक स्फटिकाशमा स्फटिकोपल

ग्राह्य स्वरूप - गंगातोयविन्दुसम छति, स्निग्ध, पाण्डु आदी पर रगड़ने पर भी जिसकी स्वच्छता मिटती नहीं

शोधन / मारण - रजावर्त समान

भस्म गुण - गधुर बल्य रक्षितप्रशामन, रजावर्तादीप्रसन, मात्रा - 1/2-1 रत्ती

5) पैरोजक - English name- Turquoise $\text{H}_5[\text{Al}(\text{OH})_2]_6\text{Cu}(\text{OH})(\text{PO}_4)_4$

पर्याय - पिरोज पैरोज पैरोजक विषाराति दरितरमा दरितरमा

प्रकार - 2 1) भस्मांग 2) हरित केतुग्रह का उपरल है

शोधन / मारण - रजावर्त समान

भस्म गुण - क्षेत्र अधुर दीपन संग झूलेन, स्थान आंगन गरविष्वाराक, दूषितिप्रशामन, चरोचर विष भाजन,

6) ब्योमाइम (सर्गेयशब्द) - English name - Jade

पर्याय - यजावशिला ब्योमाइम दरितरमणि दरितरमा

प्रकार - आधुनिक रनविज्ञान नुसार - 2

1) Jadite - $\text{NaAl}(\text{SiO}_8)_2$ प्रहरीज

2) Nephrite - $\text{Ca}(\text{Mg F}_6)_3(\text{SiO}_8)_4$ वृक्कर्म

शोधन - अर्जुन त्वक क्वाथ / गुलाबजल में से एक 21 दिन निर्वापण

मारण - ब्योमाइम चूर्ण + अर्जुन त्वक क्वाथ या स्वरस का गुलाबजल या कुमारी स्वरस एक की भावना गजपूट पाक

भस्म गुण - उत्तम हुदय, ओजस्वी निद्राल्पता में लाभकर मात्रा - 1-4 रत्ती

7) जहरमोहरा - नागपाषाण English name - serpentine $\text{H}_4\text{Mg}_3\text{Si}_2\text{O}_9$

अधुनिक रनविज्ञान नुसार भेद - 3

1) Serpentine

2) Asbestos

3) Hornblende

शोधन मारण उल्लेख आवश्यक नहीं

गुणधर्म - रुक्ष उष्ण हृदय यकृत बल्य तिष्णाशक हुदर्सर्दन व हुदर्बल्य में उपयोगी

3) कौशेयाश्म – Asbestos Silicate of Magnesium

मारण – कौशेयाश्म चुर्ण – कुमारी स्वरस भावना – चक्रिका – गजपूट में पाक पिष्ठी – केवड़ा या गुलाब जल में मर्दन करने पिष्ठी निर्माण

गुणधर्म – शीतवीर्य रक्तसंभक्त रक्तपित्तहर, दन्तपूय श्वेतप्रदर प्रमेह नाशन

9) दुग्धपाषाण – English name- Talc or Soft stone chemical – Magnesium silicate

पर्याय – क्षीरक्षव क्षीरी क्षीरपाषाण दुग्धदृष्ट दुग्धपाषाण दुग्धशिला दुग्धा दुग्धी दुग्धोपल वज्राभ सौध शोधन मारण उल्लेख नहीं, गुलाबजल से पिष्ठी बनाकर उपयोग

गुणधर्म – अतिसार प्रदातिका व्रणगेपक शोणितग्न्यापक आधमान हृद्रोग शूल कास

10) तृणकान्तमणि – Amber Latin name- Succinum

पर्याय – तृणकान्त तृणग्राही

गुणधर्म – हृदैर्बल्य रक्तरोधक रक्तपित्त रक्तनिसार रक्तर्श

शुक्लवर्ग

1) मृगशृंग – Hart's Horn

पर्याय – मृगशृंग मृगशृंग विद्याण शृंग हृषिणवाग

शोधन – धात्तवर्ग दब्द या स्वरस या वरथ में उत्तालने से

मारण – श्वेतभस्म – मृगशृंग भस्म – कुमारी स्वरस भावना – गजपूट

कृष्णभस्म – मृगशृंग चूर्ण – अके तीरं भावना – गजपूट

गुणधर्म – दुदशूल मर्दशूल नाशन कास श्वाल नाशन

2) शांख – English name- Conch shell

पर्याय नाथ – कम्बु कल्पोज त्रिमेत्र पावरजनना भवतारण शांखक समृद्ध सस्वन मूलद हरिप्रिय

रसर्पन में शंख का सरपथम “शुक्लवर्ग” में वर्णन

प्रकार – 2 ।) दक्षिणार्द्ध – उत्तम – लक्ष्मी सुख सोमायद्युपक

2) वामावर्त – मध्यम – औषध प्रयोगार्थ

शोधन – अम्ल स्वरस में स्वेदन (उम्बिगी स्वरस या निम्बु स्वरस)

मारण – शांख का गजपूट में पाक – चूर्ण – कुमारी स्वरस भावना – चक्रिका भूमिपि – गजपूट में पाक – भस्म

भस्म गुण – दीपन पाचन ग्राही तारुण्यप्रियोकाद्य भुल्म ग्रहणी अनिमांत्य नेत्रपूर्प विष एवं श्वासनाशक अम्लपित्त

शूल परिणामशूल नाशन

मात्रा – 1-५ रसी

अनुपान – निम्बु स्वरस / उष्णोदक

3) शुक्रि – English name- Oyster or Pearl oyster

पर्याय – अन्धभण्डूकी महाशुक्री मुकाग्रह मुकाग्रह मुकापसू मुकामाता मुकास्फोटा मौकिकप्रसवा शुक्रि शुक्रिका

प्राप्ती – मोलस्कावर्गीय जलज प्राणी का पुष्टभाग है

प्रकार – 2 ।) मुकाशुक्री 2) जलशुक्री

शोधन – किसी भी अम्ल द्रव में (निम्बुस्वरस/ लवणी डम्पिका) स्वेदन

मारण – मुक्ता – गजपूट में पाक – चूर्ण – कुमारी स्वरस भावना – चक्रिका – गजपूट – भस्म

भस्मगुण – क्षारीय मध्यर स्निग्ध दीपन लूचिकर अम्लपित्त शूल परिणामशूल उत्तर्वीहरोग)

4) गोदंती - Gypsum Calcium Sulphate $\text{CaSO}_4 \cdot 2\text{H}_2\text{O}$

पर्याय- गोदन्त गोदन्ती गोदन्तिक

शोधन- निम्न स्वरस में स्वेदन

मारन- गजपृष्ठ में पाक -चूर्ण -कुमारी स्वरस भावना - चक्रिका -गजपृष्ठ - भस्म

भस्मगुण- शीत शिरःशूलनाशक ज्वर श्वास कास उरःक्षत प्रार बालशोषनाशक

5) बदराश्म - अब्बी- हजरदयहूद Silicate of Lime

पर्याय- अशमभिद् बदराश्म बदरीपाषाण यादवजी त्रिकमजी द्वारा 'रसामृत' ग्रन्त में सर्वप्रथम वर्णन

उत्पत्ती- क्षुद्र कीड़ों का कालान्तर में परीवर्तीत एवं प्रस्तरीभूत खनिज है; बटर के आकृती का होता है

शोधन- मूलीस्वरस में 7 बार निर्वापण ऊरने से

मारण- बदराश्म चूर्ण -मूलीस्वरस भावना -चक्रिका - गजपृष्ठ में पाक -भस्म

भस्मगुण - गृहत्व ,पित्तशामक, मूत्राशयी मूत्रकृच्छ्र, मूत्रादात ,मूत्रदाहनाशक.

6) खटिका- Chalk or Pipe Clay

पर्याय- कटिनो खटिका खटी लेखनमूलिका वर्णनेखिका वर्णिका

प्रकार - 2 1) खटी 2) गौमखटी

शोधन- जल में मर्दन ऊर वस्त्रपृत कर धूप में मरुत्वा मासा नहीं किया जाता

गुणधर्म- तिक मधुर रस दह रक्पित स्वेताधिक्य अतिसार नेत्रोग्नाशक

योग - मुख्य रस दशनसंस्कार चूर्ण

7) टंकण - Borax $\text{Na}_2\text{B}_4\text{O}_7 \cdot 10\text{H}_2\text{O}$ Sodium Pyroborate

पर्याय- ध्वारसान ध्वारप्रेष्ट द्रवक गंगद रसायार एसान लौहद्रवी तींहशोधन श्वेतक्षार रौप्याम्य

शास्त्रय एवं ध्वारपंचक गे समावेश

शोधन- तीव्रामि पर पाक करने पर जलीयोज्ञ सूख जाने पर टंकण शुद्ध हो जाता है

अशुद्ध टंकण सैवन हानी- बान्ति भ्रान्तीकर

शुद्ध टंकण गुणधर्म- कटू रुक्ष उष्ण तीक्ष्ण सर गुणयुक्त पित्तकर बातकफून हुदय बल्य धातुशोधन एवं द्रवण

करनेवाला है, मूढगर्भपदतक आर्तवजनक अग्निका अश्मरी अतिसार नाशन विविधव्रण नाशन

योग - आनंदभैरव रस, कणकसुंदर रस, त्रैलोक्याचितामणि रस, प्रतापलंकेश्वर रस, मृत्यजय रस अन्तिपात्रभैरव रस

TIERRA

जाता जाता अद्विकृत नहु इन्होंने इन्होंने इन्होंने |

रलाव.

१) माणिक्य

इंग्रजी नाम - Ruby सूब - A1203 कार्गिक - ०९

आपेक्षिक घनत्व (sp. gravity) - ४ ग्रट - सूर्य

पर्याय -	कुरुविन्द	<u>रविप्रिय</u>	<u>शूष्यारि</u>	<u>पदमुराग</u>	Colours (संकेत)
		<u>रविरल</u>	<u>शोधरल</u>	<u>लोहित</u>	
		<u>रलराट</u>	<u>सोवंधिर</u>		

स्वरूप - शुक्रावी किंवा गुंजावर्ण सहश

- भेद -
- १) पदमुराग Red Colours.
 - २) नीलगान्धि

ग्राहक लक्षण - [कुशेशयदत्तक्षमे स्वर्यं स्त्रियं शुक्र स्फुरम् ।] (वृत्तपृथ्वी)
वृत्तायते समं याऽमे माणिक्यं व्येष्टुत्यते ॥ ररस.

अश्वाहश लक्षण - रन्ध्रकाक्षिणजिल्ल शोडपा वेशदत्तसंयुतम् ।
चिपिटं वधुवक्तव्यं माणिक्यं दुष्टमध्यधा ॥ ररस

शोधन - निर्भुवरसात दोलायं भविष्यते भास (३ तास) (मम्लवर्ण)

मारण - शुद्ध माणिक्य + समधार गंधक + मनसिका → टरलाल →
लकुच स्वरस मानना → गवत्पुरान पाइ - वेवा

भेदम् गुण - दीपन, वृध, इमनाशन, मेच्छ, रसायन
प्रदत्तवेतानपाप्नें, नमिन्याधिनाशनम् ।

मात्रा - १/८ - १/६ गुंजा

योग - जवाहरमोहरा वटी, नवरलराजमृगोद् रस, ब्राम्मी वटी
याकृती [common]

२ मुक्ता - शोकिक

अल्पांत
सापड़नइं.- Pearl सून - CaCO_3

काढ़िक्र - 3.5

Sp. gravity - 2.65 - 2.85

द्रव्य - चट्ट

पर्याय - अम्बसार
मुक्ताफ़ल
मौसिकशेख
शशिरल
शशिप्रिय

शोकिकर्म

शुक्तिकर्म सापड़ने के लिए मुक्ता

प्रक्रम सुक्तोयोगि - (c) शोरक शुक्ति

भेद - १) प्राकृत २) सम्बाधित (कृत्रिम)

ग्राह्य लक्षण - ल्यादि श्वेतं लघु स्तिथं रश्मिवर्णिम् लं महत्।

रव्याते तोयप्रमेण वृत्तं मौसिकं नदधा गुणम् ॥ ररस
जलाप्रमाण प्रमा

त्याक्त मुक्ता - रुद्राङ्ग निर्जिं इमावं ताम्राम लवणोपमम् ।

अर्धशुम्भं च विरचं गुणिलं मौसिकं व्यजेत् ॥ ररस

वैशिष्ठ्य - [न जरो यानि रुद्रानि मौसिकं विद्मेव विना ।]मौसिक मिहूम साकात्याने रव्याते देतात इतर रक्ते नास्ति
प्रबोल

* शोधन - जयन्तीस्वरसेनेह दोलयन्ते विधाततः ।

सर्वैरुक्तं सर्वते द्विनां मौसिकं शुद्धिमाप्नात् ॥ रत्ने

मारण - मुक्ता - चूर्ण + गूढ़ वर्जनं भावना → लिपुर (कम्फ्रेयुलत) पाक

* मुक्ता पिण्डी - शुद्धा मुक्ता - गुलाबनलाभृत ३ दिनस मर्दन

वृणधर्म - लघु, मधुर, कांटीटृष्णीजनिप्रद, विषज्ञ, वीर्यवर्धक, वृष्णा
आयुष्मान, दाटनाशन, जीर्णवरशमन, मेट्टर, मेघर
दतोदमेदवरापत्तम्, अस्थीशोषशमन

मात्रा - ७/८ - १ रस्ती

योग - कस्तरीप्रेरव रस, मकरध्वज कटी, गृहणीक्षाट, औलोक्यनितामणि
पूर्यकविष्मज्जरातक लौट

3) प्रवाण

इं - Coral

रासायन - CaCO_3

कार्डिप्प - 3.5 लज्जस्पनी - हाना

ग्रट - मंगल Indicate - प्रदर्शन केंद्र

पर्मधि - अङ्गारकमणि

जाति Anthozoan

अभिजन्तु Polyps कलामणि

रक्तांकुर

अम्भोषिप्लक्टवर्ष विद्युम्

रक्ताङ्गि

झोमराळ

उत्पत्ती - Anthozoan polyps प्राप्तिहारा - secretion - layers

भेद - १) काण्ड २) मुळ

Imp कृतिम प्रवाण निर्माण - अशोधर मह - रसप्रगार सुधाकरImp ग्राटर प्रवाण - प्रवविभिन्नफलच्छयं दृत्ताभतमवकरन् ।

सिंधुनवाणक स्थूल प्रवाण सातधा इुम् ॥ रस.

अग्रास्य प्रवाण - पाण्डु धूसरे रुद्धि सवाणि कोट्यान्वितम् ।

लिमरि गुम्बवर्षज्ञ प्रवाण नंष्टेऽशुभम् ॥ रस.

(क्षरकर्णीय) शोधन - जयंती स्वरस । तण्डुपिचारस । सर्जिमाघारमुत्त जल (साखर्जिमद्वय) दोलाभंतात ॥ याम स्वेदन

मारण - शुद्ध प्रवाण चूर्ण - कुमारी स्वरस । शतावरी स्वरस - वहिका-गजपूट पाक

Imp भस्म वर्ण - क्षेत्र पित्ती वर्ण - रिति

प्रवाण पित्ती - गुलाबजात ३) दिव्यमप्यन्त मरुषि - वर्ण - गुलाबी

गुणधर्म - शीत, लघु, मधुरविपाकि, दीपन, पाचन, ज्वर्य, बल्प, वृद्धि विषम, शुक्र, क्षमा सरक्तपित्तनाशक, वर्ष्य

मात्रा - १/२ - २ रसी

योग - प्रवाणपेनामृत, कस्तूरीभेद रस, बैलोक्य चिंतामणि

मकरध्वज, वडवानल, विषमन्वरान्तक लोट, कन्दर्प रस

4) मरकत (पच्चा) - ताक्षर्म्

इंग्रजी नाम - Emerald ग्रह - बुधः

सा. सून - $\text{Be}_3\text{Al}_2\text{SiO}_2$

पर्याय - अरमगमन्ज ताक्षर्म् रोहिणी

वरुद्धोद्वीर्ण बुधरत्न सौपर्णी

शारदमन्त मरकत दरिन्मणि

हिम्लया वल्लभा चा

व्याख्या - हरिदर्ढि गुरु, स्निग्धं स्फुरद्रश्मिन्दम् गुम्भू।

मसूरं भासुरं ताक्षर्म् गात्रे सप्तगुणं मतम्॥

रस

अग्रास्थेता - कपिलं कर्कशं नीलं पाण्डुं कृष्णं मलान्वितम्।

चिपिटं विकटं रुपं कदुं ताक्षर्म् न शस्यते॥

रस

गोधन - दोलान्तमत गोडुग्धात उत्तम स्वेदन

मारण - शुद्ध मरकत चूर्ण + गंधा ठुकाल मनशिला - मरने करने

-फलिक्षा कुप्रसंग्रहयाना - गजपुरात पाक

गुणधर्म - व्यर वसन विष इवास्तु उत्तिमांतम्, उर्द्ध, पाण्डु, शोध्य

अकूपितहर, पुष्पिते, मूतलाशन

भस्म कर्फ - श्वेते

माना - ७/८ - १ रसी

योग - जवाहरमोहरा वटी, जवरत्नयज्ञमृगांक रस, मानुती

सामान्यिक्षा

5) पुष्पराग

इंग्रजी नाम - Topaz.

ग्राह - बुध

पितृव्या रोक्षा

रा. सून - $Al(OH)_2 SiO_4$

पर्मयि - गुरुरल

पीतरल

गुरुवल्लभ

पीतामा

मञ्जुमणि

पुष्पराग

शुद्धेशी - वाचस्पतीवल्लभ

पुष्पराज

प्रकार - ४ वर्णभेदाने ① ② ③ ④ पीत पाँड रेत गुलाबी.

ग्राह - पुष्पराग गुरु, निर्भयं स्वच्छं स्थूलं समं सृङ्।

कर्णिकारप्रसूनाभं मसृणं शुभमष्टधा॥ ररस.

अथग्राह - निष्प्रभं कर्णिकारं गुरुं पीतश्चामं नतोन्नतम्।

कर्णिकारपिञ्च पाँडं पुष्परागं परित्यजेत्॥

शोधन - समभाग कुक्त्य कर्णिकारं काञ्जी पुरित दोलायेन्नात स्वेदन

मारण - पुष्पराग-चूर्ण + शुद्ध अंधक + शुद्ध दरताळ + शुद्ध शिलाजतु समभाग लकुट स्वरस भावना देइन गजपुटाल पास मात्रमाणे ५० बोका

गुणधर्म - विष, धूर्ण, आजिमासय वाट उक्त रक्तविकार नाशन दीपन पाचन मेंद्रो वृद्धि

मात्रा - ७/८ - १ रत्ती

घोग - नवरब्लराजमृगोंक रस, रत्नभागोत्तर रस

६) हीरक

इंग्रजी नाम - Diamond ग्रन्ट - गुरु

रा. स्ट्रेन - C

कार्डियर - ३०

आपेक्षिक धनत्व - ३.५

पर्याय -	<u>भार्गविक</u>	<u>अमेदग</u>	<u>कुक्किश</u>
	<u>भृगुप्रिय</u>	<u>चिंदुर</u>	<u>पवि</u>
	<u>भार्गवप्रिय</u>	<u>वज्र</u>	<u>रत्नहृष्ट</u>

मेट - ३

लर नारी नपुंसक

उत्तम मध्यम अध्यम

सर्वांसाधी रुमिमोसाधी नपुंसांसाधी

वर्णानुसार इवेत रक्त पीत हृष्ण

१४ इसामन् उत्तमाधी धनतीयत् वाधीनाशन

सर्वसिद्धिदात्रे भृत्युत्तमान् देत्यार्थित् वयस्माप्त

उत्तम हीरक लघण - अष्टारूपश्चाष्टकलङ् यद्यकोणमतिभासुरम् ।
अम्बुदेन्द्रधनुकोत्तिरं पुष्पचमुच्चते ॥

तदेव चिपितामार रुमीवज्रं वर्तुलायतम् ।

वर्तुलं कुम्भोणाम् किञ्चिदगुरुं नपुंसकम् ॥ ररस

त्याज्य हीरक लघण - निरुद्धः कामपदं यवः किलमळो रेत्वेति नाम्नोदिता -

दोषा, पञ्चपात्रायान् कथेतो विडसमो विनुला ॥ आ.प्र.

शोधन - कुलत्य क्वायात किंवा कोऽव वाभात रेवतं. (वर्षलोप स्वरस)

मारण - हीरक चूर्ण + रससिंदुर + पारदम्बम + गंधा + मनशिला →

निमुख्स्वरस भावना - शारावसंपुटात गजफूट डेउन पान

माना - ७/३२ - ७/३६ रत्ती.

गुणधर्म - आयुष्य, वृद्धि, सर्वरोगम्, दीपन मृत्युर्हर, लद्य, मेघ, वात्रीकर
नेत्र्य, वर्षी, भग्नदर, उदर, प्रमेह, पोड़, शोभनशन

→) नीलम् (नील वर्णी)

उंगड़ीनाव - Sapphire

सून - Al₂O₃

चुट - शाखा

कार्बिध्र - e

आपेक्षिक घनत्व - 8

पर्मयि -

इंड्रनील

नीलरङ्ग

नीलम्

सुनीलक

नीलारम्भा

शानिरङ्ग

महानील

नीलोपल

तृष्णग्रही

| प्रकार -

जलनील - श्रेष्ठ

आनंदकेद नुसार वणिनुसार ३३ अदे

इन्ड्रनील - श्रेष्ठतम्

व्रात्य लक्षण - स्वच्छ सच्चायममलं मसृणं तु भरोच्चलम् (चमकदार)

सिंधं गुरु लसञ्जोतिर्जात्यं नीलं मतं बुधैः ॥ र.त.

अग्रात्य लक्षण - रक्तार्धि विशतच्छायं रुद्रं लघु च कोमलम् ।

परिटेयं शौरिरङ्गं मतं इलपरीडेनः ॥ र.त.

शोधन -

नीलीस्वरसात् दोलायंभात् ३ तास स्वेदन

मारण -

जीलम् चूषि + हस्तान् + मनशीला + गंधक →

लकुच्च स्वरसात् इवावित करन - चक्रिना - गजपृष्ठ

धरम् वर्ण - श्वेत

माभा -

७/८ - ७/२ रस्ती

TIERRA

गुणधर्म -

वृद्ध, बल्ट, दीपन, त्वच्य, निदोधन, इवायं कास

अर्थ, विषमञ्जर, कुछ, वर्षी, पापध

योग -

नवरहलोराजमृगांकुर रसं, इलमागोत्तर रस

8) गोमेद् गोमेद् / गोमूरसमान

इश्वरीनाव - Zircon/ cinnamon stone/ Hessonite / Agate

सूक्ष्म - $ZrSiO_4$

काहिष्पि - 7.5

पर्याय - गोमेद् पिङ्क्सफटिक
तमोमणि राहुरब्ल

स्वभवित्वा

प्रकार - वर्णभेदाने - ४ श्वेताभं पीत
रक्ताभं पीत

पीत

कृष्णाभं

ग्राह्य स्वरूप - मधुविन्दुसमधारं गोमूराज्यसमप्रभम् ।

हेमरक्तं गुरुः स्वच्छं स्तिथं गोमेदकं शुभम् ॥ ज्ञान.

गोमेदः समरगत्वाद्गोमेदं रत्नमुच्चते ।

सुस्वच्छगोललक्षणं स्वच्छं स्तिथं सामं गुरुः ।

निर्दिं मसृणं दीप्तं गोमेदं शुभमध्या ॥ ररस.

व्याकुर स्वरूप - विच्छयं लघु रजाङ्गं निपिटं पटलान्वितम् ।

निधारं पीतकाचारं गोमेदं ल शुभावदम् ॥ ररस.

शोधन - निमूरस्वरसं प्रीत दोजायेनात् स्वेदनं | गोरोन्नथुक्तं जलं

मारण - गोमेद चूर्ण + गंधा + टरताल + मनशिला →

लकुच स्वरसं ग्राहना - गजपृष्ठात् पान

TIERRA

माभा -

मुण्डार्म -

३/४ - ७ रसी

मेघ, लक्ष, रीपन, पाचन, रुचिकर, इयर

पांडुनारान, बुद्धिविधि, बल्ल

9) वैद्यर्थ

इ- cat's eye.

पथोथ - वैद्यर्थ

विद्यर्जन

वायज

सून - BE0A1203

विडिलाघ

माजरिनेम

काटिष्ठ - ४.५

केतुरल

प्रावृष्ट

जुट - केतु

ग्राह लघण - वैद्यर्थ गुरु सुसिंधं विडिलेक्षणसमप्रभम् ।

म्रमच्छुश्चोत्तरीयाध्यं वैद्यर्थं जात्यमुच्चते ॥ र.त.

अग्राह लघण - विच्छयं मृच्छिलागर्भं लघु रघ्नं त्वस्तृतम् ।
समासं चिपिष्ठ कृष्णं वैद्यर्थं इतस्थ्यजेत् ॥ आः प्र.

शोधन - निफला काष धूरित दोग्यं ब्रात स्वेदन

मारण - वैद्यर्थ्यूर्ध्वं + गंधक + हरताळ + मनशिला →

माभा - ३/१ - ३ रसी

गुणधर्म - मेघ, बुद्धिप्रद, उत्तम, बल, शृण, दीपन, अद्भुत
मलमेद्य, एकतपितन, गुल्मी

ओग - वै-होक्त रसायन, धूलामिळ, पिष्ठेयन, नवरलंगजमृगोक रस

रत्नमारण

A) माणिक्य गोमेत }
 नीलम पुष्करगच्छ }
 पल्ला वैद्यर्थ } { रत्नचूर्ण + }
 { मनशिला } { अद्यताल } { लकुण्ठ स्वरस भावना }
 { अद्यताल } { गजपूट }

B) मुक्ता }
 प्रवाल } { धूणि + शुलानजल / कुमारी स्वरस भावना → चक्रिका }
 { मोक्षिका - लघुपूट (कुमुदपूट)
 प्रवाल - गजपूट. (र.त.)

C) हीरक - हीरकचूर्ण + पारद + गंधक + मनशिला - निम्बस्वरस
 भावना → चक्रिका → गजपूटयात पाक

MM PM PHNGV.

रोपण	इ	सूक्ष्म	वर्ग	कार्बिन्य	होमेण्डर	मारण
मरुमिठा	Ruby	Al_2O_3	शुक्र	9	जिवुखरस (आउलवर्णी)	
मुक्ता (मोतिक)	Pearl	$Caco_3$	चंद्र	9.5	जयन्तरितरस	पुर्ण + गुलाबमल / कुमार स्वरम आवजा → अक्षिल
क्राइट	Coral	$Caco_3$	चंगाळ	9.5	जयन्तरितरस (द्वारतवर्णीय)	* प्रवाल → अजपूर्ण * मुक्ता → लघुपूर्ण (कुकुर)
मरकल का, चाषपि)	Emerald	$Be_3Al_2SiO_2$	लुध		होटुड्हाव	रात्तिर्दी → लक्ष्यस्वरमं शाव स्फारु मालिशिला चंद्राक
फूलमारु	Topaz	$Al(OH)_2SiO_4$	चुक्के		कुलत्था / कोप्रप क्वायथ / कांडी	
हिरकु	Diamond	C	शुक्र	10	कुलत्था / कोप्रप क्वायथ → हिरक चुक्के + पा + अं + मल जिवुखरस आवजा → अजपूर्ण	
लिम्प	Sapphire	Al_2O_3	शालि	9	नीलीस्वरस	
गोमेद गिन्नमन स्टोन	Zircon / Cinnamom stone	$ZrSiO_4$	राहु	7.5	गोमेदुखरस / गोलात्मकचुक्के अल्प	
कुर्य	Cat's eye	$BeOAl_2O_3$	केशु	8.5	जिष्ठुल क्वायथ	

TIERRA

70

रसशास्त्र

रसशास्त्रीय द्रव्य वर्गीकरण

- 1) महारस - 8 अभ्वैक्रान्त माक्षिक विमलाद्विज सस्यकम्। चपलो रसकश्चेति ज्ञात्वा अष्टौ संग्रहेदसान्
- 2) उपरस - 8 गंधाइमगैरिकासीस कांक्षीताल शिलांजनम्। कंकुष्ठं चेति उपरसश्चाष्टौ पारदकर्मणि ॥
- 3) साधारण रस - 8 कंपिलश्चापरो गौरीपाषाणो नवसादरः। कपर्दो वन्हिजारथा गिरीसिंदुर हिंगुलौ ॥

मृद्घरशंगम् इति अष्टौ साधारण रसाः स्मृता ॥

- 4) रल - 9 माणिक्य मुक्ताफलविदुमाणि ताक्षर्यं च पुष्पं भिदूरं च नीलम् गोमेदकण्चाथ विदुरकं ऋमेण रलानि
- 5) उपरल - 6 वैक्रान्तं सूर्यकान्तश्च चन्द्रकान्तो नृपोपलः। पेरोजकं च स्फटिकं क्षूद्ररलोहि अयं गणः ॥

महारस - 8	अभ्वक वैक्रान्त माक्षिक विमल शिलाजतु सस्यक चपल रसक
उपरस - 8	गंधक गैरिक कासीस कांक्षी हरताल मनःशिला अंजन कंकुष्ठ
साधारण रस - 8	कंपिलक गौरीपाषाण नवसादर कंपटिक अग्निजार गिरीसिंदुर हिंगुल मृद्घरशंग
रल - 9	माणिक्य मौक्तिक विदुम ताक्षर्यं पुष्पराग वन्ह नीलम् गोमेद वैदृश्य
उपरल - 6	वैक्रान्तं सूर्यकान्तं राजावर्त चन्द्रकान्तो पेरोजक स्फटिक
धातु - 7 / 9	सुवर्ण रजत ताम्र लौह वंग नाग यशद पितल कास्य

दोष -

1) पारद दोष - 12

- 1) नैसर्गिक - 3 विष वन्हि मल
- 2) योगिक - 2 नाग लंग
- 3) औपाधिक - 7 (सप्तकं चुक दोष)
 - 1) पर्पटी (भूमीज) - कुष्ठ 2) पटिनी (गिरीज) - जाह्नवा
 - 3) खेदी (वारीज) - ब्रातरसंशात् 4) द्रावी (नागज) - दोषाढ्य
 - 5) मलकारी (नागज) - दोषाढ्य 6) अंधकारी (बंगज) - दोषाढ्य
 - 7) ध्वाक्षी (वंगज) - दोषाढ्य

2) लौह दोष - 7 सप्त आयस दोष

3) ताम्र दोष - 8 अष्ट ताम्र दोष

4) रलदोष - 5 पंचरलदोष

5) वद्धदोष - 5 पंचवद्धदोष

6) मुक्ता दोष - 10 महादोष - 4 समान्य दोष - 6

प्रमुख वैशिष्ट्य -

- 1) हीरक दयुति संकाश, पर्पटीकाभास, गलदरूप्यनिभं - पारद
- 2) जपाकुसुम संकाश - हंसपाद हिंगुल
- 3) यकदाकार हिंगुल - दरद हिंगुल
- 4) कृष्णरूपः स्याद - चर्मार हिंगुल
- 5) श्वेतरेखः प्रवालाभो - प्रवालाभ हिंगुल
- 6) बालादयाख्तिलरोगनुत् - पर्पटी
- 7) वृद्धमायुष्यमग्रयम् - अभ्वक भस्म

- 8) सूतेंद्रबंधि – अभक्त
- 9) विष्णुरो रसराजश्च – वैक्रान्त
- 10) त्रिदोषघ्नी षड्गुरु – वैक्रान्त चपल
- 11) नववर्णसुवर्णवत् – माध्यिक (यशोधर भट्ट)
- 12) पंचवर्णसुवर्णवत् – माध्यिक (र.र.स.)
- 13) प्राणो रसेन्द्रस्य – माध्यिक
- 14) दुर्मेललोहद्वयमेलनश्च – माध्यिक
- 15) नैतेन तुल्योऽप्स्ति सुधारसोऽपि – माध्यिक
- 16) माधवे मासि दृश्यते – माध्यिक
- 17) मयूरकण्ठश्छायं – सस्यक
- 18) नाडीनां बलकृत्परम्, कामं विशेषाद्विर मतम् – तुत्थ
- 19) रसराजसहाय रसबन्ध विद्याय – चपल
- 20) लोहपारद रंजनकृत – रसक
- 21) देह लोह करोपरम – रसक
- 22) देहलोहकरो मतः – चपल
- 23) सूतन्द्रवीयंप्रद – गंधक
- 24) पारदजारिणी – स्फटिका
- 25) गोपुष्पहरण – षिष्ठ त्वरित
- 26) इष्टिकाञ्चन्पर्मकाङ्ग – मौरगु, देवांगमा – कल्पित
- 27) रेचगदापहारी – कल्पितलक



स्त्रीका – पित्तल

नीलाशमा – रुजावर्त

राशिरल – मुका

शिवप्रिय – स्फटिक

ख – अस्फक

हतचूर्णक – गोरीपाषाण

मयूरचन्द्रिकाच्छायः – षिष्ठक पारद

मयूर कण्ठसदृशः – ताप्त शिलाजनु

पक्व विम्बफलच्छायं – प्रवाल

गंगाम्बुसम्भूतं – नीलगन्धि माणिक्य

द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्ण समुज्ज्वलम् – नाग

द्रुतद्रावं विस्फोटं – मुण्डलौह

गौरीपुष्प – गंधक

दैत्येन्द्र – गंधक

रंगदायक – कंकुष्ठ

रसगार्भ – रसांजन

स्त्रीहेतु – खर्पर

हसिताशमा – पैरोनक

राशमणि – चन्द्रकान्त

शिष्ठगेत्वर – धूत्र

खण्ड खेचर – कारीस

रक्तचूर्णक – कल्पितलक

मयूरकण्ठसदृश्छायः – सस्तक

मयूरकण्ठसदृश्पमान्यो – वैक्रान्त

पक्व जम्बु फलच्छायं – कान्त लोह भस्म

गंगातोयविन्दुच्छवि – स्फटिक

द्रुतद्रावं सगौरवं – वंग

द्रुतद्रावं च शीतलम् – माध्यिक

गौरीतेज – अभक्त

दैत्येन्द्र रस – पारद

रंगदा – कांक्षी

रसोद्धव – खर्पर

स्त्रीज – मुषांजन

शिवपीतीक – चन्द्रकान्त

खेचरी – गाढ

चूर्णपारद – हिंगुल

TIERRA

ताम्रगर्भ – सस्यक	ताम्ररंजक – खर्पर
कपिलोह – पित्तल	दीप्तिलोह – कांस्य
नेत्ररोगारी – खर्पर	नयनौषध – पुष्य कासीस

विभिन्न सत्त्व वर्ण –

- 1) गुण्जार्बाजसमच्छायां – माद्धिक
- 2) इन्द्रगोपाकृती – सस्यक
- 3) वंगाभ – रसक
- 4) चन्द्रार्क संकाश – विमल
- 5) श्वेत वर्ण – हरताल
- 6) सूतसंकाश – हीगुल
- 7) सीस सत्त्व – मृदारशंग

ग्राह्य स्वरूप –

- 1) पारद – अन्तःसुनीलो बहिरुज्वलो यो मध्यान्तसूर्यपतिमपकाशः ।
धूमः परिपाण्डरश्च चित्रो न योज्यो रसकमिध्यां । रसमंजरी
- 2) अम्रक – 1. स्निध्यं पूथुदलं वर्षसंयुक्तं तत्रतोऽधिकम् । सुखविर्माच्चपत्रं च तदग्ने श्रेष्ठमीरितम् ॥ रस. 2. निलाणजनोपमं स्निध्यं भारणीं महोज्वलम् । निर्माच्चपत्रं मृदलं त्वभ्यं श्रेष्ठमिद्देच्यते ॥ रत.
- 3) वैक्रान्त – अष्टास्त्राचाष्टफलकः वृक्षोणां मसूरों गुरुः । शुद्धमिथितवर्णश्च युक्तो वैक्रान्त उच्यते ॥
- 4) माद्धिक – स्वपार्थं स्वर्णमाद्धिकं निष्ठोणं गुरुवायुतम् । कालिमा विकरेत्तु करे घृष्टं च संदृशः ॥ आ. तपतीतिरसम्भूतं पण्डवर्णसुवर्णवत् ॥ रसम्.
- 5) विमल – वर्तुलः कोणसंयुक्तः स्निध्यष्ट फलकान्तिनः
- 6) शिलाजतु – जत्वाभं मृदूमूल-नाच्छं यन्मलं तत् शिलाजतु । यस्तु पुगुलुकाभासः तिळको लवणान्वितः ॥ कटुर्निपाके शीतश्च सर्वश्रेष्ठः च आयरा । गोमूत्रगंधयः सर्वं सर्वकर्मसु योगीकाः ॥ च.चि
- 7) सस्यक – तद्वान्तं हि घनीभूतं संजातं सस्यकं खलु । मयूरकण्ठाच्छायां भारादयमतिशस्यते ।
- 8) रसक – सदलो दर्दुः प्रोक्तो निर्दलः कारबेलकः ।
- 9) गंधक – शूकपिच्छ समच्छायो नवनीतसमप्रभः । मसूणः कठिनः द्विधः श्रेष्ठो गन्धक उच्यते ॥
- 10) गैरिक – अत्यन्तशोणित स्निध्यं मसूणं स्वर्णगैरिकम् ॥ रसम्.
- 11) फटिका – इष्टपीतगुरुस्निधं दर्श – फटिका
श्वेतवर्ण लघुस्निध – फुलिलिका
- 12) पत्रताल – स्वर्णवर्णं गुरु स्निधं तनुपत्रणच भासुरम् । तत्पत्रतालं प्रोक्तं बहुपत्रं रसायनम्
- 13) मनःशिला – इयामांगी – इयामा रक्ता सगौरा च भारादया इयामिका भता । रर.स.
कणवीरका – तेजस्विनी च निर्गोरा ताम्राभा कणवीरका ।
चूंडाख्या – चूर्णीभूता अतिरकांगी सभारा खण्डपूर्विका ।
- 14) कंकुष – नलिका – पीतप्रभं गुरुस्निधं
रेणुक – इयामपीतं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं हे रेणुकम् ।
- 15) कम्पिल्लक – इष्टिकाचूर्णसंकाशः चन्द्रिकादयो अतिरेचनः । सौराष्ट्रदेशो चोत्पन्नः स हि कम्पिल्लकः
- 16) हिंगुल – जपाकुसुमसंकाशं श्वेतरेखा प्रवालाभ

- 17) महारशंग – बोदारशंगकं प्रोक्तं द्विविधं पीतपाणदुरम् । सटलं निर्दलं तस्य जनिर्गरमण्डले ॥
अर्बुदारथ्यागिरे पाश्चें सीससन्वं समृतं परम् ॥ आ.प.
- 18) सुवर्ण – दाहे रक्ते सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम् । गृह स्निग्धं मृदु स्वच्छं निर्दलं रक्तपीतकम्
- 19) रजत – घनं स्वच्छं गुरु मिनाधं दाहे छेदे सितं मृदु । वर्णादियं चन्द्रवत् स्वच्छं दाहे छेदे समप्रभम
शंखाभं मसूरं स्फोटरीतं रजतं शुभम् ॥ आ.क.
- 20) ताम्र – सुनिग्धं मृदूलं शोणं घनाधानक्षमं गुरुः निर्विकारं गुणश्रेष्ठं नामं नेपालमुच्यते ॥
- 21) वंग – धवलं मृदूलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् । निःशब्दं खुरवंगं स्यान्मिश्रकं इयामशुभ्रकम् ॥
- 22) नाग – द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णसमुज्ज्वलम् । पूरीगन्धं बहिः कृष्णं शुद्धं सीसमतोऽन्यथा ॥
- 23) यशाद – छेदे समुज्ज्वलं स्निग्धं मृदूलं निर्मलं तथा । द्रुतद्रावं महाभारं यशादं ग्राव्यमुच्यते ॥
- 24) पीतल – गुर्वीं मृद्वीं च पीताभा सारांगी ताडनक्षमा ।
- 25) कांस्य – तीक्ष्णं शब्दम् मृदु स्निग्धमीषत् इयामलशुभ्रकम् । निर्मलं दाहरकं च षाटा कास्यं प्रशस्यते
- 26) माणिक्य – कुशोशेयदलच्छार्यं स्वच्छं स्निग्धं गुरुं स्फुटम् । वृत्तायतं समं गात्रं माणिक्यं श्रेष्ठं उच्यते
- 27) गुका – ह्लादी श्वेतं लघु स्निग्धं सृश्वनिर्मलं महत् । ख्यातं तोयधर्मं वसं मौकिकं नवधा शुभम् ॥
- 28) प्रवाल – पवकविम्बफलच्छायां ब्रतायतमवक्रकम् । स्निग्धमवणकं स्थूलं पवालं सप्तधा शुभम् ॥
- 29) नाक्ष्य – हरिद्वजीं गुरु स्निग्धं स्फुटिश्वन्तर्यं शुभम् । मसूरं भास्त्रं ताक्ष्यं गात्रं सप्तगुर्जं सतम् ॥
- 30) पुष्पराम – पुष्परामं गुरु स्निग्धं स्वच्छं स्थूलं समं मृदु । कृष्णिकारं पसूनाभं मसूरम् शुभमञ्जस्या ॥
- 31) वज – अटास्त्राण्यफलकः वर्णोणमतिभास्तुगम् । अम्बुदल्धनुर्विकिं पृष्ठवत्तमुच्यते ॥
- 32) नीलम – श्रेत्यं गधिनं नीलाभं लघु नृजलनीलकम् । कार्षण्यं गमीत नीलाभं लघु सभाय शुक्रनीलकम्
- 33) गोमेंद – गोभीविन्दुं मच्छायां गोभीवायसमप्रभम् । देहाक्तं पृष्ठस्वच्छं स्निग्धं गोमेंदके शुभम् ॥
- 34) वैदूर्य – वैदूर्यं गुरुस्निग्धं विडालक्षणनमप्रभम् ।

ज्ञाधन –

द्रव्य	ज्ञाधन
पारद	स्फोन कल्क सूर्योदक
अध्रक	कांजी/ त्रिफला क्वाथ / गोमूत्र / गोमृत
वैकाल	कुलत्य क्वाथ / कांजी / यवक्षार / निष्पु स्वरस
भक्षिक	मतुलुगं स्वरसम् / एंड तेल / कटलीकेट गवात्र / भृंगराज स्वरस
विगल	आटटरूप जल / मैधधर्मी स्वरस / अम्बोर स्वरस
शिताजनु	यवक्षार / कांजी / गोमूत्र / गोदुध / त्रिफला वलाथ / भृंगज स्वरस
सस्यक	रक्तवर्गं भावना / स्नेह वर्ग से संसिक
रसक	बीजपूरक / नरमूत्र / अथमूत्र / तक्र / कांजी
गंधक	गोधृत मे भर्जनं ततपक्षात गोदुधमे स्वेदन / भृंगराज स्वरस मे स्वेदन
गंधीक	गोदुध की तीन भावना / गोधृत मे भर्जन
कासीस	भृंगराज स्वरस की भावना
हरस्ताल	कुम्भाण्ड स्वरस / तिलक्षारयुक्त जल/ चूर्णोदक/ निष्पु स्वरस / कांजी / घृतकुमारी स्वरस
मनःशिला	अगस्त्यं पत्र स्वरस / भावना अथवा शूंगबेर स्वरस / भावना
अञ्जन	अञ्जनानि विशुद्ध्यन्ति भृंगराजदलद्रवे
कंकुष्ठ	शुंठी क्वाथ की उ भावना
कम्पिल्लक	- जल मे प्रक्षालन

गौरीपाषाण	कारबेल्लक स्वरस / गोदुग्ध पूरीत दोलायंत्र मे स्वेदन
नवसागर	त्रिगुण जल मे द्रावण कर वस्त्रपूत करे
वराटिका	कांजी मे स्वेदन तत्पश्चात प्रक्षालन
हिंगुल	निम्बु स्वरस / आर्द्रक स्वरस / अम्ल वर्ग / लकुच स्वरस / कांजी
मृद्घारशंग	मातुलुंग / आर्द्रक स्वरस भावना
सुवर्ण	तैले तके गवां मूत्रे ह्यारनाले कुलत्थजे
रजत	तैले तके गवां मूत्रे ह्यारनाले कुलत्थजे
ताम्र	तप्त कर तैल तक्र गोमूत्र आटी मे निषेचन अथवा ताम्र पत्र पर सैधव व निम्बुस्वरस का लेप अग्नितप्त कर निर्गुण्डी स्वरस मे निर्वापण
लोह	लौह तप्त कर त्रिफला क्वाथ मे बुझावे
वंग	चूर्णोदक मे सात बार निर्वापण
नाग	द्रवीत नाग + हरिद्रा रेणुका निर्गुण्डी मूल एकत्र करे - निर्गुण्डी स्वरस से निर्वापण
यशद	चूर्णोदक मे सात बार निर्वापण
पित्तल	पित्तल तप्त कर हरिद्राचूर्णयुक्त निर्घुण्डी स्वरस मे निषेचन
कास्य	तप्त कर गोमूत्र मे 7 बार निषेचन अथवा गोमूत्र या अन्लदात्र मे पक्व
वर्तलोह	द्रवीत कर अश्वमूत्र मे 7 बार निषेचन करने से

उपरत्र शोधन -

- 1) गजावती / स्फटिका / पेगजक = निम्बु स्वरस / गूमोत्र / यवक्षार
 2) शांख / शुल्की / गोदूस = निम्बु स्वरस

मिस्त्र लोह -

- 1) पित्तल - ताम्र + यशद = 2:1 भाग
 2) कास्य - ताम्र + वंग = 8:2 भाग
 3) वर्तलोह - ताम्र + लोह + नाग + कास्य + पित्तल = सर्व समभाग

विष द्रव्यो के योग -

- 1) वत्सनाभ - संजीवनी वटी, मृत्युञ्जय रस, हिंगुलेश्वर रस, पंचमृत रस, आनन्द भैरव रस, कफकेतु रस सूतशेखर रस
 2) कारस्कर - नवजीवन रस, विषतिनुक वटी, अग्नितुडी वटी, लक्ष्मीविलास रस,
 3) अहिफेन - वेदनात्तक रस, निद्रोदय रस, सिन्दूरभूषण रस, अहिफेनासव, कर्पूर रस
 4) जयपाल - इच्छाभेदी रस, जलोदरारी रस, अश्वकंचुकी रस, नाराच रस,
 5) धनुर - उन्मादगजांकुश रस, प्रलापान्तक रस, कनकासव, त्रिभुवनकिर्ती रस
 6) भंगा - मदनोदयमोदक, जातीफलादी चूर्ण
 7) भल्लातक - संजीवनी वटी, अमृत भल्लातक

गलस्थ / कंठस्थ रसायन	तलस्थ रसायन	उभयस्थ रसायन
रसपुष्प	समीरपत्रग रस	पूर्ण चंद्रोदय रस
रसकर्पूर	रससिंदुर	सिद्धमकरध्वज
मल्लासिंदुर		रसमाणिक्य

स्वर्णवंग – ज तलस्थ न गलस्थ – मध्यस्थ

- | | | |
|----------------------|----------------------|-------------------|
| 1) रविरळ – माणिक्य | 2) शशिरळ – भौतिक | 3) भोमरळ – प्रवाल |
| 4) बुधरळ – ताक्ष्य | 5) गुरुरळ – पुष्कराज | 6) गद्धरळ – गोमेद |
| 7) केतुरळ – वैद्यर्य | 8) शिवरळ – स्फटिक | |

- 1) पर्पटी कल्प सेवन – चक्र / मण्डल = 40 दिन तक
- 2) ताम्बुल पत्र के साथ पारद सेवन से मलविबंध नहीं होता है।
- 3) रसचिकित्सा को देवी चिकित्सा भी कहा गया है।
- 4) स्वर्ण सेवन समये अपथ्य – विल्व फल
- 5) अमृतीकरण संस्कार से गृणवृद्धी होती है पर वर्ण हानि होती है।
- 6) निश्चन्द्र होना अभ्यक्त का प्रधान लक्षण है।
- 7) रस नरगिणी में तरंग संख्या – 24
- 8) पारद का अंपटीडॉट – कुकुटाप्पडत्वक, कृष्णाप्प रसरस, कटली फल
- 9) सानशाली वटी – निर्गन्ध एवं निरानी मृच्छना है।
- 10) बातकुलान्तक रस का अनुपान – ब्राह्मी
- 11) नवायस लोह एवं सफ्टामूत्र लोह का अनुपान – मधु + धून
- 12) अभ्यक्त सत्त – लोह व सस्त्वक सत्त – ताम्र है
- 13) अशुद्ध लोह सेवन से अष्टमहापरद की उत्पत्ती होती है।
- 14) त्रिविध लोह यत्क वर्णन – रसेन्द्र मार मैंपाह द्वारा
- 15) कास्य पात्र में धूत रखने का निषेध है।
- 16) प्रवाल व भूजा छोड़कर शैश रसे पर ऊल का प्रभाव नहीं पढ़ता है।
- 17) समृद्धकेन कंटलफिश का सूचभाग होता है।
- 18) सदा उपलब्ध गंधों में साशास्त्र का ब्राचीन गंध – रसार्पण
- 19) गंधक गंध नाशनार्थ – सुवर्चला स्वरस प्रयोग
- 20) हेम सर्वविषाणि आशु गरंश विनियच्छति।
- 21) खेच्चरी गुटिका वर्णन – गोरक्ष चंहिता
- 22) काकशब्द्या, जलकमरेग, इतिवात, उक्तवात वर्णन – गमरकरमूच्छक
- 23) पारद द्वारा मोक्षप्राप्ती वर्णन – रसवधूर दर्शन
- 24) धातुज्वाला वर्णन – रसार्पण
- 25) कृत्रिम प्रवाल निर्माण – रसप्रकाश सुधाकर (यशोधर भट्ट द्वारा)
- 26) अर्ककल्पना सर्वप्रथम वर्णन – शोदल निघट्टू
- 27) पोटली कल्पना सर्वप्रथम वर्णन – रसेन्द्रसारसंग्रह
- 28) सर्वप्रथम स्नेहमूच्छना वर्णन – भैषज्यग्लावली
- 29) आरोग्यवर्धी सर्वप्रथम वर्णन – रसरजसमुच्चय – नापार्जन

TIERRA

भैषज्यकल्पना

संहितो में भैषज्यकल्पना –

1) चरक संहिता – पंचकषाय योनीया (लवण रस छोड़कर)

पंचकषाय कल्पना – स्वरस, कल्क, श्रृत शीत फांट

बल – तेषां यथापूर्वं बलाधिक्यम्, अतः कषायकल्पना व्याध्यातुरबलापेक्षिणी, न त्वेवं खलु सर्वाणि
सर्वत्रोपयोगिनी भवन्ति । च.सू. 4/7

2) सुश्रुत संहिता – षडविध कषाय कल्पना

क्षीर, रस (स्वरस), कल्क, श्रृत, शीत, फांट – उत्तरोत्तर लघु

क्षीर कल्पना का समावेश स्वरस कल्पना में किया जा सकता है ।

3) अष्टांग संग्रह – पंचविध कषाय कल्पना

निर्यास (स्वरस), कल्क, निर्यूह (क्वाथ), शीत, फांट

4) अष्टांग हृदय – पंचविध कषाय कल्पना

रस (स्वरस), कल्क, श्रृत, शीत, फांट – यथापूर्वं बलाधिकः

5) काश्यप संहिता – सप्तविध कषाय कल्पना

चूर्ण शीत स्वरस अभिषव (मद्य) फांट कल्क क्वाथ

चूर्ण व अभिषव अधिक मानी है ।

6) चक्रदत्त – पर्पटी कल्पना का सर्वप्रथम उल्लेख

कषाय निरूक्ती –

कण्ठ्य कषणात् प्रायो रोगाणां वाऽपि कर्षणात् ।

कषायशब्दः प्राधान्यात् सर्वयोगेषु कल्प्यते ॥ काश्यप संहिता खिलस्थान 3/29

- कषाय = अंगराग

- कषाय = रस

अनुकूल परिभाषा –

कालेजुके प्रभातं स्यादद्वेजुके जटा भवेत् । भागेजुके तु साम्यं स्यात्पात्रेजुके च मृन्मयम् ॥

द्रवेजुके जलं ग्राह्यं तैलेजुके तिलोदभवम् । एकमप्योषधं योगे यस्मिअन्वत्पुनरुच्यते ॥

मानतो द्विगुणं कार्यं तद्द्रव्यं तत्वदर्शिभिः । चूर्णस्तेहासवा लेहाः प्रायश्चन्दनान्विताः ।

कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम् ॥ शा.स. 1/47

1) काले अनुकूले = प्रभातं

2) अंगे अनुकूले = जटां (मूल)

3) भागे अनुकूले = साम्यं

4) पात्रे अनुकूले = मृत्यात्रं

5) द्रवे अनुकूले = जलं

6) तैले अनुकूले = तील तैलं

7) एकस्य अपि औषधं योगे पुनः उच्यते = मानतो द्विगुणं कार्यं

8) चूर्ण स्नेह आसव लेह = श्वेत चंदन

9) कषाय लेपयोः = रक्तचंदन

औषधी योग नामकरण -

नामकरण आधार	उदाहरण
1) प्रथम द्रव्य	फलत्रिकादी क्वाथ, पुनर्नवादी मंडूर, चित्रकादी वटी
2) रोगधनता	प्रमेहान्तक वटी, ग्रहणी गजेन्द्र रस, ज्वरमुरारी रस
3) कल्प निर्माता	लवण भास्कर चूर्ण, अगस्त्यहरीतकी, नागार्जुनाभ्र रस
4) प्रथम सेवनकर्ता	च्यवनप्राशावलेह
5) गुण एवं प्रभाव	चन्द्रप्रभा वटी, मेहकुंजर रस, आरोग्यवर्धिनी, गंगाधर चूर्ण
6) काल एवं ऋतु	पुष्ट्यानुग चूर्ण
7) आकृती	कजली पर्पटी, रसमाणिक्य, स्वर्णवंग,
8) प्रमुख घटक	योगराज गुगुल
9) देवता अस्त्र	सुदर्शन चूर्ण
10) निश्चित समय पर प्रभाव	अष्टमायिक रस अष्टमायिक वटी
11) मात्रा	क्षीरघटपल घृत
12) विशेष कार्य	ऋग्याद रस

औषधी सवीर्यतावधी -

- गुणहीनं भवेद्वर्षादूर्ध्वं तदूपमौषधम् । भासद्वयात्तथा चूर्णं हीनवीर्यत्वमाप्नुयात् ॥
हीनत्वं गुटिकालेहौ लभेते वत्सरात्परम् । हीना: स्युधुतैलादयाश्तुर्मासाधिकात्तथा ॥
औषध्योः लघुपाकाः स्युर्निर्वीर्या वत्सरात्परम् । पुराणाः स्युर्गुणैर्युक्ता आसवा धातवो रसाः ॥ शा. प्र. 1
1) पत्येक औषधी द्रव्य 1 वर्ष बाद गुणहीन
2) चूर्ण – दो मास बाद हीनवीर्य
3) गुटिका लेह – एक वत्सर (वर्ष) पश्चात हीनवीर्य
4) घृत तैल आदी – चतुर्मासाधिकात्तथा (एक वर्ष चार मास – 16 मास) पश्चात हीनवीर्य
5) लघुपाकी औषधी (शीघ्र पकनेवाली) – एक वर्ष पश्चात हीनवीर्य
6) आसव अरिष्ट लोह आदी भस्म – पुराण गुणयुक्त

औषध कल्पना	सवीर्यतावधी	औषध कल्पना	सवीर्यतावधी
1) अन्जन कल्पना	1 वर्ष	2) अन्न कल्पना	1 दिन
3) अम्ल कल्पना कांजी इ	6 मास	4) अयस्कृती कल्पना	1 वर्ष
5) अर्क कल्पना	1 वर्ष	6) अरिष्ट कल्पना	पुराण गुणयुक्त
7) अवलेह कल्पना	1 वर्ष	8) अश्वेतन कल्पना	स्वरस 1दिन जलसह 6मा
9) आसव कल्पना	पुराण गुणयुक्त	10) उदक कल्पना	1 दिन
11) उपनाह कल्पना	त्वरित उपयोग	12) कर्णपूरण	तैल – 1 वर्ष
13) कल्क कल्पना	1 दिन	14) कवलग्रह कल्पना	क्वाथ स्वरस – त्वरीत
15) कोम्भ घृत	पुराण	16) क्वाथ कल्पना	1 दिन
17) क्षार कल्पना	1 ते 5 वर्ष	18) क्षीरपाक कल्पना	1 दिन
19) खड कल्पना	1 दिन	20) खण्ड कल्पना	1 से 4 माह
21) घनसत्व कल्पना	1 वर्ष	22) तक्र कल्पना	1 दिन
23) दधि दधिकूर्चिका	1 दिन	24) धूपन	6 मास
25) धूमपान	4 मास	26) पर्पटी कल्पना	पुराण गुणयुक्त
27) पानक कल्पना	1 दिन	28) पेया कल्पना	1 दिन

29) पोटली कल्पना	पुराण गुणयुक्त	30) मंड कल्पना	सद्य उपयोग
31) मदय कल्पना	पुराण गुणयुक्त	32) मंथ कल्पना	1 दिन
33) मलहर कल्पना	2 मास	34) मसी कल्पना	1 वर्ष
35) मांसरस	1 दिन	36) यवागू यूष	1 दिन
37) रसक्रिया	1 वर्ष	38) लवण कल्पना	1 वर्ष
39) लाक्षारस कल्पना	1 सप्ताह	40) लेप कल्पना	1 दिन
41) वटक कल्पना	1 वर्ष	42) वर्ती कल्पना	1 वर्ष
43) शार्कर	4 मास से 1 वर्ष	44) सकु कल्पना	1 मास
45) सत्व कल्पना	1 वर्ष	46) धातुसत्व	पुराण गुणयुक्त

मान परिभाषा –

न मानेन विना युक्तिर्द्वयाणां जायते क्वचित् । शा.म. 1/14

प्रकार –

चरकानुसार दो प्रकार

1) मागध

2) कलिंग

चरकानुसार मागध मान श्रेष्ठ

अमरकोषनुसार -- 3

1) पौत्र मान – पौत्रवम तुलया । (measurement of weight)

2) द्रवय मान – द्रवयं कुडवादिभिः । (measurement of capacity)

द्रव पदार्थ मापनार्थ

3) पाय्यमान – पाय्यं हस्तादिभिः । (measurement of length)

लम्बाइ चोडाइ गहराइ मापनार्थ

चरकानुसार पौत्रवमान –

चरकानुसार पौत्रव मान का प्रारंभ ‘वंशी’ या ‘ध्वंशी’ से होता है ।

जालान्तरगत धूती के कण को ध्वंशी या वंशी कहते हैं ।

6 ध्वंशी = 1 मरीचि

6 मरीचि = 1 रक्त सर्षप

8 सर्षप = 1 तण्डुल

2 तण्डुल = 1 धान्यमाष (उड्द)

2 धान्यमाष = 1 यव = $1/2$ रत्ती = 62 मिग्रा

4 यव = 1 अण्डिका = 8 रत्ती = 250 ग्राम

4 अण्डिका = 1 माषक = 8 रत्ती = 1 ग्राम

3 माषक = 1 शाण = 24 रत्ती = 3 ग्राम

2 शाण = 1 कोल = 48 रत्ती = $1/2$ तोला = 6 ग्राम

2 कोल = 1 कर्ष = 96 रत्ती = 1 तोला = $11 \frac{1}{2}$ ग्राम

2 कर्ष = 1 शुक्ती = 2 तोला = 23 ग्राम

2 शुक्ती = 1 पल = 4 तोला = 46 ग्राम

2 पल = 1 प्रसृति = 8 तोला = 93 ग्राम

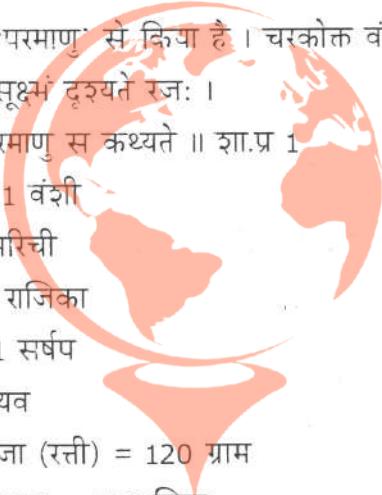
2 कुडव = 1 मानिका = 32 तोला = 374 ग्राम
 4 प्रस्थ = 1 आढक = 2.980 किग्राम
 4 आढक = 1 द्रोण = 11.946 किग्राम
 2 द्रोण = 1 शूर्प
 2 शूर्प = 1 खारी
 32 शूर्प = 1 वाह
 100 पल = 1 तुला = 400 जोले = 5 सेर = 4.670 किग्राम
 1 सेर = 80 तोले = 930 ग्राम

सुश्रुतानुसार पौत्र भान –

मध्यम प्रमाण के 12 धान्यमाष = 1 सुवर्णमाषक
 16 सुवर्णमाषक = 1 सुवर्ण
 मध्यम प्रमाण के 19 निष्ठाव = 1 धरण
 1 1/2 धरण = 1 कर्ष

शारंगधरानुसार भान प्रमाण –

शारंगधर ने भान प्रारंभ परमाणु से किया है। चरकोक वंशी का 1/30 भाग परमाणु कहलाता है जालान्तरगते भानौ यत् सूक्ष्मं दृश्यते रजः।
 तस्य त्रिशंत्तमो भागः परमाणु स कथयते ॥ शा.प्र 1



30 परमाणु = 1 वंशी
 6 वंशी = 1 मरिची
 6 मरिची = 1 राजिका
 3 राजिका = 1 सर्षप
 8 सर्षप = 1 यव
 4 यव = 1 गुंजा (रत्ती) = 120 ग्राम
 6 रत्ती = 1 माषक = 720 मिग्रा
 4 माषक = 1 शाण (1/4 तोला) = 3 ग्राम
 2 शाण = 1 कोल (1/2 तोला) = 6 ग्राम
 2 कोल = 1 कर्ष (1 तोला) = 11 1/2 ग्राम
 2 कर्ष = 1 शुक्ली (2 तोला) = 23 ग्राम
 2 शुक्ली = 1 पल (4 तोला) = 46 ग्राम
 2 पल = 1 प्रसृति (8 तोला) = 93 ग्राम
 2 प्रसृति = 1 कुडव (16 तोला) = 187 ग्राम
 2 कुडव = 1 मानिका (शारव) = 32 तोला = 374 ग्राम
 2 शारव = 2 प्रस्थ (64 तोला) = 746 ग्राम
 4 प्रस्थ = 1 आढक (256 तोला) = 2.980 ग्राम
 4 आढक = 1 द्रोण (1024 तोला) = 11.946 ग्राम
 2 द्रोण = 1 शूर्प

उपरोक्त मान स्मरणार्थ सूत्र –

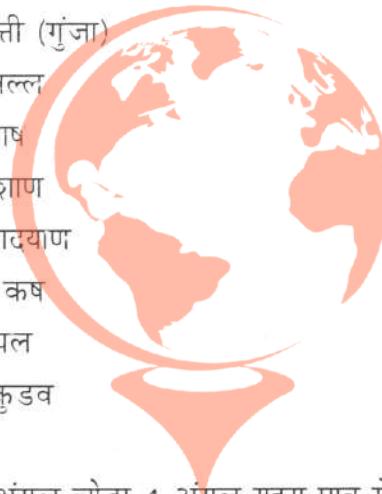
माषटंकाक्ष बिल्वानि कुडवः प्रस्थमाढकम् । राशिगोणि खारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणः ॥ शा.पू. 1

- 4 माष = टक (शाण)
- 4 टंक = अक्ष (कर्ष)
- 4 अक्ष = बिल्व (पल)
- 4 बिल्व = कुडव (अंजली)
- 4 कुडव = प्रस्थ
- 4 प्रस्थ = आढक
- 4 आढक = राशि (दोण)
- 4 राशि = गोणी
- 4 दोणी = खारी

शारंगधरानुसार कलिंग मान –

शारंगधर ने दोनो मानो का वर्णन किया है ; मागध एवं कलिंग

- 12 गौर सर्षप = 1 यव
- 2 यव = 1 रत्ती (गुंजा)
- 3 रत्ती = 1 वल्ल
- 8 रत्ती = 1 माष
- 4 माष = 1 शाण
- 6 माष = 1 गदयाण
- 10 माष = 1 कष
- 4 कर्ष = 1 पल
- 4 पल = 1 कुडव



कुडव पात्र माप –

4 अंगुल लंबा 4 अंगुल चोडा 4 अंगुल गहरा पात्र में जितना द्रव्य आता है उसे कहते हैं ।

2) द्रव्य मान

- 1 बिंदु = प्रदेशिनी अंगुली (तर्जनी) जलभग्न कर पतीत होने वाला द्रव मान
- 8 बिंदु = 1 शाण
- 32 बिंदु = 1 शुक्री
- 64 बिंदु = 1 पाणिशुक्री

शारंगधर संहिता में द्रव पदार्थ का मान ‘कुडव’ दिया गया है ।

3) पात्र मान

- 1 अंगुली = 8 यव के मध्य में सुइ पिरोने से होनेवाली लंबाइ
- 12 अंगुल = 1 वितस्ती
- 22 अंगुली = 1 अरलि
- 24 अंगुली = 1 हस्त
- 4 हस्त = 1 व्याम

परमाणू परिभाषा

जालान्तरगते भानौ यत्सूक्ष्मं दृश्यते रजः । तस्य त्रिंशत्तमो भागः परमाणुः स कथ्यते ॥ शा.पू. 1/16

रज (धूलीकण) का 1/30 भाग = परमाणु

30 परमाणू = 1 न्रसरेणु इसी को 'वंशी' भी कहा जाता है ।

वंशी = जालान्तरगतैः सूर्यकर्वंशी विलोक्यते ।

मान व उनके पर्याय

मान	पर्याय
1) माशा	हेम, धान्यक
2) शाण	धरण, टंक
3) कोल	क्षुद्रक, वटक, दंक्षण
4) कर्ष	पनिमाणिका, अक्ष, पिचु, पाणितल किंचित्, पाणि, तिन्दुक, बिडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपाद सुवर्ण, कवलग्रह, उदुम्बर
5) पल	मुष्टी, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुंच, षोडशि, बिल्व
6) अंजली	कुडव, अर्धशारवक, अष्टमान,
7) मानिका	शारव, अष्टपल
8) आढक	भाजन, कंसपात्र
9) द्रोण	कलश, नल्वण, उन्मन, उन्मान, घट, राशी
10) शूर्प	कुम्भ

शुष्क आर्द्र द्रव्य ग्रहण नियम

1) आर्द्र द्रव्य शुष्क द्रव्य से दुगुनी मात्रा में ग्रहण करने चाहिए । (शारंगधर / भै.र.)

2) कुछ द्रव्य हमेशा आर्द्र ही ग्रहण करने चाहिए पर उन्हे द्विगुण न प्रयुक्त करे ।

उदा. – गुडूची, कूटज, वासा, कुष्माण्ड, शतावरी, अश्वगंधा, सहचर, शतपुष्पा, प्रसारिणी (शा.)

+ निम्ब केतकी, बला, इन्दिवरी, वर्षभु, नागबला इ.

द्रव आदी द्रव्यों का मान –

'रत्ती' से लेकर 'कुडव' तक सभी द्रव(जलीय), आर्द्र, व शुष्क द्रव्यों का मान सम (समान) ही होता है

द्विगुण मान व्यवहार –

'प्रस्थ' आदी द्रव्यों को परिमाण में दुगुणा लेना चाहिए किन्तु 'तुला' परिमाण में लेने को कहा गया है

उन्हे दुगुना नहीं लेना चाहिए ।

नविन तथा पुराण द्रव्य ग्रहण

नवान्येव हि योज्यानि द्रव्याणि अखिलकर्मसु । विना विडंग कृष्णाम्भ्यां गुड धान्य आज्य माक्षिकैः ॥

द्रव्य अवयव ग्रहण नियम

1) जिस वृक्ष की स्थूल जटा (मूल) हो उनकी मूलत्वक ग्रहण करे ।

2) जिनकी मूल सूक्ष्म हो उनकी मूल पूर्ण ग्रहण करे ।

धन्वन्तरी भाग –

अ) रसनलसमुच्चयानुसार –

1) सिद्धरसौषधी – 1/2 भाग

2) तैल घृत अवलेह – 1/8 भाग

3) लोह चूर्ण वटी आदी – 1/7 भाग

दीयते वैद्यवराय , निर्दीश्यते – धन्वन्तरी

ब) रसतरंगिणीनुसार –

1) सिध्दरसादी – 1/2 भाग

2) घृत तैल – 1/2 भाग

3) मृतधात्वादी – 1/4 भाग

4) अवलेह – 1/8 भाग

5) अरिष्ट चूर्णादी – 1/7 भाग

धन्वन्तरी भाग – 11 भाग

पंचविधि कषाय कल्पना –

1) द्रव्य मे पार्थिवांश अधिक्य – चूर्ण कल्पना

2) द्रव्य मे पृथ्वी + जल अंश अधिक्य – कल्क कल्पना

3) द्रव्य मे जलीयांश अधिक्य – स्वरस या क्वाथ कल्पना

4) सुगंधीत द्रव्य हो तो – क्वाथ कल्पना निषेध ; चूर्ण कल्क हिम अर्क या फांट कल्पना हितकर

1) स्वरस कल्पना

– यन्न निष्पीडिताद् द्रव्याद् रसः स्वरस उच्यते । च.सू. 4

– सदयः समुद्धृतात्क्षुणाद् यः स्त्रवेत् पटपिडितात् ।

स्वरसः स समुद्दिष्टः अ.हु. क. 6/9

– आहुतात् तत्क्षणाकृष्टाद् द्रव्यात्क्षुणात् समुद्धरेत् ।

वस्त्रनिष्पीडितो यः स रसः स्वरस उच्यते ॥ शा. स. म. ह्य

स्वरस अभाव मे अनुकल्प –

1) चरक – आर्द्ध द्रव्य स्वरसार्थ न मिलनेपर शुष्क द्रव्य यवकुट मे समगुण अथवा द्विगुण जल

मिलाकर मृत्यात्र मे रात्रीभर रखकर अन्ना दिन वस्त्र से छानकर उसे स्वरसावत प्रयोग करे ।

2) शारंगधरानुसार – शुष्क द्रव्य मे अष्टगुण जल डालकर प्रयोग कर चतुर्थांश शेष रखे ।

पुटपाक स्वरस विधि –

उक्त पत्र कल्क निर्माण – बट जाम्बूआ आदी पत्र से वेष्टीत करे – तत पश्चात मृत्तिका2 अंगुल लेप –

शुष्क होनेपर अग्नि पर आरक्ष होनेतक पाक – ततपश्चात लेप निकालकर वस्त्रपूत कर स्वरस प्राप्ति

उदा, वासा, निम्ब, अरलु, दाढिम, बीजपूरक, कंटकारी विभितक शुंठी सूरण

स्वरस मात्रा –

सामान्य स्वरस – 1/2 पल

पुटपाक विधि द्वारा प्राप्त (अग्निनिशोषीत) – 1 पल

स्वरस मे प्रक्षेप मात्रा –

मधु शर्करा गुड क्षार जीरक लवण घृत तैल व चूर्णादी – 1 – 1 कोल (1/2 कर्ष)

2) कल्क कल्पना –

– यः पिण्डो रसपिष्टानां कल्कः स परिकिर्तिः । च.सू. 4

– उपलदशनादिपिष्टस्तु कल्कः अ.स.क. 8/10

– द्रव्यामार्द्ध शिलापिष्टं शुष्कं वा सजलं भवेत् ।

प्रक्षेप आवाप कल्कास्ते तन्मानं कर्षसम्मितम् ॥ शा. म. 5/1

पर्याय – प्रक्षेप आवाप

कल्क मे प्रक्षेप मान –

मधु घृत तैल = द्विगुण

सिता गुड = सम भाग

द्रव (दुग्धादी) = चतुर्गुण

द्रव्य कल्क व गुणधर्म –

1) निम्ब कल्क – व्रणशोधन रोपण, कुष्ठ, छर्दि, पित्तश्लेष्मकृमीघ्न

2) रसोनकल्क – वातरोग, तीव्रविषमज्वर

3) चूर्ण कल्पना (कल्क के अंतर्गत समावेश –वाग्भटादी), काश्यप – स्वतंत्र कल्पना

अत्यंत शुष्क यद् द्रव्यं सुपिष्टं वस्त्रगालितम् ।

तस्याच्चूर्णं रजः क्षोद तन्मात्रं कोलसम्मितम् ॥ शा.म. 6/1

पर्याय – रज , क्षोद

चूर्ण मे प्रक्षेप मान –

गुड = समभाग

शर्करा = द्विगुण

मधु घृत = द्विगुण

आलोडगार्थ द्रव = चतुर्गुण

भर्जीत हिंगु = न उत्क्लेदकृत

चूर्णादी मे अनुपान –

वातरोग – 3 पल

पित्तरोग – 2 पल

कफरोग – 1 पल

चूर्णादी मे भावना द्रव्य मान –

चूर्ण आप्लुत हो सके इतना

विविध चूर्ण व गुणधर्म –

1) सितोपलादी चूर्ण

सितोपला तुगाक्षीरी पिप्पलीबहुलात्वचः । अन्त्यादुर्ध्वं द्विगुणीतं लैहयेत् क्षोद्रसर्पिषा ॥



घटक द्रव्य	प्रमाण	गुणधर्म
सिता	16 भाग	श्वासकासक्षयापहम्
तुगाक्षीरी	8 भाग	सुप्तजिव्हा अरोचक
पिप्पली	4 भाग	मन्दाग्नि पार्श्वशूल
बहुला (एला)	2 भाग	हस्तपादांगदाह ज्वर उर्ध्वग रक्पित
त्वक (दालचिनी)	1 भाग	अनुपान – मधु घृत

2) तालीसादी चूर्ण

घटक द्रव्य	प्रमाण	गुणधर्म
1) तालीसपत्र	1 भाग	श्वास कास अरुचीहर दीपन
2) मरिच	2 भाग	हुत्पाण्डुरोग ग्रहणी प्लीहरोग
3) नागर	3 भाग	शोथ ज्वरापहम छर्दि अतिसार
4) पिप्पली	4 भाग	शूलघ्न मूढवातानुलोमनम
5) शुभा (वंशलोचन)	5 भाग	
6) त्वक	1/2 भाग	अर्ध
7) एला	1/2 भाग	भागिके
8) सिता (शर्करा)	पिप्पली से अष्टगुण	-----

3) हिंगवाष्टक चूर्ण

त्रिकटुकं अजमोदा सैन्धवं जीरकं द्वे । समधरणधृतानामष्टमो हिंगुभागः ॥
प्रथम कवलभोज्यः सर्पिषा चूर्ण एषः । जनयन्ति जाठराग्निं वातगुलम् निहन्ति च ॥

4) लवण भास्कर चूर्ण

घटक द्रव्य	मात्रा (ग्राम)	घटक द्रव्य	मात्रा
पिप्पली	100	मरिच	50
पिप्पलीमूल	100	अजाजी (श्वेत जीरक)	50
धान्यक	100	शृंठी	50
कृष्णार्जीरक	100	त्वक	25
सैन्धव लवण	100	एला	25
बिडलवण	100	सामुद्र लवण	400
तालीसपत्र	100	दाढिम	200
नागकेशर	100	अम्लवेतस	100
सौवर्चल लवण	250		

क्वाथ कल्पना

- वन्हौ तु क्वथितं द्रव्यं श्रुतमादुश्चिकित्सकाः । च.सू. 4
- पानीयं षोडशगृणं क्षुण्णे द्रव्यपले क्षिपेत् । मृत्वात्रे क्वाथयेत् ग्राहयं अष्टमांशावशेषितम् ॥ शा.

पर्याय - श्रृत क्वाथ क्षाय निर्युह

जल प्रमाण -

- 1) शारंग्धरानुसार - 16 पट
- 2) यादवजीनुसार - 1) मृदू द्रव्य - 4 पट
- 2) मध्य द्रव्य - 8 पट
- 3) कठिन द्रव्य - 16 पट

उपरोक्त नियम अपवाद - (द्रव्य मात्रा अनुसार - मृदू द्रव्यार्थ)

- 1) कर्ष से पल तक (1 पल से कम) = 16 पट
- 2) पल से कुडव तक (1 पल से 4 पल) = 8 पट
- 3) कुडव से अधिक (4 पल से अधिक) = 4 पट

मात्रा – क्वाथ की मध्यम मात्रा – 1 पल (4 तोले)

क्वाथ पान समय – आहार रसपाकोत्तर

क्वाथ में प्रक्षेप मान –

प्रक्षेप	वातरोग	पित्तरोग	कफरोग
शर्करा	1/4	1/8	1/16
मधु	1/16	1/8	1/4

जीरक गुगुलु क्षार लवण शिलाजतु हिंगु त्रिकटू – 1 शाण

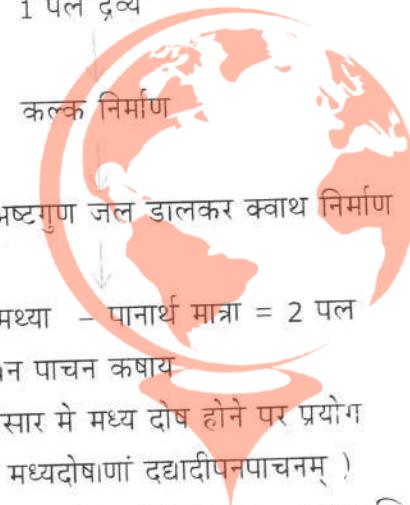
क्षीर घृत गुड तैल मूत्र व अन्य द्रव – 1 तोला

- 1) पुनर्नवाष्टक क्वाथ – पुनर्नवा निष्ठ पटोल शुंठि कुटकी गुडूची दारूहरिदा अभया
सर्वांगशोथ उदर कास शूल श्वास पाण्डु
- 2) महारास्नादी क्वाथ – अमवात – वातव्याधी, ब्रह्मा द्वारा गर्भधारणार्थ आख्यात

प्रमथ्या कल्पना

प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यपलात् कल्कीकृतात् श्रृतात् । तोये अष्टगुणीते तस्याः पानमाहुः पलद्वयम् ॥

1 पल द्रव्य



चक्रपाणी नुसार प्रमथ्या = दीपन पाचन कषाय

अतिसार में मध्य दोष होने पर प्रयोग

(प्रमथ्या मध्यदोषाणां दद्यादीपनपाचनम्)

लाक्षारस – पिपल वक्ष से प्राप्त लाक्षा + 6 पट जल – मध्यमाग्नि पर पाव – 1/4 शेष

त्रिसप्तधा वस्त्र से परिस्राव = लाक्षारस प्राप्ति

मांसरस –

TIERRA

1) घन मांसरस – 8 पल (32 तोला) मांस 1 प्रस्थ जल में सिध्दी

2) मध्यम मांसरस – 6 पल (24 तोला) मांस को 1 प्रस्थ जल में सिध्दी

3) तनु मांसरस – 1 कुडव (16 तोला) मांस को 1 प्रस्थ जल में सिध्दी

संस्कार नुसार प्रकार –

1) कृत मांसरस – लवण स्नेह कटुक सह सिध्द

2) अकृत मांसरस – अस्नेह लवण कटुक विना

वेसवार –

मांस निरस्थी कर सुस्विन्न (4 पट जल डालकर) पेषण करना । शुंठि मरीच सर्पि आदी से पाचन गुरु स्निध बल्य वातरूजापह

क्षीरपाक -

- 1) शारंगधरनुसार - क्षीरं अष्टगुणं द्रव्यात् क्षीरात् नीरं चतुर्गुणम् ।
क्षीरावशेषं तत्पीतं शूलं आमोद्धवं जयेत् ॥
- 2) यादवजीनुसार - क्षीरं तिथिगुणं द्रव्यात् क्षीरात् नीरं समं मतम् ।
क्षीरावशेषं कर्तव्यं क्षीरपाके त्वयं विधि: ॥

	द्रव्य	क्षीर प्रमाण	जल प्रमाण
शारंगधर	1 भाग	8 भाग	32 (क्षीर से 4 पट)
यादवजी त्रिकमजी	1 भाग	15 भाग ((क्षीर से सम))	

क्षीरपाकार्थ अम्ल लवण निषेध

उष्णोदक - 1/8 अथवा 1/4 अथवा 1/2 अथवा केवल क्वथन कर जल शेष रखना

गुणधर्म - इलेष्म आमवात मेदोघ्न बस्तीशोधन दीपन

औषधसिध्दपानीय - 1 कर्ष (1 तोला) यवकूट चूर्ण को 1 प्रस्थ जल सह मन्दाग्नि पर पाक करे ।

आधा प्रस्थ शेष रखने पर शीत होने पर प्रयोग

यवागू कल्पना -

1) सुश्रुतानुसार

- अ) मण्ड - सिक्थैविरहितः मण्डः
- ब) पेया - पेया सिक्थसमन्वितः
- क) विलेपे - विनेव बहुसिक्था
- ड) यवागू - यवागु विरलद्रवा

2) डल्हणानुसार (जल प्रमाण का निर्देश)

- अ) अन्न (भात) - अन्नं पंचगुणे तोये
- ब) यवागू - यवागु षड्गुणे पचेत
- क) मण्ड - चतुर्दश गुण मण्ड
- ड) विलेपी - विलेपी चतुर्गुणा

वात्यमंड - कफपित्तघ्न, कठय, रक्तपित्तघ्न

लाजमंड - दीपन पाचन वातानुलोमन हृदय

TIERRA

मण्ड	पेया	विलेपी	यवागु
दीपयति अग्निं	दीपनी धातुपुष्टिदा	लघ्वी दीपनी	बल्य
वातानुलोमयति	वातानुलोमनी	तर्पणी हृदया	तर्पणी
मृदू करोति स्त्रोतांसि	लघुतरा ग्राहिणी	क्षुत् तृष्णापहा	वातनाशीनी
स्वेदं संजनयति	स्वेदाग्निजननी लघ्वी	ग्राहिणी बलवर्धनी	
दीपनत्वात लघुत्वात	बस्तीशोधनी		
मंड स्याद प्राणधारणः	क्षुत् तृट् श्रम म्लानीहरी		
	कुक्षिरोगज्वरापहा		

सुश्रुत - यवागु त्रिविधा प्रोक्ता मण्ड पेया विलेपी अपि । सु.सू. 46

काश्यप - अहस्तहार्या - पेया यवागु - सपरिगहा

जीवक नुसार यवाग् दोष – 7

घन विशीर्ण शीत न च अवक्षीणतण्डुला पिञ्छिला विशदा अहृदया

भक्त कल्पना / ओदन कल्पना –

धौत विमल तन्डुल मे 14 पट जल डालकर पक्व करना।

अन्न कल्पना – अन्नं पंचगुणे तोये।

भावप्रकाशनुसार पर्याय – भक्त अन्न अन्ध कुर ओदन भिस्सा दीदिवी

कृशरा –

गुणधर्म सर्वप्रथम वर्णन – सुश्रुत

परिभाषा (विधी) वर्णन – भावप्रकाश

विधी – तण्डुल लवण आर्द्रक हिंगु आदी + जल 6 पट = पक्व कर कृशरा निर्माण

पर्याय – त्रिशरा

गुणधर्म – शुक्रल बल्य पित्तकफप्रद दुर्जर विष्टम्भी मलमूत्रकरी

यूष कल्पना –

काश्यप द्वारा ‘यूष निर्देशीय अध्याय’ मे विस्तार से वर्णन

विधी – जल क्वाथ तक्रादी द्रव पदार्थ व औषध द्रव्यो के साथ मुद्र मसूर आदी ‘गिम्बी’ धान्य (बिना तण्डुल) के साथ पक्य किया जाता है उसे ‘यूष’ कहते हैं।

शूक्र धान्य तण्डुल आदी के साथ निर्माण किया जाता है उसे ‘यवाग्’ कहते हैं। (का.)

पर्याय – द्रवयोनयः

प्रकार – 25 प्रकार व दोषभेदानुसार 75

2 प्रकार – 1) कषायमधुर 2) कषायाम्ल

3 प्रकार – 1) का यूष 2) अकृत यूष 3) कृताकृत यूष

सुश्रुतानुसार भेद – अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना।

विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संयुतम् ॥ सु.सू. 46

1) कृत यूष – कटू (हिंगु मरीच आदी), स्नेह व लवण आदी से सिध्द किया हुआ

2) अकृत यूष – कटू (हिंगु मरीच आदी), स्नेह व लवण आदी से सिध्द न किया हुआ

गुणधर्म – रेचन दीपन वृद्धि स्वर्वर्ण बलाग्निकृत स्वेदजनन तुष्टिपुष्टिसुखावह

हिम (शीत) कल्पना –

क्षुणणं द्रव्यपलं सम्यक् षडभिर्निरपलैः प्लुतम् ।

निशोषितं हिमः स्यात्तथा शीतकषायकः ॥

तन्मानं फाण्टवत् ज्ञेयं सर्वत्र एव निश्चयः ॥ शा. म.4/1

द्रव्य – 1 पल + 6 पल जल = रातभर भिंगोकर (निशोषित होने के लिए) प्रातः छानकर प्रयोग

चरक ने उष्ण जल डालने का विधान किया है।

पर्याय – शीतकषाय

मात्रा – फाण्टवत = 2 पल

धान्यक हिम – अन्तर्दाह नाशन, तृष्णा व शोष नाशन

मंथ कल्पना –

शारंगधर – मंथोऽपि फांटभेदः ।

- 1) चरकानुसार – त्र्यूषण त्रिफला क्षोद्र विंडंग अजमोदा इनमे सातु व तीलतिल मिलाकर लोहोदकाप्लुत (अगरु क्वाथ मे द्रवीत करना) कर मथन करे ।
- 2) सुश्रुतानुसार – सातु मे सर्पि मिलाकर शीत जल मे आप्लुत मथन कर नातिद्रव नातिसान्द्र मंथ निर्माण 3) शारंगधरानुसार – औषध द्रव्य 1 पल लेकर उसमे 4 पल (चतुर्गुण) शीतजल डालकर मथन करे ।

मात्रा – 2 पल

खर्जुरादी मंथ – मदात्यय

तण्डुलोदक कल्पना –

कण्ठितं तण्डुलपलं जलेऽष्टगुणीते क्षिपेत् ।

भावयित्वा जलं ग्राहयं देयं सर्वत्र कर्मसु ॥ शा. म. 1/28

कण्ठित तण्डुल 1 पल + अष्टगुण जल (8 पल) = भावयित्वा – छानकर – तण्डुलोदक
मात्रा – 4 तोला (1 पल)

षडंगपानीय –

मुस्तपर्पट्कोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः । श्रृतशीत जलं ददयात् पिपासा ज्वर शान्तये ॥ च.चि. 3

उपग्रेह द्रव्य प्रत्येकी 1 शाण + 64 तोला जल मे क्वथीत कर शीत होने पश्चात सेवन पानक – (यादवजी)

अम्ल फल या अनम्ल फल शीताम्बु मे परिमित कर सिता मरिच इ डालकर बनाया जाता है ।

शार्कर – (यादवजी) :

हिमे फाण्टे श्रुते अर्के वा शर्करां द्विगुणं विवेत् । मन्देग्नौ साधितं पूतं पटात् तत् शार्करं स्मृतम् ॥

हिम फांट श्रुत अर्क इसमे द्विगुण शर्करा डालकर मन्दाग्नि पर सिद्ध करना ।

शार्कर के लिए प्रिद्वर्वेटिव –

- 1) सोडियम बेन्झोएट
- 2) पोर्टशिअम, मेटाबाय सल्फाइड
- 3) सायट्रिक एसिड

फाण्ट कल्पना –

क्षण्णे द्रव्यपले सम्यक जलं उष्णं विनिक्षिपेत् । मुत्पात्रे कुडवोन्मानं ततस्तु स्त्रावयेत्पटात् ॥

तस्य चूर्णद्रवः फाण्टस्तन्मानं द्विपलोन्मितम् । सितामधुगुडादीश्व व्याथवत्त्र निक्षिपेत् ॥ शा. म.

1 पल द्रव्य मे 1 कुडव (16 तोला) उष्ण जल मिलाकर मृदीत कर पश्चात वस्त्रपूत करे ।

पर्याय – चूर्णद्रव

मात्रा – दो पल

रसक्रिया (अवलेह) –

क्वाथादिनां पुनः पाकात् घनत्वं सा रसक्रिया । सोऽवलेहश्व लेहः स्यात् तन्मात्रा पलोन्मिता ॥ शा.

क्वाथ आदी का पुनः पाक कर घनत्व प्राप्ती

मात्रा – 1 कर्ष (1 पल)

अवलेह परीक्षा -

- 1) तनुमत्वम्
- 2) जले निमज्जनम् (अप्सु मज्जति)
- 3) अप्रसरनशीलत्वम् (सरणं न च) / स्थिरत्वं
- 4) स्पर्शं अंगुली मुद्रा
- 5) गन्धोत्पत्ती
- 6) वर्णोत्पत्ती
- 7) रसोत्पत्ती

डल्हण – रसाक्रिया फाणिताकृतिः ‘काकवो’ इति लोके ।

अवलेह मे प्रक्षेप प्रमाण -

जिसका अवलेह बनाना है उसके चूर्ण से

- 1) सिता – चतुर्गुण
- 2) गुड – द्विगुण
- 3) द्रव – चतुर्गुण

मात्रा – 1 पल

यादवजींनुसार मध्यम मात्रा – 1 कर्ष

अनुपान – दुग्ध इक्षुरस यूष पंचमूली कषाय वासाकवाथ

रसांजन – दास्तहरिद्रा यवकूट + 16 पट जल मिलाकर क्वाथ – पुनः गोदुग्ध मिलाकर घनत्व प्राप्ती

गुडूची घन (गुडूची रसाक्रिया) – अगुष्ठ सम गुडूची कांड – 16 लिटर जल मे क्वाथ – वस्त्रपूत कर

पुनः पाक करे – गुडूची घन

आचार्य यादवजी ने इसे ‘संशमनी वटी’ नाम दिया है ।

रोगधनता – ज्वरधन

फाणित कल्पना –

इक्षु रस को पाक कर गाढ स्वरूप प्राप्त किया जाता है ।

व्यवहार मे इसे इक्षु विकार कहते हैं ।

चवनप्राशावलेह –

घटक द्रव्य – दशमूल के द्रव्य, तामलकी दाढ़ा जीवनी इ. द्रव्य प्रत्येकी 1 पल

आमलकी – 500

एक द्रोण जल मे क्वाथ – ज्ञात्वा गतरसान्येतान् औषधान्यथ तम रसम् ।

गतरसत्व – चक्रपाणीनुसार – चतुर्थांश शेष

आमलकी उधृत कर अस्थीविरहीत कर तैल व घृत मे भर्जन

तिल तैल – 6 पल , गोघृत – 6 पल सिता – 1/2 तुला , मधु – 6 पल

प्रक्षेप द्रव्य – तुगाक्षीरी – 4 पल

पिप्पली – 2 पल

त्वक , एला , पत्र, केशर – प्रत्येकी 1 पल

गुणधर्म – कासश्वास हरश्वैव विशेषेण उपदिश्यते ।

मात्रा – अस्य मात्रां प्रयुण्जीत यो उपरूद्ध्यान्न भोजनम् । च.चि (रसायनाध्याय)

चवनप्राश निर्माण में मतमतांतर -

चरक संहिता	शारंगधर संहिता
अष्टवर्ग के पाच द्रव्यों का उल्लेख तील तैल व गोधृत दोनों में भर्जन	अष्टवर्ग के सात द्रव्यों का उल्लेख केवल गोधृत में भर्जन का निर्देश

व्याधीहरीतकी अबलेह – भैषज्य रलावली – कास
 कंटकारी पंचांग – 1 तुला
 आचार्य 'भृगु' द्वारा उपदिष्ट

गुडूची सत्व निर्माण -

अंगुष्ठ सम गुडूची कांड – कूटकर – चतुर्गुण जल में रात्रीपर्यन्त छोड़ दे
 मृदीत कर गुडूची कांड बाहर निकालकर शेष मिस्त्रण को स्थिर करे – उपरी जल
 निकालकर नीचे के घन भाग को शुष्क करे – गुडूची सत्व है।
 स्टार्चयुक्त बनस्पती का सत्व प्राप्त किया जाता है।
 व्यवहार में गुडूची सत्व के बदले 'आरारोट पावडर' बेचा जाता है।

गुणधर्म – ज्वररघ्न, पित्तघ्न दाहशामकअर्क कल्पना -

प्रायः सुगन्धित द्रव्य व उडनशील तैल्युक्त द्रव्यों के बीच सुरक्षीत रखने के लिए बनायी जाती है।
 डिस्टीलेशन प्लांट नामक यंत्र द्वारा निकाला जाता है।

वटी कल्पना -

लेहवत्साध्यते वन्हौ गुडो वा शर्करा तथा। गुगुलुर्वा क्षिपेत्तत्र चूर्ण तनिर्मिता वटी ॥
 कुर्यादिवन्हिसिध्देन क्वचिद् गुगुलुना वटीम् । द्रवेण मधुना वाऽपि गुटिकां कारयेद् बुधः ॥ शा. 7
प्रथम विधि – गुड वा शर्करा वा गुगुल को लेहवत बनाकर चून डालकर गुटी निर्माण
द्वितीय विधि – गुगुल का अग्नि पर पाक किये बिना किसी द्रव पदार्थ या मधु से वटी निर्माण

वटी में प्रक्षेप प्रमाण -

- 1) चूर्ण की अपेक्षा सिता चतुर्गुण
- 2) गुड द्विगुण
- 3) गुगुल एवं मधु सम भाग

मोदक से द्रव द्विगुण लेना चाहिए

वटी मात्रा – 1 कर्ष या रोग रोगी अनुसार निर्धारण

1) एलादी गुटिका – भैषज्य रलावली – रक्तपित्त चरक – क्षतक्षीण

2) संजीवनी वटी –

विडंग नागर कृष्णा पथ्या आमलकी बिभितक वचा गुडूची भल्लातक वत्सनाभ – समभाग

भावना – गोमूत्र

मात्रा – गुंजाभा वटी – 1) अजीर्ण व गुल्म में 1-1 वटी

2) विसूचिका – 2 वटी 3) सर्पदष्ट – 3 वटी 4) सान्निपात ज्वर – वटी

अनुपान – आर्द्धक स्वरस

3) चन्द्रप्रभा वटी –

त्रिफला त्रिकटू चित्रक व वचा इ. चन्द्रप्रभा नाम से – कर्चूर लिया जाता है।
 (द्वौ क्षारौ) यवक्षार सज्जीक्षार (त्रिलवण) सैंधव सौवर्चल बिडलवण उपरोक्त सर्व – दंकमात्र
 हतलोह – द्विकर्ष सिता – चतुष्कर्ष शिलाजतु – अष्टकर्ष गुगुल – अष्टकर्ष

4) शंखवटी –

रसेन्द्र व गंधक – अर्धकर्ष विष (वत्सनाभ) – कर्षन्त्रय मरीच – सर्वतुल्य
 दाध शंख – तत (मरीच) तुल्य, नागर – पंचकर्ष
 स्वर्जिका रामठ कणा सिन्धु सौवर्चल विडम सामुद्र औद्धिद – प्रत्येकी पंचकर्ष
भावना – निम्बु स्वरस
रोगधनता – ग्रहणी अम्लपित्त शूलधनी दीपनी सामदोषनाशन

5) रसोनादी वटी

भावना द्रव्य – निम्बु स्वरस रोगाधिकार – विसूचिका (वैद्यजीवन)

6) आरोग्यवर्धिनी वटी –

रस गंधक लोह अभ्रक शुल्बभस्म – समभाग
 त्रिफला – द्विगुण शिलाजतु – त्रिगुण पूरं शुधं (शु.गुगुल) – चतुर्गुण
 चित्रकमूल – गुगुल समान (चतुर्गुण) तिळा (कटुका) – सर्व समा देय
 भावना – निम्बदल अम्बु – द्विदिन गुटिका प्रगण – रजकोलफलःगामा
 गुणधर्म – मण्डलम सेवितम सैषां हन्ति कुष्ठान्यशेषतः । वातपित्तकफोदूतान् ज्वरान् नानाप्रकारजान् ॥
 देया पंचदिने जाते ज्वरे रोगे वटी शुभा । पाचनी दीपनी पथ्या हृदया मेदोविनाशिनी ॥
 मलशुद्धिकरी नित्यं दुर्धर्षक्षुत्पर्वतिनी । बहुनात्र किमुकेन सर्वरोगेषु शस्यते ॥
 आरोग्यवर्धिनी नामा गुटिकेयं प्रकिर्तिता । सर्वरोगप्रशमनी श्रीनागार्जुनयोगिना ॥ र.स. – कुष्ठ

7) लवंगादी वटी –

लवंग मरीच बिबितक फलत्वक खदिसार भावना – बबुलत्वक कषाय रोगाधिकार – कास

8) व्योषादी वटी – प्रतिश्याय

वर्ती कल्पना –

- 1) फलवर्ती / गुदवर्ती – अगुष्ठसम
- 2) योनीवर्ती – तर्जनी सम
- 3) नेत्रवर्ती – यवाकृती उदा, चन्द्रोदया वर्ती – यवाकृती
 नेत्ररोग में प्रयोग मात्रा – हरेणुमात्रा

गुगुल कल्पना –

- 1) सिहनाद गुगुल – आमवात रोगाधिकार
 त्रिफला गंधक गुगुल प्रत्येकी – 1 पल चित्रतैल (एरंडतैल) – 1 कुडव

2) त्रिफला गुगुल –

- त्रिफला – त्रिपल कृष्णा चूर्ण – 1 पल गुगुल – पंचपल
 रोगधनता – भगंदर गुल्म शोथ अर्श

गुडपाक एवं गुगुलु पाक – (वैद्यकपरीभाषाप्रदीप)

- परीक्षा – 1) दर्वीप्रलेप 2) तन्तुली भवेत्
 3) तूयपूर्ण पात्रे तु क्षिप्तो न प्लवते
 4) क्षिप्तस्तु निश्चलः तिष्ठेत् पतितः तु न शीर्यते ।
 5) सुखमर्दः सुखस्पर्शी गन्धवर्णरसान्वितः
 6) पीडितो भजते मुद्रां

गुडवद् गुगुलो पाकः रसगन्ध विशेषतः

- 1) सौभाग्य शुंठि पाक – सूतिकारोग अनुपान – अजाक्षीर
 2) मुशलीपाक – वाजीकरण
 3) हरिद्रा खंड – उदर्द शीतपित्त
 4) नारिकेल खंड – शूल

लवण कल्प –

- 1) अर्क लवण – यकृत्प्लीहा उदररोग अतिसार ज्वर विषमज्वर
 2) नारिकेल लवण – दीपन पाचन अम्लपित्त परिणामशूल, वातपित्त कफ सान्निपातज शूल

मषी कल्पना – (सुश्रुत संहिता मे वर्णन)

चतुष्टानां त्वग्रोमखुरशृंगास्थिभस्मगा । तैलाका चूर्णिता भूमिर्भवेद्रोमवती पुनः ॥ सु.चि /102

चतुष्पादो के त्वक रोम शृंग झस्थी आदी का भस्म तैलसह लगाने पर रोमसंजनन होता है ।

डल्हण – कृष्णसर्पे यदा दद्यमानोऽनिकृष्टात्वं गच्छति तदा तच्चूर्ण ‘मसी’ इत्युच्यते ; स एव
 अग्निदहामानो यदा शुक्लत्वं याति तदा ‘क्षार’ इअत्युच्यते ।

- 1) हस्तीदंत मषी रसांजन व गोमूत्र सह लगाने पर पाणितल पर भी रोम आते हैं । इन्द्रलुप्त हर
 2) त्रिफला मषी – द्रूतमंजन स्वरूप व रक्तगेधनार्थ

अयस्कृती –

तर्णन – चरक संहिता – रसायन अधिकार

सुश्रुत संहिता – कुष्ठ प्रमेह मेदोघ्न

निर्माण – तीक्ष्ण लोह आदी धातु से बनायी जाती है ।

प्रयोग – अग्निवेश (चरक) – 1 वर्ष पश्चात प्रयोग

सुश्रुत – त्वरीत प्रयोग

क्षार कल्पना –

निर्माण – क्षारवृक्ष काष्ठ (पंचांग) अग्नि मे भस्म कर जल डालकर प्राप्ती

- जल प्रमाण – 1) शारंधर – 4 पट
 2) यादवजी – 6 पट
 3) रसरलसमुच्चय – 8 पट

1) अपामार्गक्षार – श्वास गुल्म शूल बाधीर्य नाशन

2) स्नुहीक्षार – सर्वोदरनाशन, गुल्मशमन वन्हिदीपन शोफनाशन विसूचिका अजीर्ण शूलनाशन
 यकृद्वैशप्रशमन

3) यवक्षार – (अष्टगुण जल डालकर निर्माण) – दीपन पाचन मक्कशूलध्न, गुल्मप्लीहामयहर
 मधु व शिगु क्वाथ से सेवन करनेपर पार्श्वशूल बस्तीशूल हुत्शूल नाशन

क्षारसूत्र =

चक्रदत्त द्वारा सर्वप्रथम वर्णन
 भावितं रजनीचूर्णं स्नुहीक्षीरे पुनः पुनः । बन्धनात् सुदृढं सूत्रं भिनत्यर्शो भगन्दरम् ॥
 कशाटुर्बलभीरुणां गतिर्ममाश्रिता च या । क्षारसूत्रेण तां छिदयान्त शास्त्रेण कदाचन ॥ चक्रदत्त

पौत्र मान प्रारंभ

- 1) चरक – वंशी / ध्वंशी से
- 2) सुश्रुत – धन्वयास से
- 3) शारंगधर – परमाणु से
- 4) रसार्णव – त्रुटी से
- 5) रसरन्तसमुच्चय – अणु से

चूर्ण प्रकार – सूक्ष्मता के आधार पर

स्थूल चूर्ण	पृथु चूर्ण	पट चूर्ण	सूक्ष्मतर चूर्ण	सूक्ष्मतम चूर्ण
10–44 मेष	20–60 मेष	60–85 मेष	85–100 मेष	100–120 मेष
ऋग्वाच हिम फांट	आसव अर्क फांट	लेप कल्क आयंतर सेवनार्थ	गुटी वटी पर्षटी अंजन प्रक्षेप द्रव्य	भस्म पिष्टी निर्माणार्थ

चरकानुसार एकुण आसव संख्या – 84

आसव योनी – 9

चरकानुसार यवागू – 28



TIERRA

भैष्यजकल्पना

स्नेहकल्पना

स्नेहपाक नियम – जलस्नेहौषधानां तु प्रमाणं यत्र निरितम् ।

तर स्यादौषधात् स्नेहः स्नेहातोयं चतुर्गुणम् ॥ च.क. 12

कल्क	स्नेह	द्रव / जल
1/4 भाग	1 भाग	4 भाग
16 तोला = 1 कुडव	64 तोला = 1 प्रस्थ	256 तोला = 1 आढक

- स्नेहसाधनार्थ क्वाथ विधान** – 1) मृदू द्रव्य – 4 पट जल
 2) मध्य द्रव्य – 8 पट जल
 3) कठिन द्रव्य – 8 पट जल
 4) अत्यंत कठिन द्रव्य – 16 पट जल

विविध स्नेहपाक में कल्क एवं जल प्रमाण –

- 1) केवल क्वाथ से स्नेहपाक – क्वाथ द्रव्यों का कल्क स्नेह से चतुर्थांश प्रमाण
- 2) केवल कल्क से स्नेहपाक – तैल में कल्क डालकर सम्यकपाकार्थ तैल से 4 गुणा जल.
- 3) पुष्पकल्क से स्नेहपाक – स्नेह से 1/8 कल्क व जल 4 गुणा लेना है
- 4) जल से स्नेहपाक – स्नेह से 4 गुणा जल कल्क 1/4 प्रमाण
- 5) स्वरस से स्नेहपक – जल से 1/8 कल्क प्रमाण
- 6) दुग्ध दधी मांसरस तत्र से स्नेहपाक – कल्क 1/8 प्रमाण में लेना है, जल स्नेह से 4 गुणा

स्नेहसाधनार्थ दिन मर्यादा –

क्षीरे द्विरात्रं स्वरसे त्रिरात्रं तत्रानालादिषु पण्चरात्रम् ।
 द्वादशाहन्तु मूलानां वल्लीनां क्रममेव च ।
 एकाहम व्रीहिमासानां पाकं कुर्याद्विचक्षणः ॥ वैद्यक परिभाषा प्रदीप

- 1) व्रीहिमांस से स्नेहपाक – 1 रात्र
- 2) क्षीर से स्नेहसाधन – 2 रात्र
- 3) स्वरस से स्नेहसाधन – 3 रात्र
- 4) तत्रानालादि से स्नेहसाधन – 5 रात्र
- 5) मूल एवं लता से स्नेहसाधन – 12 रात्र

स्नेहपाक प्रकार एवं लक्षण – 3

स्नेहपाक प्रकार	चरकोक्त लक्षण	शारंगधरोक्त लक्षण
मृदूपाक	तुल्ये कल्केन निर्यासे	इषत्सरसस कल्कस्तु
मध्यपाक	संयाव इव निर्यासे मध्ये दर्वा विमुण्चति	कल्के नीरस कोमले
खरपाक	शीर्यमाणे तु निर्यासे	ईषतकठिण कल्कश
दग्धपाक	–	स्यादाहकृद निष्प्रयोजनः

स्नेहपाक सिद्धी लक्षण –

वर्तिवत् स्नेहकल्कः स्याद् अंगुल्या विमर्दितः ।
 शब्दहीनोऽग्निनिक्षिप्तः स्नेहः सिद्धो भवेत्तदा ॥
 यदा फेनोदगमस्तैले फेनशान्तिश्च सर्पिषि ।
 गन्धवर्णरसोत्पत्तीः स्नेहसिद्धिस्तदा भवेत् ॥ शारंधर

- 1) कल्क के अंगुली से मर्दन पर वर्ती बननी चहिए
- 2) कल्कमिश्रीत स्नेह अग्नी पर डालने पर चट चट शब्द उत्पत्ती न हो
- 3) तैलपाक मे – फेनोदगम एवं घृतपाक मे – फेनशांती
- 4) स्नेह मे गन्ध रस वर्ण उत्पत्ती

कल्प घटकद्रव्य एवं फलश्रुती –

कल्पनाम	प्रमुख घटक द्रव्य	फलश्रुती
क्षीरषटपलघृत (गुल्म)	पंचकोल + सैंधव चतुर्गुण क्षीर	प्लीहनाशन विषमज्वर मंदाग्निहर रुचिकर
जात्यादी घृत	जातीपत्र नीम्ब पटोल द्विहसीदा मंजिष्ठा मधुक सिक्थ करंज उशीर सारीवा तुथ्य	नाडीब्रण मर्माश्रीत क्लेदयुक्त गंभीर सरूज ब्रण मे बाह्य प्रयोग
त्रिफला घृत	त्रिफला, वासा स्वरस, भृंगराज स्वरस, अजादुग्ध कल्कार्थ त्रिफला, पिप्पली द्राक्षा चन्द्रन सैन्धव	नक्तान्ध्य नकुलान्ध्य कण्डू पिल्लरेग नेत्रसाव पठल काच तिमीर
ब्राह्मीघृत (अपस्मार)	ब्राह्मी स्वरस ब्राह्मी कल्क वचा कुष्ठ शंखपुष्पी	उन्माद अपस्मारहर
महानारायण तैल	बिल्व अशगंधा लकड़कारी बला अतिबला इ.	वातव्याधी जगनाशन बृंहण
महामाष तैल	द्विपंचमूल (दशमूल) क्वाथ, माष -1 आढक कल्कार्थ- अश्वगंधा कचूर देवदारो जीवनीय गण	वातव्याधे शुक्रक्षय कर्णनाद इ.
बलातैल	बलामूल दशमूल कुलत्य बीज यव बदरीवृक्ष त्वक गोदुग्ध, कल्कार्थ-जीवनीय गण इ.	गभिणी, क्षीणरेतस नर, सूतिका, वातव्याधी.
पंचगुण तैल	त्रिफला, निम्बपत्र, मथुर्छीट, गन्धबिरोजा, शिलारस राल गुगुल, निर्गुडी, कर्पूर, तर्पिन युक्तलिष्टस व केजोपुटी औंडिल	वेदनाशामक, सन्धिवात आमवात कर्णशूल
इरिमेदादी तैल	इरिमेद त्वक 100 पल, कल्कार्थ- इरिमेद लवंग गैरिक मंजिष्ठा वटप्ररोह जातीफल कर्पूर इ.	मुखरोग जिह्वा तालु ओष्ठरोग
अपामार्गक्षातैल (चक्रदत्त)	अपामार्गक्षारजल, अपामार्गक्षारचूर्ण कल्कार्थ	कर्णरोग बाधीर्य इ.
षड्बिंदु तैल -शिरोरोग	अजादुग्ध, भृंगराज स्वरस कल्क-एरड, रासना इ	शिरोरोग

सन्धान कल्पना

काल – अयोग्य काल –वर्षा ऋतु

योग्य काल- वसंत व शरद ऋतु

तापमान- 30-35 से.

अल्कोहोल प्रमाण – 5 -15 %

चरकोक्त आसव संख्या – 84

आसव एवं अरिष्ट परिभाषा =

यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मदयं स आसवः ।

अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्याद तस्य मानं पलोन्मितम् ॥ शा.

आसवारिष्टो मे जल गुड एवं प्रक्षेपादी का मान

अनुक्तमानारिष्टेषु द्रवद्रोणे तुला गुडम् ।

क्षोद्रं क्षिपेद् गुडादर्धं प्रक्षेपं दशमांशिकम् ॥ शा.

आसवारिष्ट मे मान अनुक्त होने पर –

1 द्रोण जल मे – गुड 1 तुला

गुड के आधा भाग – मधु

प्रक्षेप द्रव्य – गुड का दशमांश

अपक्वरस सीधु	पक्वरससीधु
ज्ञेयः शीतरसः सीधुराक्वमधुरद्रवैः। - इक्षु के रस आदि मधुर रस को अग्नि पे पक्व किये बिना जो सन्धान किया जाता है उसे अपक्वरस सीधु कहते हैं।	सिद्धः पक्वरसः सीधुः सम्पक्वमधुरद्रवैः। - इक्षु आदि मधुर रसो को अग्नि पर पक्व कर जो सन्धान किया जाता है उसे पक्वरस सीधु कहते हैं।
जरणीय विवन्धन स्वर्वर्णविशोधन लेखन शोथ उदर अर्श नाशन	दीपन हृदय रुच्य वर्णकृद जरण शोष शोथ अर्शहर

अनु	सन्धान प्रकार	परिभाषा	: गुणधर्म
1	सुरा	परिपक्वान्न सन्धानसमुत्पन्नां सुरां जगुः। गोधूम तण्डुल आदी धान्य को अग्नि पर पक्व कर तदुपरांत सन्धान किया जाता है	कास अर्श ग्रहणी मूत्राघात वातान्धन, स्तन्यरक्तक्षयाहेता, बृहण दीपन
2	प्रसन्ना	सुरामण्डः प्रसन्ना । सुरा के ऊपर का मण्ड भाग	छर्दि अरोचक हुद कुक्षिशूल शामक अर्श आनाह विवन्धन
3	कादम्बरी	स्यात्ततः कादम्बरी धनः। प्रसन्ना के नीचे का धन भाग	-
4	जगल	तदधो जगलाद् धनः। सुरापात्र में कादम्बरी के नीचे का और धन भाग	ग्राही उष्ण पाचन, तृष्णा कफ शोथ प्रवाहिका आटोप अर्श शोष
5	मेदक	मेदको जगलाद् धनः। मद्य अल्प मात्रा में होता है सुरापात्र में जगल के नीचे का धन भाग	-
6	वक्कस/सुराबीज सुराकल्क/किण्व	वक्कसो हुत्सारः स्यात्सुराबीजं च किण्वकम् सुरापात्र में अवशिष्ट भाग, मद्यांश नहीं होता है	निस्सार होने से विष्टंभी वातकर दीपन मूत्रपुरीषकर विशद अल्पमदकृद गुरु

मैरेयक / सुरासव – असव एवं सुरा एक पात्र मे एकत्र कर पुनः सन्धान करते हैं उसे मैरेयक कहते हैं

मैरेयो नाम सुरासवयोः – डल्हण

गुणधर्म – तीक्ष्ण कषाय मदकर, अर्श कफ गुल्मनाशन, मेदोअनिलहर, मधुर गुरु.

वारूणी – यत्तालखर्जुररसैः सन्धिता हि वारूणी । शा.

ताड एवं खर्जुर के रस को सन्धान करके प्राप्त की जाती है । (नीरा /ताडी)

गुणधर्म – पीनस आध्मान शूलनाशन हृदु लघु तीक्ष्ण

कोहल – यवसकुकृत कोहलः ।

यव एवं गेहु के सत्रु से निर्मित मद्य

चक्रपाणी – मधूलक

डल्हण – कौहलिका

गुणधर्म – त्रिदोषकृद भेदन अवृष्टि मुखप्रिय

सन्धान की अम्लकल्पानाएः

1) शुक्रकल्पना –

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च ।

यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तत् शुक्रमभिधियते ॥ शा.

कन्द मूल फल आदी मे स्नेह लवण आदी डालकर एक सप्ताह तक सन्धा करने पर जो प्राप्त होता है ।

गुणधर्म – रक्तपित्तकर, छेदन, पाचन, वैस्वर्यकर, जरण उलेघपाण्डुहर, ऋमीहर, मूत्रल हुदय, तीक्ष्णोष्ण कटूपाकी

2) गुडशुक्र – उपरोक्त संधान विधे गृड एवं तीलतैल मिलाकर की जाती है उसे गुडशुक्र कहते हैं ।

3) चुक्रकल्पना –

विनष्टमम्लतां जातं मदयं वा मधुरद्रवम् ।

विनष्टः सन्धितो यस्तुः तत् चुक्रमभिधीयते ॥ शा.

जो मदय नष्ट होकर अम्लता को प्राप्त हो जाय अथवा मधुर द्रव्य बिगड़कर अम्ल हो जाय उसे चुक्र कहते हैं

4) तुषोदक / तुषाम्बु – माष के तुष भृष्ट कर उसमे यव चूर्ण मिलाकर चार पट जल मे पक्व कर अर्धावशेष रहने पर संधान करे उसे तुषोदक कहते हैं । (वैद्यकपरिभाषाप्रदीपनुसार)

– अपक्व यव का चूर्ण कर जल मिलाकर मृत्यात्र मे संधान करे यह ‘तुषाम्बु’ है (शारंगधगनुसार)

गुणधर्म – दीपन हुदय हुत्याण्डुकृमीरोगनुत

5) सौवीरक – यवैस्तु निस्तुषेः पक्वैः सौवीरं सन्धितं भवेत् । शा.

यव को निस्तुष कर 10 गुण जल मे पक्व करे । सिद्ध होनेपर संधान करे । उसे सौवीरक कहते हैं

गुणधर्म – भेदन ग्रहणी अर्श विकारनाशन

6) काण्जिक-आरनाल-धान्याम्ल –

कुल्माषधान्यमण्डादिसन्धितं काण्जिकं विदुः ।

शाली धान्य एवं कुल्माष 8 गुण जल देकर पक्व करे । सिद्ध होनेपर संधान करे । 10 दिन पश्चात वस्त्रपूत कर पात्र मे रख ले ।

गुणधर्म – दाहनाशन स्पर्शात्, पानात् तु पवनकफतृष्णाहरं, लघु, तैक्ष्णयात् कफहरं,

गण्डुषधारण करने से मुखवैस्यदौर्गन्ध्यमलशोषकलमापहम

7) सण्डाकी – सण्डाकी सन्धिता ज्ञेया मूलकैः सर्षपादिभिः । शा.

मूलक सर्षप सैन्धव जीरक हिंगु इनको जल के साथ एकत्र कर घडे मे संधान करे

गुणधर्म – रोचन गुरु पित्तश्लेषकर

कल्पनाम	रोगाधिकार	घटकद्रव्य	गुणधर्म
सारस्वतारिष्ट	रसायन	ब्राह्मी शतावरी विदारी हरीतकी उशीर प्रक्षेप-मधु शर्करा धातकीपुष्प एला स्वर्णपत्र. निर्माण -स्वर्णकुम्भ/मृत्यान्न मे	वाग्मिशुद्धीकर रसायन हुदय ओजस्कर स्मृतीप्रद रजोदोषहर अनुपान-पय, मात्रा- 1 शाण
द्राक्षारिष्ट		द्राक्षा गुड धातकीपुष्प दालचिनी एला तेजपत्र नागकेश शर मरिच इ.	उरःक्षत कास क्षय श्वास गलामय बलकर मलशोधन
दशमूलारिष्ट		दशमूल, लोधि गुडूचि खदिर अष्टवर्ग इ. प्रक्षेप- मधु गुड धातकीपुष्प कंकोल इ. सन्धान समये कतक फल निर्मलीकरणार्थ डाले	ग्रहणी श्वास कास वातव्याधी कृशानां पुष्टिजननो वन्ध्यानां पुत्रद: परम, वाजीकर बृहण
अर्जुनारिष्ट पार्थिवारिष्ट	हुद्रोग	अर्जुनत्वक द्राक्षा मधुकपुष्प संधानार्थ धातकीपुष्प व गुड	हृत्कुफुसगदान सर्वान हन्त्ययं बलवीर्यकृद
अशोकारिष्ट	स्त्रीरोग -प्रदर	अशोकत्वक गुड धातकीपुष्प अजाजी मुस्तक शुंठी अम्रमज्जा रक्तचंदन त्रिफला नीलकमलपुष्प	असृगदर, ज्वर रक्तपित्त मंदाग्नि अरोचक मेह शोथ इ.
कुमार्यासव		कुमारीस्वरस गुड मधु तीक्ष्णलोह त्रिकटू लोधि सुवण्णोमाक्षिक धातकी इ	अष्टौदरनाशन विशतीमेहनाशन उदावर्त अपस्मार मूत्रकृष्ण अश्मरी शुक्रदोष बल्य वृष्य
चन्दनासव	शुकमेह	श्वेतचंदन उशीर गम्भारी गुड शर्करा धातकीपुष्प वटांकुर	शुक्रमेनाशन बलपुष्टीकर वहीदीपन

विविध कल्पना

रागाडव

सर्वप्रथम वर्णन सुश्रुत ने किया है।

नरहरी पण्डित ने फलघाडव का पर्याय 'दाडिम' दिया है। राजनिधण्टु- अनेकार्थवर्ग

परिभाषा – 1) स तु दाडिममृद्धिकायुतः स्याद्रागाषाडवः। सुश्रुत

कृताकृतमुदगयुष मे दाडिम एवं मृद्धिका स्वरस मिलाने से वह मुदगयुष 'रागाडव' कहलाता है।

2) आम अवस्था मे आम त्वकरहीत करके उसके टुकडे करके पक्व कर सुपक्व होनेपर मरिच एला इ. से सुवासीत करनेपर 'रागाडव' तैयार होता है – वैद्यकशब्दसिंधु

3) उपरोक्त विधि से आमफल टुकडे समभाग गुड मे चतुर्गुण जल के साथ पक्व कर उसमे तीलतैल एवं शुंठी मिलाकर 'रागाडव' तैयार होता है।

डल्हणानुसार राग एव घाडव मे भेद

राग	घाडव
सिता सैधव वृक्षाम्ल परूषक जम्बुफल इसमे राजिका चूर्ण मिलाकर संधान करने से प्राप्त	मधुर अम्ल लवण संयोग से बनाया जाता है

आचार्य घोडल ने 'गदनिग्रह' मे अनेक प्रकार के घाडव का वर्णन किय है उदा. कपित्थघाडव द्राक्षाघाडव.

घाडव गुणधर्म – रेचन लघुपाकी बृहण हुदय वृष्य दीपन तृष्णानाशन.

खड -काम्बलिक

आचार्य सुश्रुत द्वारा सर्वप्रथम वर्णन, डल्हण द्वारा परिभाषा वर्णन, दोनों को यूषविशेष कहा है

डल्हण नुसार खड भेद – 2

1) सतक्रशमीधान्य – निस्तुष्ट कर शमीधान्य (मुदग माष आदी) को तक्र के साथ पाक करे।

यूष जैसा होनेपर जीरक लवण मरीच आदी से पान करे

गुणधर्म – स्निग्ध सांग्राहीक

2) सतक्रशाक – तक्र के साथ कपित्थ चांगेरी जीरक चित्रकमूल मरीच मिलाकर पाक करे आधा शेष रहने पर लवण मिलाकर पान करे

जेज्जट नुसार खड – दधि दाढ़िम माष शाक एवं स्नेहयुक्त व्यंजन को एक साथ पकव करना खड है

काम्बलिक –

दधिमस्त्वम्लसिधस्तु यूषः काम्बलिकः स्मृतः । डल्हण

दधिमस्तु में अष्टमांश मुदग को सिद्ध कर यूज निर्माण करे। पुनः इसमें सौवर्चल जीरक निष्पुक एला आदी डालकर पान करे।

खड काम्बलिक गुणधर्म – वातकफध्न हुदय बल्य दीपन



तक्रकल्पना – चरकानुसार प्रकार – 3

1) रुक्षा – पूर्ण स्नेहरहीत

2) अर्ध स्नेहयुक्त

3) पूर्ण स्नेहयुक्त

भावप्रकानुसार प्रकार – 5

तक्र प्रकार	परिभाषा	गुणधर्म
1-घोल	1) ससरं निर्जलं घोलं । 2) सस्नेहमजलं मथितं घोलमुच्यते । जल न मिलाते हुए दधि मंथन कर मिलाते हैं, स्नेहयुक्त होता है	शर्करायुक्त होनेपर वातपित्तध्न शुक्रल दीपन बल्य कार्य करता है (सालवत गुणधर्म)
2- मथित	मथितं तु असारोटकम् । दधि से स्नेह (मलाइ) भाग पृथक करके मथित किया जाता है	कफपित्तध्न होता है
3- तक्र	तक्रं पादजलं प्रोक्तं । स्नेहयुक्त दधि में 1/4 जल मिलाकर तक्र बनता है ।	वातकफध्न हुदय मूत्रकृच्छ्र स्नेहव्यापदप्रशामन अवृष्ट
4-उंदश्चित	उदश्चित्तर्मर्धवारिकम् । स्नेहयुक्त दधि में अर्धा भाग जल मिलाकर मंथन करनेपर 'उंदश्चित' बनता है	कफकर बल्य आमध्न
5- छच्छिका	छच्छिका सारहीना स्यात्वच्छा प्रचुरवारिका । स्नेहयुक्त दधि में आधा भाग जल इलाकर मंथन करने पर सारहीन (स्नेहरहीत) करे उसे छच्छिका कहते हैं	शीत लघु पित्तश्रमतृष्णाहर कपहकर लवणयुक्त करने पर दीपन पाचन कार्य करता है

दोषानुसार तक्र में प्रक्षेप – वात – सैंधव पित्त- शर्करा कफ- त्रिकटू या यवक्षार

कटवर- स्नेहयुक्त दधि मंथन + दधि से 1/4 जल = पुनः मंथन कर तक्र निर्माण, उसमेसे स्नेह पृथक न करे।

दधिकूर्चिका एवं तक्रकूर्चिका -क्षीर को दधि के साथ मिलाकर अग्निपर पाक करना या तक्र के साथ पाक करना

लेप कल्पना

द्रव्यमार्द्दि शिलापिष्ठं शुष्कं वा सद्रवं तनु ।
देहे प्रलेपनार्थं तल्लेप इत्युच्यते बुधैः ॥ यादवजे त्रिकमजी

प्रकार – सुश्रुतनुसार – 3

- 1) प्रलेप – शीत तनु रक्तपित्तविकारघ्न
- 2) प्रदेह – घन उष्ण वातकफविकारघ्न
- 3) आलेप – मध्यमोऽन्न आलेपः

लेप मे स्नेह प्रमाण –

- वातज रोग – कल्क का 1/4 भाग
- पित्तज रोग – कल्क का 1/6 भाग
- कफज रोग – कल्क का 1/8 भाग

मुखलेप प्रकार एवं प्रमाण –

- 1) दोषध्न – 1/4 अंगुल
- 2) विषध्न लेप – 1/3 अंगुल
- 3) वर्ण्य लेप – 1/2 अंगुल

यादवजीनुसार – 2

- 1) प्रलेप
- 2) प्रदेह

लेप प्रमाण (जाडी)

- चरक – त्रिभाग अंगुष्ठ (1/3 अंगुष्ठ)
- सुश्रुत – आर्द्रमाहिष चर्म उत्सेध

लेप नाम (शारंगधरोक्त)	घटकद्रव्य
दोषध्न लेप	पुन्नर्वामूल देवदारू शुंथि सर्षप शिगुमूलत्वक
दशांगलेप/विषध्नलेप	शिंरीषमूलत्वक यष्टि तगर रक्तचंदन हरीद्रा दारूहरिद्रा जटामांसी एला कुछ बालक(उशीर)
मुखकान्तिप्रदलेप	रक्तचंदन मंजिष्ठ लोक्ष कुछ प्रियंगु वटांकुर मसूर

मलहर कल्पना

गन्धकादय मलहर (रसतरंगिणी) – सिक्थ तैल आमलसार गांधक गिरिसिदुर टंकण कर्पूर

गुणधर्म – चर्मरोग, व्रण इ.

राल (सर्जरस) मलहर – तिलतैल सर्ज(राल) तुत्थ स्फटिका (फिटकरी)

गुणधर्म – अग्निदग्ध व्रण सामान्य व्रण दाह

TIERRA

धूप कल्पना

दशांगधूप – गोधृत श्वेत सर्षप श्वेत सारीवा कुछ भल्लातक वचा बस्तलोम तगर भूर्जपत्र गुउगुल

उपयोग – बालग्रह

अगदतंत्र

अगदतंत्र – तत्र अगदतंत्रं नाम सर्पकीटलूतामूषिकादिदृष्टविषव्यंजनार्थं विविधविषसंयोगोपशमार्थं च । सु.सु 1

नामकरण – चरक – विषगरवैरेधिकप्रशमन

सुश्रुत – अगदतंत्र

वाघट – दंष्ट्रचिकित्सा

कौटिल्य अर्थशास्त्र – जांगुलि

अगदतंत्र वर्णन –

चरक – चिकित्सास्थान – 24

अष्टांगहृदय – उत्तरस्थान – 40–48

काश्यपसंहिता – सर्वविधिविषप्रतिपादिका

भावप्रकाश – चिकित्सास्थान – अध्याय – 67

भैषज्यरलावली – विषरोगचिकित्साप्रकरण

चिकित्साकलिका – विषचिकित्सा

सुश्रुतसंहिता कल्पस्थान – 1–8

अष्टांगसंग्रह – उत्तरस्थान – 35–38

हारीतसंहिता – तृतीयस्थान अध्याय – 56

वसवराजीयम् – प्रकरण – 21–22

योगरलाकर – उत्तरार्थ – विषाधिकार

विष प्रागृत्पत्ती – समुद्रमंथन से

स्थावर व जांगम योनी में नियोजन – ब्रह्माद्वारा

अम्बुसंभवं पावकोपमम्

विष पर्याय – क्षेत्र, गरल, कालकूट, मूगर, कुलाकुल, कालकल्प गर, गद

विष निरूक्ति – जगत् विषण्णं तं दृष्टवा तेनासौ विषसंज्ञितः । च. चि. 23/5

विष वर्गीकरण –

1) चरक व सुश्रुतानुसार – 1) स्थावर – बानस्पतीज 2) जांगम – प्राणीज

2) अष्टांगहृदयानुसार – 1) स्थावर 2) जांगम 3) कृत्रिम (गंरसंज्ञक)

3) काश्यपानुसार – 1) स्थावर 2) जांगम 3) संयोगज – अ) गरविष (अविष) ब) कृत्रिम विष (सविष)

4) शारंग्धरानुसार – 1) स्थावर 2) जांगम 3) कृत्रिम – अ) गरविष ब) दूषिविष क) विष ड) उपविष

5) रसशास्त्रीय ग्रंथानुसार – 1) विष 2) उपविष

कृत्रिम विष प्रकार – 1) गरविष 2) दूषिविष

6) भावप्रकाश / शारंग्धर/ धन्वन्तरि निधांटु नुसार – विष – 9 उपविष – 7

7) रसतरंगिणीनुसार – विष – 9 उपविष – 11 रसोपनिषदनुसार उपविष – 40

विष – 1) हालाहल 2) कालकूट 3) शृंगक 4) प्रदीपन 5) सौराष्ट्रीक 6) ब्रह्मपूत्र

7) हारिद्रक 8) सकुक 9) वत्सनाभ

रसक्रिया व रसायन मे – वत्सनाभ सर्वोत्तम माना गया है ।

उपविष – 1) स्नुही 2) अर्क 3) करवीर 4) कलिहारी 5) धन्तुर 6) गुंजा 7) अहिफेन

8) भल्लातक 9) कारस्कर

स्थावर विष अधिष्ठान – 10 मूल पत्र फल पुष्प त्वक क्षीर सार निर्यास धातु कंद

जांगम विष अधिष्ठान – 16 दृष्टि निश्चास दंष्ट्रा नख मूत्र पुरीष शुक्र लालास्त्राव आर्तव मुख संदंश

विशर्धित (गुद) तुण्डास्थि पित्त शुक्र शव

अष्टांगसंग्रह ने विशर्धित संदंश व तुण्डास्थि के स्थान पर स्पर्श अस्थी व रक्त का समावेश किया है ।

स्थावर अधिष्ठान व संख्या-10 एकुण विष संख्या -55

अनु	अधिष्ठान	संख्या	नाम
1	मूलविष	8	क्लीतक करवीर गुंजा सुगंध गर्गक करघाट विद्युत् शिखा विजया
2	पत्रविष	5	विषपत्रिका लम्बा वरदारू करम्भ महाकरम्भ
3	फलविष	12	कुमुद्धति वेणुका करम्भ महाकरम्भ कर्कटक रेणुक खद्योतक चर्मरी इभगन्धा सर्पघाती नन्दन सारपाक
4	पुष्पविष	5	वेत्र कादम्ब वल्लीज करकम्भ महाकरम्भ
5	त्वक 6 सार 7 निर्यास	7	अन्नपाचक कर्नरीय सौरीयक करघाट करम्भ नन्दन नाराचक
8	क्षीरविष	3	कुमुदधनी स्नुही जालक्षीरी
9	धातुविष	2	फेनाश्म हरताल
10	कन्दविष	13	कालकूट वत्सनाभ सर्षप पालक कर्दमक वैराटक मुस्तक श्रृंगीविष प्रपुंडरीक मूलक हालाहल महविष कर्कटक

स्थावर विषों के विशेष गुण –

अनु	स्थावर विष नाम	गुण
1	मूल	उद्देष्टन प्रलाप मोह
2	पत्र	ज़ंभा अंगोद्वेष्टन श्वास
3	फल	मुष्कशोफ दाह अन्द्रेष
4	पुष्प	छर्दि आधमान मोह
5	त्वक 6 सार 7 निर्यास	आस्थदुर्गंध पार्श्व शिरंरुजा कफसंस्त्राव
8	क्षीर	फेनागम विडभेद गुरुजिहता
9	धातुज	हृत्यीडन मूच्छा नालुदाह
10	कंदविष	कंदविशेषानुसार विभिन्न गुण

जांगम विष अधिष्ठान – 16

अधिष्ठान	जन्तु	अधिष्ठान	जन्तु
1. नख	मार्जर श्वान मकर मण्डूक पाकमत्स्य शम्बुक प्रचालक गृहगोथिका पशु किट	9. द्रुष्टि	दिव्यसर्प
2. पुरीष 3. मूत्र	चिपिट पिच्चिटक कषायवासिक सर्षपक तोटक वर्चकिट कौण्डिन्यक	10. निशास	
4. आर	वृश्चिक वरटी विश्वम्भर उच्चिटिंग राजीवमत्स्य मेदक सारीकामुख समुद्रवृश्चिक चित्रशिर सराव	11. दंष्ट्रा	भूमिसर्प गोथा
5. अस्थी	विषमृत प्राणी अस्थी सर्पदन्त वरटी मत्स्य अस्थी	12. शुक्र	मूषक
6. शुक्र	उच्चिटिंग सूक्ष्मतुंड वरटी शतपदी शुक्र वलभिका	13. आर्तव	लूता
7. तुण्ड	शृंगी भ्रमर	14. लाला	
8. पित्त	शकुलि मत्स्य रक्तराजी वरटीमत्स्य	15. शव	किट सर्प
		16. मुखसंदंश	माक्षिका कणभ जलौका

विष गुण वर्णन – च.चि. 23/23 सु. क. 2/19 अ.हु. 35/7 शा पू. 4/22

चरक - 10	सुश्रुत - 10	अष्टांगहुदय-11	शारंधर- 8
रूक्ष	रूक्ष	रूक्ष	
उष्ण	उष्ण	उष्ण	आग्नेय
तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	छेदी
सूक्ष्म	सूक्ष्म	सूक्ष्म	सूक्ष्म
आशु	आशु	आशुकर	मदावह
व्यवायी	व्यवायी	व्यवायी	व्यवायी
विकासी	विकासी	विकासी	विकासी
विशद	विशद	विशद	
लघु	लघु	लघु	
अनिर्देश रस	अपाकी	विषमपाकी	जीवितहर
-	-	अव्यक्तरस	योगवाहि

विष गुण प्रभाव –

विष गुण	चरक	सुश्रुत
1) रूक्ष	वातप्रकोप	वातप्रकोप
2) उष्ण	अशैत्य (उष्ण) - पित्तप्रकोप	पित्तप्रकोप, रक्तप्रकोप
3) तीक्ष्ण	मर्मधन	मर्ती मोहयेत्, मर्मबंधन छेदन
4) सूक्ष्म	रक्तप्रकोप	शारीरवयव प्रवेशन
5) आशु	आशु व्याप्तोति केवलं देहम्	शीघ्र प्राणहरण
6) व्यवायी	आशु व्याप्तोति केवलं देहम्	प्रकृतिं भजेत् (सर्व शारीर प्रसरण)
7) विकासी	प्राणधन	दोषधातुमल क्षपण
8) विशद	असक्तगतीदोष	अतिरिच्यते (कहीपर रुकता नहीं)
9) लघु	दुरूपक्रम	दुश्चिकित्स्य
10)	अव्यक्तरस - कफप्रकोप	अविपाकित्वात् - दुर्हरं

TIERRA

विष	मदय	ओज
लघु	लघु	गुरु
रूक्ष	रूक्ष	स्नाध
उष्ण	उष्ण	शीत
तीक्ष्ण	तीक्ष्ण	मृदू
सूक्ष्म	सूक्ष्म	बहल (सान्द्र)
आशुकारी	आशुकारी	प्रसाद
व्यवायी	व्यवायी	स्थिर
विकासी	विकासी	इलक्षण
विशद	विशद	पिच्छील
अनिर्देश रस	आम्ल	मधुर

विष गति –

जंगमं स्यादधोभागमूर्ध्वभागं तु मूलजम् ।
तस्मादंष्ट्रा विषं मौलं हन्ति मौलं च दंष्ट्रजम् ॥ च.चि. 23/17

1) स्थावर विष – अधोगति

2) जांगम विष – उर्ध्व गति

1) जांगम विष (दंष्ट्रा विष) संसर्ग पर – स्थावर (मूलविष) प्रयोग

2) स्थावर विष (मूल विष) संसर्ग पर – जांगम (दंष्ट्रा विष) प्रयोग

स्थावर विष सामान्य लक्षण –

स्थावरम तु ज्वरं हिकाकां दन्तहर्षं गलग्रहम् ।

फेनवम्य अरुचि श्वास मूर्छाश्व जनयेद् विषम् ॥ च. चि. 23/16

जांगम विष सामान्य लक्षण –

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं स पाकं लोमहर्षणम् ।

शोफं चैवातिसारं च जनयेज्जंगमं विषम् ॥ च. चि. 23/15

विष की शरीर मे क्रिया – (वाग्भट/संग्रह)

1) शरीर प्रवेश पश्चात – प्रथम रक्त को दूषित करता है

2) ततपश्चात कफ पित्त व वात को व उनके आशय को दूषित करता है ।

3) ततपश्चात हृदय से प्रवेश कर मनुष्य की मृत्यु को कारण होता है ।

विष पर ऋतु का प्रभाव –

1) विषकी योनी अम्बु होने के कारण वर्षा ऋतु मे गुड समान क्लेदयुक्त होकर सर्व शरीर म प्रसरण

2) शरद ऋतु मे अगस्ती ताग के उदय से मन्दवीर्य पड जाता है ।

दूषिविष व गरविष वर्णन –**1) दूषिविष –**

निरुक्ति – दूषितं देशकालान्नदिवास्वप्नैरभीक्ष्यतः ।

यस्माद् दूषयते धातून् तस्माद् दूषिविषं स्मृतम् ॥ सु. क. 2/33

देश (आनूप), काल (शीतदुर्दिन), अन्न (सुराकुलत्थादी), दिवास्वाप, आदी कारणो से विष धातुओ को दूषित करता है उसे दूषिविष कहते है ।

पूर्वरूप – निद्रा, गुरुत्व, विजृम्भणं, विश्लेष (संधिशैथिल्य), हर्ष, अंगमर्द**लक्षण –** यत् स्थावरं जङ्गम कृत्रिमं वा देहादशेषं यद् अनिर्गतं तत् ।

जीर्ण विषघ्न औषधीभिः हतं वा दावाग्नि वात आतपशोषितं वा ॥

स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषिविषतामुपैति ।

दीर्घाल्पभावात् न निपातयेत् तत कफावृत्तम वर्षगणानुबन्धि ॥ सु. क. 2/25,26 वा, उ. 35/33

1) स्थावर जांगम या कृत्रिम विषका अंश देह से अशेष निर्गत न होनेपर

2) जीर्ण होकर / विषघ्न औषधी से हत होकर / दावानल वात आतप से शोषित होनेपर

3) स्वाभाविक रिती से गुणहीन हो जाता है उसे दूषिविष संज्ञा दी जाती है ।

अ) वीर्याल्पभाव युक्त होने से मनुष्य को शीघ्र नहीं मारता है

ब) कफावृत होने से बहुत वर्षों तक बना रहता है (वर्षगणानुबन्धी)

दूषिविष कार्य – अन्नमद, अविपाक, अरोचक, मंडल, कोठ, मोह, धातुक्षय, पादकराअस्यशोफ, दकोदर, छर्दि, अतिसार, वैवर्ण्य, मूच्छा, ज्वर, तृष्णा, उन्माद, आनाह, शुक्रक्षय

दूषिविष के अवयवानुसार लक्षण – (सु.क.2)

- 1) भिन्नपुरीष (अतिसार), विगंध वैरस्यमुख, पिपासा, मूच्छा, वमन, गदगदवाक, दूष्योदर
- 2) आमाशयस्थ दूषिविष – वातकफरोगी
- 3) पक्वाशयस्थ दूषिविष – वातपित्तरोगी
- 4) नर व्यस्तशिरोहङ्ग व विलूनपक्ष (शरीर व शिर पर बालरहीत) होता है
- 5) चरक – रक्तुष्टी होनेपर कोठ व किटिभ उत्पत्ती

दूषिविष साध्यासाध्यत्व-

नविन दूषिविषज रोग – साध्य संवत्सरोत्थित - याप्य
क्षीण अहितसेवी पुरुष मे – असाध्य

दूषिविष चिकित्सा-

दूषिविषार्तम सुस्विन्नं उर्ध्वं च अर्दं शोधितम् ।

पाययेत् अगदं नित्यमिमं दूषिविषापहम् ॥ सु. क. 2/50

चरक – दूषिविषे रक्तस्थिते सिराकर्म पञ्चविधम् । च. चि. 23/63

दूषिविषारी अगद – (सुश्रुत/ वाग्भट)

पिप्ली ध्यामक (रेहिष), मांसी, शाबरलोध, परिपेलव (केवटीमोथा), सुवर्चिका, सूक्ष्मैला, स्वर्णगैरिक इनका मधु के साथ लेहन करे

गरविष –

वाग्भट – नाना प्राणीयो के मल, विरुद्ध औषधीयो के भस्म तथा अल्प वीर्यवाले विषो के योग को गरविष संज्ञा दी जाती है ।

चरक – गरसंयोगजं चान्यद् गरसंजं गरप्रदम् ।

कालान्तरविकात्वात् तदाशु हरत्यसून् ॥ च. चि. 23/14

स्थावर व जांगम के अतिरिक्त संयोग से उत्पन्न होनेवाला यह गर नामक विष है ।

गदप्रदम – अनेक रोगो को उत्पन्न करनेवाला है ।

इसका पचन देर से होने से इमिघ प्राण को नष्ट नहीं करता ।

गरविष प्रयोग – स्त्रीयो द्वारा वशीकरणार्थ या शत्रुद्वारा प्रयुक्त किया जाता है ।

लक्षण – पाण्डुता, कृशता, अल्पाग्नि, मर्मप्रधमन (हुदस्पंदन), आध्मान, हस्तपाद शोथ, जठर, ग्रहणीदोष. यद्धमा, गुल्म, क्षय ज्वर, स्वप्न मे मार्जर गोमायु व्याल को देखता है ।

गरविष चिकित्सा-

- 1) वमन – वमनार्थ सूक्ष्म ताम्र रज मधु सह सेवन – इससे हुदविशोधन
- 2) हुदविशोधन पश्चात 1 शान मात्रा मे सुवर्ण मध सह लेहन – हेम सर्वाणि विषाणि आशु नियच्छति
- 3) नागदन्त्यादी धृत व अमृत धृत पान

विषसंकट-

विषप्रकृतिकालान्न दोषदूष्यादिसंगमे ।

विषसंकटमुद्दिष्टं शतसैकोत्र जीवति ॥ अ. स. उ. 40/160

- 1) विष प्रकृति – पित्तप्रकृति
- 2) विषकाल – वर्षा या ग्रीष्म
- 3) अन्न – कटू या तिक्त(तील कुलत्थ, सर्षप)
- 4) दोष – पित्त
- 5) दूष्य – रक्त
- 6) आदी – क्षुधा तृष्णा .

विषवृद्धी के कारण –

क्षुतृष्णा घर्म दौर्बल्य क्रोध शोक भय श्रमैः ।

तिलपुष्प फलाद्याण भूबाष्य घनगर्जितैः ॥

हस्तिमूषिकवादित्र निस्वनैः विषसंकटैः ।

पुरोवातोत्पलामोदमदनैर्वर्धते विषम् ॥ अ. हु. उ. 35/61,62

स्थानानुसार विष लक्षण – (सु. क.1/40)

- 1) आमाशयस्थ विष – मूर्च्छा, छर्दि अतिसार आध्मान दाह वेपथु इन्द्रियाणाम च वैकृत्यं चिकित्सा- मदनफल वा कटुतुम्बी से वमन
- 2) एवं क्वाशयस्थ विष – दाह, मूर्च्छा अतिसार तृष्णा इन्द्रियवैकृतम, आटोप पाण्डुता काश्य, चिकित्सा- निलिनी फल द्वारा विरेचन, दूषिविषारी अगदपान

वेगानुसार विषलक्षण –

वेग	चरक च. चि. 23/18	सुश्रुत सु.क. 2/35
प्रथम वेग	तृष्णा मोह दलहर्ष प्रसेक वमथु क्लम	स्तव्य श्याव जिह्वा, मूर्च्छा, श्वास
द्वितीय वेग	वैवर्ण्य, भ्रम वेपथु मूर्च्छा जृम्भा चिमचिमायन	वेपथु साद दाह कणठरुजा, आमाशय प्राप्त विषद्वारे हुदय वेदना
तृतीय वेग	मण्डल, कण्डु शोथ कोठ	तालुशोष आमाशयशू नेत्रदुर्बर्ण हरीत व शोथयुक्त
चतुर्थ वेग	दाह छर्दि अंगशूल मूर्च्छा (वातादीसे)	पक्वामाशयतोद्द छिकका आंत्रकूजन शिरोगौरव
पंचम वेग	नीलादीनां तमसश दर्शन	कफप्रसेक वैवर्ण्य पर्वभेद सर्वदोषप्रकोप पक्वाधाने वेदना
षष्ठ वेग	हिकका	प्रजाप्रणाश, भृश अतिसार
सप्तम वेग	स्कंधधंग	स्कंधपृष्ठकटीभंग, सन्निरोध (श्वासावरोधसे मृत्यु
अष्टम वेग	मृत्यू	----

चरकानुसार – प्रथम वेग – रसाश्रित

द्वितीय वेग – रक्ताश्रित

तृतीय वेग – मांसाश्रित

वेगानुसार चिकित्सा –

वेग	चरक	सुश्रुत
प्रथम वेग	त्वक मासगत- दहन, सद्यविषपान- वमन	वमन, शीताम्बुसेचन
द्वितीय वेग	रक्तगत - विरेचन, हृदयरक्षण-मधुसर्पिंमज्जा गैरीक सुपक्व इक्षु आदी पान	वमन + विरेचन
तृतीय वेग	लेखन व शोथघ्न गुणयुक्त क्षारागद मध्वम्बुसह	अगदपान , नस्य, अंजन
चतुर्थ वेग	गोमय रस व कपित्थ सर्पि मधुसह पान	स्नेहमिश्रित अगदपान
पंचम वेग	काकाण्ड व शिरीष का नस्य व अंजन	मधुक (यष्टी) क्वाथ मधुसह अगदपान
षष्ठ वेग	संज्ञास्थापन- गोपित्तरजनीमंजिष्ठापिप्ली सेवन	अतिसारवत्ता चिकित्सा, अवपीड नस्य
सप्तम वेग	दंष्ट्रा विषार्थ- स्थावरविषपान स्थावर विषार्थ- दंशनं (विषेले जन्तु का दंश)	मूर्धन्स्थाने काकपद कर उसपर रक्तमिश्रीत मांस आस्थापन, अवपीड नस्य

आशयानुसार विष साध्यासध्यत्व-(अ.हु. उ.35/70)

- 1) कफाशयगत विष – अयनात (परिश्रम के बिना) साध्य
- 2) पित्ताशयगत विष – यलात (परिश्रम) से साध्य
- 3) वाताशयगत विष – दुसाध्य वा असाध्य

विष चिकित्सा मे धूत की श्रेष्ठता –

सर्वेषु सर्वावस्थेषु विषेषु न धृतोपमम् ।

विदयते भेषजं किञ्चित् विशेषात् प्रबलं अनिले ॥ अ.हु. क. 35/69

चरकोक्त विषोपक्रम – 24

- 1) मन्त्र- देवर्षि आदी द्वारा मंत्रपठन
- 2) अरिष्ट बंधन- दंश स्थान से 4 अंगुल उपर, प्रकार – 2. रस्सी से व मंत्र से
- 3) उत्कर्तन- मर्मस्थान छोड़कर दंशस्थान पर कर्तन करना
- 4) निष्ठीडन- मर्मस्थान व संधीगत स्थानज विष को पीडन कर बाहर निकालना
- 5) चूषण – सर्पदंश छेदन पश्चात विषयुक्त रक्त को चूसकर निकालना
- 6) अग्निकर्म/ दहन- सुश्रुतानुसार सर्पदंश स्थान पर छेदन व चूषण पश्चात दहन . मण्डली सर्प मे निषेध
- 7) परिषेचन- रूग्ण मे संज्ञान रोकने के लिए उसके मुख पर शीतोदक से सिंचन
- 8) अवगाहन- विष प्रकारानुसार शीत जल मे अवगाहन
- 9) रक्तमोक्षण – शृंग जलौका प्रच्छा सिरावेद्य आदी द्वारा रक्तमोक्षण
- 10) 11) वमन विरेचन – कफकारक विष शीतप्रसेकार्त आदी मे वमन व कोष्ठदाह रूजा आध्मान
पित्तप्राधान्य मूत्रसंग आदी मे विरेचन
- 12, 13) उपधान व प्रथमन – मरणासन्न अवस्था मे सिर पर काकपद लगाकर उपर सातला कल्क रखना
इसे उपधान कहते है; तदन्तर प्रथमन (प्रथमन नस्य समान) क्रिया की जाती है ।
- 14) हृदयावरण – चरकोक्त द्वितीय वेगिक्त हृदयावरण चिकित्सा
- 15,16) अंजन व नस्य –विष के कारण नेत्रगत लक्षणो मे अंजन व शिरोगत लक्षणो के लिए नस्य
- 17) लेह- अनुपान स्वरूप प्रयोग

- 18) धूम – स्त्रोतोविवरणार्थ व विषकारक जंतुओं का प्रभाव नष्ट करने के लिए
- 19) प्रतिविष – स्थावर विष में जांगम विष व जांगम विष में स्थावर विष
- 20) संज्ञास्थापन – प्रधमन नस्य, काकपद आदी उपाय
- 21) मृतसंजीवन अगद – चरकोंक मृतसंजीवन अगदपान
- 22,23,24) औषध प्रयोग द प्रशमन लेप

दृश्य व शब्द अगद – (अष्टांगसंग्रह)

रोगी शरीर के शेष विष निर्हरणार्थ दृश्य अगद (जिसके देखने से विष नष्ट होता है) व शब्द अगद (जिनका लेप भेरी मृदंग पर उनका शब्द) का प्रयोग किया जाता है।

जांगम विष –

सर्पविष – जांगम विषों में सर्वाधिक घातक व सदयप्राणहर

शंकाविष – (चरक, वाग्भट) – अधकार में इतर कंटक आदी विष्ड से विषयुक्त जंतु दंश का भ्रम होकर ज्वर वमन दाह ग्लानी छर्दि मूर्च्छा आदी लक्षण उत्पन्न होते हैं उसे शंकाविष कहते हैं।

सर्पगामिहत – (अष्टांगसंग्रह)

भीरु मनुष्य में सर्पादी के स्पर्शमात्र से ही भय उत्पन्न होकर स्पर्श स्थाने शोफ उत्पन्न हो जाता है

सर्पभेद –

- 1) दिव्य – वासुकि तक्षक आदी पौराणिक
- 2) भौमिक – भूमि पर विचरण करनेवाले
- 1) चरक – 3 1) दर्वीकर 2) मण्डली 3) राजीमान
- 2) सुश्रुत – 5 1) दर्वीकर 2) मण्डली 3) राजीमान 4) वैकरंज 5) निर्विष
- 3) अ.हुदय – 3 1) दर्वीकर 2) मण्डली 3) राजीमान

दर्वीकर – 26	मण्डली – 22	राजीमान – 10	वैकरंज – 3
फणवाले	फणाविहीन	फणाविहीन	–
शीघ्रगामी	मंदगामी, स्थूल	–	–
चक्र हल छत्र स्वस्तिक अंकुशधारी चिन्ह	विविध मंडलयुक्त चित्र ज्वलनार्क समप्रभा	विविधवर्णयुक्त तिर्यक उर्ध्व राजी चित्रित	–
विष – रूक्षा, कटू (च.)	अम्ल, उष्ण (च.)	स्वादु, शीत (च.)	–
वातप्रकोपक	पित्तप्रकोपक	कफप्रकोपक	द्विदोषप्रकोपक
दिवाचारी	रात्री का पूर्व प्रहर में	रात्री का पश्चिम याम	
तरूणावस्था व वर्षकाल में घातक	मध्यमायु व शीतकाल में घातक	वृद्धावस्था व ग्रीष्मकाल में घातक	–

निर्विष प्रकार – 12 एकुण = 80

लिंगभेदानुसार सर्पविष प्रबलता – नर सर्प – दिन में 2) नारी सर्प – रात्री में 3) नपुंसक – सायंकाल में

वर्णभेदानुसार सर्प प्रकार – 4 ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

गोथा सर्प (अ.हु) – चतुषादयुक्त सर्प, विष दर्वीकरसमान व्यंतर सर्प (संकर से उत्पन्न) – सान्निपातज

सर्पविषवेग लक्षण –

वेग संख्या	दर्वाकर	मण्डली	राजीमान
प्रथम वेग रक्त मे प्रवेश	कृष्णता, कार्ष्ण, पिपीलिका सर्पणवत	पीतता, परिदाह पीतावभासता	पाण्डुता रोमहर्ष शुक्लावभासता
द्वितीय वेग मांस मे प्रवेश	अत्यर्थ कृष्णता शोफ ग्रन्थी	अत्यर्थ पीतता परिदाह दंश स्थाने श्वयथु	अत्यर्थ पांडुता जाङ्घ शिरशोफ
तृतीय वेग मेद मे प्रवेश	दंशकलेद शिरोगौरव स्वेद चक्षुहानी	दंशकलेद स्वेद चक्षुहानी	दंशकलेद स्वेद चक्षुहानी, घ्राणाक्षिस्त्राव
चतुर्थ वेग कोष्ठ मे प्रवेश	तंद्रा प्रसेक सन्धिविश्लेष कफदुष्टी	ज्वर त दाह	मन्यास्तंभ शिरोगौरव
पंचम वेग अस्थी मे प्रवेश	प्राण व अग्नि दुष्टी पर्वभेद हिकका दाह	सर्वगात्र मे परिदाह	वाक्संग शीतज्वर
षष्ठ वेग मज्जा मे प्रवेश	ग्रहणी दुष्टी गात्रगौरव अतिसार हृत्पीडा मूर्छा	दर्वाकर समान	दर्वाकर समान
सप्तम वेग शुक्र मे प्रवेश	व्यान अत्यर्थकोप कटीपृष्ठभंग चेष्टाधान लालास्वेद अतिप्रवृत्ति उच्छवास निरोध	दर्वाकर समान	दर्वाकर समान

सर्पदंश भेद –

- 1) सुश्रुत – 3 1) सर्पित 2) रदित 3) निर्विष (केचित मतानुसार सर्पागभिहत)
 2) वृद्धवारभट – 5 1) तुण्डाहत 2) व्यालीढ 3) व्यालुप्त 4) दष्टक 5) दंष्ट्रानिपीडीत

दंशलक्षण –

- 1) सर्पित – एक वा बहु दंत चिन्ह, निमग्नाल्परक्तयुक्त, चंचुमालकयुक्त विकार उत्पन्नीकरक, शोफयुक्त
 2) रदित – नील पीत वा सित राज्ययुक्त
 3) निर्विष – अशोफ व अल्पदुष्ट असृक, एक वा दो दंतचिन्ह होते हुए भी निर्विष जाने

वारभटोक दंशलक्षण –

- 1) तुण्डाहत – लालापरिक्लेदमात्र, दंश लक्षण नहीं होता है
 2) व्यालीढ – एक वा दो दंष्ट्रापद (चिन्ह), अरक्त
 3) व्यालुप्त – दो दंष्ट्रापद व सरक्त
 4) दष्टक – तीन दंष्ट्रापद, मांसर्धादविच्छीन्न रक्तवाही
 5) दंष्ट्रानिपीडीत – चार दंष्ट्रानिपीडीत

वारभटानुसार प्रथम दो प्रकार – निर्विष पंचम प्रकार (दंष्ट्रानिपीडीत) – असाध्य

सर्पविष वेग – शरीर की सप्त कलाओं मे से एक एक कला का अतिक्रमण कर वायु द्वारा वेग

अवस्था विशेष से सर्पविष की अल्पविषाक्तता –

- 1) जलाप्लुत 2) रतिक्षीण 3) भीत 4) नकुलनिर्जीव 5) शीतवात आतप व्याधी क्षुधा तृष्णा पिडीत
 6) देशान्तरगमन 7) विमुक्तविषकंचुका 8) कुश औषधी कण्टक दिव्य देश मे संचरण करने वाले

सर्पदंश सामान्य लक्षण –

तुदयते सविषा दंशः कण्डूशोफरूजान्वितः ।
दद्यते ग्रथितः किंचित् विपरीतस्तु निर्विषः ॥ अ.हृ. उ. 36/18

सर्पविष सामान्य चिकित्सा –

- 1) सर्पलिष दंश स्थान में 100 मात्रा तक स्थित रहता है ततपश्चात रूधिरादी को दूषीत करता है ।
- 2) अतिशीघ्र उससे पहले दंश स्थान का उत्कर्तन करे ।
- 3) दंश स्थाने दशन (दुष्ट रक्ताचुषण) कर उपर मृत्तिका लेप करे
- 4) दंश उपर स्थान पर 4 अंगुल पर क्षोमादी वेणिका बंधन करे
- 5) सुवर्ण वा लोह शलाका द्वारा दहन कर्म (मण्डली सर्प मे पितल होने के कारण दहन निषेध)
- 6) विष सर्व शरीर मे प्रसृत हो तो सिरावेध (विषे प्रविसृते विध्येत् सिरं सा परम क्रिया वा.उ.)
- 7) सिरा अदृश्यमान होनेपर जलौका या शृंग से रक्तमोक्षण

सर्पविष मे वर्जीत पदार्थ –

तैल कुलत्थ मदय कांजी सौवीरक

सर्वविषमे अगद – क्षारागद, महागद, अमृतसर्पि, तार्क्षागद, महासुगन्धि अगदराज, संजीवन अगद –सु.क.

सर्पविष मे – अजित अगद, ऋषभ अगद

वृश्चिक विष –

सुश्रुतानुसार संख्या -30

प्रकार	महाविष / तीव्र विष	मध्य विष	मन्दविष
उत्पत्ती	सर्पकोथोद्धव	काष्ठ इष्टिका उदभव	गोशकृत कोथजा
संख्या	15	03	12
पर्व	एक या हीनपर्व	तीनपर्व	बहुपर्व
उर्जा	रक्त कण्ठ या श्वेत उदर	कृष्ण उदर	श्वेत उदर

वाग्भटोक उच्चिटिंग वृश्चिकदंश लक्षण – अृधकव्यथा , शोफस्तंभ, हुष्टरोमता

वृश्चिक विष दंश स्थाने वन्हिवत दहन करता है पश्चात उर्ध्वगामी होता है ।

चिकित्सा सूत्र –

वृश्चिके स्वेदमध्यं घृतेन लवणेन च ।

सेकांश उष्णान् प्रयुंजीत भोज्यं पानं च सर्पिषा ॥ च. चि. 23/173

सुश्रुत – वृश्चिक दंश मे स्मान्यतः सर्पदंश चिकित्सावत उपचार करे

मंदविष दंश मे चक्रतैल से सेचन

वाग्भट- सदयो वृश्चिक दंश मे चक्रतैल से सेचन

परम वृश्चिक अगद- पारावत शकृत पथ्या तगर विश्वभेषज बीजपूर रस से मिश्रीत कर दे

वृश्चिक उच्चिटिंग दंश मे सर्व उपचार निष्फल होनेपर दंश पर विष लेप करे

लूताविष –

उत्पत्ती – सुश्रुत- वसिष्ठ ऋषि के स्वेद बिंदु से

अष्टांगसंग्रह- भुक्त दुष्टान्न से उत्पन्न विषविस्फोट से

भेद – सुश्रुत – 2 1) कष्टसाध्य – 8 2) असाध्य – 8

अष्टांगहृदय – 4 1) आग्नेयी – 7. 2) वायव्यी – 7. 3) सोम्य – 4. 4) उपपादीक – 4

संख्या –

सुश्रुत – 16 वाग्भट – 28

लूता विष अधिष्ठान – सुश्रुतानुसार – 7 – शुक्र, दंश, नख, मूत्र, मल, लाला, रस

अष्टांगहृदयानुसार – 8 – श्वास, दष्ट्र, मल, मूत्र, शुक्र, लाला, रस, आर्तव

लूताविष व्यक्त होने मे 7 दिन का समय लगता है।

लूताविष मारकता –

- 1) तीक्ष्ण विष लूता- 7 दिन मे
- 2) मध्य विष लूता – 10 दिन मे
- 3) हीन विष लूता – 15 दिन मे मारकता

चिकित्सात्म दृष्टी से लूता भेद –

- 1) कष्टसाध्य – 8
- 2) असाध्य – 8

कष्टसाध्य लूताविष लक्षण – वातकफजन्य विकार

अंसाध्य लूताविष लक्षण – सान्निपातज विकार

लूताविष सामान्य चिकित्सा– अथाशु लूतादष्टस्य शास्त्रेण दंशं उधरेत।

दहेत् जाम्बवौष्ठादयैः न तु पितोत्तरं दहेत् ॥ अ.स.उ. 44/29

लूताविष मे दशविध उपक्रम– नस्य, अंजन, अभ्यंग, पान, धूम, अवपीड, कवलग्रह, तीक्ष्णदमन तीक्ष्ण विरेचन, सिरामोक्ष .

लूता कीट विष अगदपान– पद्मक अगद, चम्पक अगद, मन्दर अगद, गन्धमादन अगद

मूषक विष –

मूषक विष भेद- 18 (सुश्रुत व संग्रहानुसार)

मूषक विष अधिष्ठान- शुक्र

मूषक विष वैशिष्ट्य – व्यवायी आखुविषं कृच्छ्रं भूयो भूयश्च कुप्यति । अ.स.उ. 46/7

व्यवायी, कष्टसाध्य, पुनः पुन; कुपित होता है।

मूषक विष मन्द होने से दूषीविष के समान होता है।

मूषक विष सामान्य चिकित्सा– दम्श स्थान पर धृत से दहन कर कर्तन कर दंश से रक्तनिर्हर्ण करे

वमन– निलीनी क्वाथ या अंकोल क्वाथ से

कीट -

उत्पन्नी - सर्प विष्ठा, मूत्र, शुक्र अंड, व शव के कोथ से

कीट भेद - सुश्रुत व वागभटानुसार - 4

1) वातनिमित्तज (वायव्य) 2) पित्तनिमित्तज(आग्नेय) 3) कफनिमित्तज(सोम्य) 4) सान्त्रिपातज

चरकानुसार - 2 1) दूषिविष कीट 2) प्राणहर कीट

कीट संख्या - 67 वातज- 18 पित्तज- 24 कफज-13 सान्त्रिपातज- 12

कीटदंश सामान्य लक्षण - कर्णिका शोफ, ज्वर अरोचक कण्डू

कीटविष चिकित्सा- स्वेदन आलेपन सेक आदी उष्ण ही प्रयुक्त करे

अलर्कविष -

संप्राप्ति- कफप्रधान वतादी दोष अलर्क के संज्ञावह स्त्रोतस मे आश्रीत होकर उसकी संज्ञा नष्ट कर देते है - लालास्त्राव, बधिर होकर सर्वतः धावन , स्त्रस्त पुच्छ हनु स्कंध आदी लक्षण उत्पन्न होते है

विभेदक निदान - धनुस्तंभ (tetanus), bulbar paralysis (मेरुशीर्षधात) , धनुर विषाक्तता

चिकित्सा- तीक्ष्ण शोधन

शतपदी - सुश्रुतानुसार -8 परूषा कृष्णा चित्रा कपिला पितीका रक्ता श्वेता अग्निप्रभा

विषलक्षण - शोफ वेदना हृदय स्थाने दाह

श्वेता व अग्निप्रभा- दंशा स्थाने दाह व मूर्च्छा , दंशा स्थाने श्वेत पिंडिका

सविष अन्न परीक्षा -

- 1) अग्नि मे डालने पर चट चट आवाज
- 2) अग्नि ज्वाला का वर्ण मयूरकंठ समान
- 3) भिजार्चि (ज्वाला विभक्त होना), चिरात उपशमन , तीक्ष्ण धूम

सनिष अन्न चिकित्सा- महासुगन्धी अगद पान , तीक्ष्ण वमन व रेचन , रक्तमोक्षण

राजा के हस्त मे बांधी हुड मूषिका व अजरूहा सर्व विषयुक्त अन्न को विषरहीत बनाती है ।

हृदय रक्षणार्थ - अजेय व अमृत घृत पान

Poisons-

1) Abrus precatorius - (Indian liquorice)

Active principle- abrin, glycyrrhizin, N-methyl tryptophan.

Sign and symptoms - GIT irritation, nausea, vomiting, diarrhea, abdomen pain.

On injection- painful swelling, necrosis, vertigo.

Fatal dose - 1-2 crushed seeds.

Fatal period - 3-5 days.

Medico legal aspect - commonly used as cattle poison.

Also used as homicide and arrow poison.

2) Semecarpus anacardium – (Marking nut)

Juice from seeds mixed with lime is used by dhobi to mark cloths

Active principle - semecarpol, bhilwanol.

Sign and symptoms - black vesicles on skin, itching, blisters, GIT irritation, Dysnoea, tachycardia, hypotension.

Fatal dose - 10gms.

Fatal period - 12-24 hrs.

Medicolegal aspect - used as vitrolage. as abortifient.

3) Croton tiglium –

Active principle - croton, crotonoside (glycoside)

Sign and symptoms – GIT irritation, salivation, bloody stool, tachycardia, vertigo.

Fatal dose - 4-5seeds, 20 drops of oil.

Fatal period- variable.

Medicolegal aspect - poisoning is commonly accidental and rarely suicidal,

4) Calotropis – (madar)

Active principle - uscharin, calatoxin, calatropin, calactin.

Sign and symptoms - external – vesication and redness

Internal- bitter taste, burning pain in GIT, stomatitis, vomiting, diarrhea,

Dilated pupils, convulsions.

Fatal dose - uncertain Fatal period- 12 hrs.

Medicolegal aspect- used as infanticide, for criminal abortion, as cattle poison.

5) Opium (afim) –

Active principle - alkolides- morphine, codeine, thebaine, papaverine,noscapine.

Sign and symptoms- poppy seeds are non-poisonous. Poisoning occurs due to ingestion of opium or its alkaloids, or injection of morphine.

Diagnosis of opium poisoning- the triad of coma pinpoint pupil and depressed respiration strongly suggests opioid poisoning. Other signs are coma, opium smell, cyanosis, cheyne stroke breathing etc.

Differential diagnosis- uremia, diabetic coma, epileptic coma, cerebrovascular Accident.

Chemical test - MARQUIS TEST.

Fatal dose - opium- 2 gms, morphine- 200 mg, codeine- 0.5 gms, pethidine- 1gms.

Fatal period - 6-12 hrs.

Treatment - gastric lavage (Kmno4) , enema and purgative.

Antidote- Naloxone.

Post mortem appearance- smell of opium, face deeply cyanosed, black postmortem Lividity. Sign of coma,

Medico legal aspect - opium is near ideal suicidal poison.

Organophosphorous compounds-

They are used as pesticides in agriculture

Causes of death - asphyxia due to paralysis of respiratory muscles. Cardiac arrest.

Pulmonary edema, cerebral edema.

Antidote – atropine.

Post mortem appearance- suggestive of asphyxia, cyanosed face,

Oronasal blood stained froth,

Stomach- blood stained contents kerosene or garlicky smell.

Pulmonary or cerebral edema.

Petechial hemorrhage and hyperemia of lungs, brain.

Medico legal aspect- is the commonest poisoning in India. Radially used for suicide.

6) **Dhatura** – (Thorn apple, Devil's weed)

Active principle - dhaturine containing hyoscyamine, hyoscine and atropine.

Sign and symptoms – the features are described as dry as a bone, red as a beet,

Blind as a bat, hot as a hare, and mad as a wet hen.

Dryness of mouth and throat so dysphagia. Dysuria, pupils dilated hence diminution vision, skin dry and hot, muttering delirium.

Carpologia - tendency to grasp at imaginary objects.

Differential diagnosis - drunkenness, heat stroke.

Fatal dose- 100-125 crushed seeds.

Fatal period - about 24 hours.

Treatment – stomach wash. Antidote - pilocarpine. Barbiturates.

Post mortem appearance- congestion of stomach and other viscera.

Medicolegal aspect - commonly known as road side poison. Sometimes used for

Suicide or homicide.

7) **cannabis sativa** – (Indian hemp)

Poisonous preparations-

1) Bhang – dried leaves and fruiting shoots are ground with sugar.

2) Majun- is the confection (laddoo) prepared from bhang.

3) Ganja- flowering tops of the female plant.

4) Charas (hashish) – concentrated resin obtained from leaves or stem.

Sign and symptoms-

1) stage of excitement - pleased, cheerful, increased appetite, loss of perception.

The typical smell is like burnt rope.

2) stage of narcosis- giddiness, confusion, drowsiness, dilated pupil. Tingling and

Numbness. Mental deterioration.

Fatal dose –

1) charas- 2 gms/kg

2) ganja – 8 gms/kg

3) bhang – 10 gms /kg

4) cannabinol – 30 mg /kg

Fatal period - about 12 hours. Treatment – stomach wash

Post mortem appearance- features of asphyxia.

Medicolegal aspect – Running amok- due to hallucinations and delusion of

Persecution the person starts killing a persons or persons whom he has

Fancied or real enmity.

8) Strychnos nux vomica (kuchala) –

Active principle- strychnine, brucin loganin.

Signs and symptoms- intact seeds are non poisonous. Broken seeds are poisonous

Bitter taste, twitching and stiffness of muscles of neck and face , strychnine
Convulsions.

- Postures – 1) ophisthotonous posture – convexity upwards.
2) emprosthotonous posture – convexity downwards.
3) Pleurosthotonous posture – arching sideways.

Causes of death – medullary paralysis, asphyxia.

Differential diagnosis- epilepsy, hysteria, tetanus.

Strychnine poisoning	Tetanus
Circumstantial evidence of poisoning	History of injury
Onset – sudden	Gradual
Fever – not usual	Usually present
All muscles simultaneously affected	Neck and lower jaw affected first
Relaxation of muscles in between convulsion	Sustained rigidity
Death within few hours	Delayed
Chemical analysis confirms poisoning	Bacteria exam confirms diagnosis.

Fatal dose – 1-2 crushed seeds. 15-30 gms of strychnine.

Fatal period- 1-2 hours .

Treatment - shift patient to dark quiet room, anaesthetize the patient. Gastric lavage
With tannic acid.

Antidote -- barbiturates

Post mortem appearance- features of asphyxia. Rigor mortis appears early.

Medicolegal aspect – one of the most deadly poisons. Death is usually accidental.
Eliminated in urine, saliva, sweat, milk and bile.

Is a cumulative poison. Can be easily detected even on decomposed body.

8) Aconite – cardiac poison.

known as meetha jahara or sweat poison.

Active principle- aconite, picraconitine, pseudoaconitine.

Sign and symptoms- tingling numbness initially area at contact and later all body.

GIT irritation, increased sweating, giddiness, impaired speech and vision. Pulse
and respiration decreased. Pupils show alternate constriction and dilation (Hippus
reaction)

fatal dose – 1 gm of root

fatal period – 6 hours

treatment – stomach wash. Injection of strychnine, digitalin and atropine.

Medicolegal aspect – used as arrow poison and as cattle poison.

9) nicotine – cardiac poison

Signs and symptoms – **acute** – GIT irritation. Giddiness faintness and numbness.

Chronic – chronic cough bronchitis, pharyngitis. Ca of lips and buccal mucosa.

Fatal dose – 1-2 drops of pure nicotine (60mg)
15-30gms of crude tobacco.

Fatal period – 1-10 minutes.

Treatment- stomach wash, injection of atropine

10) oleander – kaner (cardiac poison)

Sign and symptoms – GIT irritation, contact dermatitis. Dilated pupils.
On heart - cardiac failure, weak pulse , decreased BP. Lock-jaw
On spinal cord – action like strychnine.

Fatal dose – 15-20 gm of root

Fatal period - 24 hours .

Treatment stomach wash , morphine .

Post mortem appearance –

Petechial hemorrhage on heart, congestion of visera.

It resists heat and hence can be detected even in burnt bodies.

Medicolegal aspect-

Commonly used for suicide.

Commonly used for abortion, cattle poison.

Metal poison

1) Arsenic –

Sign and symptoms- faintness and depression, nausea, salivation, thirst.

Severe projectile vomiting, pain and irritation of anus,
Diarrhea - foul smelling . oliguria, albuminuria, haematuria, and dysuria.

Cramps of muscles and convulsions. Shock, coma and death

Fatal dose – 180-200 mg

Fatal period – in narcotic form – sudden death or after 2-3 hours.

In gastrointestinal form – 12-48 hours.

differential diagnosis - bacterial food poisoning, cholera.

Treatment – use of emetics, gastric lavage with ferric oxide, demulscents.

Post mortem appearance-

Dehydration , jaundice, stomach appearance – red velvety appearance.

Degeneration of heart liver and kidney.

In chronic poisoning – rain drop appearance is seen on skin.

Chemical test – Reinsch test.

Medicolegal aspect – used for homicide. It retards decomposition.

During PM besides routine viscera; hair nails and ends of long bones are
Preserved as additional viscera. 2-4 weeks after ingestion arsenic is found in
Hair, nails, skin and and after 4-6 weeks in bones.

2) lead - lead is 10 times more poisonous when inhaled.

Sign and symptoms- sweet and metallic astringent taste. Burning of throat, vomiting
Colicky pain, oliguria, albuminuria, drowsiness, insomnia,

In subacute poisoning – blue line on gums (burtonian /lead line on gums.)

Fatal dose – uncertain ; 0.5-20 gms. Fatal period- uncertain; 2-3 days or few months

3) mercury –

Sign and symptoms – metallic taste, burning sensation, pain and feeling of Constriction in mouth and upper GIT. Nausea, vomiting.

Fatal dose – 1 gm of the corrosive sublimate (mercuric chloride)

Fatal period – variable between few hours to 3-5 days.

Treatment – use of emetics, gastric lavage, peritoneal or haemodialysis.

Post mortem appearance –

Tounge and mouth are greyish – white. Oesophagus and stomach corroded.

Kidney – nephritis. Liver – congested and cloudy swelling.

Heart – subendocardial hemorrhage and fatty degeneration.

Chronic mercury poisoning –

Sign and symptoms – excessive salivation (ptyalism/sialorrhoea) metallic taste.

Blue line on gums. Penetrating ulcers on fingers and nails.

Pink disease(acrodynia) – pink cheeks, nose, hands and feet.

Kidney – uremia, nephritis., mercuria lentis – brownish discoloration of eye lens

Capsule. Mercurial tremors. Skin eruptions.

Medicolegal aspect – bone teeth and hair and nails are preserved as additional v.

Erythema → Gingivitis, intestinal tremor, memory loss, anaemia.

4) Copper –

acute poisoning - astringent metallic taste, salivation, burning pain in upper GIT thirst, nausea, vomiting (blue / green) oliguria, haematuria, jaundice, muscle cramps.

Fatal dose – 15-30gm fatal dose – 1- 3 days.

Treatment – no use of emetics. Gastric lavage, diuretics.

Postmortem appearance- jaundice, greenish blue froth at nose and mouth.

Haemorrhage and ulceration of intestine.

Chronic poisoning – green or purple line on gurns.(Clapton's line) , nausea, Giddiness, headache, diarrhea, colicky pain. Conjunctivitis and colicky pain. Nephrotoxicity, anemia. Neuritis. Dermatitis.

Medicolegal aspect – accidental poisoning may occur. Sometimes used as Abortifacient or cattle poison.

TIERRA

Snakes –

Classification –

- 1) Elapids – Neurotoxic
- 2) Vipers – Vasculotoxic
- 3) sea snakes – Myotoxic

Fatal dose –

- 1) cobra (Nag) – 12 mg of dried venom
- 2) Krait – 6 mg of dried venom
- 3) Russells viper (ghonas) – 15 mg of dried venom
- 4) Saw scaled viper (furasa) – 8 mg of dried venom

General treatment of poisoning –

Degree of loss of consciousness is graded on the basis of

1) Reed's classification.

2) Glasgow coma scale

Treatment 1) induction of vomiting – corrosive except carbolic acid .

2) gastric lavage - corrosive except carbolic acid.

3) Chelating agent – these are the substances which were used in metal poisoning.

They form a nonionizing complex with the metal so that metal is not available for

Absorption. Examples are –

a) **BAL** – British anti Lewisite is chemically Dimercaprol.

Effective in arsenic poisoning.

Contraindication – liver damage, hypertension, and tachycardia.

b) **EDTA** – ethylene diamine tetra acetic acid.

Effective against lead, mercury and copper poisoning.

Contraindication- renal damage.

c) **Cuprimine or penicillamine** – is degradation product of penicillin.

Effective against against copper lead and mercury poisoning.

Also effective in willson's disease.

d) **DFM** – desferrioxamine.

Effective against iron poisoning.

4) **universal antidote** : it can be used in all cases of poisoning ;especially when the Nature of poisoning is unknown.

Dose – 15-30 gms.

Constituent *	Obtained from	%	parts	Action
Charcoal	Burnt toast or bread	50%	2	Adsorbs poison
Mg oxide	Milk of magnesia	25%	1	Neutralizes acid
Tannin	From strong tea	25 %	1	Precipitates metals

Preservatives used for viscera preservation :

- 1) In all cases of poisoning excluding acid poisoning but including carbolic acid poisoning = saturated salt solution
- 2) In all cases of acid poisoning excluding carbolic acid = rectified spirit
- 3) Additional viscera is persevered in saturated salt solution.

Food poisoning :

- 1) Infection type – Salmonella type of organisms.
- 2) Toxin type – Staphylococcus.
- 3) Botulism – Clostridium botulinum.

Short notes –

- 1) ideal suicidal poison – Cyanide
- 2) Ideal homicidal poison – Thallium and fluorine.
- 3) commonly used homicidal poison – Arsenic and Aconite
- 4) Commonly used Suicidal poison - Endrine, opium, Barbiturates, OPP
- 5) Run Amok is seen in – cannabis
- 6) Road side poison – Dhatura
- 7) Viper bite like poison – Abrus

- 8) Poison resembling cholera – Arsenic
- 9) Poison resembling Tetanus – Strychnine
- 10) Poison resembling natural death – Thallium
- 11) Poison resembling ACNE – bromides
- 12) Malaria like chill – Zinc
- 13) Metal furnace fever – Zinc

Specific symptoms of poisons :

1) Sudden death -	1) Potassium cyanide 3) Carbon monoxide 5) Ammonia	2) Hydrocyanic acid 4) Carbon Dioxide 6) Oxalic acid
2) paleness of face –	1) Antifebrin 3) bhanga 5) Alcohol	2) Delerium 4) Dhatura 6) Atropa belladonna
3) Heart failure -	1) Strong acids 3) Arsenic 5) Garcinia Morella	2) Alkalies 4) Aconite 6) Antimony
4) Delirium -	1) Cannabis indica 3) Alcohol 5) Henbane (khurasani ajavayn)	2) Thorn apple 4) camphor (karpur) 6) Atropa belladonna
5) Tetanus like convulsions –	1) Nux- vomica 3) Antimony	2) Arsenic
6) Dilation of pupil	1) Thorn apple 3) Aconite 5) Chloroform 7) Opium	2) Atropa belladonna 4) Alcohol 6) Henbane 8) Cyanides 2) Carbolic acid
7) Constriction of pupils –	1) Morphine 3) Chloral hydrate	2) Henbane
8) Dryness of skin -	1) Thorn apple 3) Atropa belladonna	2) Alcohol 4) Antimony
9) Humidity of skin -	1) Aconite 3) Tobacco	2) Carbolic acid
10) Bleached face -	1) corrosive acids and alkalies 2) Calomel	2) Antimony 4) Digitalis 6) Phosphorus
11) Vomiting	1) Arsenic 3) Aconite 5) Ammonia	2) Alcohol 4) Chloroform
12) Loss of consciousness –	1) Morphine 3) Camphor 5) Chloral hydrate	2) Arsenic 4) Conium
13) Paralysis -	1) Aconite 3) Lead	2) Carbolic acid

Classification of poison :

1) Corrosives : a) ACIDS :

- 1) Inorganic – Sulphuric acid, Hydrochloric acid and Nitric acid
- 2) Organic – Acetic acid, Salicylic ,Oxalic and Carbolic acid
- 3) Vegetable – Hydrocyanic acid, cyanids – potassium cyanide

b) ALKALIS :

- 1) Hydroxides : of sodium, potassium and Ammonium
- 2) Carbonates : of sodium potassium and Ammonium

2) Irritants : a) Inorganic :

- 1) Non metal – Phosphorus, Fluorine, chloride, Bromine, Iodine and boron
- 2) Metals - Arsenic, lead, mercury, copper, iron, zinc, Manganese Magnesium, thallium and radioactive substances.

b) Organic :

- 1) Vegetable : castor oil, croton oil, abrus precatorius, marking nut Calotropis, colocynth, aloe, capsicum.
- 2) Animal – snakes, scorpions, spiders, cantharides, insects.
- c) Mechanical – powdered glass, diamond dust, dry sponge, hair, pins, needles, nails.

3) Neurotoxins : a) cerebrai

- 1) Narcotic - opium and its alkaloids like morphine, codeine, thebaine Papaverine, noscapine, narcine.
 - 2) Inebriants – alcohol, anesthetic agents like chloroform nitrous oxide Fuels like kerosene and petrol, sedatives like chloral Hydrate barbiturates and paraldehyde. Insecticides like organophosphorus compound DDT , Endrine. Tik 20, malathion, parathion. Napthalene
 - 3) Delirants : datura, cannabis, atropa belladonna, hyoscyamus niger Cocaine and camphor
- b) Spinal :
- 1) Excitants : nux vomica and its alkaloid strychnine.
 - 2) Depressants : Lathyrus sativus (keshari dal), gelsemium (jasmine)
 - 3) Peripheral : conium and curare

4) Cardiac poisons :

Aconite, digitalis, oleander, Tobacco.

5) Respiratory poisons : (Asphyxiants) – CO, CO₂, SO₂, H₂S, NH₃, Phosphine (PH₃) war gases and sewer gases

6) Miscellaneous : analgesics, Antipyretics, Antihistaminics, Tranquillisers, Stimulants, Antidepressants, Hallucinogens, food poisoning Drug dependence

Forensic medicine and Toxicology

Forensic Medicine :

X – rays for age determination

Age	X – ray
15 – 16	Elbow
16 – 17	Ankle
17 – 18	Upper end of femur
18 – 19	Knee
2 nd to 5 th decade	Sternum fusion takes place

Foetal age determination

1st ossification center to appear – clavicle, lower jaw.

Bone	Ossification center in month
1) Calcaneum	5 th month
2) Sternum	6 th month
3) Talus	7 th month
4) Lower end of femur	9 th month (36 weeks)
5) Upper tibia	10 th month (40 weeks)

Post maturity – ossification center appear in capitate and hamate

Age importance –

- 1) No offence if done before 7 years (IPC)
- 2) No offence if the person is 7-12 years old but mentally incapable.

Important points –

- 1) In dead body (without foetus) and in men prostate lastly putrefied.
- 2) Antidote used in common type of poisonous snakes in India include Polyclonal Antisnake venom.
- 3) Chronic lead poisoning is known as plumbism or saturnism
- 4) Green coloured urine is observed in carbolic acid poisoning.
- 5) Homosexuality is often observed among addiction of cocaine.
- 6) Lucid interval is seen in Insanity.
- 7) Macerated body of foetus indicates dead born.
- 8) Medico legal autopsy is ordinarily done on request of sub inspector of police.
- 9) Phossy jaw is seen in chronic poisoning of phosphorus.
- 10) Pugilistic attitude of a burnt body is due to coagulation of proteins.
- 11) The most characteristic feature of drowning is froth at nostrils.
- 12) The most dependable method of identifying a person is finger prints (dactylography)
- 13) The most reliable evidence of death due to drowning is Mud and Sand in bronchioles
- 14) The preservative used for viscera in alcohol poisoning is saturated sodium chloride Solution.
- 15) The strongest corrosive poison is sulphuric acid.

Specific tests or diagnostic points –

- 1) Precipitin test – for determination of organ piece - man or other animal.
- 2) In anaphylactic shock – Dilation of Right heart.

- 3) Pulmonary artery congestion – Asphyxia.
- 4) Pulmonary vein congestion – Coma
- 5) In Asphyxia the Tardieu spots are on – pleura
- 6) In electric shock Tardieu spots are on pleura and pericardium.

For Laboratory examination

1) small intestine	Adult – 3 feet, child – 5 feet, fluid – 100 cc
2) Liver	Child – 500 gm adult – complete
3) Spleen	Child – half of adult adult – complete
4) Kidney	Child – half of both kidneys, adult – complete
5) Brain	300 gm
6) Blood	10cc (in pot. Oxlate and sodium fluorat)

Never use formalin or denatured spirit for preservation of organs.

For acid poisons – Rectified spirit.

Organ send to be for laboratory examination

1) Metalic poisoning	Hair
2) Arsenic	Bones, nails, hairs.
3) Antimony	Nail, skin, shaft – 6 inch piece.
4) Strychnine	Brain and heart
5) Co., alcohol, chloroform	Blood in heart chamber, lungs without preservation
6) Rabies	Negri bodies (brain) in 50% glycerol saline

In suspended animation – following examination done

A) Circulation –

- 1) Byfans light test
- 2) Magnus ligature test
- 3) Flurosceine test inj given s.c. – skin colour yellowish green in live person.
- 4) After burning – no red lines around the skin.

B) Respiration

- 1) Winslow glass test
- 2)

C) Eye changes

- 1) Sclera cornea conjunctive – non trasparent
- 2) Increase potassium in vitreous humor.
- 3) decreased intra ocular pressure.

D) Temperature

- 1) Temperature reduces to 2.5° F or 0.6° C
- 2) Thantometer is used to calculate temperature at anus or below liver region.

In cold weather – rigor mortis – 2 to 3 days

In hot weather – rigor mortis – 2 to 3 hours

Rigor mortis –

- 1) Firstly occurs in involuntary muscles and the voluntary muscles.
- 2) Last in eye lids
- 3) Lastly in fingers
- 4) Cause of R.M – Actin and myosin filament, adenosine triphosphate (ATP)

Putrifaction –

- 1) Starts at -50° c

- 2) Maximum at – 70 – 110 ° F (30-37°C)
- 3) slow less than 100°F
- 4) Bacteria responsible – Clostridium welchii
- 5) Gas formation after putrefaction – CH₄, H₂S, Phosphated hydrogen
- 6) After decomposition – colour - = externally – green and internally – blackish red

Causes of death in hanging –

- 1) Pressure on common carotid artery – Brain ischemia
- 2) Pressure on veins – Brain hemorrhage
- 3) Pressure on vagus nerve – Heart failure

In judicial hanging death occurs due to pressure on spinal by breaking 1-2 vertebrae.

For medical ethics – Declaration of Geneva – 1944.

Fatal period of poisons

1) Sulphuric acid	10 – 15ml
2) Nitric acid	10 – 15 ml
3) Hydrochloric acid	15 – 20 ml
4) KOH, NaOH	5 – 10gms
5) Oxalic acid	15 – 20 gms
6) Carbolic acid	10 – 15 gms
7) Hydrocyanic acid	60 mg
8) Potassium Cyanide	200 mg
9) Phosphorus	100 – 150 mg
10) Arsenic	180 – 200 mg
11) Lead	0.5 – 20gms
12) Copper sulphate	15 – 30 gms
13) Mercury	1 gm
14) Abrus precatorius (gunja)	1 – 2 crushed seeds
15) Marking nut (bhallatak)	10 gms
16) Croton seeds (jayapal)	4 – 5 crushed seeds
17) Castor seeds (eranda)	10 crushed seeds
18) Opium	2 gms
19) Morphine	200 mg
20) Pethidine	2 gm
21) Methyl alcohol	60 – 200 ml
22) OPP	25 mg – 25 gms
23) D.D.T.	30gms
24) Dhatura	100 – 125 crushed seeds
25) Cannabis (bhanga)	2 – 10gm / kg body
26) Cocaine	1 gm
27) Nux vimoca (kuchala)	1 – 2 crushed seeds
28) Curare	30 – 60mg
29) Conium	1 cm of plant part
30) Digitalis	2 – 3 gms
31) Aconite	1 gm root
32) Nicotine	1 – 2 drops
33) Tobacco	15 – 30 gms
34) Oleander	15 – 20 gms of root

Fatal period

1) Carbolic acid	1- 2 hours
2) Cyanides	Immediate
3) Phosphorus	Variable
4) Arsenic	2 -- 3 hours
5) Lead	Variable
6) Copper	1 – 3 days
7) Mercury	2 – 3 days
8) Abrus precatorius (gunja)	3 – 5 days
9) Marking nut (bhallatak)	12 – 24 hours
10) Castor seeds	Variable
11) Croton oil and seed	Variable
12) Opium	6 – 12 hours
13) Methyl alcohol	1 – 3 days
14) Barbiturates	1 – 2 days
15) OPP	½ - 3 hours
16) D.D.T	24 hours
17) Endrine	½ - 3 hours
18) Dhatura	24 hours
19) Cannabis	12 hours
20) Cocaine	2 hours
21) Strychnine	1 – 2 hours
22) Curare	1 – 2 hours
23) Conium	Few hours
24) Digitalis	1 – 24 hours
25) Aconite	6 hours
26) Nicotine	1 – 10 minutes
27) Oleander	24 hours

Poisons leading to constriction of pupils

- 1) Opium 2) Morphine 3) Tobacco
 4) OPP 5) Carbolic acid 6) Curare
 7) Anesthetics 8) Alcohol 9) Fuels

Poisons causing alternate constriction and dilation of pupils

- 1) Barbiturate 2) Aconite

Poisons leading to dilatation of pupils

- 1) Cyanides 2) Datura 3) Cocaine
 4) Alcohol 5) Digitalis 6) Cannabis
 7) Atropa beladonna 8) Hyoscyamus 9) Co
 10) Nicotine 11) Antihistaminics 12) Strychnine
 13) Calotropis 14) fues 15) Oleander
 16) Corrosives except carbolic acid

Poisons causing typical P.M. lividity

- 1) Cyanide – pink 2) Opium – Almost black
 3) CO – Bright cherry red 4) Hydrogen sulphide – Bluish green
 5) Phosphorus – Dark brown 6) Potassium chlorate – chocolate brown
 7) Nitrates – Reddish brown

Antidotes

1) Mineral acids	CaO, MgO
2) Alkalies	Weak acids, Acetic acid, Vinegar, lemon juice
3) Oxalic acid	Lime
4) Carbolic acid	Magnesium sulphate
5) Cyanides	Nitrates, kelocyanor, PAPP, Hypo
6) Phosphorus	Copper sulphate
7) Arsenic	Ferric oxide and BAL
8) Iodine	Starch, Hypo
9) Lead	Sodium or magnesium sulphate and EDTA
10) Copper	Potassium ferrocyanide and penicillamine
11) Mercury	Sodium formaldehyde sulphonylate and Penicillamine / BAL
12) Abrus	Antiabrin
13) Snakes	Anti snake venom serum
14) Scorpion	Aniivenin and local nasthetics
15) Methyl alcohol	Ethyl alcohol
16) Opium	Naloxone / nalmefene
17) Opium (chronic)	Methadone / LAAM
18) OPP	Atropine and oximes
19) Dhatura	Prostigmine / pilocarpine
20) Cocaine	Amyl nitrate inhalation
21) Strychnine	Barbiturates, Chloroform
22) Oleander	Anasthetics , morphine
23) Curare	Prostigmine
24) Thallium	Pot. Heacyanoferrate (Prussian blue)

Poisons with characteristic smell

1) Cyanides	Bitter almond
2) Phosphorus	Garlicky
3) OPP	Kerosene like/ garlicky
4) opium	Raw flesh
5) Cannabis	Burnt rope
6) H ₂ S	Rotten egg
7) CO	Burnt coal

Poisons used as arrow poisons

- | | | |
|----------------------|----------------|-------------------|
| 1) Abrus precatorius | 2) Aconite | 3) Strychnine |
| 4) Croton | 5) Snake venom | 6) scorpion venom |
| 7) Curare | 8) Calotropis | |

Poisons resisting putrefaction

- | | | |
|---------------|---------------|---------------|
| 1) Dhatura | 2) Phosphorus | 3) All metals |
| 4) Strychnine | 5) Nicotine | 6) Endrine |
| 6) D,D,T. | 7) Alcohol | 8) Oleander |

Poisons that are stored in the body

- | | | |
|-------------------------------|-----------------|----------------------------|
| 1) Organophosphorus compounds | | |
| 2) Organochlorous compounds | | |
| 3) Strychnine | | |
| 4) Thiopentone | 5) heavy metals | 6) Radio active substances |

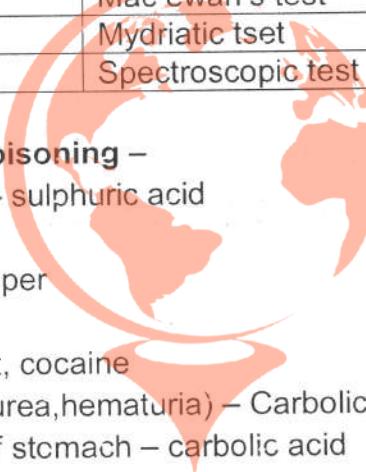
Poisons causing toxicity

1) Nephrotoxic	Carbolic and oxalic acid, methanol, heavy metals, EDTA Penicillamine, salicylates
2) Hepatotoxic	Alcohol, arsenic, phosphorus, paracetamol, steriods BAL, iron, Naphthalene
3) Dawali poisons	Mercury, phosphorus
4) spinal poison	Nux vomica, gelcinium
5) Cardic poison	Aconite, oleander, digitalis, quinidine, tobacco, HCN
6) Neurotoxic	Cobra, krait, scorpion. Venom
7) Hematotoxic	Viper, scorpion, venoms
8) Myotoxic	Sea snake venom

Tests for poisoning

1) Sulphuric acid	Carbonization
2) Nitric acid	Xanthoproteic reaction
3) Carbolic acid	Green urine, Prussian blue test
4) Arsenic	Marsh's test , Reinh's test
5) Lead	Punctate basophilia
6) Opium	Marquis test
7) Alcohol	Mac ewan's test
8) Dhatura	Mydriatic test
9) CO gas	Spectroscopic test

Some important features in poisoning –

- 
- 1) Blotting paper like stomach – sulphuric acid
 - 2) Black stool – lead poisoning
 - 3) Blue vomitus and stool – copper
 - 4) Froth from mouth – opium
 - 5) Tactile hallucinations – Ergot, cocaine
 - 6) Carboiuria (oigurea,albuminurea,hematuria) – Carbolic acid
 - 7) Leather bottle appearance of stomach – carbolic acid
 - 8) Phossy jaw – glass jaw – phosphorus
 - 9) Red velvety appearance of stomach – Arsenic
 - 10) Mees lines on finger and nails – Arsenic
 - 11) Colicky pain and blue line on gums – Lead
 - Lead line or Bertonian line
 - Wrist drop and foot drop (lead palsy)
 - 12) Blue line on gums, pink disease (acrodynia) – Mercury
 - 13) The triad of coma, pin point pupil and depressed respiration – opioid poisoning
 - 14) Hippus reaction (alternate dilatation & constriction of pupils) – Aconite

Food poisoning**Types –**

- 1) Infection type – Salmonella group of organisms, other may be e.coli, Streptococci and staphylococci.
- 2) Toxin Type – Enterotoxin formed by staphylococcus, other may be E. coli or vibrio
- 3) Botulinism – Clostridium botulinum.

Forensic medicine

Types of courts –

- 1) Civil court – deals with civil matters. e.g. compensations, land disputes
- 2) Criminal court – deals with crimes committed as per IPC. E.g. murder, assault
- 3) Consumer court – deals with consumer disputes
- 4) coroners court – was only in Mumbai, deals with inquest only. Presently there is No consumers court in India.

Life imprisonment is approximately 20 years.

Criminal courts in India –

- 1) Supreme court – is the highest judicial tribunal in the country and situated at New Delhi
- 2) High court – Highest judicial tribunals of states and situated at the state capital.
- 3) District / Sessions courts – situated at district head quarters.
- 4) Assistant sessions court – also situated at the district head quarters. But cannot award
 - 1) death sentence
 - 2) life imprisonment
 - 3) imprisonment beyond 10 years.
- 5) Magistrate court

Judicial magistrate	Imprisonment	Fine
Chief judicial magistrate	7 years	No limit
1 st class judicial magistrate	3 years	5000/-
Class 2 judicial magistrate	1 year	1000/-

Juvenile means a boy upto 16 years and girl upto 18 years

Witness –

- 1) Simple / ordinary / common – it refers to the witness who narrates in the court, what he has himself seen, heard or perceived. i.e. direct knowledge.
- 2) Expert / skilled witness – it refers to the witness who is skilled in some particular field e.g. medical officer, chemical analyzer, finger print expert, hand writing expert, ballistic expert. Etc. A medical man is both simple and expert witness according to situation.
- 3) Hostile / adverse / unfavorable witness – witness who is unfavorable to his own party.

Procedures of the court - it includes

- 1) summon
 - 2) Oath administration
 - 3) Recording of evidence
-
- ```

graph TD
 A[Recording of evidence] --> B[Examination in chief]
 A --> C[Cross examination]
 A --> D[Re-examination]
 A --> E[Court questions]

```

### **1) Summon / subpoena –**

Is a written document, written in duplicate and signed by the Presiding officer of the court, compelling the attendance of a witness in the court, under Penalty, on a specified date and time and for specified case. Sec 174 IPC

### **2) Oath administration –**

Every witness before giving evidence is required to take oath in the Name of the religious book i.e. geeta, quran etc.

### **3) Recording of Evidence –**

#### **a) Examination in chief -**

is defined as the examination of the witness by the lawyer of the party calling the witness. No leading questions are permitted in this.

**b) Cross examination –**

is defined as the examination of the witness conducted by the lawyer of the opposite party. Here leading questions are permitted.

Cross examination act as 'double edged sword' i.e. cuts both ways. i.e. if the lawyer Is not well prepared may harmful to his party.

**c) Re-examination –**

is conducted like examination in chief and so by the lawyer of the same party. Leading questions are not allowed. No new matter can be taken up.

**d) Questions put by the court –**

The judge may ask questions to clear his doubts. .

**Inquest –**

Inquest is defined as judicial or legal enquiry into the cause of unnatural death.

**Types – 3**

1) Coroner's inquest – inquest carried by coroner. Was only in Mumbai and Calcutta.  
In Mumbai was stopped in July, 26 1999 and Calcutta in 1988.

2) Police Inquest – inquest carried out by police officer not below the rank of head Constable. Commonest in India.

3) Magistrate inquest – inquest carried out by executive magistrate, district magistrate Or sub divisional magistrate. The indications are the deaths during police custody Jail, dowry death etc.

**Medical evidence**

| <b>Dying declaration</b>                                                                                   | <b>Dying deposition</b>                                                                                                                                     |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1) written or verbal statement made by person likely to die because of some unnatural act done on his body | Deposition (statement oath) made by a person likely to die because of some unnatural act narrating the cause of death of his likely death to the magistrate |
| 2) recorded by executive or hon. Magistrate                                                                | 2) recorded by magistrate in presence of accused and lawyers of both parties                                                                                |
| 3) doctor has to certify the patient to be 'compos mentis'.                                                | 3) doctor has to be present throughout the procedure and to certify compos mentis.                                                                          |
| 4) during recording no relatives are allowed to be present                                                 | 4) any person may be present during recording.                                                                                                              |
| 5) no police officer is allowed to present                                                                 | 5) -                                                                                                                                                        |
| 6) No oath is administered                                                                                 | 6) Oath is administered to patient                                                                                                                          |
| 7) leading questions are not permitted                                                                     | 7) leading questions are permitted                                                                                                                          |
| 8) it is recorded in question answer form                                                                  | 8) -                                                                                                                                                        |
| 9) it is recorded in vernacular of patient                                                                 | 9) No witness is required                                                                                                                                   |
| 10) At the end it is signed by magistrate , patient, doctor and the two witnesses                          | 10) recording is done as per the procedure of the court.                                                                                                    |

**Importance –**

Dying deposition is more important than dying declaration because

- 1) it is recorded by magistrate
- 2) in presence of accused
- 3) In the presence of lawyers of both the parties.
- 4) Is recorded after cross examination.

5) It retains its full value even if the patient does not die, because cross examination has been done.

### **Identification of living and dead :**

Corpus delicti – refers to dead body in a case of homicide, including the clothes, Photographs and the weapon/object found on the body.

Establishment of corpus delicti means –

- a) establishing the complete identity of the dead body.
- b) Establishment of the fact that death is due to some homicidal activity.

### **Identification**

1) Race – race can be known from clothes, complexion, hairs, iris, bones,

Cephalic index – is index of breadth of skull.

Max. Breadth of skull

$$\text{C.I.} = \frac{\text{Max. Breadth of skull}}{\text{Max. AP length of skull}}$$

### Sex –

1) Nuclear sexing – is defined as the method of determination of sex from study of Nucleus in nondividing cells of the body.

2) Chromosome pattern (karyotyping) – is the study of pattern of chromosome.

Intersex states – refers to physical, reproductive, or sexual behavioral intermixing of two sexes. They are divided into –

- a) gonadal agenesis – is absence of development of gonads; testis or ovaries.
- b) gonadal digenesis – is defective development of gonads so that the typical sexual characters of secondary sex do not manifest.

1) Turner's syndrome –

Is due to ovarian dysgenesis

Female secondary sex characters do not appear

The chromosome pattern is 44 + XO – chromatin negative

2) Klinefelter's syndrome

Is due to testicular dysgenesis

The male does not develop secondary sex characters.

The chromosome pattern is 44 + XXY - chromatin positive

Hermaphrodite – external or internal intermixing of sex organs.

Chromosome pattern may be XX or XY

### **Height and weight:**

**Hess's rule** – up to 5<sup>th</sup> lunar month of gestation the length of fœtus in cm is square Of the month of gestation and

Beyond 5 month the length in cm is 5 times the month of gestation.

Routinely X ray for age determination

- 1) wrist and hand in children
- 2) Shoulder elbow knee and pelvis in adults
- 3) skull, vertebrae and sternum in old people.

**Medico legal aspects of age :**

| Aspect                     | IPC | Law                                                                                                                 |
|----------------------------|-----|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1) Criminal responsibility | 82  | a child below 7 years is not held responsible on the belief that he cannot understand act.                          |
|                            | 83  | Child between 7-12 years is normally held responsible unless he did not attain mental maturity of his age.          |
| 2) consent                 | 87  | A child below 18 cannot give consent for any act that can lead to by chance death or grievous injury.               |
|                            | 89  | A child below 12 cannot give consent for an act done in good faith or benefit of the child.                         |
|                            |     | A child above 12 can give consent for all medical examination and treatment except MTP for which minimum age is 18. |
| 3) Judicial punishment     |     | Capital punishment is not given to one below 18                                                                     |
| 4) witness                 |     | Oath is administered only to those above 12.                                                                        |

**Infanticide –**

- a) After 28-30 weeks or 210 days a foetus is considered viable i.e. capable of independent existence.
- b) Killing a live born child, after viability up to 1 year after birth is infanticide.
- c) A foetus born after age of viability and if it shows no signs of life it is termed as \ still birth.

**MTP act –**

- a) MTP up to 12 weeks gestation can be done on opinion of one RMP
- b) For MTP between 12-20 weeks gestation opinion of two RMP's is required.
- c) After 20 weeks routinely MTP can not be done.

**Anthropometry: (Bertillon's system of identification)**

Anthropos = human      metron = measurement

Principle – body measurements do not change after 21 years.

This study includes

- a) complexion, facial features and photographs
- b) Body peculiarities – scars, moles and deformities.
- c) Body measurements – following 11 measurements are taken
  - 1) standing height                  2) sitting height
  - 3) distance between tips of middle fingers in outstretched upper limbs.
  - 4) length and breadth of the head.
  - 5) width of the face.
  - 6) Length and width of right ear.
  - 7) length of left forearm            8) length of left hand
  - 9) length of left middle finger    10) length of left little finger    11) length of left foot.

**Dactylography**

Definition – The papillary or epidermal ridges on the tips of thumb and fingers form a Specific pattern. The study of this pattern is called as finger print study.

**Types of finger prints – 4**

- 1) Arch – ridges start from one side and go to the opposite side.  
Incidence is 6-7 %
- 2) Loop – ridges come back to the same direction. The center of the print is like hair pin

The whole print is slanting downwards.

This is the commonest type and incidence 65-67%

3) Whorl – the ridges are present in circular fashion. The incidence is 20-25 %

4) Compound / composite – tow or more of the earlier finger prints coexist.

The incidence is 5-10%

#### Destruction of finger prints

The finger prints may be destructed by leprosy, burns, electrical injury,

Deep injury, dermatitis, eczema or radiations involving the fingers.

#### **Poroscopy (Locard's system of identification)**

In case only a part of finger print is available, identification can be done by study

And comparison of the number, size, and distribution of the pores of sweat glands

Present in epidermal ridges.

#### **Quelioscopy (study of lip prints / cheilscopy)**

Because of lip prints are individual, identification is possible from the lip prints

Left on glass, wine bottles etc.

#### **Foot prints**

The pattern on the ridges on the sole of foot is peculiar in each individual,

Hence they can be used for identification

Foot prints are commonly used –

- 1) to avoid interchange of babies in hospital
- 2) foot prints are maintained of all air force flying personals.

#### **Scar**

Scar or cicatrix is fibrous tissue covered by epithelium which results as a

Consequence of healing of a deep wound.

#### Characteristics of scar

- 1) It is fibrous tissue
- 2) There is absence of elastic tissue
- 3) There is absence of sweat gland.
- 4) There is absence of hair follicle
- 5) May be hyper or hypo pigmentation
- 6) May be flat or raised

#### Classification of scar

- 1) Incised wound – linear or elliptical
- 2) stab wound – depends on the weapon
  - If both edges sharp – elliptical
  - If one edge sharp, other blunt – wedge shaped
  - If object triangular – triangular scar
  - If object circular – circular scar
- 3) firearm – circular, depressed scar
- 4) In lacerations – wide, irregular scar
- 5) In burns – usually keloid scar
- 6) on soft parts like scrotum and axilla – irregular scar
- 7) If infection present – scar thick in middle

### Age of scar

- With time scar becomes pale/white, non tender, hard and glistening
- 1) In 5-6 days – bluish or reddish angry scar
  - 2) 2 weeks – 2 months – vascular to avascular and so pale/white
  - 3) 2-6 months – tender to non tender
  - 4) after 6 months – soft to hard and glistening

### DNA fingerprinting

Medico legal aspect of DNA finger printing

- 1) Identification of accused from DNA fingerprinting of blood and hair
- 2) Identification of accused of rape from DNA fingerprinting of semen
- 3) Identification of mutilated bodies
- 4) Identification of old dead body by comparing with DNA of parents, wife , child
- 5) In child, mother and disputed father
- 6) Case of disputed maternity
- 7) Case of babies mixed in hospital

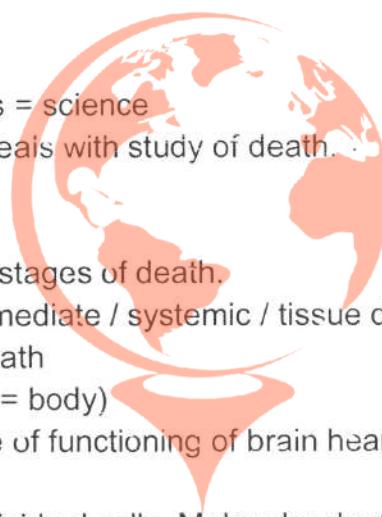
### HLA typing (Human leucocyte antigen)

Is present on WBC, platelets and tissues – is useful in matching tissue grafts and in Disputed paternity.

### Forensic thanatology

Thanatos = death      logos = science

Thanatology is a science that deals with study of death.



#### • Stages of death

- As per Shapiro there are two stages of death.
  - 1) Somatic / clinical / immediate / systemic / tissue death
  - 2) Molecular / cellular death
  - 1) Somatic death (soma = body)
 

There is stoppage of functioning of brain heart and lungs.
  - 2) Molecular death

It refers to death of all individual cells. Molecular death occurs when even anaerobic Processes stop, due to no availability of ATP.

Molecular death occurs at varying intervals after somatic death.

- 1) Liver – after about 5 minutes
- 2) Heart – after about 15 minutes
- 3) Kidney – after about 1 hour
- 4) Muscles – after about 3 hours
- 5) Cornea – after about 6 hours
- 6) Blood – after about 6 hours

### Signs of death

- 1) Immediate signs
  - 1) Permanent and complete cessation of function of brain and flat ECG
  - 2) Permanent and complete cessation of function of heart and flat ECG
  - 3) Permanent and complete cessation of function of lungs
- 2) Early signs (appears after 3 to 24 hours)
  - 1) Changes in eyes

- 2) Changes in skin
- 3) Cooling of body - Algor mortis
- 4) P.M. lividity – Livor mortis
- 5) Changes in muscles – Rigor mortis
- 3) Late signs (Manifest after 24 hours)
  - Decomposition (putrefaction) or adipocere formation (saponification) or Mummification.

### **Cooling of the dead body (Algor mortis)**

After death, the dead body behaves like an inert substance and therefore, if Atmospheric temperature is low, body loses its heat by conduction, radiation and Evaporation so as to attain the atmospheric temperature i.e. the body cools. No cooling of body occurs if the atmospheric temperature is higher than that of body.

#### Time required for cooling

- Starts after 2-3 hours
- Attains atmospheric temperature in 12-15 hours
- Internal body parts take 18 – 24 hours

#### Factors influencing cooling of dead body

- 1) Age – body of small children and elderly cools faster. (less muscle mass)
- 2) General condition of body – A thin and lean body cools faster
- 3) Sex – Usually body of males cools faster
- 4) Clothes – A clothed body or body lying in bed cools slowly.
- 5) Atmospheric temperature – Rate of cooling is directly proportional to the temperature difference between body & atmosphere.
- 6) Type of death –
  - a) In sudden death cooling is slow
  - b) In death due to chronic diseases cooling is faster
  - c) In some conditions instead of cooling body may gain heat for some time the phenomenon is known as – post mortem caloricity
- 7) surrounding –
  - a) Cooling is faster if strong air currents are present
  - b) Cooling is faster in dry weather
  - c) Rate of cooling in water: air : buried is 4:2:1

### **Post mortem caloricity**

Post – after mortem – death caloricity – heat

In some situations, for initial 2-3 hours, the dead body may gain heat however later Body cools as routine.

#### Reasons for P.M caloricity

- 1) Metabolic processes (anaerobic) or chemical processes continues after death
- 2) Bacterial or viral activity continuing after death – leading to heat production.
- 3) Death associated with extreme muscular activity
- 4) sun stroke, pontine hemorrhage.
- 5) death due to lightning, asphyxial death, viral infections.

### Post mortem lividity

Synonyms – liver mortis / P.M. staining / Cadaveric lividity

Definition – As dead body behaves like an inert substance, therefore there is Gravitational flow of blood to the dependent parts of body, causing stagnation of Blood in the toneless, dilated capillaries resulting in bluish purple staining.

#### Site of P.M. lividity

- 1) Occurs on dependant parts.
- 2) No lividity is seen on pressure points of body known as contact pallor as pressure Caused by weight of body prevents the underlying vessels from filling with blood
- 3) No lividity occurs on parts tightly tied with belt, neck tie, waist band etc.
- 4) P.M. lividity is also seen on internal viscera, on dependent parts, however no lividity Occurs on heart as cardiac muscles are very thick and the capillaries do not dilate.

#### Time required for P.M. lividity

- 1) starts appearing after – 1 hour.
- 2) Patches enlarge, coalesce with each other – 3 to 6 hours.
- 3) Becomes fixed – after 6 hours

#### Extent of P.M. lividity

- 1) Lividity is more in CCF
- 2) Lividity is less in death due to hemorrhage, anemia, or wasting disease.
- 3) Lividity is intense in asphyxia, as blood does not coagulate radially.

#### Colour of P.M. Lividity

Initially – bluish

After some time – bluish purple

|                                 |                          |                         |                    |
|---------------------------------|--------------------------|-------------------------|--------------------|
| 1) Carbon monoxide poisoning    | Bright cherry red        | 6) Phosphorus Poisoning | Dark brown         |
| 2) Cyanide poisoning            | Pink                     | 7) Nitrate poisoning    | Reddish brown      |
| 3) Opium poisoning              | Black                    | 8) in burns & colds     | Bright red         |
| 4) Hydrogen sulphide Poisoning  | Bluish green             | 9) Asphyxial deaths     | Dark bluish violet |
| 5) Potassium chlorate poisoning | Chocolate / coffee Brown | 10) Hemorrhage/ Anemia  | Pale purple        |

#### Differential diagnosis of P.M. lividity

- 1) Congestion of viscera
- 2) Bruise / contusion

#### Changes in muscle after death

The sequence is

- 1) Primary relaxation or flaccidity
- 2) Rigor mortis or cadaveric rigidity
- 3) Secondary rigidity

#### 1) Primary relaxation

- a) Coincides with somatic death
- b) Anaerobic enzymatic processes are still continuing
- c) Muscles still respond to various stimuli
- d) Pupils respond to drugs

- e) At time peristalsis present
- f) The reaction of muscles is alkaline
- g) This stage lasts for 2-3 hours only.

## 2) Rigor mortis (Cadaveric rigidity / death stiffness )

Rigor = contraction or stiffening      mortis = death

Def. – Rigor mortis is defined as contraction, stiffening, shortening and opacity  
Of muscles after death.

This occurs after molecular death.

### Mechanism for fusion

ATP is responsible for elasticity and plasticity of muscles. After death when ATP stores are reduced below 85 % contraction of muscles starts and at below 15 % of normal there results fusion of actin and myosin to form actomyosin – a gel. This results in opacity of the muscles.

### Sequence of muscle involvement

First involuntary muscles

Then voluntary muscles.

Time required for rigor mortis

|                                 |                       |
|---------------------------------|-----------------------|
| Starts appearing                | 2-3 hours after death |
| Becomes fully established after | 12 hours              |
| Stays on the body for           | 12 hours              |
| Slowly passes off               | 12 hours              |

### **Factors influencing rigor mortis**

#### A) Age

- a) No rigor in foetus less than 7 months (no glycogen)
- b) Rigor may be present in full term still born.
- c) Rigor appears early in children and elderly.

#### B) Sex – no difference

#### C) Cause of death

- a) rigor appears early in death due to chronic wasting diseases
- b) Rigors appears almost immediately in deaths associated with convulsion.  
e.g. tetanus and strychnine poisoning
- c) Rigor appears immediately in death due to insulin injection (decreased glycogen)
- d) Rigor appears early in widespread bacterial infection. E.g. gas gangrene
- e) Rigor is delayed in death associated with paralysis, extensive hemorrhage, and asphyxia.

#### D) Atmospheric temperature

Heat favors rigor while cold delays rigor.

### **Differential diagnosis of rigor**

- 1) cold stiffening
- 2) Heat stiffening
- 3) Putrefactive (gas) stiffening
- 4) Cadaveric spasm

#### 1) Cold stiffening

Due to exposure to cold body becomes stiff due to freezing (solidification) of fat and

Body fluids.

## 2) Heat stiffening

IF body exposed to extensive heat (above 65°) there results stiffening and flexion at all The joints, known as "pugilistic or boxer's or defense posture" due to denaturation and Coagulation of proteins. It occurs in both ante mortem and post mortem burns.

## 3) Putrefactive (gas) stiffening

During decomposition body parts become rigid because of collection of gases in sub Cutaneous tissues and the pressure exerted by these gases.

## 4) Cadveric spasm (Instantaneous rigor / Cataleptic rigidity)

Instantaneous rigor is defined as the condition wherein a group of muscles, which were In contraction or spasm at the time of death, continues to be in spasm even after death. Without the stage of primary relaxation.

### Precondition

- 1) Sudden somatic death
- 2) A group of muscles in contraction/ spasm at the time of death.
- 3) Extensive physical and emotional activity at the time of death

### Late signs of death

#### A) Decomposition / Putrefaction

A phenomenon due to

Autolysis

Action of enzymes released by bacteria

= causing softening and liquefaction of dead body

- Due to conversion of complex organic matter into simple inorganic elements Is known as decomposition.

### Necessary condition –

- 1) Warmth
- 2) Moisture
- 3) Air

### Signs / effects of decomposition

- 1) Colour changes
- 2) Formation of foul smelling gases
- 3) Pressure effects of gases
- 4) Appearance of maggots
- 5) Other late changes

#### 1) Colour changes

The earliest sign of decomposition is greenish discolouration of body

Seen first in right iliac fossa externally and under liver internally.

Greenish discolouration is due to formation of sulph meth hemoglobin.

#### 2) Formation of foul smelling gases

Due to action of body and bacterial enzymes there is formation of foul smelling Gases like carbon dioxide, sulphur dioxide, hydrogen sulphide, phosphine Ammonia and methane.

#### 3) Pressure effects of gases

Bloating up of body and features.

- 4) Appearance of maggots

a) Flies attracted → eggs laid (in 18-36 hrs.) → maggots (1 – 2 days)  
→ Pupae (4 – 5 days ) → Adult fly ( 3 – 5 days)

5) Other changes

The nails become loose and can be pulled out, teeth also can be pulled out etc.

## Sequence of decomposition

- a) In water = head – neck- chest – upper limbs – abdomen - - iower limbs.
  - b) In air = abdomen – chest – neck – head – lower limbs – upper limbs.

### Rate of decomposition

Rtae of decomposition in water is half of that in air due to low water temperature

## Factors influencing rate of decomposition

#### A) External factors

- 1) Warmth
    - a) Ideal temperature for decomposition is  $37^{\circ}\text{C}$ . Temperature around 0 and more than 50 retard decomposition.
    - b) Rate of decomposition is almost double in summer
  - 2) Air
    - a) Air is essential for decomposition. In absence of air body becomes adipocere
    - b) Moist and stagnant air is more favourable to decomposition.
  - 3) Moisture
    - a) Moisture is essential for decomposition and in absence of moisture body becomes mummy.
  - 4) Clothes
    - a) Initially clothes favour decomposition because of entrapped air and retention of body heat, but later clothes retard decomposition because of protection of body from flies and atmospheric air.
  - 5) Surface injuries

Surface injuries favours decomposition.
  - 6) Manner of burial

Decomposition is slow in deep buried and if body buried in air tight coffin

Rate of decomposition in Air : water : removed from water : buried is

#### B) External factors

- 1) Age
    - a) decomposition is slow in still born and new born who has been not fed.
    - b) decomposition is faster in children
    - c) Decomposition is slow in old people (less muscle and less moisture)
  - 2) Sex
    - a) No difference; excessive fat favours decomposition.
  - 3) Condition of body
    - Decomposition is slow in thin, lean, and weak
  - 4) Cause of death

| Slower in                          | Faster in                     |
|------------------------------------|-------------------------------|
| Chronic wasting diseases           | Asphyxial death               |
| Death due to heavy metal poisoning | Death due bacterial infection |
| Carbolic acid, dhatura, strychnine |                               |

### **Adipocere formation (Saponification)**

Adipis = soft fat    cera = wax

Definition – Adipocere formation is defined as the conversion of dead body into Soft waxy fatty substance.

This process is modification of decomposition.

Mechanism – post mortem hydrolysis and hydrogenation of body fats so as to convert These fats into fatty acids. These fatty acids later combine with calcium and ammonium ions and \ To form insoluble soaps so this change is also known as saponification. These soaps being acidic inhibit bacterial growth and thus preserves the body.

#### Essential requirements

- 1) Absence of air
- 2) Excess of moisture
- 3) Warmth

#### Commencement

Adipocere starts in subcutaneous fat and is marked in areas having excessive fat e.g. cheeks, breast, abdomen and buttocks.

#### Time required

- a) Adipocere formation does not occur in foetus less than 7 months.
- b) Adipocere is well marked in fat bodies and bodies of mature new borns, if the body is in water
- c) Normally adipocere formation occurs in 3 – 35 days.

### **Mummification**

Definition – Mummification is defined as dessication or drying up of the dead body.

It is also a modification of decomposition.

#### Essential requirements

- 1) Absence of moisture
- 2) Excess of air
- 3) Warmth

#### Characteristics

- 1) Body becomes thin, shriveled, dried and dark brown or black.
- 2) Body emits smell like rotten cheese.
- 3) All internal viscera blend with each other.

#### Time required

Varies between 3 months – 2 years.

### **Violent asphyxia death**

Asphyxia is defined as the mode of death in which death is due to failure of function of Lungs.

Hypoxia is a condition in which the supply of oxygen to the blood and tissues has been Reduced appreciably below the normal working level due to interference with respiration. Post mortem appearance in asphyxia

**a) External**

- 1) In slow asphyxia – face cyanosed, in sudden asphyxia – pale
- 2) Petechial hemorrhage on conjunctive, face and site of compression.
- 3) Tongue protrude out, eyes bulging out
- 4) Froth at nose and mouth
- 5) Clenching of hands.
- 6) Incontinence of urine, faeces and semen

**b) Internal**

- 1) Lungs congested and emphysematous.
- 2) Pulmonary edema and bloody froth
- 3) Tardieu spots on pleura. Pericardium, lungs, meninges and brain.
- 4) Right chamber of heart full.
- 5) Congestion of brain and internal viscera.

Classification of violent asphyxia deaths

- 1) Hanging
- 2) Strangulation
- 3) Suffocation
- 4) Drowning / submersion / immersion

**1) Hanging –**

Hanging is defined as mode of violent asphyxia death in which entry of air to the lungs is prevented by constriction of neck because of suspension of body by a ligature tied round the neck.

3.5 kg of weight is sufficient to constrict and occlude the arteries.

**Types – 2**

- 1) Complete hanging
- 2) Incomplete / partial hanging

**1) Complete hanging – ( hanging from high point of suspension)**

There is complete suspension of body and therefore feet are above the ground and therefore complete body weight constrict the neck.

**2) Incomplete / partial hanging – hanging from low point of suspension**

There is only partial suspension and since feet or some other body part is touching the ground.

Signs and symptoms

- a) death in case of complete hanging is almost instantaneous and many consider it to be a method causing sudden death.
- b) In case of partial constriction of neck there is
  - 1) Return to memory of forgotten movements
  - 2) Mental confusion
  - 3) Loss of power
  - 4) Auditory and visual hallucinations
  - 5) Convulsions

Mechanism of death

- 1) A weight of 2 kg - can constrict jugular veins
- 2) A weight of 3 – 5 kg – can constrict carotid artery
- 3) A weight of 15 kg – can constrict trachea

4) A weight of 16 – 18 kg – can constrict vertebral artery

#### Causes of death in hanging are

- 1) Asphyxia
- 2) Cerebral anoxia
- 3) Venous congestion
- 4) Neurogenic shock
- 5) Fracture or dislocation of cervical vertebrae
- 6) Injury to spinal cord, pons, or medulla.

#### Local external P.M appearance

- 1) Ligature mark
  - present above thyroid
  - is oblique, symmetrical and incomplete

#### Typical ligature mark

- 1) Present in upper half of neck
- 2) Above the thyroid
- 3) Oblique and bilaterally symmetrical

present in complete hanging

#### Findings in Judicial hanging

- There is fracture of cervical vertebrae usually at C2 C 3 sometimes C3 C4 or C1 C2
- There is laceration of intima of carotid vessels
- There is injury to spinal cord
- There is injury to pons and medulla
- Fracture of hyoid bone is usually not seen

#### General external PM findings

- 1) Neck is elongated
- 2) Face is usually pale, cyanosed
- 3) There is cyanosis of lips, tongue, nose, ears and nails.
- 4) Pupils dilated, conjunctive congested
- 5) There is dribbling of saliva from the angle of mouth.
- 6) There may be petechial haemorrhage on face, distal half of lower limbs.

#### Medico legal aspects of hanging

Whether death is due to hanging i.e, whether hanging is ante mortem.

##### a) Ante mortem hanging

- 1) Ligature mark is present around the neck usually above the thyroid.
- 2) Mark is oblique, symmetrical and incomplete.
- 3) Ligature mark is an abrasion, contusion or abraded contusion
- 4) Injuries on neck show features of vital reaction.
- 5) Under surface of ligature mark is dry, white, glistening pad of fat.
- 6) Dribbling of saliva
- 7) One eye being open (usually right)
- 8) Right chamber of heart being full.

##### b) Suicidal hanging

- 1) hanging is self explainable as self hanging.
- 2) No sign of struggle.

c) Homicidal hanging

- 1) Knot tied on back of neck.
- 2) Mouth may be gagged.
- 3) Limbs may be tied.
- 4) Signs of struggle present.

**Strangulation**

Strangulation is defined as the mode of violent asphyxia death in which entry of air into the lungs is prevented by compression of the neck, by ligature or some other method but without suspension of the body, so that the force constricting the neck is the external force applied i.e. Erogenous force.

Types – 6

1) Ligature strangulation

Neck is compressed by ligature of which usually multiple rounds are given  
And no knot is tied.

2) Throttling –

Is manual strangulation i.e. there is compression of neck by one or both the hands.

3) Bansdola –

Compression of neck with a bamboo or wooden stick.

4) Garroting –

Compression of neck by rope thrown from behind.

5) Mugging –

Compression of neck by elbow or in the bend of elbow.

6) Strangulation by knee/ foot –

Compression of the neck by knee or foot.

Signs and symptoms

Strangulation is usually homicidal and therefore the amount of force applied to constrict the neck is excessive.

- 1) Clenching of hands.
- 2) Convulsions.
- 3) Visual and auditory hallucinations.
- 4) Congestion and cyanosis of face and head.
- 5) Bleeding from mouth, nose and ears.

Post mortem appearance

Local external –

A) Ligature strangulation

- 1) Ligature mark – below the thyroid.
- 2) Ligature mark is – horizontal, complete and continuous.
- 3) Usually there are multiple marks present as multiple rounds of ligature.
- 4) Surface of ligature may be abrasion or contusion but usually laceration.
- 5) Colour of mark is initially yellowish brown but later black.

B) In throttling – (manual strangulation)

There are injuries due to finger tips and nails and thumb.

C) Bansdola –

There is horizontal injury mark in the form of abrasion or contusion on or Below thyroid.

D) Garroting –

On anterior part of neck there is 'U' shaped ligature mark, present as abrasion Or contusion.

E) Mugging and strangulation by foot or knee –

There are no typical injuries on neck. There may be multiple, large, vague Contusion on anterior part of neck.

Local internal P.M. appearance

- 1) In all types except throttling under the mark area is hemorrhagic. Frank bleeding May be present.
- 2) In all types except throttling there is laceration of muscles. In throttling muscles are Congested.
- 3) Blood vessels and their walls are lacerated
- 4) Trachea and thyroid are lacerated
- 5) Petechial hemorrhage in submandibular and parotid salivary glands.
- 6) Tonsils congested
- 7) Fracture of cervical vertebrae is uncommon.
- 8) Fracture of hyoid bone is very common in throttling.

Strangulation is usually homicidal.

Suffocation

Suffocation is defined as mode of asphyxia death in which entry of air into lungs is Prevented by means other than compression of neck and drowning.

Types

- |                       |                  |            |
|-----------------------|------------------|------------|
| 1) Smothering         | 2) Gagging       | 3) choking |
| 4) Crush asphyxia     | 5) Bansdola      | 6) Burking |
| 7) Irrespirable gases | 8) Burying alive |            |

1) Smothering

It is the type of suffocation In which entry of air to lungs is prevented by closure of Nose and mouth.

2) Gagging

It is suffocation by blocking of the oropharyngeal area may be by piece of cloth Or even by thumb, the item blocking is referred to as gag.

3) Choking

It is suffocation by obstruction of respiratory passage (glottis, larynx, trachea, Bronchi, etc.) and may be caused by – inhaled foreign body, vomitus, tumor

4) Crush asphyxia

It refers to crushing injury to chest wall; it may be penetrating injury (sharp pointed Object) or non penetrating injury (crushed between vehicle)

5) Burking

It was the method used by Mr, Burk and Mr, Hare. Is the combination of Smothering and crush asphyxia.

6) Inhalation of irrespirable gases

Suffocation may result from hypoxia from high altitude, irrespirable gases, smoke

From burnt articles.

#### 7) Burying alive

In tribal areas to take revenge or sometimes a person wrongly diagnosed as dead May be buried alive. Suffocation occurs from a combination of smothering, gagging Choking and crush asphyxia.

### **Drowning (Immersion / Submersion)**

Drowning is defined as the mode of violent asphyxia death, in which entry of air Into the lungs is prevented by presence of water or any other fluid in lungs and Respiratory passage, water having entered through nose and mouth.

#### Types of drowning

- A) Typical drowning (wet drowning)
  - 1) fresh water drowning    2) Salt water drowning
- B) Atypical drowning
  - 1) Dry drowning
  - 2) Hydrocution
  - 3) Submersion of unconscious
  - 4) Secondary drowning syndrome

#### **A) Typical drowning**

It is also referred as wet drowning, because due to submersion, there is entry of Water into respiratory passages and lungs and therefore findings of fluid and froth Are present during PM examination.

#### **B) Atypical drowning**

It refers to drowning in which even after submersion of body in water, little or no water Enters respiratory passage and lungs. Hence typical findings of drowning in the Form froth and oedema aquosum of lungs are not found.

##### **1) Dry drowning**

- on contact of cold water there results intense laryngeal spasm, so that neither air Nor water enters in respiratory tract.
- Death is therefore due to asphyxia due to drowning
- But typical findings of wet drowning are absent

##### **2) Hydrocution (Immersion syndrome, vagal inhibition)**

Hydrocution is sudden death on contact with water. Death is due to vagal inhibition

##### **3) Submersion of unconscious**

If person is unconscious since before submersion in water. Little or no water Enters respiratory passage.

##### **4) Secondary drowning syndrome (post drowning syndrome)**

It refers to a death at a later stage, after removal from water. Due to complication Of submersion he dies at a later stage.

Classical manifestations because of submersion in water are

- 1) Froth – white, fine, lathery, abundant, tenacious froth at nose and mouth.
- 2) Cadaveric spasm – plant, weed, sand or stones tightly held in hand.
- 3) Cutis anserina (Goose skin) – especially in cold water, due to contraction of Erector pili muscles, the skin becomes granular and hair stand out.
- 4) Washer women like hands and feet – if the body remains in water for more than

8 hours the skin of palms and soles become bleched and corrugated due to Contraction of blood vessels.

### Sign and symptoms

- 1) Mental confusion
- 2) Return to memory of forgotten movements
- 3) Severe chest pain
- 4) Auditory and visual hallucinations.

### Fatal period

- 1) Death in fresh water occurs in 4-5 minutes
- 2) Death in salt water occurs in 8 – 12 minutes
- 3) In atypical drowning person may be resuscitated up to 20 minutes

### A) External PM findings

At the nose and mouth there is white, fine, lathery, abundant, & tenacious froth.

Due to cadaveric spasms, weeds, sand or stones held in the hand.

Cutis anserina or goose skin – especially in cold water within 30 minutes there

Occurs contraction of erector pilo muscles resulting in granular appearance of skin  
And hair becoming erect known as cutis anserina.

Rectionary phenomenon – the scrotum and testis may be retracted up and penis  
May be semierect known as reactionary phenomenon.

### Internal PM findings

- 1) Lungs – The appearance of lungs is classically described as 'emphysema aquosum' Or oedema aquosum (i.e. enlargement due to water)
- 2) During PM on cutting the ribs and sternum lungs bulge out of the chest cavity  
Called as ballooning of the lungs.
- 3) Due to entry of water subplurally tardieu spots are always absent.
- 4) Sometimes due to rupture of alveolar walls, large patches of hemorrhages being 5 cm are present subplurally on the surface of lungs known as Paltaufs Hemorrhage. They are bluish red and more commonly on anterior aspect of lower lobes of lungs.
- 5) **Presence of diatoms** – diatoms are unicellular algae present in water and in humid Air, therefore diatoms may be normally present in human body.  
During submersion in water along with the inhaled water the diatoms also reach Alveoli from there they enter lymph channels and pulmonary vessels and thus reach The left chamber of the heart, from where they are distributed throughout the body. Thus the presence of diatoms in remote body parts e.g. brain, bone marrow and Liver is diagnostic test of death due to drowning.

### **Exposure to cold**

Exposure to cold produces hypothermia i.e. body temperature below  $35^0$

Local injury

#### 1) Trench foot / Immersion foot (wet cold)

Results due to exposure to severe cold ( $5$  to  $8^0$  c) and dampness.

Extremities are necrosed

#### 2) Frost bite (dry cold)

Results at greater extremes of cold (minus  $2.5^0$  c) limbs, nose and ears are involve

There is necrosis and blister formation and later gangrene.

Death occurs due to failure of vital centers due to anoxia or ventricular fibrillation.

### **PM findings –**

Skin pale, blisters usually present, may be gangrene of exposed parts, generalized

\ oedema may be seen.

Rigor mortis appears slowly.

PM lividity – dark red.

### **Examination of stains**

#### **A) Blood stains**

Collection of blood stains – can be collected on white filter paper, dried and preserved

Can be collected by dissolving in a solvent 10% potassium cyanide or 10 % glycerine

##### **a) Chemical tests**

- 1) Amidopyrine test
- 2) Benzidine test
- 3) Phenolphthalein test ( Kastle Meyer test )
- 4) Guaiacum test
- 5) Leucomalachite green test
- 6) Ortho – toluidine test

##### **b) Microchemical or histochemical tests**

- 1) Takayama haemochromogen crystal test
- 2) Teichmann's Haemin crystal test

##### **c) Spectroscopic examination**

Haemoglobin and its derivatives give characteristic absorption bands when viewed  
Through spectroscope.

##### **d) Serological tests**

- 1) Precipitin test
- 2) Gel diffusion test
- 3) Double diffusion in agar gel
- 4) Precipitation electrophoresis
- 5) Isoenzyme method

#### **B) Seminal stains**

##### **a) Chemical stains**

###### **1) Microchemical tests**

- 1) Florence test
- 2) Barberio's test

###### **2) Enzyme tests**

- 1) Acid phosphatase
- 2) Creatinine phosphokinase (CPK)
- 3) For glycoprotein

###### **3) Ammonium molybdate test**

#### **Classification of injuries**

Depending upon the method of causation of injury

##### **1) Mechanical**

Abrasion (scratches, grazes )

Contusion (Bruise)

- Laceration ( Tear)
- Incised ( Cut)
- Stab (puncture)
- Firearm

- 2) Thermal
- Burns (due to flame or hot metal)
  - Scalds (due to moist heat)
  - Chemical burns (due to corrosives)
  - Radiation burns
  - Electric burns
  - Lightning burns
  - Explosive burns

## 1) Mechanical injuries

### 1) Abrasions (grazes, Scratches)

Is superficial injury on superficial layers of epithelium or on mucus membrane, caused by hard, blunt and rough object.

Classification or types of Abrasion –

- 1) Scratches (Linear abrasion)
- 2) Grazes (sliding or scraping abrasion)
- 3) Pressure abrasion ( Crushing abrasion)
- 4) Pattered abrasion (contact/ impact/imprint abrasion)

### 2) Contusion (Bruise)

Contusion is defined as an injury present sub cutaneously or under the mucus Membrane, with epithelium being intact and is caused by the impact of hard And blunt object leading to rupture of capillaries therefore extravasation of blood.

Characteristics

- 1) is subcutaneous and rupture of capillaries
- 2) May be associated with abrasion known as contused abrasion / abraded Contusion or with laceration – known as CLW – contused lacerated wound.
- 3) Injury is usually round in shape
- 4) Size of injury may vary from pin point hemorrhage to large hematomas like Extradural or subdural hematomas.
- 5) A deep contusion may become visible externally only after death – spilsbury Phenomena.

### 3) Laceration (Tear)

Laceration is defined as the injury caused by heavy hard and blunt object. Involving damage to some deeper layers and deeper body parts.

Characteristics

- 1) There may be fracture of bone
- 2) Fracture is usually linear, radiating or comminuted.
- 3) Nerves may be crushed and so may be paralysis.
- 4) Shape of injury is irregular
- 5) Margins of the injury are irregular, swollen, and show tags of tissue.
- 6) Foreign body in the form of earth, grease, hair or cloth may be present

### **Types of laceration**

- 1) Split laceration – the injury results when a perpendicular force impacts parts Overlying bone i.e. scalp, forehead, eyebrow, etc.
- 2) Stretch laceration – the injury results due to the tangential impact of force, Which results in stretching of tissue and finally tearing
- 3) Avulsion – it results from impact being parallel to the body part so that a flap Of uniform thickness is raised.
- 4) Tears – is an irregular laceration and results from irregularly directed impact.
- 5) Cut laceration – result from blunt and rusted edges of weapon or by metal Sheets.

### **4) Incised wound (cut / slash / slice)**

Incised wounds are defined as the injuries caused by sharp edged object.  
Examples – blade, razor, scalpel, knife, sword etc.

#### Characteristics of incised wound

- 1) The length is the greatest dimension.
- 2) They are caused by sharp edged weapons.
- 3) hair, hair bulb, blood vessels, nerves are cut
- 4) Width of injury is more than the thickness of the blade.

### **5) Stab wound (Punctured wound)**

A stab wound is defined as an injury caused by sharp pointed weapon object,  
When the sharp tip is thrust into the body part.  
Examples – knife, dagger, gupti, sword, spear.

#### **Types of stab wound**

- 1) Puncture wound – any wound where depth is the greatest dimension.
- 2) Penetrating wound – sharp point of the object penetrates into one of the three Body cavities.
- 3) Perforating wound – if the sharp tip weapon perforates the part through and Through so as to cause a wound of entry and wound of exit.
- 4) Concealed puncture wound – puncture wound which is concealed or hidden.

#### Characteristic's of stab wound

- 1) Depth is the greatest dimension.
- 2) wound results when the sharp tip is thrust into the body part.
- 3) A wound entry and wound exit may be caused.

#### Size –

- 1) Length of wound - slightly less than width of the blade.
- 2) Length of wound of entry – larger than the length of wound of exit.
- 3) Length of wound of entry – may be equal to length of wound of exit, if the Whole of the long blade is thrust in.

### **Firearm injuries**

Firearm injury is also a punctured wound.

### **Propellant (Gun powder)**

Classical gun powder known as black powder is composed of

- 1) Charcoal - 15 % (is fuel)
- 2) Sulphur - 10 % (adds density)
- 3) Potassium nitrate – 75 % (supplies oxygen)

The smokeless gun powder in addition has –

Nitrocellulose or mixture of nitrocellulose and nitroglycerine and nitroguanidine.

Semismokeless powder has 80 % black powder and 20 % nitrocellulose.

**Dermal nitrate test** – The nitrate of gun powder is usually present on the hand of the

Accused – hand washings are treated with diphenylamine – blue colour indicate Nitrate.

### Thermal injuries

They are defined as the injuries caused by some form of heat or caused by chemical

Classification –

- 1) Burns
- 2) Scalds
- 3) Chemical burns
- 4) Radiation burns
- 5) Lightning burns
- 6) Explosive burns

### Pathophysiology

After about 1 week there results Curling's of duodenum.

Carboxyhaemoglobin levels are raised.

### Extent of burn – Rule of nine / Wallace's formula

|                       |                     |                                     |
|-----------------------|---------------------|-------------------------------------|
| Head neck and face    | 9 %                 | Head – 7% neck – 2%                 |
| Each upper limb       | 9 %                 | Arm – 4%, forearm – 3%, hand – 2 %  |
| Chest and abdomen     | 18 %                | Chest – 9 % abdomen – 9 %           |
| Back                  | 18 %                | Upper half – 9 % lower half – 9 %   |
| Perineum and genitals | 1%                  |                                     |
| Each lower limb       | $9 \times 2 = 18 %$ | Thigh – 10, % leg – 5 %, foot – 3 % |

In children less than 5 years

- 1) Head, neck and face – 15 %
- 2) Each lower limb – 15 %
- 3) Rest is same

### Fatal period in burn

|                          |                                        |
|--------------------------|----------------------------------------|
| Death within 24 hours    | Due to neurogenic shock or suffocation |
| Death within 1 to 2 days | Electrolyte imbalance or hypervolemia  |
| Death in 2 – 10 days     | Toxemia in burns                       |
| Delayed deaths           | Due to infection                       |

### Pugilistic / boxers / defense / fencing posture

Due to denaturation and coagulation of proteins, there results flexion at all joints and

Clawing of fingers, giving the body a typical posture.

This phenomenon occurs both in ante mortem and post mortem burns.

PM lividity – dark red. In suffocation may be cherry red.

### Scalds

Burns due to steam or moist heat

No singeing or charring

Within 2 to 3 hours there is formation of blisters.

### Radiation burns

Erythema, sloughing ulcers, wart like growths, blindness due to laser beam  
Scar formed is radiant,

### Electric burns

Due to electric current

Classically there is wound of entry and wound of exit.

The typical wound of entry is crater formation i.e. the wound is depressed, thick,  
Hard, leathery greyish white and cauliflower like and is not bleeding.

### Lightning burns

Due to electric current, heat and mechanical force.

There may be no external injury or may result complete charring or mutilation of  
The body.

### Explosive burns

Due to heat, mechanical force, and blast wave. Mutilation of body by missile.  
Extensive blackening and tattooing, rupture of viscera

### Dowry deaths ,

Deaths by burning for dowry are common.

In dowry deaths i.e. if death of newly married female results within 7 years of  
Marriage or if she is less than 30 years of age in all such deaths post mortem has to  
Be done and should be conducted by two medical officers out of which one female.  
In likely dowry deaths dying declaration as to recorded by executive magistrate.

### Electric burns

Electric burns are at times also referred to as Joule burns. Is an endogenous burn  
i.e. burn produced due to release of heat from the body by electric current.

### Lightning burns

Lightning refers to discharge of current between a negatively charged cloud and  
Positively charged article on earth.

There may be Filigree burns / arborescent burn / arborescent markings / litchenberg  
flowers

### Grievous injury (sec. 320 IPC)

As per sec. 320 following are grievous injuries

- 1) Emasculation – i.e. loss of masculinity ( loss of power of erection of penis)
- 2) Permanent privation (deprivation) of sight of either eye.
- 3) Permanent privation (deprivation) of hearing of either ear.
- 4) Privation of any part organ or limb.
- 5) Permanent privation of functioning of any part, organ or limb of body.
- 6) Any fracture of bone or tooth, or dislocation of joint or tooth.
- 7) Permanent disfiguration of face or head.

### Dangerous injuries

Is defined as an injury which endangers life.

- 1) Firearm injuries
- 2) Comminuted fracture of skull.
- 3) Depressed fracture of skull
- 4) Comminuted fracture of multiple bones

- 5) Stab wound into the body cavity
- 6) Cut throat injury
- 7) Chop wounds, gross injury to vital organs, rupture of internal viscera
- 8) Injury to major blood vessels.

### **Infanticide**

Infanticide is defined as unlawful destruction of a newly born child.(therefore

Infanticide refers to killing a child after delivery to till 1 year after birth)

### **Clinically –**

Term born child – born at 40 +/- 2 weeks

Pre term child – born before 37 weeks

Post mature child – born after 42 weeks

Mature child – weight more than 2.5 kg.

Pre mature child – weight 1 – 2.5 kg, born after 27 weeks.

Immature child – weight less than 1 kg. born before 26 weeks.

### **Still born**

1) Which was living in uterus just before delivery.

2) Delivery is after 28 weeks of pregnancy

3) After being born the child remains still,i.e. shows no sign of life or respiration.

### **Hydrostatic test (Raygat's test, 1 st life test)**

To check signs of live birth.

Hydrostatic test is the test involving flotation of lungs on water, to confirm live birth

Principle – The specific gravity of non-respired lung is 1040-1050 and of a respired lung is 940-950 so the respired lung floats on water.

### Medico legal aspect of infanticide

If a child die the person is guilty under section 317.

### **Rape –**

#### Definition – sec. 375 IPC

Rape is defined as unlawful, sexual intercourse, by a man of a women, his wife

Less than 15 years, any women less than 16 years, with or without her consent,

Or any women of or above 16 years against her will.

**Section 376** – deals with punishment of rape.

### **Various acts and codes**

- 1) Bombay medical act – 1912
  - 2) Indian medical degrees act – 1916
  - 3) Indian medical council act – 1956
  - 4) Poisons act – 1919
  - 5) Bombay anatomy act – 1949
  - 6) MTP act – 1971
  - 7) The prenatal diagnostic techniques (regulation and prevention of misuse) Act – 1994.
  - 8) Workmen's compensation act – 1923
  - 9) Drug and cosmetic act – 1940
- After the amendment of 1964 it also included ayurvedic and unani drugs.

## 10) Drug and cosmetic rules – 1945

These rules have classified drugs into various schedules

- 1) **Schedule H drugs** – contains a list of drugs (poisons) which are subject to Restriction of labeling, sale and prescribing.

SCHEDULE 'H' DRUG – warning – to be sold by retail on the prescription of a RMP only.

- 2) **Schedule 'L' drugs** – contains a list of antibiotics, anti histaminic, and other Chemotherapeutic agents.

### Other schedules-

Schedule 'C' = Biological and special products.

Schedule 'E' = List of poisons.

Schedule 'F' = Vaccines and serums

Schedule 'G' = Hormone preparations

Schedule 'H' = Drugs to be sold on prescription of RMPs only

Schedule 'J' = Disease for the cure of which no drug should be advertised.

Schedule 'L' = Antibiotics, antihistamines, other chemotherapeutic agents to be Sold on prescription of RMP only.

12) Pharmacy act – 1948

13) Drug control act – 1950

### History of forensic medicine

- 1) 1302 – first medicolegal autopsy done in Bologna (Italy)
- 2) 1602 – first book of forensic medicine written in Italy by Fortunato Fedele.
- 3) 1663 – first PM in India at Madras by Dr. Buckley
- 4) 1860 – Indian Penal Code formed in India.
- 5) 1861 – Criminal procedure code formed in India.
- 6) 1871 – Coroner's system started in Bombay and Calcutta.
- 7) 1988 – Coroner's inquest stopped in Calcutta
- 8) 1999 - Coroner's inquest stopped in Mumbai.

### Code of medical ethics

Declaration of Geneva – refers to values and guidelines that govern decision in Medicine and dealings with patients.

Consumer's protection act – 1986

### Disposal of medical records –

Non MLC –

- 1) The OPD records to be retained for minimum 3 years.
- 2) The IPD records to be retained for minimum 5 years

MLC – there is no specific time limit when they can be destroyed so they should be Retained.

### Consent –

- 1) Routinely – given by patient himself if above 12 in conscious state (sec -88)
- 2) If less than 12, or unconscious or insane by parents or guardians (sec 89)
- 3) For MTP patient must be more than 18 years
- 4) For PM no consent required for medico legal PM
- 5) For clinical PM consent of two close relatives is required.

## Drug and cosmetic act 1940

**Chapter iv – A** = Provisions related to Ayurvedic siddha and unani drugs.

**33 E** – Misbranded drug – if it is so coloured , coted or polished, made to better than therapeutic value than it is really.

**33 EE** – Adulterated drug – any adulteration of low quality material

**33 EEA** – Spurious drug – if it is sold or offered or exhibited for sale under a name which belongs to another drug.

**Chapter XVI** – Manufacture for sale of Ayurvedic or unani drugs.

**Chapter XVII** – Labeling, packing and limit of alcohol in Ayurvedic or unani drug.

**Chapter XVIII**- Government analysts and inspectors for Ayurvedic or unani drugs.

**Chapter XIX** – Standards of Ayurvedic siddha and unani drugs.

### SCHEDULES

**E1** – list of poisonous substances under Ayurvedic unani system of medicine.

**T** – Good manufacturing practices for Ayurvedic siddha and unani drugs.

**Y** – Clinical trials for new drugs.

**H** – list of substances that should by retail only on prescriptions of R.M.P.

Pharmacy Act - 1948. Poisons act = 1919

Quality control and inspection act – 1963

**Permissible limit of Heavy metals in Ayurvedic siddha and unani drugs** –(The gazette of India part-II sec 3, Subsection- II)

Lead (Pb) - 10 ppm

Cadmium (Cd) – 0.30 ppm

Arsenic (As) – 3ppm

Mercury (Hg) – 1 ppm

### विषद्रव्य मात्रा – (रसतरंगिणी)

1) वत्शनाभ- 1/16-1/8 रस्ती

2) विषतिंदुक – 1/4 – 1 रस्ती

3) अहिफेन- 1/4- 1 रस्ती

4) जयपाल – 1/8-1/4 रस्ती

5) धनुर बीज – 1/4- 1/2 रस्ती

6) भंगा – 2-4 रस्ती

7) गुंजा बीज – 1/2- 1 1/2 रस्ती

8) भल्लातक – 1-3 रस्ती

निद्रोदय रस – घटक – अहिफेन भावना- भंगा क्वाथ (3 भावना)

मृतसंजीवन रस – वत्सनाभ (विष), हरताल, माक्षिक, टंकण, शुध्द कृष्णसर्पविष

चाग मायूर वाराह मत्स्य पित्त भावना

मृत्युंजय रस – वत्सनाभ (1) , हिंगुल (2) भाग. आर्द्रक स्वरस भावना.

अहिफेन निषेध – बाल वृद्ध, मधुमेह, विसूचिका, इलैश्मिक कास, वृक्ककशोथ.

उन्मादगजांकुश रस – धनुरबीज , भावना – कुमारी स्वरस

क्षारसूत्र निर्माण – स्नुहीक्षीर + हरिद्रा एकुण 7 बार लेपन

**रसरनसमुच्चय –**

भस्मीभूतं तु वैक्रान्तं वज्रस्थाने नियोजयेत् ।  
 शिलाजतु का मारण एवम सत्वपातन नहीं बताया है  
 कासीस सत्वपान सौराष्ट्र के समान करना चहिए  
 सौराष्ट्री को गोपित्त से 100 बार भावना देकर निकलने वाले सत्व का उपयोग पारद के क्रामण संस्कार में करते हैं  
**पिण्डतालक** – स्त्रीपुहरण  
 नीलांजन – सुवर्णधन, लोहमार्दवकारण, दोषत्रयापहम

**PSM -****slogans by WHO –**

- Health for all by 2000 AD – 1978
- Emerging infectious disease global response global alert – 1997
- Pregnancy is precious , let's make it safe – 1998
- Active aging makes the difference – 1999
- Safe blood starts with me - 2000
- Vector born diseases – 2014
- Food safety – 2015
- Beat diabetes – 2016      Depression let's talk – 2017

**Acts and days -**

- Indian factories act – 1948
- Workmen's compensation act - 1923
- Food and agricultural organization – 16 oct 1945
- World's Aids day – 1 december
- National health policy – 1982-83
- Pulse polio immunization programme – 14 nov 1995
- Breast feeding week – 1-7 august

**Miscellaneous -**

- Father of statistics – John Gruant
- State with highest literacy rate – Kerala
- Flourine safe limit – 0.5- 0.8 mg \ litre
- Nalgonda technique for deflourination of water – add lime + alum in sequential order
- Basal metabolic rate – male – 38.1      female – 32.9

**FMT –****Various acts and codes –**

- |                                                                 |                                           |
|-----------------------------------------------------------------|-------------------------------------------|
| Poisons act -- 1919                                             | Pharmacy act – 1948                       |
| Drug control act – 1950                                         | Drug and magic remedies act – 1954        |
| IPC – 1860                                                      | Cr. Pc ( Criminal procedure code ) - 1861 |
| Consumers protection act – 1986                                 |                                           |
| Disposal of medical records –                                   |                                           |
| OPD records to be retained for min 3 yrs and IPD for 5 years    |                                           |
| Issuing false certificate is punishable under IPC – 197.        |                                           |
| First PM in india at madras by dr. Buckley                      |                                           |
| Declaration of Geneva (related to medical ethics) – Sydney 1968 |                                           |

Declaration of Helsinki – ( Related to medical ethics) –

Schedule 'H' of drug and cosmetic rules 1945 contains – drug to be sold only on the prescription of registered practitioner.

Other –

शंखद्राव – गुल्म ( योगरत्नाकर ) , उदर ( वंगसेन )

शंखद्राव , महाशंखद्राव – प्लीहयक्‌द्रोगाधिकार ( भैषज्यरत्नावली )

**API –**

Ayurvedic pharmacopoeia of India – 8 volumes .

concerned with standards for single drug and its formulations. Came under CCRAS from April 2006.

Central council for Research in Ayurveda and Siddha (CCRAS) – 1978

Ayurvedic formulary of India – part- I – 1978 and part – II – 2000 part III draft prepared

Rashtriya Ayurved Vidyapeeth – 1991

**Laboratories-**

- 1) Drug standardization research institute , Ghaziabad (up)
- 2) Drug standardization research unit , New Delhi
- 3) Literary research institute, New Delhi

Captain strinivas murty drug research institute of Ayurveda. Chennai

National botanical research institute , - Lucknow

Application of standardized **namburi phased spot tests** in **identification of basma** and sindura preparation in Ayurveda , book published by CCRAS. of the author Namburi Hanumanth Rao . first edition – 1991 and second edition 2010.

**Pediatrics -**

**Mental retardation :**

- 1) mild mental retardation – IQ = 50 – 70
- 2) moderate mental retardation – IQ = 35 – 49
- 3) severe mental retardation - IQ = 20 – 34
- 4) profound mental retardation – IQ = under 20

Children scoring above 70 are no longer described as mentally handicapped .

**Intelligence Quotient :**

This is an improvement over the concept of mental age. It is obtained by dividing the mental age by chronological age and multiplying by 100.

$$IQ = \frac{\text{Mental age}}{\text{Chronological age}} \times 100$$

When the mental age is the same as chronological age the IQ is 100.

**Level of Intelligence :**

|               |              |
|---------------|--------------|
| Idiot         | 0 – 24       |
| Imbecile      | 25 – 49      |
| Moron         | 50 – 69      |
| Borderline    | 70 – 79      |
| Low normal    | 80 – 89      |
| Normal        | 90 – 109     |
| Superior      | 110 – 119    |
| Very superior | 120 – 139    |
| Near genius   | 140 and over |

| Features                | Marasmus                        | Kwashiorkor                        |
|-------------------------|---------------------------------|------------------------------------|
| <b>Clinical</b>         |                                 |                                    |
| Muscle wasting          | Obvious                         | Sometimes hidden by fat and oedema |
| Fat wasting             | Severe loss of subcutaneous fat | Fat often retained but not firm    |
| Oedema                  | None                            | Lower legs, face, lower arms       |
| Mental changes          | Sometimes quiet & apathetic     | Irritable, moaning, apathetic      |
| Appetite                | Usually good                    | Poor                               |
| Diarrhea                | Often                           | Often                              |
| Skin changes            | Usually none                    | Diffuse pigmentation               |
| Hepatic enlargement     | None                            | Sometimes due to fat               |
| <b>Biochemical</b>      |                                 |                                    |
| Serum albumin           | Normal or slightly decreased    | Low                                |
| Creatinine              | Normal or decreased             | Low                                |
| Plasma amino acid ratio | Normal                          | Elevated                           |

**Classification of PEM –**

Depending on Gomez's Classification

Weight for age (%) =

$$\frac{\text{Weight of the child}}{\text{Weight of normal child of same age}} \times 100$$

- 1) Between 90 and 110 % = normal nutritional status
- 2) Between 75 and 89 % = 1<sup>st</sup> degree , mild malnutrition
- 3) Between 60 and 74 % = 2<sup>nd</sup> degree , moderate malnutrition
- 4) Under 60 % = 3<sup>rd</sup> degree , severe malnutrition

**भावप्रकाश –**

|                                |                                       |
|--------------------------------|---------------------------------------|
| उष्णवीर्य, हीमस्पर्श – बिभितकी | विबंधभेदिनी ग्राही न मलपातिनी – शुंथि |
| धर्मपत्तन – मरीच               | जीर्णज्वर मे – गुडपिघली               |
| गुदजापहम – चव्य                | शतपुष्पा – शुक्रभूत                   |
| बहुपत्रिका बहुबीजा – मेथिका    | पशुमेहनकारिका = चंद्रशूर              |

|                                                |                                           |
|------------------------------------------------|-------------------------------------------|
| शकामूत्रविशेषधिनी = वचा                        | फिरगनाशिनी – चोपचिनी                      |
| विडंग – Tape worm                              | रामठी, वंशपत्री – नाडीहिंगु               |
| चक्रांगी – गुडूची , कुटकी                      | रामसेवक – किराततिक                        |
| एलापर्णी ,युका, – रास्ना (राजनिघटु –त्रिविध)   | चोकमूल – स्वर्णक्षिरी                     |
| सोमवल्क – खदिर कटफल                            | एफिस – कर्कटशृंगी कोटगृह                  |
| ब्राह्मण्यष्टिका – भारंगी                      | अफगाणी मंजिष्ठा – श्रेष्ठ                 |
| लाक्षा – गंधनाशन                               | पर्जन्या, पचंपचा, कटेरी – दारूहरिद्रा     |
| नेत्रकर्णस्यरोग नाशन – दारूहरिद्रा             | एडगज, प्रपुन्नाट – चक्रमर्द               |
| भल्लातक वृत्त – केश्य, मज्जा – मधुर वृथ्य बृहण | पुस्त्वनाशन – पोश्ता, खाकश                |
| स्वेदगंधनुत – गंधमार्जारीवीर्य                 | कुचंदन – पत्रांग                          |
| श्रेष्ठ चंदन – मलयगिरी                         | कृमिजग्ध – अगुरु                          |
| श्रीवेष्टक, वृक्षधूपन, श्रीवास – सरल           | गंधारिका – कपूरकाचरी                      |
| महिलाव्यया – प्रियंगु                          | आंध्यहृत – कंकोल                          |
| भारतीय quinine – गुडूची / गुडूची सत्त्व        | गर्भकारिणी, गर्भदा – श्वेतकंटकारी         |
| इक्षुकारीणी – गोक्षुर                          | मार्जारांधिका – मुद्रपर्णी                |
| वातारि – एरंड                                  | श्रृगालविना – पश्निपर्णी                  |
| लवण अनुरस – अर्कक्षीर मे होता है               | युकालिक्षाविनाशन – धन्तुर                 |
| वरतिका, पांशुक – पर्षटक                        | वरतिका – पाठा                             |
| द्रेक , रम्यक – महानिम्ब                       | उच्चटा – गुंजा – इन्द्रलुप्तनाशन          |
| समुद्रफल – विषधन                               | मूषिकाविषधन – अंकोल                       |
| चर्मकारावी – वाराहीकंद                         | नीलवृक्षाकृती – शरपुंखा                   |
| पारावतपदी – काकजंघा , ज्यांतीष्मती             | मानसरोगहृत – शंखपुष्पी                    |
| द्रोणपुष्पी – विषमज्वरधन                       | अगस्त्य – चातुर्थिकज्वरहर                 |
| शुकपुष्प, मृदुपुष्प – शिरीष                    | भूमीवल्ली, उर्ध्वाधिकायशोधिनी – मार्कडिका |
| आर्तगल – सैरेयक                                | मेदोमेहव्रणान हन्ति – अर्जुन              |
| बंधुकपुष्प – बीजक                              | बालपत्र – खदिर                            |
| क्षारश्रेष्ठ – पलाश                            | नेत्रोपमफलम – वाताम                       |
| पीलु – अधःसंसी, गुडफल, विरेचनोपग               | भस्मगर्भा – शिसव                          |

लशुनसेवन समये – ष्ठिकर – मध्य मांस अम्लरस

अहितकर – व्यायाम आतप रोष गुड पय अतिजलपान

**बालरोग –**

- 1) फकक रोग – श्लैष्मिक दुग्ध , गर्भवती माता दुग्ध
- 2) बाल शोष – श्लैष्मिक दुग्ध दोष
- 3) पारिगर्भिक – गर्भवती माता का दुग्ध
- 4) अहिपूतना – दुष्ट स्तन्य पान (सु.नि 13)
- 5) कुकुणक – स्तन्य दुष्टी ( काश्यप कफरक्तज)
- 6) विसर्प – दुग्ध दोष (काश्यप)
- 7) चर्मदल – दुग्ध दोष (काश्यप)

**Syndromes -**

|                                   |                                                                                                                                                                                                                      |
|-----------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| 1) Budd – Chiari's syndrome       | Obstruction of hepatic vein causing hepatomegaly, abdominal pain and tenderness, asities, portal hypertension, liver failure                                                                                         |
| 2) Carpel tunnel syndrome         | Pain and burning or tingling paraesthesia in finger and hand due to compression of median nerve In carpel tunnel                                                                                                     |
| 3) conn's syndrome                | Primary aldosteronism                                                                                                                                                                                                |
| 4) Crigier –Najjar syndrome       | Autosomal recessive form of nonhaemolytic jaundice due to absence of hepatic enzyme glucuronide transferase , Marked by unconjugated bilirubinaemia with kernicterus                                                 |
| 5) Down syndrome                  | Mongoloid features. Trosomy 21                                                                                                                                                                                       |
| 6) Grey baby syndrome             | Due to chloramphenicol in neonates; ashen gray cyanosis, Listlessness, weakness and hypotension                                                                                                                      |
| 7) Guillain –Barre syndrome       | Acute febrile polyneuritis                                                                                                                                                                                           |
| 8) Horner's syndrome              | Sinking of eyeball, ptosis of upper eyelid, slight elevation of Lower lid, miosis, narrowing of palpebral fissure, unhydrosis, and flushing of affected side of face, due to paralysis of cervical sympathetic nerve |
| 9) Irritable bowel syndrome       | A chronic no inflammatory disease with a psychophysiologic basis marked by pain diarrhea etc.                                                                                                                        |
| 10) Klinefelter's syndrome        | Small testes with fibrosis and hyalinization of seminiferous tubules by variable degree of masculinization of azoospermia characterized by XXY                                                                       |
| 11) Korsakoff's syndrome          | Is amnestic disorder caused by thymine (B1) deficiency associated with prolonged ingestion of alcohol (related to Wernicke encephalopathy.)                                                                          |
| 12) Nephrotic syndrome            | Massive edema, proteinuria,hypoalbuminæia.                                                                                                                                                                           |
| 13)Plummer vinson syndrome        | Dysphagia with glossitis, hypochromic anemia, splenomegaly and atrophy of mouth, pharynx and upper part of cesophagus.                                                                                               |
| 14) Reiter' syndrome              | Nongonoccoal urethritis, conjunctivitis and arthritis.                                                                                                                                                               |
| 15) Sjogren's syndrome            | Keratoconjunctivitis, sicca, xerostomia, and enlargement of parotid gland often associated with SLE, RA scleroderma                                                                                                  |
| 16)Stevens Johnson Syndrome (sjs) | Fatal from erythema multiforme presenting with a flue like Prodrome with mucocutaneous lesions. Due to severe reactin of medicine. (reaction on skin)                                                                |
| 17) Turner's syndrome             | Short stature, streak gonad, webbing neck, low posterior Hair line, cubitus valgus and cardiac defect gonotype.                                                                                                      |
| 18) Weber's syndrome              | Paralysis of oculomotor nerve of same side of lesion, causing ptosis, strabismus and loss of light reflex and spastic hemiplegia of opposite side.                                                                   |
| 19) Zollinger- Ellison Syndrome   | Peptic ulcer, extreme gastric hyperacidity, benign or malignant gastrin secreting islet cells tumors of pancreas                                                                                                     |

**Miscellaneous –****a) Triangles –**

- 1) Auscultation – Lower border of trapezius
- 2) Hesselbach's triangle – below by inguinal ligament medially by rectus abdominus  
Laterally by inferior epigastric vein.